

भारत सरकार में जो बात कही थी वह सही ही उपस्थित हुई और बाम बट जाने पर भी बहुत सही ही अर्थात् सन् १८७१ ई में रैयतों के बीच फिर अशांति फैल पड़ने लगी। नील का काम बढ़ा दिया गया था वहीं पर उससे सम्बन्ध रखने वाले बापों के निवारण का कोई प्रबन्ध या यत्न नहीं किया गया। सन् १८७१ में सैप्टिम्बर महीने पटना के कमिशनर की साक्ष्यना रिपोर्ट की जाकोचना करते हुए लिखा था—

"The practice under which the ryots were compelled to give up a portion of their land for indigo is the compulsory feature of the system to which his Honour has more specially alluded as contrary to free trade principles. Again the practice of forcing the cultivators to exchange such of their lands as may be arbitrarily selected from time to time by the planter or his servant is an intolerable grievance as is well set forth by Mr Forbes, even where there is what purports to be an agreement. In these cases it is obvious that the character of the agreement is such that no person of power and influence equal of that of the planter himself would think as mere matter of business of entering into it."

अर्थात् इन प्रथा में रैयतों का जल भीष बोन के भिन्न प्रकारदस्ती से लेना प्रचलित बात है जिसका कारण माहूब में अवाध्य बापिष्य के नियमों के विरुद्ध बताया है। इसके अलावा समय-समय पर नील माहूब में उनके कारिग्य अपनी इच्छानुसार रैयतों के जमीनों में से अच्छे जमीनों को चुन लेते हैं। इसका इकारनामा रूल पर भी यह अमल प्रथा है जैसा पीपल माहूब में कहा है। चाहिए है कि इकारनामा इस प्रकार का है जिसको कोई मनुष्य जिसकी जमीन और प्रभाव नीलबगी के मुकाबल का है वह कबल निवारणी व्यवहार-बुद्धि में कबल नहीं कर सकता है।

उन समय के समाचारपत्रों में इसकी पूरी खर्चा जारी रखी और सरकार का ध्यान आकर्षित होता रहा। सन् १८७५ ई में पटना के कमिशनर ने प्रस्ताव किया कि नील सम्बन्धी गिरावटों के विषय में जाँच करने के लिए एक कमीशन नियत किया जाय। उस समय सर रिचर्ड टेम्पल (Sir Richard Temple) बंबाई के छांट साट थे। उनका यह विचार हुआ कि कमीशन सुबर्नर करम में बहुत अशांति फैल जायगी। इसलिए जिस के अहमदाबाद की पास हिदायत की गई कि रैयत और नीलबगी के बीच में जलदों का के बाधून के अनुसार विरपेस थाक में लम्बितार दिया करें।

अब अशांति ने कारण क्या के लिये छोड़ दिये गये थे तो शांति फैल हो सकती थी? सन् १८७७ में इस विषय की जाकोचना करते हुए मिस्टर स्ट्यूअर्ट बकी (Mr Stuart Bayley) ने था उस समय पटना के कमिशनर ने यह लिखा कि अशांति कमीशन का नियत होना ठीक नहीं था पर यह बात निश्चय है जैसा कि जहाँ के अहमदाबाद को चुन बाधून है

कि वही अस्थाति प्रत्यक्ष बल पड़ती है (The fact remained that there was much discontent manifest enough to local affairs.) ।

इसी समय पर रिचर्ड टेम्पल ने बने जाने पर ऐसी ईदन बंगाल के छोटे साठ नियत हुए । पात्रक जानते हैं कि यह वही सर ऐसी ईदन ने जो बंगाल के नील सम्बन्धी अस्थाति के समय में मजिस्ट्रेट के पत्र पर ने और नीलबरो की कार्रवाइयो स वाली प्राति परिचित न । उन्होंने विचार किया कि हुकूमत न मचाकर स्वचाप नीलबरो को भिन्नकर कुछ काम निकालना उचित है । इसलिए उन्होंने नीलबरो को बताया कि बसायीदार प्रथा से नील की खनी करना रीयता के हक में बहुत ही हानिकारक और मुजिर है । बस नील का बाध कुछ और भी बड़ा बना उचित है । नील को तिवारती सीढ़ा की नाई पैदा करने ही से सनमें और रैकनों में प्राति रह सकती है । उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि नील-बरो का जबरबस्ती मजबूती कप्तानी भी अनुचित है । छोटे साठ की ऐसी रीयत देखकर

१ उन्होंने बंगाल के कमीशन के सामन अपने इबहार में कहा था—

My opinion is that in no instance within the last six years at least have ryots entered into any large contracts for cultivation of the crop and that with the exception of factories which have large extent of churlands cultivated, the indigo cultivation is in no instance the result of free agency but that it is compulsory" इसके कारण बननात हुए उन्होंने यह कहा था—"First, I believe it to be unprofitable and therefore I cannot believe that any ryot would consent to take up that cultivation involving as it does serious pecuniary loss to himself Secondly it involves an amount of harassing interference to which no free agent would subject himself. Thirdly from the consideration of the act of violence to which the planters have been compelled to resort to keep up the cultivation as proved by the criminal record of Bengal. Fourthly from the admission of the planters themselves that if ryots were free agents they would not cultivate indigo. Fifthly the necessity under which the planters state themselves to be of spending large sums in the purchase of Zamindari and other description of rights giving them territorial influence and powers of compulsion without which they would be unable to procure the cultivation of indigo Sixthly the statements of ryots and the people generally in the districts in which I have been. Seventhly as soon as the ryots became aware of the fact that they were by law practically free agents, they at once refused to continue cultivation.

मीसबरोँ न मोबा कि यदि उनकी राय के मुताबिक न जमैये ठी बहुत मोसमान हो सचठा है। इसी बिचार से उनकी सम्मतिवों को काम में लाने के इरादे से सन् १८७८ में मीसबरोँ ने अपनी एक सभा स्थापित की जिसका नाम बिहार प्लान्टर्स एसोसियेशन (Bihar Planters Association) रखा गया और जो काम तक कायम है। अपनी पहली बैठक में ही इस सभा ने रैयतों के नील का काम बन्ना बना कबूल कर लिया और उसे ९) स बड़ाकर १०१७) एकड़ कर दिया। इसके बतिरिक्त यह भी ठीक हुआ कि जिस जमीन पर नील बाया जाय उसकी मास्युजारी भी रैयतों से न ली जाय। इस नियम के सम्बन्ध में इतना कह देना उचित है कि बनक और नियमों की तरह इस नियम को भी बहुतों ने मान्य करना अपना कर्तव्य नहीं समझा। दूसरी धिकायतों के नियम में भी इसी तरह मीसबरोँ न अपनी सभा में बहुत से नियम बना लिये जिनका उल्लेख करना यहाँ पर आवश्यक है। उनमें स्पष्ट शब्दों में कहा कि उस समय क्या-क्या धिकायतें थी और उन नियमों के बन जाने पर भी वे धिकायतें उन्हीं की रहीं १९ १५ दिल्ली गोरसे के सामने पेश की गई और १९१७ में महारमा याँची में प्रायः उन्हीं प्रकार से और उन्हीं ओर से प्रचलित पाया। उस समय का नियम पास हुए उनमें मुख्य य य कि मीस की कीमत १॥ हाथ की जमीन स की बीबा ९) रुपय हो जायगी। पट्ट में इस बिषय की साफ धर्त न रहने पर भी मीसबरोँ रैयत की रजामन्दी बिना नील के खत को बदल-बदल नहीं कर सकेंगे और कहीं खेत का बन्दन निया भी जाय तो एक रैयत का सग हुनरे रैयत के खत से बदल न बिबा जाय यदि एसोसियेशन के किसी सदस्य की धिकायत हो तो एसोसियेशन का अधिकार रहता कि उनकी जाँच करें और यदि वह सदस्य एसोसियेशन की बासा न माने तो उसे एसोसियेशन में हटा दिया जाय। सरकार की ओर से बहुत लिखा-पढ़ी होने पर उन्होंने एक नियम और बनाया कि यदि कोई रैयत बीबा पीछ लीन कट्ट में मीस बाया करे तो उसके ओर की मास्युजारी नहीं बढ़ाई जायगी।

इन नियमों के बन जाने पर प्रेमीय सरकार न समझा कि अब चापस बयांति न रह और इसी बिचार से वह चुनचाप बैठी रही। पर साथ ही छाने नाट मर परके ईश्वर का यह भी क्वाब था कि रैयतों के हुस्नों के कारणों में एक प्रधान कारण यह भी था कि जमीनदार लोग अपने गाँवों को मीसबरोँ के हाथ पैबा ब देने हे जिससे उनका रैयतों के ऊपर एक प्रकार का अधिकार हो जाता है और उनके मतान का एक अवसर उनके हाथ का जाता है। पर इस बिषय में उस समय कोई बार्नबाई नहीं की गई। उस बीबा ऊपर धिक्काया जा चुका है मीसबरोँ न अपना और बनिया राज पर और भी जमा लिया। बनिया राज पर बहुत कर्ज हो जाने के कारण सन् १८८८ ई में बिनायन में एक कर्ज ८५ लाख रुपये का उभरा गया। उसकी अदायगी के लिए बहुत से गाँवों का मुकदमा बन्दो-बन्ध मीसबरोँ के साथ किया गया। यह बन्दोबन्ध १४ कोसियों के साथ हुआ जिसमें मात्र तीन थी—मुकीबिया पीपररा तथा पीपीहारी। इनके अभावा काठियों के

बम्पारन में महुआ पौधी

बम्बराया बंबोबस्त का होना भी जारी रहा। इसलिए यद्यपि कुछ दिनों के लिए ऊपर सब कुछ शांत सीकता या पर रैयतों के बुद्धों की आग भीतर ही भीतर सुलग रही थी। मन् १८८७ ई में बिहार प्रांत में बहुत बड़ा अकाल पड़ा इससे बम्पारन में लोगों को बहुत बच्य हुआ। उस समय नीमबरों ने नीम का दाम १०१- से बढ़ाकर १२) की एकड़ कर दिया। पर इसने भी रैयतों को संतोष नहीं हुआ और हो भी कैसे सकता था। जो आप बराबर से सुलगती आई वह समय-समय पर बढ़कती गई। मन् १९ ६ ई में तैलहड़ा कोठी के रैयतों ने उसके अंगरेज मैनेजर मि ब्लूमफील्ड (Mr Bloomfield) को मार डाला। उनमें से कई एक रैयतों पर मुकदमा चलाया गया और तीन आशमियों को जिला जज ने फाँसी का हुकम दे दिया पर हाईकोर्ट में अपील होने पर फाँसी का हुकम रद्द हुआ और उनको छ वर्ष की सख्त कैद की सजा मिली।

पंचवीं अध्याय

१९०७-१९०९

सह्य करन की भी सीमा होती है। नीचे पर यदि जनबान से भी पैर पड़ जाय तो वह भी बरता सेने की कोसिष करती है। और काटन के लिए अपना छोग-मा मुँह कोठ ही बती है। अगले पक्षों के पक्ष से साफ बाहिर होता है कि अप्पारन की प्रजा पीस बोना विलकुल नापसन्द करती थी। वह हम कुछ से हम के लिए राठ-बिन बगवान् से प्रार्थना करती थी। सन् १९०७ तक नीलबतों और रैयतों का सरोकार बीने-ठीने बमदा यमा। सन् १९०९ के कुछ हान ही बेतिया इकाटे में अगाति के बिह्व बेकने में जाये। माठी कोठी के कुछ बमामियों में नील बोन के बिह्व अपनी राय जाहिर की क्योंकि इसने उनको कुछ भी मात्र नहीं था। १९०९ की बाक के कारण उनके धान की फस मारी गई थी इसलिए वे बड़ दुःखी थे। इतर कोठीवाले पहले की तरह नील करामा चाहते थे। अगाति उनहने के कारण वे ही हो सकन है। सन् १९०७ के मार्च में बल हिमाना न मोनीहारी मजिस्ट्रेट के इजलास में एक बरकास्तरी जिनमें और बाती के निवाय यह भी बिका था—

"That for six or seven years, the Sathi factory is oppressing your petitioners in many ways and is exacting from them higher rents and begar labour and forcing your petitioners to cultivate indigo against your petitioners wishes without adequately paying for them and bringing false criminal cases against your petitioners and other tenants to execute indigo Sattas."

अर्थात् छ पा मात्र मात्र में माठी कोठी रैयतों की तरह-तरह से तंग कर रही है। वह हम लोगों में अधिक मागपुकारी क रही है और बेपार का काम करवाती है जबरबस्ती नील बोधानी है और उनका पूरा बाम नहीं बनी और हम लोगों के बिह्व मून पीरबारी का मुकदमा लाकर पीस बोने का मट्टा लियन के लिए हमको बाध्य करती है।"

बल मानी कोठी के मैनेजर, विस्टर एफ. सी. कॉफिन (Mr F. C. Coffin) ने देगा कि नील की रानी अब पूर्ववत् नहीं हो गयी तब उन्होंने सरकारी कर्मचारियों की सहायता की। अर्थात् बिल कारण से ही। अन्य अधिकाधिकों को मजिस्ट्रेट ने कोलास बाम-निकन बना दिया कि किसी तरह बलका न होने पावे। परन्तु कुछ है कि हमने भी अगाति न गयी। नील की लकी के सम्बन्ध में कई प्रकार की पीरबारीयों होनी रही। सन् १९०७ की जुलाई में माठी के दंगल में एक पीरबारी उठी जिनमें काडी के गुमास्ता मुखबरन राम ने पीरबार कुछ वर्षों के बाद आरंभियों पर यह मुर्म लगाया कि इस बोली में

कासीकरण छोटी की कोठी का काम करण से रोका है जब कोठी की ओर से कासीकरण की बुसाइट हुई तो वो मुलाबिब बुलाने के लिए गये वो उनके साथ मारपीट की है। इसमें मुहल्ला लोगों की ओर से यह बचाव बिना गया कि कोठी ने उन लोगों पर केवल बचाव करने के लिए यह मुबयमा बनाया था। उस समय ब्रिटीश के मजिस्ट्रेट मि. ई. एल. टैन्जर (Mr. E. L. Tanner) थे। उन्होंने मुहल्ला को सजा दी।

तारीख १४ अगस्त सन् १९०७ को कोठी के रीयता ने एक दरखास्त अम्पारल के क्लर्क के पास भजी जिसमें उन्होंने अपने बुख की पूरी रामकहाणी कह सुनाई की। इसमें उन्होंने यह भी लिखा था—

"That instead of growing indigo at three kathas per bigha, the factory introduced a new system. In half the area, the factory has compelled your petitioners to grow indigo and in the other half Jai (cots) and that it allows only Rs. 15/- per bigha for Jai although according to our turn deducting expenses of cultivation, it comes up to almost Rs. 45/- per bigha.

That if the total area of indigo and jai cultivated by your petitioners does not come up to three Kathas per bigha, the factory for balance area, realises paddy at the rate of 25 mds. per bigha and if it is not paid in time, its price is realised at the market rate at the time of realisation and that the factory does not pay any compensation for paddy or its prices thus realised

That bullock carts, ploughs, labourers of your petitioners and petitioners themselves are forced to work at one-fourth of the ordinary wages and sometimes for nothing "

अर्थात् "बीचा पीछे ३ बट्टे बीस कराने के बरमे कासी ने जब एक बट्टे बीस बनाई है। बीस की बाबी जमीन में कोठी ने हथ लोगों में बीस कराई है और बकाया बाबी जमीन में बट्टे और एक बीचा बट्टे के लिए हमें केवल १५) रुपय मिलन है यद्यपि लगे बट्टे काटकर पूरी बीचाकर को ४५) रुपये की होती है। यदि बट्टे और बीस की बाबादी मिलकर ३ बट्टे बीचा पीछे न बाबाद किया जाय तो कोठी जो जमीन ३ बट्टे में घटती है उनके लिए बीचा पीछे २५ मन धान हमसे बज्रुन करनी है और यदि लगे पर धान न दिया जाय तो बाबाद कर ने उमरी बीस बज्रुन करनी है और हम धान के लिए बिनी बिरस या बक्या हमें नहीं मिलना।

हमारी बीसगाड़ी हमारे हथ और बज्रुन और स्वयं हम सब को जबरदस्ती कोठी में काम करना पड़ता है और जा बज्रुन और जगह मिलनी है उमरी केवल एक-

बीपाई हमें मिलती है और कभी-कभी तो कुछ भी नहीं मिलता ।

अब मैं उन्होंने जाँच के लिए प्रार्थना की । इस दरखास्त पर मि टी एस मैकडमम (T. S. Macpherson) डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट न मि टैन्जर (Mr. Tanner) को इन सब बातों की जाँच के लिए हुक्म देने हुए लिखा—

"The matters raised are of great importance to the peace of the villages concerned and a sifting enquiry as to the existence of the causes of complaint specified is essential. It should be a wide and unrestricted as possible. I can see that certain persons are ringleaders but it does not at all follow that the agitation, which is so wide spread is without foundation."

अर्थात्, दरखास्त की बातें बेहूत की शानि के लिए आवश्यक हैं । दरखास्त में की गई शिकायतों की बहुत कड़ी जाँच होना आवश्यक है । जाँच जिनकी अधिक और बेरहमीय हो उतना ही अच्छा । मुझे मान्य हुआ है कि इस जांचोपचार को कुछ मजिया लोगों ने सड़ा किया है पर हमने यह नहीं माना होता है कि यह इतना बड़ा जांचोपचार निर्मूलक है ।

अब पड़ता है कि मि टैन्जर ने इनके बुद्धों की मनोपञ्चक जाँच न की क्योंकि सब बुद्ध ने जो वहाँ के लोगों का मुजिया समझा जाता था और लोगों ने मिलकर इस सम्बन्ध में छोटे-छाट के पास एक मेमोरियल भेजा था उसमें उसने इस जाँच के विषय में यह लिखा था—

"That the sub-divisional officer of Betnab went only to three Mauzas and made enquiries of some of your memorialists and then went away leaving the enquiry incomplete."

अर्थात्, बटिया के मजिस्ट्रेट ने कुछ तीन ही मोहों में इस मोहों में कुछ जाँच की और फिर जाँच पूरी बिना ही चल गयी ।

बात यह हो पर हममें मन्दह नहीं कि इस जाँच न रीयों को मन्ताप नहीं हुआ और बगानि ज्यो-क्री-त्यो बनी गयी बनि उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई ।

नवम्बर महीने के आरम्भ में लौरिया गाँव के हादोरा न बटिया के मजिस्ट्रेट के पास एक रिपोर्ट भेजी जिसमें लिखा था कि कुछ रीयन दुमने को मीन बाल न बना करते हैं और माधगुवाटी रीन में भी रोक्ते हैं इसलिये उन पर १०० घारा के अनुसार बार्नबार्न की जाय । मजिस्ट्रेट ने कुछ उक्तों से शानि रखत के लिए मुकदमा किया । देखते रीयन इन बार्नबाइयों में परेमान हो गये । बिना अक गये बिनालों में अकपका मिया मया और बिनालों को डेहापेनी की गई (समान बालनद्विज कुचर बिज गये) । इस सम्बन्ध में डा मेमोरियल छोड़ छाट को दिया गया उसका भी कोई मनोपञ्चक पत्र नहीं हुआ । किन्तु इनने बुद्धों को डालने पर भी रीयन मीन बोने पर राखी नहीं हुए । अब मैं नाट्टी कोट्टी को

मील पैदा करना बन्द कराना पड़ा और रैयतों के सर से एक मारी बोम हटा।

पर कोठी चुप नब्ब बैठ सकती थी। उसने एक दूगल ही रास्ता रैयतों से टपका बमूस करने का निवाला जिससे मील का घाटा पुरा हो जाय।

सन् १८८ में साठी कोठी ने मील बगीरह पटाने की नीबत में पण्डई नदी से एक महूर खुदवाई थी। इस महूर के सम्बन्ध में कोठी न बेनिया राज्य को एक इकरारनामा लिख दिया था जिसमें कोठी न महूर को ठीक रखने का मार लिखा था और उसमें एक शर्त यह भी थी कि 'रैयत महूर के पानी से बिना मूस्य अपना सत सींच सकवे।

जब तक रैयत कोठी के लिए मील बाँटे चल गये तब तक उनको मील के जेत सींचने के लिए पानी मुफ्त में मिलना था। जब १९८ म कोठी ने मील बोला बन्द कर दिया तब रैयतों में पानी के लिए भी बीबा १) रपय कोठी ने बमूस करना शुरू किया। इसका नाम पैत लर्चा पड़ा। जिसका की इच्छा यह ३) रपये वन की बिलकुल सही थी। तथापि कोठी न अपने काम को पक्का बरत के लिए हूर आसामी से एक इकरारनामा लिखा लिया। जो आसामी इसके सिबब से इनकार करत व कहा जाता है कि उनमें अबबरसनी लिखाया गया। इस काम के लिए साठी कोठी में सरकार की ओर से एक नाम रजिस्ट्रार रख गये। कुछ दिन पहले कोठी के बिगड लख होन में भागो की जा बसा हुर्न भी वह उन्हु मानूम था। इसलिये इच्छा न रहने हुए भी माग जय के उन लायो न इकरारनामा लिख दिया। इकरारनाम म कोठी न पुरा पानी देन का बादा लिया। पर वह धर्म बेबल कायम पर ही स्थिर के लिए था। जिस बिनामों के कल तक पानी सही पहुँच सकता था जा इन पैत न कुछ भी लपर सही उठा सकते व उनमें भी बीबा पीछे ३) रपय बमूस रिय गये। सन् १९१३ १५ म सर्वे के समय मारी बेजाल के रैयतो न पैत लर्चा बने में इनकार कर दिया और इसकी मिकामत की। सर्वे के अफसरों की जाँच में मानूम पडा कि मचमुच उन रैयतो में पैत लर्चा बमूस किया गया था जिसको नमन कुछ भी काम सही। पूरी जाँच के बाद कोठी बाका की पाल लुन गई। व सट्टे दिनका रैयतो न मिले व मम्मन विय बय और पैत लर्चा अबबाब मुमार करवे बन्द कर दिया गया। रैयतो न इस बात को लुगी में बचुम किया और उनका पैत लर्चा सम्बन्धी बुन बुर हुआ। जब जिसका पानी की अवरत पटनी है वह लया देकर लगा है।

जिस प्रकार साठी बागी के बहान में बिना बिमा मन्ने के मील उपजाया जाता था उसी प्रकार बनिया मच-हिर्वाजल की और बर्न बाडिया म भी मील उपजाया जाता था। सन् १ ३५ में साठी कोठी के रैयतो न मील बाना छीर दिया। यह बात आम आम के लालों का भी मारन हु गई। बल बया था व अब तक मील के अफसर व अफर रह लखने व १ मच-मच बरके उन भागो में मील बागा बन्द करवा शुरू किया। मारी बागी में मील बन्द बरत में गग गुलाब न बडा मान लिया था। उनके उराहण म ओयो के दिव में और भी माहन और उम्माह बर जाया। गग गुलाब का बडी भाँति आबिड और तारीफ

सति उद्यमी पड़ी बिष्णु रैयनों की आँखों में उनका मान बहुत ही बढ़ गया। उनको वे अपना आदर्श तथा मन्त्रा स्त्रीपी समझन लगे।

माझी कोठी के निष्ठा ही पर्या काठी है। यहाँ के रैयनों में सन् १९०८ के मितम्बर में कुछ-कुछ अशांति के चिह्न दिखा पड़े। बिजयादसमी के समय बेनिया में बड़ा भारी मेला लगना है। इसमें दूर-दूर से लोगों के लोग आते हैं। इस साल रैयनों ने अपना काम के लिए एक अच्छा सामान मंगाया। मत्त में एक मुसाब और शीतल राय एक दूसरे आदमी को परमा कोठी के निकट खून से ने रैयनों के काम पूरन आरम्भ दिय और नील नाम के बिरुद लोगों को उकसाने लग। यहाँ तक कि नीलबरो का निवासियों की तरफ़ीब भी बनाने लगे। मेला लगने होने पर रैयन अपने-अपने गरो में जाकर इसकी जर्जा करने लग जिसमें लोगों के स्थान और-और बढ़ाने लगे। नील का मुकोच्छेदन करने में शीतल राय निमोजाल में पड़ गया। वह रात में लोगों को इकट्ठा करके नील न बोने का उपदेश करने लग। इस समझौते में लोगों में शपथ भी खली थी। यह अशांति बिधापकर मन्त्रिणा परमा बेनिया और बुडिया कोठियों में हो रही। ऐसा भी कहा जाता है कि रैयना न एक दूसरे को बुझाने के लिए एक सांकेतिक धाराज ठीक कर ली थी जिस आवाज के निकलन ही कई बार रैयन मुरख इकट्ठे हो जाने से। सन् १९०८ की १९वीं अक्टूबर को रैयना न स्पष्ट रूप से बन्दबा शुरू कर दिया और परमा कोठी के विप्राहिया के साथ मारपीट भी की। ऐसा भी सुना गया है कि रैयन लोग उस कोठी के पनवर पर भी हमला करने में बाज न आये। इस बन्दे की खबर गवर्नमेंट को मुरख भेजी गई। इसको गवर्नने के लिए गवर्नमेंट ने बीबी पुलिस भेज दी। ता २६ अक्टूबर को शीतल राय तथा एक और धनिक मारवादी एबुसम निरखार कर लिया गया। आज भी लोग कहते हैं कि उस समय पुलिस के विप्राहियों न तथा गौरवों ने लोगों को बड़ा नंग किया था। आसकर इन्स्पेक्टर नाइट (Inspector Knight) का नाम उस स्थान के रैयनों की आज तक नहीं सुना है और न उस घायलक बाई का वहाँ के रैयन कभी भूल सकने हैं। उस समय के प्राय सभी पत्रों में इस घटना की आलाचना हुई थी। स्टेट्समैन (The Statesman of Calcutta) ने एक विषय मंत्रादशाता कहा था जिसमें २५ नवम्बर को यों लिखा था—

"A remarkable state of affairs exists at the present moment at Bettiah in the Champaran District of Bihar. Disputes between the planters and the *ryots* have led to acts of hostility and in order to protect the European population large forces of Bengal armed police and Gurkhas have been drafted into the town and its neighbourhood. Fifty rounds of ball ammunition have been served out to each member of the Bihar Light House and in parts the Division has assumed perfectly war-like appearance. Seven cases have been reported to the police in which Europeans were attacked. Other

नील पैदा करना बन्द कराना पड़ा और रैयतों के सर से एक भारी बोझ हुआ।

पर कोठी चुप बन्द बैठ सबरी थी। उसने एक दूसरा ही रास्ता रैयतों से रुपये वसूल करने का निकाला जिसमें नील का बाटा पूरा हो जाय।

सन् १८८८ में सागी कोठी ने नील बरीरह पटाने की नीयत में पच्छई नदी से एक महार नुबवाई की। इस महार के सम्बन्ध में कोठी ने बेतिया राज्य को एक इकरारनामा लिख दिया था जिसमें कोठी ने महार को ठीक रखने का भार लिखा था और उसमें एक धर्त यह भी थी कि 'रैयत महार के पानी से बिना मूस्य अपना लठ सीक सकेंगे।

जब तक रैयत कोठी के लिए नील बोले चले यथ तब तक उनका नील के जेन सीकने के लिए पानी मुफ्त में मिलना था। जब १८८८ में कोठी ने नील बोलत बन्द कर दिया तब रैयतों ने पानी के लिए भी बीधा १) रुपये कोठी ने वसूल करना शुरू किया। इनका नाम 'पैम' लर्वा पड़ा। जिसको भी इच्छा यह १) रुपये देन की बिलकुल नहीं थी। तथापि कोठी ने अपने नाम को पक्का करने के लिए हर आमासी से एक इकरारनामा लिखा लिया। जो आमासी इनके मिलने से इनकार करते थे कहा जाता है कि उनसे जबरदस्ती लिताया गया। इस काम के लिए साठी कोठी में सरकार की ओर से एक काम रजिस्ट्रार रसे गए। कुछ दिन पहले कोठी के बिन्दु लड़ हान में लागे थी जो बहा हुई थी वह उन्हें भाग्य का। इसलिये इच्छा न रखने हुए भी मारे मय के उन लागे न इकरारनामा लिख दिया। इक राखनाम में कोठी ने पूरा पानी देने का वादा किया। पर यह धर्म कबल कामज पर ही लिखने के लिए था। जिस बिमाजों के जेन तक पानी नहीं पहुँच सकता था जो इन पैम से कुछ भी लय नहीं उठा सकते थे उनमें भी बीधा पीछ १) रुपये वसूल किये गये। सन् १९१३-१५ के सर्वे के समय साठी बेहान के रैयतों ने पैम लर्वा हान में इनकार कर दिया और इसकी मिकाल की। सर्वे के अफगने की जीव में भाग्य पड़ा कि लक्ष्मण उन रैयतों में पैम लर्वा वसूल किया गया था जिसको इसमें कुछ भी लाभ नहीं। पूरी जीव के बाद कोठी जाया की पील लुप्त गई। न मद्दे जिसको रैयतों ने जिना से मुम्बर किम बय और पैम लर्वा जवबाब गुमार करके बन्द कर दिया गया। रैयतों ने इन काम का लुगी में बन्द किया और उनका पैम लर्वा सम्बन्धी कुछ दूर हुआ। जब जिसका पानी की जबरन पानी है वह रयता देख लता है।

जिस प्रकार सागी कोठी के बेहान में जिना जिना मद्दे न नील उपजाया जाता था उसी प्रकार बलिया लव-हिबीजल की और बन्द बोटिया में भी नील उपजाया जाता था। सन् १८८८ में साठी कोठी ने रैयतों में नील बोला छोड़ दिया। यह बात आम आम के लोगों का भी भाग्य हुआ। जब गया था वे जब तक नील के बन्द में जवाब दे रह लाने थे ? तब-तब तक वे उन लागे ने नील बोला बन्द करवा शुरू किया। सागी कोठी में नील बन्द करने में धार बराब न बड़ा भाग लिया था। उनका उदाहरण में लता के दिम में और भी गाग और उमाह कर आया। धन गुमाह का बड़ी सागी आधिक और पारिपरि

कति उठनी पड़ी किन्तु रैयतों की आँखों में उनका मान बहुत ही बढ़ गया। उनको वे अपना भावसँ तथा सम्मान हितैषी समझने लगे।

साठी कोठी के निकट ही पर्सो कोठी है। वहाँ के रैयतों में सन् १९०८ के सितम्बर में कुछ-कुछ अशान्ति के चिह्न भील पड़े। बिजयाचामी के समय बंठिया म बड़ा भारी मेला लगता है। इसमें दूर-दूर से देशतो के लोग आते हैं। इस साल रैयतों ने अपने काम के लिए एक बज्जा साधन समझा। मेले में शेख मुलाब और शीतल राम एक दूसरे बाधनी को परमा कोठी के निकट खूब से से रैयतों के काम पहुँचने आरम्भ किये और नील बोन के बिस्व कोलों को उकसाने लगे। यहाँ तक कि नीलबरो को निकालने की तरकीब भी बताने लगे। मेला खत्म होने पर रैयत अपने-अपने बरो म जाकर इसकी बर्बा करने लगे जिससे लोपों के व्यापार और-बीरे बरसने लगे। नील का मुतोच्छेदन करने म शीतल राम दिसोजाल से पड़ गये। वे रात में लोपों को इकट्ठा करके नील न बोन का उपरोस करने लगे। इन घमासों में सेतो से शपथ भी जाती थी। यह बसाति विशेषकर मल्लहिया परमा बंठिया और कुडिया कोठियों म हो रही। ऐसा भी कहा जाता है कि रैयतों न एक दूसरे को बुलाने के लिए एक सांकेतिक आवाज ठोक कर ली थी जिस आवाज के निकलत ही कई गाँव के रैयत मुरन्त इकट्ठे हो जाते थे। सन् १९०८ की १९वीं अक्टूबर को रैयतों न स्पष्ट रूप से बलवा सुरू कर दिया और परमा कोठी के सिपाहियों के साथ मारपीट भी की। ऐसा भी मुना गया है कि रैयत लोग उस काटी के मैदान पर भी हमला करने में बाज न आये। इस बसने की खबर मजर्नबैष्ट को मुरन्त मेजी गई। इसकी रोकने के लिए मजर्नबैष्ट ने फौजी पुलिस भेज दी। ता २९ अक्टूबर को शीतल राम तथा एक और बलिक मारवाड़ी राजूमस विरफ्तार कर लिये गये। बाब भी लोप बहते हैं कि उस समय पुलिस के सिपाहियों ने तथा पोरसा ने कोलों को बड़ा तंग किया था। जालकर इन्स्पेक्टर माइन् (Inspector Knight) का नाम उस स्थान के रैयतों को बाब तक गही मूला है और न उस भयानक कांड को वहाँ के रैयत कभी मूल नकने है। उस समय के प्रायः सभी पत्रों में इस घटना की बातचीत हुई थी। स्टेट्समन (The Statesman of Calcutta) न एक विषय संवादना भेजा था जिसने २७ नवम्बर का था लिखा था—

"A remarkable state of affairs exists at the present moment at Bettiah in the Champaran District of Bihar. Disputes between the planters and the *ryots* have led to acts of hostility and in order to protect the European population large forces of Bengal armed police and Gurkhas have been drafted into the town and its neighbourhood. Fifty rounds of ball ammunition have been served out to each member of the Bihar Light House and in parts the Division has assumed perfectly war-like appearance. Seven cases have been reported to the police in which Europeans were attacked. Other

stories are current in the neighbourhood of equestrians being ambushed, of frantic rides along jungle paths through crowds of ruffians armed with lathis and of inoffensive folk being molested on the highway. Police Inspector Knight was himself badly mauled by a Badmash with a lathi. Mr. Maxwell Smith a planter was chased by a mob and a tumtum belonging to Mr. Moore factory manager was burnt at Muzafferpur.

On Wednesday last nineteen persons were convicted here under Sec 143 I P. C. for being members of an unlawful assembly and sentenced, besides graduated fines in each case to the full term of six months solitary confinement. There are now no less than 200 prisoners awaiting their trial at Mowhari under various charges chiefly for assaulting Europeans for arson and under Sec 503 for inciting class against class. The principal accused in this group is Sital Roy who holds ryotu lands under Mr. S. E. Coffin of the Sathi factory in Bettiah Sub-Division. Radburnall a Marwari Banker and Ramswarath his Gurmasta were arrested recently.

बम्बारे बिहार के बम्बारे जिले के बम्बारे सब-डिवीजन में इस समय बिबिध स्थिति हो रही है। नीलबारी और रेक्का के बीच लड़ाई हमने से बम्बारे के कार्य शुरू हुए हैं और यूरोपियनों की रक्षा के लिए बम्बारे इन्डियन ब्रिगेड पुलिस और गारम्बा की बड़ी कौश धर और उनके बाम-बाम की जगहों में लाकर रखी गई है। बिहार लाइट हाइड्रम के इर मेम्बर का पचास-पचास फायर क लाइफ छत्र दिने बने हैं और कुछ बड़ों में सब-डिवीजन में पूरे और में जंगी घबरा कर ली है। पुलिस की मान लगे मामला की रिपोर्ट मिली है कि बम्बारे पर हमला न छाया मारा है जबकी राम्बा पर लठक्क बम्बारे के बरोह होकर बम्बारे मेक-मेक कर पोहा बीसकर निरम मान हैं और बम्बारे लान बम्बारे पर सहाय बने हैं। पूर पुलिस इन्डियन लाइट पर लक बम्बारे न लाठी बा बुरी तरह से बार किया बा। एक एक के मान में मि मैसबर्नमिब मान के बीचबर बा पीछा किया और बोटी के मैसबर् मि मूर बा लक टमटन मुकडरपुर में जंग दिना मया।

मल बुबारे को बर्निया में १ बारमिया का दया १४३ के बम्बारे बम्बारे बम्बारे के मैसबर् होने के बम्बारे पर मुर्तन के अलाव छ ७ बर्निय एराम्बाम बम्बारे मजदूर हैं। इस समय की सी में बम्बारे बम्बारे हैं जिन पर बम्बारे बम्बारे पर जिनमें यूरोपियनों पर हमला करने बाग लगाने और दया ५ ५ के बम्बारे बम्बारे जिन में बम्बारे उग्रम करने के बम्बारे मुक्य है मोलीशारी में मामला मया है। इस दय में बम्बारे बम्बारे बम्बारे सब-डिवीजन की मान लाठी में मैसबर् मि लक ई बम्बारे बा मैस

सीतल राम है। रामूलन नाम का एक मारवाड़ी महाजन और उसका गुमास्ता राम-स्वारूप हारु ही में मिलतार बिम्बे पड़े हैं।

ता २८ नवम्बर १९०८ को बंगाल व्यवस्थापिका सभा की एक बैठक हुई जिसमें एक प्रश्न के उत्तर में माननीय मि. ड्यूक ने यह कहा था—

"The attention of the Government has been directed to the disturbances in Champaran ever since they commenced. Its attention was first attracted by the actual occurrence of breaches of the peace, for no representation had been addressed to it or any of its officers on behalf of the persons who created the disturbance until breaches of the peace had taken place and the law had been put in motion to repress them. Government is not aware that any person had to be released in consequence of the absence of its sanction to prosecute them, as sanction was granted in the cases in which it was asked for. It is not possible to answer in further detail at present, but Government has set itself to restore order and repress crime. The neighbourhood is generally quiet and as soon as it is reasonably certain that there will be no further resort to violence a full enquiry will be made into the causes of the outbreak. An experienced officer has been selected and furnished with full instructions as to the subjects to be examined but no such enquiry could be undertaken without greater danger to the public peace or usefully conducted so long as the peace of the District continues to be disturbed.

जबान् बम्बारन में अब से स्यान्ति शुरू हुई अभी मैं उन और सरकार का ध्यान रहा है। पहले-पहल सरकार का ध्यान स्यान्ति-अन होन ही पर आकर्षित हुआ क्योंकि इनके पहले दैवतों की ओर से सरकार में कोई बरकबास्त नहीं थी गई थी। सरकार को इनकी खबर नहीं है कि मुखरना बलन की मंजूरी नहीं मिलन के कारण कोई अभिमुख छोड़ दिया गया हो क्योंकि कुछ मुखरनों की मंजूरी सरकार की ओर से मीमल पर, दे की गई थी। इस समय ज्यादा तकनीक के माध काम उत्तर नहीं दिया जा सकता है पर सरकार वही स्यान्ति स्थापित करन तथा जर्म रोजन का प्रयत्न कर रही है। वही के आन-नाम के गाँवों में अब स्यान्ति स्थापित हो गई है और ज्योंही स्यान्ति-अन का दर दूर हो जमगा इन घटना के कारणों की पूरी जाँच की जायगी। इस काम के लिए एक तज्ज्ञ कार भण्डार चुने गये हैं और उनका जाँच के सम्बन्ध में पूरी हिदायत की गई है। पर अब तक जिसे में स्यान्ति स्थापित न हो आय तब तक किसी प्रकार की जाँच नहीं की जा सकती क्योंकि उनसे अधिक स्यान्ति फैलने का भय है।

जो मुखरने खलाय गये वे थे सब बगिया के अभिष्ट नहीं दल बनने व। इसलिए

stories are current in the neighbourhood of equestrians being ambushed, of frantic rides along jungle paths through crowds of ruffians armed with Lathis and of inoffensive folk being molested on the highway. Police Inspector Knight was himself badly mauled by a Badmash with a lathi. Mr Maxwell Smith a planter was chased by a mob and a tumtum belonging to Mr Moore factory manager was burnt at Muzafferpur.

"On Wednesday last nineteen persons were convicted here under Sec 143 I P C. for being members of an unlawful assembly and sentenced, besides graduated fines in each case to the full term of six months solitary confinement. There are now no less than 200 prisoners awaiting their trial at Mouhar under various charges chiefly for assaulting Europeans for arson and under Sec 503 for inciting class against class. The principal accused in this group is Sital Roy who holds ryot lands under Mr S E Coffin of the Sathu factory in Bettiah Sub-Division. Radhumall a Marwari Banker and Lamswarath his Gurnasta were arrested recently.

अर्थात् बिहार के कानून जिले के बगिया सब-डिवीजन में इस समय बिचल स्थिति हो रही है। नीलबरो और रीयों के बीच लड़ा होना में बहुत बड़ा कार्य शुरू हो और यूरोपियनों की रक्षा के लिए बगिया हजिमावर पुलिस और बोरवा की बड़ी फौज गाहर और उनके आम-पाम की जगहों में लाकर रखी गई है। बिहार काइट हाऊस के हर मेम्बर का पचाम-पचाम फायर के साथ-करो दिये गये हैं और कुछ जगहों में सब-डिवीजन में पूरे तौर में बड़ी सचल बराम कर ली है। पुलिस का मान ऐसे मामला की रिपोर्ट मिली है कि जिनमें यूरोपियनों पर हमला हुआ है और अचवाहूँ की अडाम-बडाल में उड़ रही है और बगिया पर लगी न छापा मारा है। जंगली रास्ता पर लठबल बरमाओ के गराह होकर बगियावर उल्लेख कर छोड़ा बीडाकर निबल भाग है और बेचमूर कोल मडका पर मराये गये हैं। कुछ पुलिस इस्तेफा नाइट पर एक बरमाव न लाठी का बुरी तरह से बर बिना था। एक दल के लोगों ने मि मेकमबलस्मिथ नाम के नीलबरो का पीछा किया और कोटी के मेनजर मि मूर का एक टमलम मूजफरपुर में जला दिया गया।

यह बगियावर को बेगिया में १ आरमिया का दल १४३ के बमूजिब नावायन बल के मेम्बर होने के अधिनियम पर जुर्माने के अन्वय में छ-छ महीने एवालायन बल की सजा हुई। इस समय को सी स कम जादमी नहीं है जिन पर कई अधिनियमों पर, जिनमें यूरोपियनों पर हमला करने जान लपाने और दल ५५ के बमूजिब जति जति में भूया उल्लेख करने के अधिनियम मुख्य है मोलीहारी में मामला वेग है। इस दल में प्रभाव अधिवृत्त बेगिया सब-डिवीजन की लाठी कोटी के मेनजर मि एस ई काफिर बा रीय

वीरब राम हैं। राजूमल नाम का एक मारवाड़ी महाजन और उसका मुमास्ता राम स्वारथ हाल ही में गिरफ्तार किये गये हैं।

ता २८ नवम्बर १९०८ को बमाल व्यवस्थापिका सभा की एक बैठक हुई जिसमें एक प्रश्न के उत्तर में माननीय मि. ह्यूक ने यह कहा था—

"The attention of the Government has been directed to the disturbances in Champaran ever since they commenced. Its attention was first attracted by the actual occurrence of breaches of the peace for no representation had been addressed to it or any of its officers on behalf of the persons who created the disturbance until breaches of the peace had taken place and the law had been put in motion to repress them. Government is not aware that any person had to be released in consequence of the absence of its sanction to prosecute them, as sanction was granted in the cases in which it was asked for. It is not possible to answer in further detail at present, but Government has set itself to restore order and repress crime. The neighbourhood is generally quiet and as soon as it is reasonably certain that there will be no further resort to violence, a full enquiry will be made into the causes of the outbreak. An experienced officer has been selected and furnished with full instructions as to the subjects to be examined but no such enquiry could be undertaken without greater danger to the public peace or usefully conducted so long as the peace of the District continues to be disturbed.

मर्यादा व्यवस्था में जब से व्यवस्था शुरू हुई तभी से उस ओर सरकार का ध्यान रहा है। पहल-पहल सरकार का ध्यान धानि-मग होने ही पर स्थापित हुआ क्योंकि इसके पहल दैन्यों की ओर से सरकार में कोई बरकबास्त नहीं की गई थी। सरकार की इसकी लखर नहीं है कि मुकदमा चलाने की मजूरी नहीं मिलन व कारण कोई कमिपुक्त छोड़ दिया गया है क्योंकि कुछ मुकदमों की मजूरी सरकार की ओर से मांगन पर, दे दी गई थी। इस समय ज्यादा तकनीक के साथ कोई उत्तर नहीं दिया जा सकता है पर सरकार वहाँ धानि स्थापित करन तथा जूम रोपन का प्रयत्न कर रही है। वहाँ के जाल-जाल के मौकों में अब धानि स्थापित हो गई है और ज्योंही धानि-मग का डर दूर हो जायगा इस बटमा के कारणों की पूरी जाँच की जायगी। इस काम के लिए एक तजरबेदार अधीक्षक चुन गये हैं और उनको जाँच के सम्बन्ध में पूरी हिदायत दी गई है। पर जब तक जिले में धानि स्थापित न हो जाय तब तक बिर्सा प्रकार की जाँच नहीं की जा सकती क्योंकि उसमें अधिक व्यवस्था रूकन का समय है।

जो मुकदमा बकाय समय से अब बर्निया के जजिस्ट नहीं बका करने से। इसलिये

गवर्नमेंट ने एक जास मजिस्ट्रेट मि गुड (Mr Goode) को भेजा। प्रायः १ मुकदम हुए जिनमें कोई १० से अधिक अभियुक्तों को सजा मिली। राजूमन ने अपना अपराध कबूल किया और १ ०) रुपये के जुर्माने पर छूटे। सीतल राम को २ वर्ष ६ महीने की सजा दी गई और २ ०) रुपये जुर्माने का हुक्म हुआ। सरकार ने इस इलाके में विशेष पुलिस (Punitive police) बैठा दी जो इस बेहाल में मगम्बर सन् १९८ से लेकर ब्रिगेड सन् १९९ तक रही। इसका सारा खर्च रैयतों से ही बसूक किया गया। अनुमानतः उस समय रैयतों से १ ०) रुपये बसूक किये गये।

ऊपर कहा गया है कि जब कभी अम्पारन के रैयतों ने अपने दुःखों से उबरकर सर उठाने की कोशिश की है तो नीकबरो ने उसका सारा बोझ बाहर के लोगों पर ही मढ़ना चाहा है। अपनी प्रकृति के अनुसार इस बार भी नीकबरो ने वैसा ही करना चाहा था कि बलाश्रियों ने यहाँ जाकर राजनैतिक आंदोलन कर दिया है इसी कारण यहाँ के रैयत बिगड़ लगे हुए हैं। परन्तु यह बात बिल्कुल बकबद की थी क्योंकि उसी समय ता २ दिसम्बर १९०८ के स्टेट्समैन (Statesman) के बिशप सचिवराय ने इस तथा अन्य बिषयों की समालोचना करते हुए लिखा था—

"The expediency of a departmental enquiry by the Government into the troubles of the planters and the grievances of the *ryots* will probably have been suggested by my last letter upon the present situation in this Sub-Division of Champaran. From enquiries I have made today it seems that some action by the Government is generally regarded as not only desirable but necessary and as the wish is father to the thought, it is hinted as a possibility that a commission may be appointed when the Police Court cases are over in order that a thorough investigation may be made. In the meantime in view of this not unlikely contingency it is only fair to those who are connected in any way with the case that I should publish the result of my interviews with *ryots* and so to collate and confront them with the recorded statements of the planters.

"At the outset I must record certain alleged acts of reprisal on the part of the factory servants and so-called 'friendly villagers' who, now that they are backed by bayonets and rifles, have, it is said turned upon the enemy in some parts of the District with retaliatory Lathi blows. During the riots of the *ryots* some hard knocks were occasionally given, as the evidence shows, and some of those who were knocked in the first place have, it is rumoured been returning the compliment with compound interest. While walking early this morning through the bazar an individual of the coolie variety

came running to me with a lamentable tale of assault and battery committed upon him by a factory peon. He shed more tears in five minutes than I should otherwise have considered possible in the case of a man, and pointing to his body he indicated by weird gesticulations a great wound which clearly indicated the impression of a bound bamboo. I gave him some pice and told him to place his complaints before the magistrate and as he received the money with favour and the instructions with disfavour there, it seemed, the matter had ended. Upon my return to the place of tents, however an ox waggon drew up to my door and by most painful lamentations my attention was drawn to the occupants. What I saw then is common enough to those who have trailed through a campaign but unless war has actually broken out in this usually peaceful province it was a sight to be wondered at. The waggon contained a party of wounded men. One had a blood-stained bandage round his arm. Another had his jaws tied up in a cloth and upon this there were blood-stains upon the party generally there were contusions and abrasions. A white-haired person in the group who did all the howling seemed to have nothing the matter with him at all, however and it was he who told the story the truth or falsity of which must be left to another tribunal, as to an alleged assault by factory servants, in the absence of the proprietor upon his unfortunate companions. If any reliance can be placed upon the garrulous individual in question, the planter would be well advised if in future he keeps a sharp eye upon his friendlies."

I have been requested by some of the planters to deny the statement, which has evidently gained some evidence that the recent agitation was engineered by Bengalee agitators. The observation appeared, I am told in a certain Calcutta newspaper. One has only to live five minutes in Bethnah to realise the absurdity of the contention made by the correspondent in the present instance for there is an inherited antipathy undefined as Indian antipathies often are, between Bengalees and Beharees which at once precludes the argument. A Bengalee anarchist would probably get as much chance of a hearing in Bethnah as Moody and Sankey might have done in Mecca. On the other hand it would generally speaking be just as profitable to expound a problem of Euclid or to deliver an exposition upon Somatology as to preach politics to the Bettiahis. The existing trouble

is purely agrarian. The *ryots* have held their holdings for generations, they rarely pass beyond the limitations of the farm, they know nothing and care nothing about the hubbub of the outside world the entire interest of each one of them is centered upon his own individual paddy patch. In the Police Court evidence, it is said that the *ryots* conspired to drive the *sahibs* out of the country" but the country" in their case means the Bettiah Sub-Division not the Indian Empire, and it is erroneous to suppose that the agitation has any thing to do with Bengalee anarchy.

I interviewed today some persons whose names need not be mentioned, within the dukul of a certain factory where the agitation commenced in the first instance. The *ryots* in this dukul have not renewed the *sattas* of their forefathers and they contend, in the absence of any agreement to the contrary that they are under no obligation to cultivate indigo on their farms for the use of the factories.

THE QUESTION OF COMPULSION

"Has any compulsion been made in order to induce you to grow indigo?" was the first question put to the visitors from Sathi.

"Since last year there has been no compulsion" said one of the men either as regards indigo or any other crop for the benefit of the factory. We have merely to pay Rs. 3/ per bigha in order to evade the obligation to devote three kathas in the bigha to indigo cultivation."

"By that payment you acknowledge the existence of some sort of obligation?"

"Yes" replied the second man, under the old *Sattas* we were paid Rs. 19/ per bigha for growing indigo. Although we have now no formal *Sattas*, we have hitherto been growing indigo under the conditions contained in the former contracts. For about twenty-five years, we have worked without *Sattas*. For the past thirty years no new agreements have been introduced until recently. I have never seen a *Satta*. The *sahib* was quite willing to go on without them, seeing no necessity for their re-introduction. Last year however the *Sahib* purchased about 400 rupees worth of agreement stamps, and in some places, by force he compelled the *assams* to sign new '*Sattas*'. They have since petitioned the collector stating that they were compelled by the *Sahib* against their will to subscribe to

these new contracts. Under the *Sattas* a *ryot* receives Rs. 15 per bigha for oats and Rs. 19 for indigo but from our own country crops we can make Rs. 40 to 50 per bigha. A bigha would realise from 60 to 70 maunds of oats, and in the rainy season, when oats (a winter crop) have been harvested we are able to get a full crop of paddy which may possibly come to from 60 to 65 maunds, which would realise about Rs. 120

"What do you mean when you say that your brothers were forced to sign new agreements?"

"They were compelled by the institution of false charges and imprisonment. Last year there were several cases against my relatives, and they were bound down to keep the peace."

Is it not a fact that after the indigo is cut, you are at liberty to grow *rahi* for your own use on the indigo land?"

"We are not allowed to do so. The land must lie fallow until the next sowing in order to increase its productiveness. The introduction of Java seed is an experiment and at present it occupies the ground for three years to the exclusion of country crops. We do not want to grow indigo. As regards sugarcane, it does not pay us sufficiently to cultivate it for the factories. We can make much bigger profits if we grow crops for ourselves in our own way

"If that is true, how do you account for so much sugarcane being sent to a factory by outside *ryots* who are under no such compulsion as you suggest?"

It comes about in this way. The *ryots* grow cane in order to convert it into golden sugar. They have not the requisite machinery for converting their entire crop and what remains of the cane is sold to the factories. The factories have sufficient land of their own both for indigo and sugar and they should therefore allow us the freedom of doing as we like."

"You were contented and happy in the past while working for the *Sahibs*. Why have you changed your attitude so suddenly?"

"At a time when foodstuffs were cheap, we were willing to grow indigo. For the last few years, however there has been drought and scarcity and the prices of cereals have gone up and we can now make larger profits from our own crops. When growing indigo we are engaged in that work throughout the year and our own lands are neglected and we have to pay *backsets* to the *Sahib* the *Wahidar*

and *holders* of the factories, if we do not, they make us do extra work, which is objectionable to us and the dhangars who did the menial work in the past, at 4 annas per day have been sent away and we are compelled to do their task ourselves, at 5 or 6 pice for these reasons we do not wish to contract with the Sahibs for the cultivation of indigo."

मर्चान्त मेने अपनी पत पिठठी में इसका इशारा किया है कि इस सब विबीजन के रैयतों के बुझों तथा नीलबरो की शिकायतों की जाँच सरकार द्वारा होनी चाहिए। आज की जाँच से मुझ मालूम हुआ है कि सरकारी जाँच उपयुक्त ही नहीं बल्कि आवश्यक भी समझी जाती है। और यह कहा जाता है कि शायद इस काम के लिए जो मुकदमे पैदा हैं उनके खर्च हो जाय के बाद एक कमीशन मुकदर हो जो इन सब बातों के विषय में पूरी जाँच करे। इस जाँच में मैं मुनाजिब समझता हूँ कि रैयतों के द्वारा जो कुछ मुझ मालूम हुआ है उसको प्रकाशित कर दूँ ताकि नीलबरो के ध्यान में उसका मुकाबला किया जाय। शुरु में मैं उस ध्यान का जो कि कांठी के नीलकों तथा 'मेसी रैयतों के विषय में उनकी उन कारबाइयों के सम्बन्ध में जो वे मसीन और बन्धूक की मदद पाकर अपने विपत्ती से कांठी द्वारा बदला सेन के लिए कर रहे हैं उसका कर देना चाहता हूँ। रैयतों के बंध के समय में कुछ लोगों को गहरी चोट लगी थी। ऐसे लोग अब मृत के साथ बदला ले रहे हैं। आज मुझ को जब मैं बाजार का रहा था एक कुली मेरी का आदमी मेरे पास दौड़ा हुआ आया और अपनी मार की कहानी सुनाई। वह बहुत रोया और अपने बदन पर कांठी का शान दिख लाया। हमने उसे कुछ पैसे दिये और मजिस्ट्रेट के पास गमिश कराने को कहा। पैसे उसने कुली से से स्विच पर मेरी सलाह उसे अच्छी न ली। मैं समझा कि यह बात यही खत्म हो गई। जब मैं अपने जेल के पास लौटा तो एक बैसमाड़ी पर सवार कई आदमी लेंटे हुए, कई आदमी रोते हुए मेरे पास पहुँचे। जिन लोगों ने कहाई देखी है उन लोगों ने ऐसे दृश्य बहुत देखे होंगे। पर इस मात्त प्रांत में ऐसे दृश्य का बसना बहुत आश्चर्यजनक था। बाड़ी पर बस्ती लोग सब थे। एक आदमी का हाथ जून आलूवा बपड़े में बँधा हुआ था। दूसरे के घले में बैसा ही जून आलूवा बपड़े में बँधा हुआ था। प्रायः सबों के शरीर पर चोट के निशान थे। उनमें से एक बूढ़े में जो सबों के बरके बोलता था पर जिन पर कोई जाँच नहीं होकर पड़ी उन लोगों की रामकहानी कह सुनाई। किसी कोरी के मुनाजिबों ने अपने मासिक की अनुपस्थिति में इन सबों की सफर ली है। इसकी सचाई और मूटई का विचार मरामत कर लकड़ी है पर यदि यह बात सच है तो उन नीलबरो महाधम को चाहिए कि वे अपने मुनाजिबों और पीरजगुओं पर करी जियाहू करें।

जब नीलबरो ने मुझसे इसका प्रतिबाध करने का कहा है कि यहाँ का आदोलन बंगाली आदोलकों में सड़ा किया है। मेने मुना है कि यह बात कमकत के किसी समाचार पत्र में निकली है। पर पाँच ही मिनट बेतिया में रहने में मालूम हो जायगा कि यह बात

बिजनी बजड की है क्योंकि बंशामी और बिहारी के बीच एक प्रकार का निश्चित विरोध बर्मान में चला जा रहा है। बराजक इस बातें बगामियों की यहाँ कोई मुन्या ही नहीं। बतिपा के रैयतों को राजनीति का कुछ तथ्य समझाना हैना ही मुश्किल है जितना उनको रेआमनित का कोई कुछ प्रश्न समझाना। यहाँ की अग्रान्ति बिलकुल सली के विषय में है। पुस्तक-र-गुप्त में रैयत खती करते आये हैं और अपने सगा के बाहर व बायव ही सभी तय ही। बाहर बुनिया की बागो की न ली उम्ह कोई खबर है और न परबाह। पात्रवागी अवास्तन में कहा गया है कि रैयतों न माहवा को दस न निकाल दन का पट्टन्य डिवा था। पर वे देस में केवल बतिपा हलाका समझते हैं और यह समझना बिलकुल गलत है कि इस आशोसन का बंशामी बराजको न उभाडा है।

आज भरी उस कोठी के बेहान के कई रैयतों में मुकाकाल हुई जिनके इसारे में सबसे पहले बसवा मूर हुआ था। उस बेहान के रैयतों न गया पट्टा नहीं लिखा है। और वे कहते हैं कि पट्टा नहीं रहन पर वे नील बोलने के लिए पाबन्द नहीं है। साठी के रैयता में मैं पूछा कि तुम पर नील बाल की जबरदस्ती की गई है? उनमें जबाब दिया पारमान् में नहीं होती है। हम लोगों को नील न बोल क बचने केवल ३) बीघा पीछ बना पटना है। मैंने पूछा कि क्या बेकर तुम इन बाल का कबुल करते हो कि तुम पर नीलबगो की पाबन्दी है? उनमें कहा कि हाँ बाल ना सब ई पर पुछम मट्ट के अनुसार हम १) बीघा नील के लिए मिलन व। आज तक मट्टा न रहने पर भी हम जय उमी दान पर नील बोल जाय है। प्राय २५ वर्षों तक हमने बिना मट्ट क ही नील बोया है और प्राय ३ वर्षों तक कोई नया मुबाहिदा नहीं हुआ था और साहब भी उसकी जरूरत नहीं समझने व। पर पारमान साहब न कोई ४०) तय बा स्टाम्प खरीद किया और नया मट्टा मिलन के लिए रैयतों को मजबूर किया। मट्ट के अनुसार बीघा नील क लिए १) और जई क लिए १५) मिलन है। यदि हम अपना गस्मा पैदा कर तो हम बीघा पीछ ८) -५) तय तक का मुनाफा होगा है। एक बीघ में ६ -७) यन बाई हागी है और बरमान में जब जई कट जाती है तो हम उमी बाल में प्राय ६०-६५ यन बाल भी पैदा कर लन है बिलवा बाल कोई १२) हागा है। मैंने पूछा कि जबरदस्ती मट्टा मिलान का क्या मतलब है? उनमें उत्तर दिया कि भूत मूजरना दायर करके हमें जममान जमा जाता है। पारमान भरे कई सम्मिबिया में मुजलमे लिये यम व। मैंने पूछा कि नील कट जान पर क्या तुम उन लड में रबी बाबडा नहीं कर सजन हो? उनमें उत्तर दिया कि हम एका नहीं करन पात। लन की पैदावार बहान के लिए उन परली रलना पन्ना है। बाबा नील प्राय ३ माय लन लन का बसाय गली है। ऊन भी कोठी के लिए बोल व हमें कोई नफा नहीं है। अगर हमें अपने लन को अपने इच्छानुसार आबाद करन दिया जाय तो उनमें हमें

१. बम्पारन के इन हिस्से का बीघा रकईई बीघ का प्राय हुआ होगा है।

अधिक नफा है। मैं पूछा कि यदि यह बात सत्य है तो बाहर के बेहातो से इतनी ऊँच कोठी को ऐसे लोग जिन पर कोठीवालों का कोई बकाय नहीं है क्यों पहुँचाते हैं? उमन जवाब दिया कि रैयत गुड़ के लिए ऊँच बोलें पर उनका पास अपनी पूरी पैदावार का गुड़ बनाने के लायक फस नहीं है। इसलिए बच हुए ऊँच को वे कोठी में पहुँचा देते हैं। कोठियों को ऊँच और नीच बात के लिए काफी जमीन है। इसलिए उन्हें हम रैयतों को स्वतन्त्र छोड़ देना ही उचित है। मैं पूछा कि—पहले तो तुम लोग माहूब के लिए जुड़ी से नीच करते थे पर अब क्यों ऐसी खसालत दिखाते हो? उत्तर मिला कि अब अन्न सस्ता था तो हम नीच कर बँट थे पर अब बाँटें से सुझार और माहूबी पटन के कारण गन्ने की कीमत बढ़ गई है और अब हम को बची यत्न में अधिक नफा है। नीच से हम आज साल भर उसी में लगे रह जाते हैं और अपने जतों को खाबाब नहीं कर सकते तथा कोठी के सबाबल बिलेवार, ठकदार को हम बस्तूरी बनी पड़ती है। यदि हम यह न बँटों वे हमारे से अधिक काम कराते हैं। जो बागड पहल बार जाना रोजाना सबहूरी पर काम करत वे वे अब यहाँ से बड़े मज और बही काम अब हम लोगों को पाँच-छ पैस रोजाना पर करता पड़ता है। इसी कारणों से अब फिर हम नीच का मुबाहिदा साहब के साथ नहीं करना चाहते हैं।

धार्मिक स्थापित हो जाना के बाद गवर्नमेंट ने बतिया के रैयत तथा नीचवर सम्बन्धी बातों की जाँच और उन पर विचार करने के लिए मि. गवर्लू आर. गोरले (Mr. R. Gourlay) को जो उस समय बंगाल सरकार के इरिगि विभाग के डायरेक्टर (Director of Agriculture) थे और उसके पहले बम्बारन में भी रह चुके थे भेजा। वे २ दिसम्बर, सन् १९८ को बतिया में पहुँचे और रैयतों से उनका कुछ भी काम का अनुसंधान किया। बम्बारन के किसान आज तक मि. गोरले का नाम लेते हैं और कहते हैं कि यदि बीस हाकिम बम्बारन में भेजे जाते तो हम लोगों के कुछ कमी के दूर हो गये होते। सब बातें अच्छी तरह देखमात्र कर मि. गोरले ने सरकार में अपनी रिपोर्ट दी। इस रिपोर्ट में क्या लिखा है यह आज तक मालूम नहीं क्योंकि बहुत बहने-मुनने पर भी सरकार ने आज तक उन प्रकाशित नहीं किया। इस विषय में बकाब तथा बिहार की व्यवस्थापिका समारों में बिद्वत् माननीय बाबू जगन्निधोर प्रसाद ने जो १९११ में बंगाल कॉमिंस के सत्रस सत्र में कई प्रश्न किए। किन्तु सरकार ने संतोषजनक उत्तर कमी भी नहीं दिया बल्कि रिपोर्ट को प्रकाशित करने से एकदम इनकार कर दिया। समाचारपत्रों में इस विषय को लेकर बड़ा माटी आवाहन किया। पर जगका कोई भी फल नहीं निकला। इससे लोगों का सन्देह बढ़ता गया और यह चारबा हो गई कि मि. गोरले की रिपोर्ट में नीच ही की सिफारिशें हैं और किसानों के बचाव सब मत्त ठहराये गये हैं। माननीय मि. मोड़ ने बम्बारन एस्टिमेन्ट बिल पस करत समय बारागवा में जो व्याख्यान दिया था उसमें इस जीवक विषय में यह कहा था—

"The result of that enquiry (Mr Gourlay's) was a restatement of all the old grievances which figured in all previous inquiries. Mr Gourlay found that the cultivation at indigo on the Assamiwar system did not pay the *ryot*, that the *ryot* had to give up his best land for indigo that the cultivation required labour which could be employed more profitably elsewhere, and generally that the system was irksome and led to oppression by the factory servants.

अर्थात्, इस बीच का मतीया वही निकला जो पहले की जाँचो में निकला था। यान् रैयतों की वही शिकायतें जो पहले पाई गई थी अब भी मिली। मि गोरले का यह निश्चय है कि असामीवार प्रथा से नील करने में रैयतों को कुछ फायदा नहीं था। उनको अपनी सबसे अच्छी जमीन नील के लिए बंझनी पड़ती थी। नील बरतान में जो महनत उन्हें करनी पड़नी थी उसी महनत में वे अपने खेतों में अधिक मछ उठा सकते थे। और साधारणतः यह प्रथा कुल्हाड़ी की और इसके चलते कोठी के मुकाबिलों का उत्पन्न करने का मौका मिलता था।

इस रिपोर्ट के बाद सर एडवर्ड बेकर ने जो उस समय बंगाल के छोटे कांट व नील-बरी को बलाकर जिस तरह सर ऐल्सी ईडन ने किया था समझाया-बुझाया और उनके साथ बार्जिसिय तथा पटना में सन् १९०९ १० में एक गोष्ठी की। इसी गोष्ठी का यह फल हुआ कि नील का दाम की बीज (१२॥) छँकड़ा बढ़ा दिया गया और तीन बोटिया के बचले दो बट्ठ में नील करने तथा मट्टा कराकर नील के सिचा और कोई जायदाद नहीं करने का निश्चय किया गया। दुग के साथ मिलना पड़ना है कि इसके बाद भी वही वही के नीलवार दो बट्ठ के बचले तीन बट्ठ में नील अपना गई, ठग आदि इस निश्चय के विरुद्ध कराउ आये। यहाँ पर यह भी छिन्न बना पकरी है कि मि गोरले की जाँच के बाद उन रैयतों को जो बन्ध में पड़ वे सरकार में छोड़ दिया। लोगो का पक्का विश्वास है कि यह भी उसी रिपोर्ट का फल था।

इस बचले के बाद बम्पारम के रैयत कुछ दिनों तक बसे रहे। पर हमने यह नहीं समझना चाहिए कि उनका बचल बुरा हाथ था। नीलवारों का बरताना जमी प्रकार जारी रहा और उसकी जाँच भी बराबर कीमिल तथा मयाचारप्रथा में हानो रही अब सन् १९११ १२ में महाराणी के साथ बादगाह बहली में राजमहरी पर बैठन के लिए हम वेदा में जाय थे। उस समय गिकार बनने के लिए उन्होंने मयार की तराई मिलनागरी की भी यात्रा की थी। उस वक़्त वहाँ के १५,०० रैयत नरकनियामंड स्टेन पर अपनी दुग-बहानी सुनाने के लिए इकट्ठे हुए थे। कहा जाता है कि रैयतों ने बचन कुछ कहा भी पर बादगाह के घुंछने पर कि "ये काम क्या रहने है?" कहा गया कि वे ज़रूरत मानते हैं? यह बात तो ठीक थी। उन्होंने महाराज का ज़रूरत माना किन्तु साथ साथ अपनी दुग-बहानी भी सुनाई थी। दुग है उनके कुर्मामय केवल उनका ज़रूरत

बम्बारन में महारानी गांधी

ही महाराज के कानो तक पहुँचा—उनके बुद्ध की कहानी नहीं पहुँची। जब महाराज कलकत्ता गये तब बहुत से रैयता ने वहाँ जाकर उनकी सेवा में एक प्रार्थना-पत्र भेजा। या प्रार्थना-पत्र मस्यौदा की भाषा से भारत सरकार के पास यथोचित कार्रवाई के लिए भे दिया गया। पर रैयतो के सुमन्यवश वह ना ३ फरवरी १२ को भारत सरकार का वापिस कर दिया गया। क्योंकि वह बाकायदा नहीं भेजा गया था और बम्बारन के रैयता की व उम्मीद जो बाइसाहू के अनुमानपर पर डेढ़ी थी मिट्टी में गिर गई।

मार्च १ १२ १३ में बिहारी में जो उस समय बिहार का मुख्य ईनिक पत्र था बम्बारन सम्बन्धी मामल पर कई मन्त्र विमल विमल रैयतो की कष्ट की और सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया।

उस समय जनाब बिहार में चुकड़ डो चुका था। सर चार्ल्स बली (Sir Charles Bayley) बिहार के छोटे साट नियुक्त हुए थे। कहा जाता है कि वहाँ तक मासूम है बिहारी के कला का कबल गम ही पड़ चुका—बहुत यह कि बाबू महेश्वर प्रसाद जो उसके बड़े ही निर्भीक और योग्य सम्पादक थे किसी कारणवश से उस पक्ष से हटा दिये गये और वह मनाचारपर जो पहले एक कम्पनी की मज्जति थी अब एक घनी राजा के कब्जे में आ गया।

मार्च १० ११ १२ और १० १ १३ में बम्बारन के रैयतो ने सरकार में जिला कलक्टर के पास तथा अन्य कर्मचारियों की सेवा में बहुत सी दरखास्त दी। पर वहाँ तक मासूम पड़ता है उनका कोई भी ऐसा पत्र नहीं हुआ जिसमें यह कहा जा सके कि रैयतो का कुछ सुमन वाला भी कोई था। यहाँ तक कि कई दरखास्त उन्हीं कोठीबानो के पास भेज दी गईं जिनके बिना उनसे पिदापने की गई थी। कलकत्ते की समुदायवार पत्रिका ने इस विषय पर मसालोचना करण हुए मुजफ्फरपुर की एक बहुत पुरानी बहानी निबान (Mr Konstant) के पास उनकी रिपोर्ट की हवा के बिज मन्त्री की और मन्त्री (My dear Mr Konstant—बर्नानू मेरे प्यारे मि कौन्स्टन्ट) प्रभा बम्बाल में भी १९११ १२ तक जारी थी जैसा कि बिहारी के लेता में जाना जाता है। मार्च १० १२ के मन्बर में बिहार के छोटे साट सर चार्ल्स बली मोनपुर भेज गये और वहाँ मौखिक ने उनका मुकदमा दिया। उन्होंने साट साहब की एक अनिमलन-पत्र दिया जिसमें उत्तर में उन्होंने यह कहा—

I need not say how fully I and my colleagues share your hopes that the relation of the planting community with the officials

१ ईनिक बिहारी (Daily Beharee) मार्च १० १२ के ११ १२ १३ १४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० अप्रैल और १ मई का।

Zamindars and *rats* will always remain on the present satisfactory footing.

अर्थात् यह कहने की जरूरत नहीं है कि मैं और मेरे सहयोगी लोग आपकी इस मताकामना में बिजबुझ सम्मत हैं कि नीलबगों का सरकारी मोहरो तथा जमींदार और रैयती के साथ जा प्रत्युत सन्तुष्टजनक सम्बन्ध है यह सदा वास्तव रहे ।

इस वक्तूरा की समालोचना में बीसवर्ग के मूलपत्र इण्डियन प्लाण्टर्स गजट्ट (Indian Planters Gazette) ने लिखा था—

-Peculiarly opposite too at this particular juncture was His Honour's reference to the satisfactory relations between the planting community and the officials, Zamundars and *nots* and we hope that the vivacious editor of the Beharee the erudite author of the articles on the planter and the *nots* that have lately filled blank spaces in our Pains Contemporary will digest this public official utterance which so quietly and effectually gives the Beharee the lie direct. Our contemporary called upon God and Government to hear while he bore witness to planter oppression and planter extortion. Will the Government, at any rate regard his testimony as false. We hope that our contemporary has the courage born of convictions we hope that his editorials were not merely attempts to foment discontent and discord."

इसका कारण यह है कि लाभ भाव की वजहसे जो उन्होंने नीककर जमादार और रैयता के मजदूरों के सम्बन्ध के विषय में कहा है वह भी अत्यन्त समझानुकर है और हम जाना करते हैं कि बिहार के सम्बन्ध में नीककर रैयत का परिणत लक्ष्य इस प्रकार है उचित की सभी चीजें समझें । हमने बिहारी की सभी बातें सुनीं सावित्र हा जाता है । बिहारी नीककरों की ओर-अवस्थिति का ध्यान रख रहा था । यवर्तमें जो उनकी सब बातें सुनीं बताइ । अब उनके लिए उचित है कि वह हम सब के लिए न मिल सही तो हम सब समझें कि वह कबल अमानि और ईश्वर के पक्ष में लिए ही गया बिना करता था ।

यह अप्पारन के रीतों व भाव का ही पर है कि जिस समय वे कामकाज व बिजुट अपना करवाकर उन माहुर से तथा अन्य कमचारियों के पास जाता रह स उसी समय छोटा सा न मीठकरीब एक छदर के प्रतिष्ठाग्रभूमि विधुलित करता हुआ निकल पड़ता । पर यह भी संसार का स्वाभाविक नियम है कि कामकाज का कभी टिफ नहीं रह सकती । हमारा अन्न में मत्त की बिजय होती है । एसा ज्ञान सब कार्य करने वाला प्रविशमान के सेवा में चाह किसी प्रतिष्ठा नीतिवशा को ह या उनके प्रति चाह जा रहा मन में मम् ! १७ म मीठकरीब की गली पास लब्ध हुई ।

बम्पारन में मङ्गलदा घोषी

ही महाराज के कानों तक पहुँचा—उनके बुल की कहानी नहीं पहुँची। जब महाराज कमलत गये तब बहुत से श्रमाला न बहो जाकर उनकी सभा में एक प्रार्थना-पत्र भेजा। यह प्रार्थना-पत्र मण्डा की बाजा में भारत सरकार के पास यथाचित कार्रवाई के लिए भेज दिया गया। पर ईदों के बुर्खापत्र बहुत ३ फरवरी १२ को भारत सरकार द्वारा वापिस कर दिया गया। क्योंकि वह बाकायला नहीं भेजा गया था और बम्पारन के गरीब रैबना की व उम्मीद जो बाकायला के भुगतान पर बँधी थी पिन्टी में भिन्न गई।

मन् ११ १३ में बिहारी न जो उस समय बिहार का मुख्य दैनिक पत्र था बम्पारन सम्बन्धी मामले पर कई जगह लिखे जिसमें ईदों की कट की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया।

उस समय बंगाल बिहार में पूवक हो चुका था। सर चार्ल्स बेली (Sir Charles Bayley) बिहार के छोटे कट नियुक्त हुए थे। कहा जाता है कि वहाँ तक मातम है बिहारी के लोका का केवल एक ही पत्र हुआ—यह यह कि बाबू महेस्वर प्रसाद ज उसके बड़े ही निर्भीक और योग्य सम्पादक थे किसी बकवास से उस पत्र से हटा पि मने और वह सम्पादक जो बहुत एक कम्यनी की सम्पत्ति थी जब एक सनी रा के कमल म जा गया।

मन् १९११ १२ और १ १२ १३ में बम्पारन के रैबता से सरकार में नि कमलर के पास तथा अन्य कर्मचारियों की सभा में बहुत ही दरम्बाज है। पर वहाँ तक मातम पड़ता है उनका कोई भी ऐसा फल नहीं हुआ जिससे यह कहा जा सक कि रैबता का कुछ मुनम बाजा नौ कोई था। यहाँ तक कि कई दरम्बाजता उन्ही कर्मीबाजा के पास भेज दी गई जिसके बिच्छ उसम शिकायत की गई थी। कमलर की जमुतबाजार पत्रिका में इस विषय पर समालोचना करते हुए मुजफ्फरपुर की एक बहुत पुरानी कहानी निवास बाहर की जिसमें हाजीपुर के मजिस्ट्रेट में सिग्निया कोठी के मैनेजर मि कौनटम (Mr Konatam) के पास उनकी रिपोर्ट की हुमा के लिए भजी थी और वही (My dear Mr Konatam—जबल मेने व्याने मि कौनटम) प्रवा बम्पारन में भी १९११ १२ तक जारी थी जैसा कि बिहारी कलबो में जाता जाता है। मन् १९१२ के मङ्गलर में बिहार के छोटे मा सर चार्ल्स बेली सोलपुर मने में मने और वहाँ मीसबरो न उनका कूब स्थापन किया। उन्हीने माट माहब की एक कमलत-पत्र दिया जिसके उत्तर में उन्हीने यह कहा—

I need not say how fully I and my colleagues share your hopes that the relation of the planting community with the officials,

१ दैनिक बिहारी (Daily Beharee) मन् १९१२ के ११ १२ १३ १५ २८ मिनबर १ २५ ३ २७ अक्टूबर ३ दिसम्बर और मन् १ १३ के ११ जनवरी ४ २२ २३ फरवरी ४ जरीर और ६ जलाई का।

Zamindars and ryots will always remain on the present satisfactory footing

अर्थात् यह कहने की जरूरत नहीं है कि मैं और मेरे सहयोगी काम भाग्यही हम मताकामना में विशिष्ट सम्मत हैं कि नीलबगों का सरकारी नीलबग तथा जमींदार और रीयता के साथ जो प्रस्तुत सम्बोधनक सम्बन्ध है यह सदा कायम रहे।

इस वक्तृता की समालोचना में नीलबगों के मुखपत्र इण्डियन प्लान्टर्स गजट (Indian Planters Gazette) ने लिखा था—

Peculiarly opposite too at this particular juncture was His Honour's reference to the satisfactory relations between the planting community and the officials, Zamindars and ryots and we hope that the vivacious editor of the Beharee the erudite author of the articles on the planter and the ryots that have lately filled blank spaces in our Patna Contemporary will digest this public official utterance which so quietly and effectually gives the Beharee the lie direct. Our contemporary called upon God and Government: hear while he bore witness to planter oppression and planter extortion. Will the Government, at any rate regard his testimony as false. We hope that our contemporary has the courage born of conviction we hope that his editorials were not merely attempts to foment discontent and discord.

इसका सारांश यह है कि लाल साहब की वक्तृता में जो उम्हारा नीलबग जमींदार और रीयता के मताकामना सम्बन्ध के विषय में कहा है वह भी अत्यन्त समझानुसृत है और हम माना करते हैं कि बिहारी के सम्पादक तथा 'नीलबग रीयत' तथा 'द एण्डिड' लालक इस सरकारी उक्ति का सही जालि समझते हैं। इस बिहारी की सही बात झूठी मानि हो जाती है। बिहारी नीलबगों की ओर अत्यन्त ही घोरपुन कर रहा था। गवर्नमेंट ने उसकी सब बातें झूठी बताई। अब उसका सिद्धांत उचित है कि वह हम लाल फिर न सिद्ध नहीं तो हम सब समझते हैं कि वह कथम अमानि और बेवकाल फलान के सिद्ध हो गया किया करता था।

यह सम्पादक के रीयता का भाव्य का हा फर है कि जिस समय के नीलबगों का बिहारी मताकामना वक्तृता लाल साहब ने तथा अन्य कार्यकारिणी के पास मताकामना था उसी समय लाल साहब ने नीलबगों की इस प्रकार के प्रणिष्ठा-मताकामना में विभूषित करना मुतामिक समझा। पर यह भी मताकामना का स्वाभाविक नियम है कि स्वाभाविक बात सही छूटी नहीं रह सकती। हमारा मताकामना में मताकामना की विचार इतनी है। लाल साहब का भाव्य सही जालि अतिमन्दम के मताकामना में जाते रीयता प्रणिष्ठा नीलबगों को है या उनका प्रणिष्ठा जात जा कर, मताकामना में मताकामना १९१३ में नीलबगों की मताकामना मताकामना गई।

छठा अध्याय

शरहवेशी, तावान, हरना इत्यादि

अब हम एक ऐसे समय में आ गये हैं जब नीलम्वरों की चालबाजी से बम्पारन के सीबे-साबे रपतों को बराबर के लिए अपने सिर पर एक बोझ उठा लेना पड़ा। अब तक प्रायः सभी कोठियों में नील का कारबार था और रैपतों के साथ जो खोर-खबरदस्ती होती थी वह नील कराने के लिए ही थी पर जर्मनी के इजिप्त रय ने नील का काम बहुत बढ़ा दिया और इस कारण नील की खेती में नीलम्वरों को उतना काम नहीं रहा जितना पहले होता था। कहीं-कहीं मुकमान भी होना लगा। जिला छारन की कई कोठियाँ जैसे मुजफ्फरपुर, बरमंगा मुगर जिलों में भी बहुत नील के कारखाना बन्द हो गये और जो-जो कोठियाँ बच गईं वे अपने खेतों में अन्य कारखानों की तरह कुछ गन्ना पैदा करने लगे। इसका असर बम्पारन पर भी खूब पड़ा और जैसा ऊपर कहा जा चुका है वहाँ

९१ एकड़ में नील सन् १८९२ से ९७ में बोया जाता था वहाँ सन् १९१४ में केवल ८.१ एकड़ में नील बोया गया। नील को बचान के लिए सरकार की ओर से भी बहुत चेष्टा की गई। बहुत से वैज्ञानिकों ने इस विषय में अनुसन्धान करना शुरू कर दिया पर किसी प्रकार से नील की खेती में काम नहीं बीच पड़ा। जो नील बिना मजदूरी दिये बचना सिर्फ नामनिहासी मजदूरी देकर मजदूर और हर-नील द्वारा उपभोग या बचवा जो रैपतों में मुकमान उठाकर खबरदस्ती उनसे कराया जाता था वह नील भी अब काम के बहने लगे पहुँचाने लगा। ईश्वर की विधि लीला है। रैपत भी यह समझने लगे कि जो अपने प्रार्थनापत्रों और बलबामों से भेन कर लके वे वह बिना किसी काम के अब स्वयं ही जान बाला हैं, और नील में छुटकारा की उपाय मांगो पूर्व रिसा में कुछ-कुछ अपनी उजियासी दिखलाने लगे। पर यह कौन जानता था कि एक बड़ा मुकाम पड़ा आज बाला है जो अन्ततः कुछ दिनों के लिए उम उपा की उजियासी को अन्तकार में परिणत कर देगा।

नीलम्वर सोचने लग कि अब तो उनकी नील छाड़ना ही पड़गा। नील की खेती में जो काम होता था उसमें के बीच में वह कम हो सकता था। फिर नील की कोठी में उन्होंने कम-कारखाना बनवाने में बहुत खपत लगाय था—वह सब एकदम दूब जायगा। वे भी और बूढ़ों की तरह भायूसी किसान हो जायेंगे। उन्मुख सोचा कि अब कोई ऐसा उपाय है जिससे निश्चयता चाहिए कि जिसमें उनका मुकमान रैपती के साथे सब रियाया सके। और वे स्वयं मुक्त-चल से अपने दिन बिताते रहें। सन् १९१२ से सन् १९१४ तक वे एसी ही कार्रवाई में लग रहे जिसमें अपने मुकमान को रैपती के गिर ठाक दें। इसके

लिए उन्होंने कई तरीके सोच निकाले जिनमें बिनाप उल्लेख-योग्य है। छारहवेंवीं ठाबान हुण्डा और हरजा ।

बम्पारन के पवित्रमोत्तर भाग की जमीन नील की खेती के अनुकूल नहीं है। इस लिए वहाँ सब जंगरेयों न कोठियाँ बाँधी तब नील की खेती में सफलता प्राप्त नहीं कर सके। वे यहाँ कुछ धान की खेती और कहीं-कहीं ऊँस और जई की कान्तकारी करते थे पर इनसे बहुत लाभ नहीं हो सकता था और उनसे नफा का बरिया बेवकूब बख्शान बसूल करता था। इन सबबाब के विषय में पीछे लिखा जायगा। यहाँ उन कोठियों का उल्लेख इसी कारण होता है कि उन्हीं में से एक न नील का बहसा रैपनों में बूकान का उपाय सोच निकाला था। बम्पारन के उम्मी याँब में मुरसा नामक गाँव की एक कोठी है। इस कोठी में नील से जब साम की माछा न देखी तो सन् १८९७-९८ में यहाँ के रैपनों में नील का बहसा रैपना आरम्भ किया। यह इस प्रकार से किया जाता था। जिन-जिन कट्टों में रैपनों को नील बोना बाध्य था उनमें उनको नील के बदले बान बोने को बाध्य किया गया और उनमें जो धान पैदा होता था उस एक नामनिहासी दाम लेकर कोठी से लनी थी। कभी कभी इस धान के बदले इनका दाम ही ले लिया जाता था। इसे हुण्डा कहते हैं। यह फसल एक प्रकार से मासगुबारी बडाना था। एक उदाहरण लीजिये। किसी रैपन की बान २ बीघ की थी और उसकी मासगुबारी १०) रुपय थी। यह ३ बीघ में नील बान का बाध्य था। उनमें इन बीघों में भी बान बोकर ६० मन बान पैदा किया। कौन्सी इसे नामनिहासी दाम पर ले लेती। अबन् १०) रुपय के बलाबा आ उसकी पहली मासगुबारी थी उस अब ६ मन बान भी एक नाम-मात्र कीमत पर देन पड़। जब सबनमेक को यह बान मामूम हो गई कि रैपनों में इस प्रकार हुण्डा बसूल किया जाता है तब उनमें इस सबबाब बताने रोक देने की आज्ञा थी। मासगुबारी के अनुसार मुरसा कौन्सी न हुण्डा मना बन्द कर दिया। पर वह बराबर ३) रुपय बीघा पीछे हरजा लनी रही। यह हरजा उस नील में रैपनों को छोड़ने के लिए किया जाता था जो वहाँ कमी बापा ही नहीं गया। फिर १० ५ में इसी प्रकार माणीहारी कौन्सी न नील में रैपनों को छोड़ने के लिए उनमें मासगुबारी बीघे पीछे कुछ हरजा मना आरम्भ किया। यह नील न बदले उनमें मासगुबारी के बलाबा २) ३) बीघा अबका कुछ कम-बसूल मन मयी। जब यह बान सरकार पर बिदिन हुई तो सरकार ने फिर इन्हें राजना जाहा और इसे भी सबबाब बनवाया। पर इस बार सरकार न इस बिषय में एसी निरलेखना नहीं मिलाना जैसी अगली बार दिखलाई गई थी। सरकार न उन कोठियों को ता जो बम्पारन ठाका लिया था या वह कहा कि यदि वे इस सबबाब का बसूल करना बन्द न करेंगे तो उनके साथ फिर ऐसा बन्दाबस्तु न किया जायगा। पर साथ ही एक बान और जोड़ दी जिसमें इस हुण्डा का असर बिबबुल बेकार हो गया। यद्यपि अब यह सब पर बिदिन हो गया था कि नील में वहाँ पन्थ के कारण रैपनों में भी अबका अब नीलपर उल्लेख था कि नील की पशवार बन्द हो जाय पर तो

भी सरकार न यह कह दिया कि यदि कोठीवाले गट्ट की धरत के मुताबिक वास्तव में मीस कराना चाहें और रैयत मीस कराना न चाहें तो उस अवस्था में उनसे हरबा किया जा सकता है। इस इतना कहना था कि मीसबरो को मीस मिला गया और उन्होंने सब रैयतों से हरबा लेना आरम्भ कर दिया।

ऊपर के इतिहास में यह स्पष्ट होता है कि मीसबरो जानते थे कि इस विषय में उनकी स्थिति असोपजनक थी। उन्होंने देखा कि इस प्रकार बार-बार सरकार से पूछना ठीक नहीं। कुछ ऐसा उपाय सोचा जाय कि हमसे बराबर के लिए छटकारा हो जाय। पाठक यह जानते हैं कि ब्रितिया राज के गाँवों में मीसबरो के स्वत्व का प्रकार कौन है। कुछ गाँवों में वे मुकदोबार हैं अर्थात् ब्रितिया राज्य में उनके साथ इन गाँवों का बीजामी (महा के लिए) बन्दोबस्त कर दिया है। वे ब्रितिया राज को एक नियम मान्युजानी देते हैं जो बड़ाई नहीं जा सकती। राज में इन गाँवों का और कोई सम्बन्ध नहीं है। कोठियाँ को इन गाँवों के सब जमींदारी हकक हासिल हैं। यदि इन गाँवों की आमदनी बढ़ जाय तो वह भी रकम कोठी को ही मिलेगी। आमदनी बढ़ने पर कोठी का ही मुकदाम होता। राज को नियम मान्युजानी बराबर मिलनी पड़ेगी। दूसरे प्रकार की गाँवों में वे हैं जिनका राजा न काठियों के साथ कुछ दिनों के लिए—याने बन्दोबस्त किया है। इन गाँवों में राजा का अधिकार है कि म्याद पुर जाने पर उन गाँवों को वह अपने पास रखने में कर ले बचवा फिर बन्दोबस्त ठका कोठी या किसी दूसरे के साथ कर दे। इन गाँवों में यदि आमदनी बढ़ जाय तो म्याद पुर जाने पर वह राज की आमदनी है और राज उस बढ़ती के कारण गाँव में सकता है या ठेकेदार की मान्युजानी बढ़ाकर गाँव बन्दोबस्त कर सकता है। इन का प्रकार के स्वत्वा का जानना आवश्यक है क्योंकि इन दो प्रकार के गाँवों में मीसबरो में रैयतों में रूपाय वसूल करने के दो प्रकार के उपाय निकाले। पाठक का एक बात और भी जान लेना आवश्यक है। बिहार में जो पहले बंगाल का भाग था बंगाल नेतमी तक (Beneal Tenancy Act) जारी है। इस कानून में मालिक और रैयत के स्वत्वा का विवरण और उल्लेख है। इसके अनुसार रैयत के दो प्रकार हैं—एक वे जिनको हक मुकाबलात अथवा हक कातकारी हासिल है दूसरे वे जिनको यह हक नहीं है। जिस रैयत का हक मुकाबलात है उसकी मान्युजानी केवल दो प्रकार से बड़ाई जा सकती है—एक रैयत और मालिक के बीच मझावता के जरिए और दूसरा बहालत के हुब में। पर मालिक का यह हक नहीं है कि मुकाबलात करके जिनका चाहें मान्युजानी बढ़ा दे। इसका कारण यह है कि सरकार के रूपाय में रैयत वसूल है मालिक से मुकाबला नहीं कर सकते और यदि उनका अपन बच पर छोड़ दिया जाय तो मालिक उनको बर-मकददक उनमें मान्युजानी बढ़ाने का मुकाबलात महज ही में बनवा सकता है और उनकी इच्छा न रहने पर भी वे मालिक की बदरवली में अपन का नहीं बचा सकते। इसलिए बंगाल नेतमी तबट (Bengal Tenancy Act) में एक बारा है जिसके अनुसार, यदि

सांख्यिक और रीय एका मुआहिदा भी करे जिसमें रीय की मासगुजारी रपय म हो मान से अधिक बढ़ाने की पत्र हो तो वह मुआहिदा बिल्कुल रह समझा जाता है । उदाहरण लीजिये । किसी रीय की मासगुजारी \angle है और वह सांख्यिक के साथ मासगुजारी बढ़ाने का मुआहिदा करता है । यदि यह मुआहिदा है कि \angle के बदले वह रपय म \times अधिक देना अर्थात् $\angle \times 2 = 96$ आता और भी देना तो वह मुआहिदा ठीक है । पर यदि वह \angle के बदले ९)म अधिक देना का मुआहिदा करेगा तो वह मुआहिदा एकदम र है और सांख्यिक उसमें मुआहिदा रहने हुए भी \angle म अधिक नहीं बसूल कर सकता । मन् १/८३ ई म जब यह कानून बन रहा था उस समय नीलबरो म सरकार म जा करके इसके मन्त सैनाओं म यह भी बाइचा दिया कि यदि किसी रीय की मासगुजारी बारी की प्रचलित मासगुजारी की बदला इस कारण कम हो कि न्यून बदले म रपय अपन लग म सांख्यिक की इच्छानुसार बारी फलम बाया करने का रीय अवस्था म यदि सांख्यिक रीय को इस बन्धन म मकल कर देवे और उसके बदल रीय रपय म \times के भी अधिक बारी देना का बसूल कर ना वह मुआहिदा रह नहीं समझा जायगा । नीलबरो क हाथ म यह अवस्था हथियार था । इन्हां इसमें काम लता दिखय दिया । सानोहारी कानू क सेक्टर मि इर्विन (Mr Irwin) ने इस विषय म बर्कसा म राज की और कहा जाना है कि डॉक्टर मर रामबिहारी घोष ने भी राज दी कि यदि उस द्वारा म किसी सब बात उपस्थित हो ता कानून के अनुसार रीय रपय म \times मे भी अधिक मासगुजारी बारी इन का मुआहिदा कर सकते हैं । मि इर्विन ने यह बात सरकार में पत्र की । सरकार ने कहा कि हम यह मानते नहीं कि बजारों के रीयों की मासगुजारी उन पर नीलबरो की पाबन्दी हान क कारण कम है नमलिए इस विषय म हम अपना सम्मति दृष्ट भी नहीं ल सकते । मानकर जैसा उचित समझ करें । पर यदि यह कारवाई उनका कानून के विरुद्ध टहर्गी तो इसका एक उम्मी की भागना पड़ेगा ।

जब नीलबरो का नम प्रकार की बाधा बारीका म मित्र गर् और इस पर सरकार ने भी बहुत शक-शोक नहीं किया तो उन्होंने रीयों के सामान सवान बढ़ाने की बात पत्र की । ऊपर कहा जा चुका है कि यदि मुहूर्ति गौरी की मासगुजारी कम जाय तो वह मुहूर्ति हार हो वा मिहूर्ति । इसलिए उन्होंने माया कि मुहूर्ति माया म नील क बदल रपय म मासगुजारी अधिक बारी की जाय । इस काम का मि इर्विन ने मन् १ ११ १२ म आरम्भ किया और सब रीयों के मासगुजारी बढ़ाने के मुआहिदे लिखवा दिया । इसी प्रकार लुहीलिया पिररर, जयर और पिरररी बारीदे में भी मासगुजारी बढ़ा की र्ण । नीलबरो का कहना है कि यह बाइचबारी रीयों म लुही म बसूल की । १) की जगह १।।२) अथवा १।।।) मासगुजारी देना उम्मान स्वीकार किया । वे कहते हैं कि रीय नील क काम के रहम में हो आनुर है । जब नीलबरो म नील में उम्मान इन का प्रस्ताव दिया तो गांधीजी म लाग बोझ और शायनायक पाहरवारी र्वाकार करने म । रीयों

का कहना है कि वे जानते थे कि नील अब नन्द बिनो का मेहमान है। वह अब किसी प्रकार कोठियों के लिए साधनायक नहीं हो सकता था। वे जानते थे कि आसपास के जिलों में सारन मुखफरपुर और बरमगा में बहुत कोठियाँ टूट गई हैं और उनको ऐसी ही आया था कि बम्पारन से भी नील उठ जायगा। इसलिए कोठियाँ ने अब नील के बहने रुबाव बढ़ा देने का प्रस्ताव किया तो उन्होंने साफ-साफ इनकार कर दिया—हम अब नील के बहने अपने पुत्र-पौत्रादि के मध्ये यह घरख़बोशी नहीं मर्गे कोठीवाले यदि चाहें तो हम से नील करा लें। पर इस समय कोठियाँ का स्वार्थ इसी में था कि वे नील का बोना बन्द करके उसने बहने रैयतो से रुपया बसूल कर। उन्होंने रैयतो की बात कब सुनी थी जो कि अब सुनते। उनको घरख़बोशी निश्चयान में मसम्ब था। रैयत कहते हैं कि बितने मुआहिरे घरख़बोशी के निश्चयान पर सब जबरबस्ती निश्चयान गय। एक ने नहीं हवारों हवार रैयतो न महात्मा गांधी से यही बयान किया कि उन्होंने मजबूर होकर, बहजब होकर, भार खाकर घरख़बोशी के मुआहिरो पर अँगुठों के निश्चयान बनाय। बिन सोचो को रैयतो की हजब-बिहारक बहानियों के सुनने का दुर्भाग्य अबका सौभाग्य प्राप्त हुआ है इजलास पर बैठकर कैमला निश्चयाने चाहें वो वह—उनका यह बूढ़ और अबक निश्वास है कि रैयतो ने ज़ुली से घरख़बोशी कबूल नहीं की। हाँ इसना बजब है कि प्रत्येक रयत के साथ जुर्म न किया गया हो—प्रत्येक रैयत पेड़ में बाँधकर धमड़े की बमोटी से पीटा न गया हो—उसको मुग्गीलाने अबका कोठीपर में बन्द न किया हो—उसके घर सिपाही न बैठाय गय हो उसका पानी रोकन के लिए बाँगड (एक बकूत बाँग के कोन) बरबाद न रोक हो उसको बाँधकर झूट में न मुलाका एया हो अबका उसे बाँध कर उसके सिर या छाती पर पत्थर या सखड़ी का बोझ न रखा गया हो—हजबाम-बोली को उसका काम करन में न रोक दिया गया हो झूठा मुकदमा बलाकर उसे बल न निश्चयाना गया हो उसके गाँव का रास्ता और उसकी पतियों से गाँव का जाना बन्द न कर दिया गया हो—पर इतना अबक्य है कि यदि किसी गाँव में किसी बड़े प्रतिष्ठित रैयत को किसी प्रकार में बला दिया गया तो उस गाँव अबका जबार के रैयत उसकी हालत देख कर मारे डर के बब गय। और उनका इस प्रकार डरना और बब जाना भी स्वाभाविक ही था। पाठक जानते हैं कि उस समय बिहार प्रान्त के माट सर चार्ल्स बेल्सी (Sir Charles Belkley) थे। उनकी नीति ही निश्चय थी। उन्होंने रैयतो की बरबस्ताओ की ओर तो कुछ ध्यान ही नहीं दिया। इधर, गीतबग के कहने पर कोठी-कोठी पर रजिस्टर बिठा दिए कि घरख़बोशी के मुआहिरो की रजिस्ट्री होने में नीलबरो को काट और बिलम्ब न हो। इस प्रकार बम्पारन में कोठियों पर १७ रजिस्ट्री ऑफिस ओक दिए गय और सन् १९१३ १४ में ३ ७१ मुआहिदा की रजिस्ट्री हुई। इसना बककर रैयतो पर यह बयान का और बया जपाय हो सजता था कि नरकार भी नीलबग की सबब कर रही है और यदि तुम रैयतो ने किसी प्रकार की भू जपड़ की तो फिर बही सन् १ ८ की घरख़ बेल में मजे

आभाग मुम्हार गौरी म बन्धवामक पुनिम (Punitive Police) बिठाई जायसी और फिर मुम समय कि नीलबर और गरकर म कुछ बन्धन नहीं और नीलबर बम्पारन क बास्तविक यज्ञा है—मुमको उसके विरुद्ध कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं है। फिर सर चाम्मे बन्धी न नीलबरों को गन् १०१२ क अन्ध म सर्किटके ही दे दी थी। उनम अधिक जासा करना अपन का स्पष्ट मूर्त बनाना था।

चाहू घातुबेनी जवायसी की गई। चाहू रैयतो ने अपनी कुमी मे इस बोन को अपन और अपनी मन्नामों क मिर पर रखना स्वीकार किया हा। इस प्रकार म मन्नामों मिर पर रखना स्वीकार कर लिया। मन्नामों की म इस प्रकार म एकद पीछ मागजागी १।२)। अर्थात् मैकडे १०) रपय बडा दी गई। पीपरा काटी म एकद पीछ ॥३) अर्थात् मैकडे ३५) रपय मिरकोमिया म एकद पीछ ॥४) अर्थात् मैकडे ५) रपय बन्धन में एकद पीछ १६) अर्थात् मैकडे ५५) रपय मागजागी बडा गई।^१

जिसे सर की जीमन मेले मे मैकडे १०) मागजागी बडा गई। बड़ी-बड़ी माग-गुजारी बिलकुल हुनी हा गई। कानूनन मामुको तीर म जमोदार का रैयता मे ममाहिब के जरिए रपय मे २) अर्थात् मैकडे १२)। मे अधिक मागगुजारी बन्धन का हक नहीं है। इस पर भी कहा जाता है कि यह सब रैयता न अपनी कुमी न की। इन घातुबेनी क बन्धन रैयतो को बडा मिला। नीलबरे न बन्धन किया कि जो पावनी उन पर नील बान की वो उनम रैयता की रिहाई है। आम बमकर दिखलाया जायसा कि यह रिहाई बड़ी नक हुई। यहाँ यहाँ बह देना जानम् है कि जब मुगोरीय महापुत्र छिड गया और मात को लर्पा मे फिर लाम की आभा दीम पडन लगी ता नीलबर लाग रैयता मे नील पीडा करान मे बाज न आये। इस प्रकार घातुबेनी मैकडे २२ ०० एकद अमीन बिमम नीलबर मातकटिया प्रया म नील करान आने मे नील के बाज मे मुक्त हुई। मि इतिन म भी मागगुजारी कोटी के मजदूर मे स्वय स्वीकार किया है कि उन्होंने अपन मुचरी बाँकों म इस प्रकार मे मागजागी ५ ०) की आमदनी अथवा ५००० × २०००१००० ००) की आयशाव कर ली। मि इतिन म ४२ मोवा मे जिन में उनक ४१ ००५ रैयत है घातुबेनी भी और पाँच बाँकों तक उस बम्पु मी कर ली अर्थात् ५०००० × ५००० २५० ००) रपय घातुबेनी के रूप म रैयता मे मागगुजारी क अनिरिक्त बम्पु किया। इसी प्रकार पीपरा काटी में ८ ०० रैयता मे घातुबेनी की गई। बहाँ की मागगुजारी और जगजा मे कम थी इसलिए यहाँ मैकडे ३५) तक घातुबेनी हो गई। परम मे पीपरा

१ मि इम्पू लम न्विन (Mr W S Irwin) की ता १९ अक्टूबर १ १३

की बिट्टी पड़िन डा न्गलियमन पत्र म लर्पा की और जिमे अमूनबाजार पत्रिका म १३ अक्टूबर १९१३ की प्रति में उद्धृत किया था।

२ उदगात्म बन्धन विभाग।

कोठी के नियम में सरकारी बफरों का क्याल रखा करता था कि वहाँ के रैयत और अपहा की रैयत की अपेक्षा मुझी है। पर सरहदों से के समय यहाँ के रैयतों में बड़ी हलचल मचाना। बहुत बरक़ास्त सरकार में हम बात की पड़ी कि उनसे सरहदों पर बरक़ास्त हो जा रही है। इसमें से एक दरक़ास्त लीमराज मिह नाम के एक सज्जन ने ता १२ दिसम्बर १९१४ को बमिश्मर के पास ही की। इस पर ७ रैयतों ने हुस्नाभर किया था। इस पर पीपरा कोठी के मैजिस्ट्रेट मि ई एन नोर्मान (Mr E. N. Norman) ने लीमराज मिह तथा १४ और रैयतों पर इज्जतगुलक का मुकदमा चलाया। इन मुकदमों को उन्होंने बीबानी बचहरी में नहीं चालित किया। बीबानी के बहन कम मुकदमे बीबानी बचहरी में जाते हैं। उनको पीबहरी में अधिक मुकदमा चालित पड़ती है। इसका कारण पाठक ही बिचार। लीमराज मिह ने बहुत कोसिम पर्वती की पर मि एक ई बीन (Mr H. E. Beale) ने जो उस समय बमिश्मर में बमिश्मरों को १ महीने सज़ा की और २४) जुर्मन की मचा हो। इसकी अपील बिला कम मि ए ई स्क्रूप (Mr A. E. Scroope) के पास हुई और उन्होंने ता ७ सितम्बर १९१५ का बमिश्मर के हुस का रद्द कर दिया और बमिश्मरों को छोड़ दिया। यहाँ पर उन हुस का कुछ अर्थ उद्घृत किया जाता है जिसमें सरहदों के जुर्मन का कुछ पता पाठक को चलेगा—

For the appellants the contention is that this wholesale execution of kabulyats was brought about by nothing less than an organized system of oppression by the factory servants, hangers on and unid wars who represent the factory in the eyes of the ordinary man and that the chief means resorted to were (1) stoppage of cultivation till the kabulyats were executed (2) bringing in women to register whose husbands or male representatives had run away to avoid registering and (3) criminal case. Again looking at the probabilities there is no doubt that whilst the intention of a manager may be one thing the acts of the factory servants may be and often are quite another. It was undoubtedly to the interest of the factory to substitute these new agreements for the obligation to grow indigo. This being so it is by no means improbable that factory servants would put pressure on the ryots to come in and execute kabulyats. Anyhow taking the evidence as it stands it is impossible to avoid the conclusion that stoppage of cultivation was used by the factory as a means of getting these kabulyats executed, and the certainly justified a representation to the commissioner as it is hard to imagine a more unfair stimulus to execute a document, and the adjectives used in para 3 of the petition to the commissioner are not unreasonable epithets in

apply to it Then as regards the allegation about women, the defence puts in kahukats all of which it is not denied by the prosecution were filled up first in a man's name and eventually registered in the women certainly the factors action in these instances may have been perfectly bona fide by the necessity has not been explained for this urgency and for not waiting till the men had made their periodic return

इसका ताराव यह है कि—अपील की ओर न यह कहना है कि इन कबुलियातों का एक माह इस प्रकार तारीख दिये जाने का कारण निम्न इसके और कुछ नहीं हो सकता है कि कोठी के मुलाजिम विद्यमान और उम्मीदवादी न जिनकी मामूली रीत काठी के प्रतिनिधि समझन है निम्नलिखित अर्थ किया है और वे कहते हैं कि निम्न कर इस काम के लिए वे तीन तरीके तर्जुमा कर कि यद्यपि—(१) जब तक कबुलियात न तारीख कर द तब तक रीत का अपना बन आवाद न करन दिया जाता था (२) जिन स्त्रियों के पुरुष अथवा उनके पुत्रों मरान कबुलियात निम्न के वय में जान यद्यपि उन स्त्रियों को पकड़कर उनमें तर्जुमा निम्नवा भी गई और (३) कोठवाली मुकदम चलाय नय । सब बातों पर विचार करन में इसमें संदेह नहीं रह जाता कि सैनिक की इच्छा एक बात है और कोठी के मुलाजिमों की कार्यवाई दूसरी बात होती है । इसमें शक नहीं कि कोठी को इसी में मध्य था कि नीक की पावानी के बदले यह इन कबुलियातों का तारीख करा लय । लगी अवस्था में यह अवश्यव नहीं है कि कोठी के मुलाजिम रीतों पर इबाद डालकर कबुलियात तारीख करा लय । सब मकल पर विचार करन पर इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता है कि कोठी न इन कबुलियातों को तारीख करान के लिए रीतों की चेनी बन्द कर ही थी और रीतों न कथितर के पास इरम्मान बनन में कुछ भी अनुचित नहीं किया । क्योंकि बनीका तारीख करन के लिए इसमें बुरा बाई इबाद अनुमान करता बल्लि है । रीतों न जो विषयक इसके सम्बन्ध में अपन इरम्मान में दिये हैं वे अनचित नहीं ह । फिर स्त्रियों के द्वारा कबुलियात तारीख करन का या ध्यात रीतों का है उसमें पुष्टि में उनकी ओर न गई कबुलियात बलिब किम मय है जिनके बारे में यह स्वीकार किया गया है कि इन एक कबुलियात पहले किसी पुरुष के नाम में लिखी गई थी फिर उन काटकर किसी स्त्री का नाम लिखा गया और जग में स्त्री ने ही उनकी रजिस्ती की । हा मकला है कि कोठी की कार्यवाई इन विषय में एकदम ठीक हा पर लगी अम्बवाजी का कोई कारण नहीं दिखलाया गया है और न यहो बलमापा गया है कि उन पुरुषों के लीटने तक काठी क्यों न टहर गयी ?”

तुर्जुमा काठी में भी इसी प्रकार घरहबसी भी गई और माय ११०-११ ०० रीतों में घरहबसी की कबुलियात में तारीख कराई गई । बनों के कुछ रीतों न घरहबसी ताज के लिए मुकदमे बीवानी बचदनी में बलिब किम । काठी न इन मकदमों की

गुन पैग्वी की। मि पी सी मानुक (Mr P C. Manuk) जो पटना हाईकोर्ट के एक बड़े नानी बैरिस्टर है और जो सरकारी एडवोकेट (Government Advocate) थे और कुछ दिनों के लिए हाईकोर्ट का जज भी हुए थे उन मुजबमा की पैग्वी के लिए कोठी की ओर से आये गये। मुकदमे बहुत दिनों तक चले। रैयती की ओर से वसी पैग्वी हार हो सकती थी। मुम्सिफ ने रैयती के खिलाफ फैसला दिया पर जब अपील जिला-जज मि शीप बंक (Mr Sheephank) के इजलास में की गई तो उन्होंने अपने फैसले में (ता १५ ३-१७) यह लिखा था कि ९ में से ५ रैयती से सरहजेसी सेना कानून के खिलाफ था क्योंकि रैयती पर नील बोन की पाबन्दी का सबूत कोठी की ओर से नहीं पहुँच सका है पर बाकी चार में रैयती से सरहजेसी सेना कानूनन ठीक था। इस फैसले से रैयत तथा कोठी दोनों ने माराज होकर हाईकोर्ट में अपील बायर की जो बम्बारन एग्जिक्यूटिव एक्ट पास होना के कारण बिना फैसले ही खारिज हुई। परन्तु इस तबदील से इतना तो बखस्य जान पड़ता है कि कोठियों को नील बोन की पाबन्दी साबित करना सही नहीं था और ऐसा कहना भी अत्युक्ति नहीं होगी कि जिन रैयती से सरहजेसी की गई थी उनमें से प्रायः सैकड़े ६ ऐसे होंगे जिन से सरहजेसी सेना कानूनन ग़ायाब था इसलिए तथा जबर इस्ती की बात अलग छोड़िए।

जलहा कोठी का हाल सुनने ही सामक है विशेषकर इस कारण से कि उसके वर्तमान मालिक और मैनजर, मि जे वी जम्सन (Mr J V Jamson) नीलबरो के प्रतिनिधि होकर बिहार व्यवस्थापिका सभा में सदस्य हैं और उन्होंने बम्बारन एग्जिक्यूटिव कमेटी के विषय में कहा था कि कमेटी ने निरपेक्ष साथ से कार्रवाई नहीं की। तथा उन्होंने उस पर अनेक दोषारोपण भी किये थे। अब देखना चाहिए कि उनकी कोठी ने किस प्रकार से सब कार्रवाई सफाई से की थी।

जलहा कोठी ने देखा कि रैयती से सरहजेसी की क्यूम्पिट लिखाने में कानून की अड़चन है। उसने यह सोचा कि यदि बाय २९ के तौसरे अपवाद की शर्त पूरी न हो सकती तो सामय रैयत कचहरी में जाकर सरहजेसी गुजरा सकेंगे। इसलिए उसने एक बूसरा ही ठीका सोच निकाला जिससे सरहजेसी टूटने का कोई भय न रहे जाम। अगर कहा गया है कि जिस रैयत का हक मुकाबला है उनकी मासगुजारी नहीं बढ़ाई जा सकती। पर यदि कोई जमीन रैयत के साथ बन्दीबस्त की जाती है तो उसमें रैयत और मालिक जितनी मासगुजारी चाहें आपस में तय कर सकते हैं। कारण भी स्पष्ट है। यदि रैयत मालिक की मनमानी मासगुजारी न कबूल करे तो मालिक उसके साथ जमीन बन्दीबस्त ही नहीं करेगा। इसलिए जलहा कागी ने सोचा कि सब रैयती का कास्टकारी का हक तोड़ दिया जाय और नबो के साथ नया बन्दीबस्त कर दिया जाय और इस मये बन्दीबस्त में मनमानी मासगुजारी रक्त की जाय। इससे कानून की सारी अड़चन दूर हो जायगी। पर इसमें एक बड़ी अड़चन यह रह जाती थी कि रैयत के हक मुकाबला के सेमे का

अधिकार मानिक को नहीं है। हाँ रयत को यह हक है कि अपनी इच्छा से वह मानिक को सब जमीन बापिस कर दे और मालगुजारी देने की पारबंदी से छुटकारा पा जाय। यह बात कानून में रयतों के बचाव के लिए है क्योंकि ऐसा अस्मर हो सकता है कि जमीन पर बहुत बड़ी मालगुजारी हो जाने के कारण अपना किसी अन्य सुविधा के लिए रयत जमीन रखना नहीं चाहता हो। पर बंगाल टेनेसी एक्ट के बनानेवालों के विचार में यह बात कभी नहीं आई होगी कि इस कामसे वा उत्पन्न प्रयाग जमीन चम्पारन के रयतों को सताने के लिए किया जायगा। कोटी ने रयतों से अपनी-अपनी जिसकुल जमीन का इस्तीफा देने को कहा कहा जाता है कि रयतों को जो हक मुकामनात का प्राप्त था उसे ज़मी और बड़ी उत्सुकता के साथ उन्होंने कोटी के लिए छोड़ दिया और फिर उसी जमीन को अपने किसी दूसरे कुटुम्बी के नाम से अधिक मालगुजारी पर ले लिया।

पात्रक नीलबर जब नील के सट्टे जबरबस्ती लिखवा सकते थे और घरखेसी को कबूलियत दामील कर ले सकते थे तो उनके लिए घरखेसी लिखवान के बदले इस्तीफा मिलवाने में क्या कठिनाई थी? एक-एक दिन में कई गाँवों के रयतों ने अपने बहुमूल्य स्वत्व का इस्तीफा दे दिया। जब इस विषय का एक मुकदमा मुसिफ़ी कचहरी में पहुँचा तो मुसिफ़ ने अपनी तजवीज में लिखा कि यह इस्तीफा जबरबस्ती लिया गया है। मुसिफ़ ने ता ३०-७-१७ के फैसले में लिखा है—

“Examining the *istifa* I find it is on a printed form and it does not bear the signature of jaldhari. No doubt it bears the thumb impression of one person but it does not mention whose thumb impression it is. Plaintiff had produced the entire *istifa* book before me. I made the Patwari count all the *istifa* taken from that village in that year and the witness often counting it page by page stated that there were 123 tenants in the village and the surrender was taken in that village from not less than 93 tenants of the village. It is the evidence of plaintiff's own witness no. 2 that tenants were not allowed to cultivate their land unless they paid an enhanced rent at the rate of Rs. 1/8 per bigha and that jaldhari surrendered the land as plaintiff had enhanced his rent at the rate. If that was the reason for the surrender I would naturally suspect him not to take land from the plaintiff any more. But he keeps on the same land but this difference that its rent was nearly doubled after this so-called surrender. According to this witness rents of all tenants of the village were enhanced that year save that of 4 tenants and that saving these four men all the tenant had to surrender their land. The witness could not tell me any reason for this wild epidemic of surrender affecting all tenants

of that village in that fateful year 1920 for this village Shampur. Every one knows that by surrender of a holding by a tenant is meant total renouncement of possession on the said land of his. But this is a peculiar kind of surrender in which the tenant Jaldhari surrendered his holding on the 19th April 1913 and that the tenant and his co-tenants took settlement of those very lands the very next day i.e., on the 10th April. The reason for going through this form of surrender is found in the evidence of the plaintiff's Patwari. He says that the rent of tenants was enhanced at the rate of Rs 1/8 per bigha on the wish of tenants in lieu of not growing indigo. So exemption from liability to grow indigo was the real cause of the enhancement of rent and the surrender was not the cause for it, rather it was a convenient means adopted to achieve that by getting over the legal difficulties. It is obviously plain that what happened in 1920 was but a paper transaction. Exhibit I the *sham utfa*, was but an ingenuous device employed to evade the provision of section 29 (b) B.T. Act.

इसका सारांश यह है इस्तीफा नामा जो देवने से माफूम होता है कि वह एक छप्पे हुए फॉर्म पर है। उसमें बलधारी का कोई इस्तीफा नहीं है। इसमें स्पष्ट नहीं कि उस पर किसी आदमी के बैबूठ के गिद्यान है। लखित यह नहीं लिखा कि किम् मुहूर्त ने इस्तीफा बही पेस की है। साफ सर म जितने इस्तीफा लिखे पय से मैंने उनको पटवारी से बिलवासा और पृष्ठ-पृष्ठ गिनकर उस गवाह ने बयान किया कि उस गाँव में १२५ रैयत में जितने से १५ ने उस सास इस्तीफा बिये। मुहूर्त के अपने ही गवाह न कहा है कि रैयत जब तक १॥) बीने पीछे इजाफा कमजूर नहीं करते व तब तक उसको जेत बाबाद नहीं करने दिया जाता था और बलधारी ने इसी १॥) के इजाफा के कारण अपनी जमीन वा इस्तीफा दे दिया था। यदि इस्तीफा का यही कारण ठीक होता तो रैयत मुहूर्त से फिर उस जमीन का बन्दोबस्त न लेता। पर उनमें उसी जमीन को रख लिया—इसमें इतना ही भेद पड़ा कि उसको उसी जमीन के सिध इस्तीफा के बाव हुनी गान्धुजारी बनी पड़ती है। इस गवाह के बयान के मुताबिक उस गाँव में ४ बाबगियों के सिवा सब रैयतों की गान्धुजारी उस सास बढ़ा दी गई थी और इन चार के सिवा बाकी सब रैयतों को इस्तीफा देना पड़ा। गवाह न उस १३२ साल में इस्तीफा के इस संज्ञामक राय का उस गाँव पर आक्रमण वा कोई कारण नहीं बतलाया। यही बतलते हैं इस्तीफा का जर्म यह है कि रैयत न जमीन से कोई सरो-कार न रहे पर यह एक बिचित्र प्रकार का इस्तीफा है जिसमें बलधारी ने ता १४ १९१३ को इस्तीफा दिया और उसने तथा उसके साथियों ने उसी जमीन को मुबह होकर माने ता. १०-४ १३ को बन्दोबस्त से किया। इस प्रकार इस्तीफा ॥ रम करने का कारण पटवारी

के इजहार से ही जान पड़ता है। यह कहता है कि मील से छुटकारे के लिए रैबतों ने अपनी इच्छा से (११) बीचे का इजाफा कबूल किया था। सो इजाफे का कारण मील से छुटकारा था न कि इन्टीफा। बस्कि कानूनी अदालतों से बचने के लिए इसीफा एक अच्छा तरीका था। यह स्पष्ट है कि जो कुछ १९२० में हुआ यह केवल कामजी काराबाई की। यह नकली इन्टीफा बमाल टैमैनी ऐक्ट की २९वीं धारा से बचने का एक धुनित षड्यन्त्र था।

पाठक सत्य हैं वहाँ इन्टीफ की बीमारी सजामक रूप में छा गई थी। इस प्रकार जमहा कोठी न (११) की बीचा अर्थात् सैकड़ ५५) मालगुजारी बढ़ाई। तीन वर्षों तक (१९२०-२२) यह सरहबेगी बसूक होता रहा। पर पीछे मि जैमसन ने यह मोचा कि इसके बचने नकर बाध ही बसूल करना अच्छा है। क्योंकि एक अमरेजी कहावत है—
A bird in hand is worth two in the bush अर्थात् हाथ की बाईं हुई चिड़िया बाछ पर की दो चिड़ियों के बराबर है। न जान कम रैयत बिपड़ बाय और अवाकत में ये सब बाते पेश हों। इसलिए उन्होंने सरहबेगी छोड़ देने की बाईं पर रैयतों से नगद रुपये बसूल करना आरम्भ किया। मि जैमसन ने कमेटी के सामने स्वयं कबूल किया था कि उन्होंने उन रैयतों से जिन्होंने सरहबेगी कबूल कर लिये थे २६००) रुपये बसूल किए। उनका कथन है कि रैयतों ने स्वयं से रुपये राजी-बुधी से दिये। इसके समुक्त में से कहते हैं कि रैबतों के पास मालगुजारी तक देने के जो रुपये नहीं थे क्योंकि इस तावान के बसूल किये जाने के पूर्व वो वर्षों से फसल अच्छी नहीं हुई थी पर तो भी वही रैयत जो पहले मालगुजारी देने में असमर्थ थे अपनी बुधी से २६०००) रुपये देने के लिए केवल राजी ही न हुए बल्कि ८०००) से १००००) तक नगद रुपये देते बने और बाकी के ईजहार किया देते गये। नब है पाठक बम्पारन की रैयतों के सिवाय इन दुनिया में राजा हरि इज्जत जैसे दानवीर और बम्पारन के मीलबतों तरीके उस दान की सेन के लिए इस पुष्पी पर महर्षि बिस्वामित्र वहाँ मिले। ये रुपये मुकरी बाँटों से ही किये गये थे। इनके अतिरिक्त जमहा कोठी ने उनके के बाँटों से अन्य कोठियों की सरह वाकल बसूल किया था जिसकी रकम भी प्रायः २६०००) है। इस प्रकार इन छोटी सी कोठी की रैयतों ने सन् १९१२-१५ में तावान और सरहबेगी की संशामित के बाध प्रवाह में ५२०००) रुपये की बलिबा दी थी। मि जैमसन की माछ कारबार की जासोचना फिर की जायगी। बिपयान्तर के भय से अभी इसे यही सातम किया जाता है।

कानून से बचने के लिए जमहा कोठी ने यह उपाय किया। कुछ कोठियों ने एक और भी विचित्र उपाय जोन निकाला। एक कोठी में मील का कारबार बन्द हुआ जान के कारण कुछ जीरात की जमीन भी आभी बहू यन्त्र जिम्मे उन जमीन का बन्दोबस्त करना बाधरूपक था इसलिए कोठी ने रैबतों के साथ बाड़ी-बोड़ी जमीन बन्दोबस्त कर दी और जिनकी मालगुजारी सरहबेगी करने में बढ़ाई गयी उननी मालगुजारी उन जीरात की

जमीन की मासमुजारी के साथ जोड़ दी गई । इसका मतीजा यह हुआ कि ज्यादा जमीन का नया बन्दोबस्त करने में बंगाल-मैसूरि एका की २९वीं चारा न ममी और साथ ही रैयत पर बेसी मासमुजारी भी बढ़ गई । जमीन के ऐसे बन्दोबस्त का भी हुज्जा कहत है । कुछ उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायगी । नयी जमीन जो बन्दोबस्त में दी गई थी पायस ही जितनी रैयत को एक बीघे से अधिक जमीन मिली हो । मासमुजारी भी इसकी इस प्रकार से जोड़ी गई थी । पहले कहा गया है कि यदि किसी रैयत की जोत २ बीघे हो तो उसे ३ बीघे में माल बोना अनिवार्य था । यदि उससे १॥) रुपये के हिसाब से छत्रहोखी सीध तौर पर मिल जाती तो उसे ३) रुपये अधिक देने पड़ते । अब उस रैयत के साथ १ कट्ठा जमीन और उस की बन्दोबस्त की गई जिसकी मासमुजारी ५) रुपया है । अब उस १ कट्ठे की मासमुजारी ५+३ = ३५ रुपये रक्त दिय गये । अर्थात् ७) रुपये बीघे की दर से यह जमीन बन्दोबस्त की गई । इसी प्रकार हिसाब जोड़ने से किसी रैयत की मासमुजारी ९१॥३) की बीघे तक जाई थी । कुछ रैयतों की पुरानी जोत का हिसाब करने में देखन में आया कि २७ बीघे जोत की मासमुजारी केवल ५९॥१-))॥ निकली और २७ बीघा और उस की मासमुजारी ६५९॥३) निकली अर्थात् पुरानी जोत की औसत मासमुजारी २३)॥ और और उस की औसत बीघा पीछे २४॥-)) मान रही थी मासमुजारी के १२ गुन दर पर और उस की जमीन रैयतों न बन्दोबस्त किया । फिर यह भी मार्क की बात है कि और उस की जमीन में कुछ भी भेद नहीं है । एक ही बात के दो भावों की मासमुजारी में इतना अन्तर देखा जाता है । कारण स्पष्ट है । मासमुजारी और उस की नहीं थी । वह उस रैयत के तिन-कठिका समान के हिसाब पर देठाई गई थी । हम ने सुना है कि कहीं-कहीं-ऐसी जमीन बन्दोबस्त की गई जो बारहों मास पानी से डकी रहती थी और जिस में आज तक कोई बायबाद हुई ही नहीं । कहीं-कहीं एसी जमीन दी गई जिसको रैयतों ने कमी देखा ही नहीं । रैयतों को जिस चौहद्दी की जमीन दी गई उस चौहद्दी में यह हुई ही नहीं है । कोठी को तो कबल अधिक रुपये से मतलब । रैयत भी नहीं समझते थे कि हम छत्रहोखी दे रहे हैं । कोठी किस प्रकार से लेती है वह जानने की उन्हें जरूरत ही क्या थी ? पीछे नर्वे सेंटलमेंट के अप्रतारों ने इस नयी जमीन को बहुत जोर कायम कर दी जिसका फल यह हुआ कि यदि रैयत यह चाहें कि उस जोत को छोड़ दें तो छोड़ सकते हैं । ताहब की राम अवधम की कि इसको भी पुरानी जोत के साथ मिला दिया जाय ऐसा न होने में रैयतों की जान बची । जब महारमा गांधी आये तो रैयतों ने एक स्वर में अपनी बिलकुल हुज्जा जमीन छोड़ देने का प्रस्ताव किया । कोठी के मैनेजर का कहना था कि जमीन जो बन्दोबस्त की गई थी वह बहुत अच्छी थी और रैयतों न बहुत जोर करके उनसे बन्दोबस्त किया था और वे यदि उसको छोड़ दें तो जमी भी कोठी को हमसे बहुत लाभ होगा क्योंकि रैयत जिसका उनका देते थे उससे अधिक वे उस जमीन से पैसा कर सकते हैं । जब रैयतों ने यह बात सुनी तो उन्होंने एकबारगी सब हुज्जा सब छोड़ देने को कहा

जीर महाराज गोपी ने साहब की बात पर विद्वान्तर करके उन सब रैयतों के नाम जो हुज्जा छोड़ देना चाहते थे किन्तु साहब के पास भज दिया पर साहब ने जिनका पहले बड़ कचन था कि कोठी ने हानि उठाकर रैयतों की परवरिश के लिए इस जमीन को उनके साथ बन्दोबस्त किया है, अब रैयतों पर उसी जमीन की मास्युजारी के लिए बासिस कर दी। इस पर भी लोग कहते हैं कि बम्पारन के नीलबरो वहाँ की रैयतों की भलाई के लिए ही है जीर रैयतों के विषय में जो आन्दोलन होता है वह दुर्मि है उस में कुछ सार नहीं जीर वास्तव में रैयत नीलबरो से बहुत संतुष्ट रहते हैं। इस प्रकार से नीलबरो ने नील की बोटी की हानि को रैयतों की पीठ पर लाद दिया। पर यह लखनौ की उन्ही गाँवों में की जाती थी जो पौब मुकरी से बर्बाद जहाँ की आमदनी बढ़ाने में उनको बरबर के लिए मजबूर था। उनके गाँवों में जिनका बन्दोबस्त चले बिना के लिए हुआ था यदि मास्युजारी बड़ जाती तो म्याद बीतने पर बेतिया राज को हक था कि उन गाँवों को लेकर अपने हाथ लहरील में रखे बबबा उन्ही के साथ जमा बढाकर फिर बन्दोबस्त करे इसलिए उन गाँवों में उन्होंने रैयतों से मजबूर एकमुस्त रुपया लेना आरम्भ कर दिया।

य विषय में कई बात विचारणीय हैं। नीलबरो का कहना है कि उनका बीबा में तीन कट्टा नील करने का एक प्रकार का स्वत्व प्राप्त था। यह प्रत्येक रैयत की बात पर एक बोझ हो गया था जो ठीक उसी प्रकार का बोझ था जैसा कि मास्युजारी का बोझ। जिन गाँवों के नीलबरो मुकरीबाज थे उनमें उनका हक प्रायः जमीनदार-सा था पर वह हक उनको १८८८ ई. में ही प्राप्त हुआ था। इसके पहले नहीं। इसलिए केवल उन्ही जगहों पर ऐसा बोझ हो सकता है जिन पर वह उनके आरम्भ के समय में ही रख दिया गया हो। जो बोझ पुराने थे उन पर ऐसा बोझ उनके आरम्भ के समय में ही रख दिया गया। जो बोझ पुराने थे उन पर ऐसा बोझ उनके आरम्भ से कैसे हटा सकता था? और यह बोझ यदि पान के आरम्भ ही से न हो तो पारा २९ के अन्वय में जोल नहीं जा सकता। और रैयत ५) से अधिक मास्युजारी बढ़ाने का मोजाहिदा कानूनन नहीं कर सकते। पर यदि मुकरी बाँधों में उनके स्वामी स्वत्व हो जाने के कारण किसी प्रकार का हक नीलबरो का मजबूर भी किया जाय तो जिन गाँवों में वे केवल अन्य दिनों के लिए ठेकेदार थे वहाँ में वे म्याद पूरी होने ही हटा दिये जा सकते थे उन गाँवों में वे किन्तु लख रैयतों की बात पर इन प्रकार के बोझ का दावा कर सकते थे यह बात मजबूर में नहीं जाती। बेतिया राज ने जो इन गाँवों का स्वामी मालिक है कभी भी इन प्रकार के स्वत्व का दावा नहीं किया। कहावत मशहूर है "आप दिया रंजनी ठारे घरबेस"। अपने स्वत्व का ता ठिकाना नहीं पर रंजन कर ऐसा दावा। पाठक किन्तु बम्पारन की रैयतों पर सब प्रकार का दावा हो सकता है क्योंकि उनकी बात की नुमनेबाना नहीं उनका कोई हिमायती नहीं। जब नर चाली बेनी जीने जाट ने भी उनके प्रायः गाँवों पर ध्यान नहीं दिया था एसी दावा यदि उन पर जबरदस्ती भी करायें जाय तो इनमें आश्चर्य ही क्या? हाँ यदि किसी

रैयत न सट्टे के जरिये इस प्रकार का साक्षात्कार कर दिया हो कि समुक्त वर्ष तक वह नील कोठी के लिए कर दिया करेगा और उस म्याद के पूरा होने के पहले ही यदि वह छोड़ना चाहे तो वह कोठी को हर्जा का बेलदार हो सकता है। ऐसी अवस्था में कोठी का हक हो सकता है कि कोठी उसमें हर्जा के लेवे। और यदि कोठी जली से उसे इस बन्धन से मुक्त कर देवे तो उसके बचने में भी कुछ के सकती है। पर यह सब भी तभी हो सकता है जब कोठी और रैयत के बीच का साक्षात्कार कानूनन जायज हो बर्खास्त नियमित रूप से किया गया हो रैयत पर किसी प्रकार का और प्रभाव नहीं किया गया हो और रैयत ने सब बातों को समझ-बूझ कर अपने नफा-नुकसान को देख-सुनकर उन शर्तों का कबूल किया हो। परन्तु बम्पारन के रैयत तो बराबर कहते जाये हैं कि कितने नील के सट्टे उनसे लिखावाये गये हैं वे सब जबरबस्ती लिखावाये गये हैं। उनसे उनका बड़ा नुकसान है और यदि उनकी जमीनें तो वे एक दिन भी नील न कर। इतना ही नहीं उन सट्टों की शर्तों भी ऐसी होती हैं कि यदि किसी स्वतन्त्र मनुष्य को उन्हें स्वीकार करने को कहा जाय तो वह कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। उस पर भी किसी कोठियों में तो सट्टे भी नहीं हैं। कितने में सट्टे की म्याद पूरे बहुत दिन हो चुके हैं परन्तु नीलबंदों ने सब जगह की रैयतों से मनब अपने जिनको ताबान कहते हैं बसूल किये।

जिस तरह घराबूहेकी सब कोठियों में एक हिमाज बा दर से नहीं किया गया उसी प्रकार निम्न-निम्न कोठियों में ताबान भी निम्न-निम्न दर से बसूल किया गया। यदि किसी रैयत का तीन बीघे जेत में नील कटाने की पाबन्दी थी तो कहा जाता है कि उसके नील का कमान तीन बीघा है। कमान के बीघे पर जहाँ ५) कहीं १) और कहीं १) की एक एक ताबान बसूल किया गया। जिनके घर का बीसत बायद ५) बा १) की एक एक पड़ा होना। और इस प्रकार १८ एकड़ का कुल कमान ५) १) अपने एक पीछे बसूल करके नील छोड़ देने का नीलबंद बयान करते हैं अवधि १८ × ५) = ९०) अपने अवधि १८ × १) = १८) अपने ताबान रूप में नील-बंदों ने बसूल किये। रैयतों के पास तो इनके रुपये नगद बीसब से नहीं जहाँ तक हो सका नगद बसूल किया गया बाकी में मांग बज्र किया गया और और भी जो जायदाद मिट्टी के भी गई। यदि इस पर भी बाकी रहा तो उनमें हेडनोट लिखा लिखा गया। जो हेडनोट लिखे गये उनमें यह नहीं लिखा गया कि यह नगद रुपये के लिए रैयतों से हर्जा के उनमें यह भी नहीं लिखा गया कि नील की पाबन्दी से छटकाए देने के लिए रैयतों से हर्जा किया गया है। बरन् उनमें यह झूठी बात लिखी गई कि हेडनोट के रुपये बरूटी वर्ष के लिए रैयतों ने नगद कर किये। जिन रैयतों को बड़ी रकम देनी थी उनसे हेडनोट के रुपये रजिस्ट्री बन्दावेज लिखा गया और किसी-किसी ऐसे बन्दावेज में एकदम झूठी जानेबारी की जकरत लिखाई गई, जेमे कि किसी कच्ची की घाटी तथा किसी बड़े मालिक का बाज इत्यादि। तब पर भी सब हेडनोट तथा बन्दावेजों में रैयतों के मूर

देने की भी बात थी। मोटीहारी कोठी के मैनेजर मि. हर्बिन ने स्वयं स्वीकार किया है कि इन्होंने इस प्रकार १२०००) रुपये अपने रैयनों से बीघे पीछे ७५) रुपये के हिस्सा से तावान बसूल किया था। ऊपर कहा जा चुका है कि मि. जेमसन ने मकरी गाँवों में भी कुछ दिनों तक सरहद्दीसी बसूल करके फिर उन्हीं रैयनों से २६ ००) रुपये तावान बसूल किये। जिन गाँवों में उनकी ठेकेदारी का हक था उनमें भी उन्हीं ५५) रुपये बीघे पीछे तावान बसूल किये। उनकी कोठी के मौज का लगान ४७५ बीघा या और इस तरह उन्होंने $४७५ \times ५५ = २६१२५$) रुपये बसूल किये। इसमें एक-तिहाई नगर और दो-तिहाई के लिए हुजुराट और बस्तावेज। यह आपने बसूला कोठी में किया। जन्हा जाले के पूर्व आप एक दूसरी कोठी मेल्वा के हिस्सेदार और मैनेजर थे। मेल्वा कोठी के सब पाँच तावान की महावारी का कुछ ही दिन पहले ठेके में दिये गये थे। वहाँ कोठी किसी प्रकार से रैयनों से मौज बोलने की पाबन्दी साबित नहीं कर सकती। मि. जेमसन ने अपने इजहार में भी स्वीकार किया था कि वह किसी प्रकार से इसका दावा माहित नहीं कर सकते थे। पर वहाँ भी बीघा पीछे ७५ या ८०) रुपये बसूल कर किये। वहाँ का लगान १६०) बीघा या और इस प्रकार $१६० \times ७५ = १२०००$) रुपये जबका $१६० \times ८० = १२८०००$) रुपये बसूल किये। यहाँ यह कह देना भी जरूरी है कि तावान बसूल करके उन्होंने इस कोठी को हमारे के हाथ बच दिया। इसका लीजा यह हुआ कि जब बम्पारन ऐग्रेगेशन कमेटी की राय के अनुसार सरकार ने आज्ञा हुई कि तावान का रुपया एक-बीघाई रैयनों का लौटा दिया जाय तो इस कोठी के रैयनों को कुछ भी बापिन नहीं मिला क्योंकि मि. जेमसन और उनके साथी तावान बसूल करके बच दिये थे और उस कोठी के मये माधिकारी ने आपस करना सरकार ने इस कारण अनुचित समझा कि उन्होंने तावान के रुपये नहीं पाये थे।

सातवाँ अध्याय गवर्नमेण्ट की कारवाई

ऊपर कहा जा चुका है कि सन् १९१२-१३ में रैयतों की ओर से बहुत सी दरखास्त नीस्वरो के बिनाक पड़ी। इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा चुका है कि इन दरखास्तों के रहते भी सन् १९१२ के नवम्बर महीने में सर चार्ल्स बेन्सी ने सोनपुर में नीस्वरो को उनके रैयतों के साथ कुछ सम्बोधनक सम्बन्ध के विषय में सार्टिफिकेट दे दिया पर यह सार्टिफिकेट जो बात सब भी उसे कहाँ तक छिपा सकता था। जब सर चार्ल्स बेन्सी सन् १९१४ के फरवरी में बम्पारन गये सब रैयतों ने फिर दरखास्तें दी जिनमें तीन नमूने के तौर पर नीचे दी जाती है—

नं (१)

"The humble petition of the undersigned tenants of the village
Gawandra Tappa Harihara, District Champaran, most respect
fully sheweth—

1 That the petitioners are tenants and *kashkars* of the village
Gawandra which is in lease to the Gawandra Indigo Factory

2 That hitherto the petitioners were required to cultivate
Indigo for the factory at the rate of 3 *kashkars* per bigha of their holdings
and although against their wishes they had accustomed themselves
to that service as any refusal on their part would put them to serious
trouble.

3 That now indigo manufacture has become less lucrative
and the factory has thought fit to discontinue cultivation of Indigo
and has been trying to realize a sum of Rs. 60 on the allegation
that the factory would relieve the petitioners from the burden of
cultivating Indigo.

4 That indeed the cultivation of Indigo is a burden imposed
on the tenants without any justification and the tenants are rightfully
entitled to be relieved of that burden and for the matter of that the
factory is not entitled to realize anything from the petitioners.

5 That in spite of there being no justification the petitioner
are being coerced to make payment of the above sum and some of
us have been compelled to sign hand-notes. The petitioners are
terrified

6 That the petitioners are quite unable to protect themselves in ordinary course and they feel compelled to represent their grievances to your honour in the earnest hope that your honour will be graciously pleased to extend protection to your petitioners.

7 That the petitioners are at Motihari and aspire for an opportunity to appear before your honour and to represent their grievances which they are unable to do in writing

Dated the 5th February 1913

हम दरबानास्त का माचार यह है—

“मोहा गवन्दरा तप्पा हरिद्वारा बिजा चम्पारन के रैयतों की दरबानास्त—

१ हम साथ मौज गवन्दरा के कास्तकार ह और यह मौज गवन्दरा कोठी की ठकेदारी में है।

२ आज तक हम लोगो को कोठी के लिए बीघा पीछे तीन कट्ट में नील करना होता था और यद्यपि वह हम अपनी खुशी से नहीं करते थे तो भी हम मोम एसा करते थे कि आज क्योंकि एसा न करने से हम लोगो की बहुत कष्ट सहन पड़ने।

३ अब नील का काम बट जान से कोठी नील करना बन्द कर दिया चाहती है और हम लोगों में १० रुपये के हिस्सा से यह कहकर बयूस करना चाहती है कि वह हमें नील करने में मुक्त कर देगी।

४ नील करना रैयतों पर एक माग और बिजा किसी कारण के बोझ है जिससे उनको मुक्त कर देना ही उचित है और इनके लिए रैयतों से रुपये बयूस करने का काठी को कोई हक नहीं है।

५ यद्यपि इन ताबान लन का कोई भी हक नहीं है पर भी कोणी रैयतों में जबरदस्ती टपस लेना चाहती है और बहुतों में जबरदस्ती देहनास्त लिखवा चुकी है। हम लोग बहुत असमर्थ हो गये हैं।

६ हम लोग मामूली तरीके से अपनी हिज्जामत नहीं कर सकन है और इसलिए मजबूर होकर हम आभा से हजूर में दरबानास्त करने हैं कि हजूर हमारी रक्षा करेंगे।

७ हम साथ मोतीहारी में हाजिर हैं और हमारी अभिलाषा है कि यदि हुजूम हा तो अपनी बुल फ्तानी ओ लिख नहीं मन्ने जवानी अज करें।”

नं० (२)

1 We, the tenants of Mauzas Phenhara, Paratampur Rupawlia Jamunia, Nasiba, and Ibrahimpur Parawani District Champaran, beg to offer our humble though hearty and loyal welcome to your honour on the occasion of your Honour's graceful visit to the District of Champaran and we take it as a forerunner of peace and contentment in the District

2. Our villages are in lease to the Parswani Indigo concern and we have had miserable existence hitherto owing to the high handedness of the factory with which our lots have been permanently blended. But we believe and trust that our circumstances will henceforth be changed for better on account of your Honour's happy visit to our District.

3 The planters came to the District with a determination to manufacture Indigo and our ancestors and ourselves were made to offer ready made 3 Katthas per Bigha, every year of our *has* lands for the cultivation of Indigo which being absolutely unjustifiable and unconscionable was sought to be legalized by exactions of agreements from the tenants known as *settas* and as slightest reluctance on our part and on the part of our ancestors would entail our total annihilation, as it were we persuaded ourselves to be agreeable to our lots to save our honour and existence. Both this was not all.

4 The 3 Katthas *Vil settas* were followed by a demand of cart *settas* from us and the unfortunate lot accustomed themselves to the necessary evils in the expectation of enjoying peace But this was never to happen

5 Unfortunately for ourselves the natural Indigo lost its value in the market and the factories at least the majority of them, have given up the idea of cultivating Indigo any further and our factory is one of them. But the fall forbade a destructive storm.

6 The factory now demands and has been demanding for the last few years an early damage of Rs. 16/8/ or a consolidated damage of Rs 100 per Indigo Bigha for the apparent return of relieving us from the cultivation of Indigo which means an increase of our rents by Rs. 2/4/ per bigha or in the other case our total bankruptcy

7 That this demand is more than can be assimilated and we are therefore unable and naturally unwilling and reluctant to consent to the payment of the same. But without any consideration of our poor and destitute condition the factory insists upon the payment of the same by causing oppression of which there are varieties.

False cases have been and are being instituted against us our cattle are taken from our cowshed to the factory pound to be released only after payment of heavy fines, undue advantages are being taken of petty differences among the *ryots* themselves, punitive police and police

guards were once requisitioned on false allegation of oppression by the *ryots* to the factory which is simply absurd and impossible now *Dhangars* who are known as factory's regiments, would be let on us and many other means would be devised to bring the *ryots* round

8 We petitioned the District officer representing our grievances and praying for protection. But he declined to take steps on such petition and ordered us to file regular complaints against the factory. We then petitioned the Commissioner of the Division stating our inability to prosecute the powerful factory and praying for our protection. The Commissioner was pleased to order. Obviously if the tenants will not lay definite complaints nothing can be done but it appears that the affairs in this *dehat* require to be watched

9 The Divisional Commissioner in the last portion of his order has shown some sympathy with us and has been pleased to remark that our affairs required to be watched but that does not improve our condition materially. The District Officer is pleased to advise our formally prosecuting the factory but for that we are quite unable and incompetent. Sometimes complaints against factory have been prosecuted for false complaint without the same being properly considered with the result that we, *ryots* are unfairly silenced and compelled to pocket all sorts of injuries and oppressions or to comply with the demands of the factory so hard unjustifiable and ruinous though they are

10 Your Honour's personal presence amongst us encourages us for presentation of our grievances which we hereby do, trusting most sincerely that our evil days will end today and under the protection of your Honour's benign Government we will be allowed to enjoy peace of mind in our humble hearth, if your Honour be graciously pleased to order the District Officer to issue instruction to the factory to give up its efforts to realise the illegal demand mentioned above for which we shall as in duty bound ever pray for your Honour's long life and prosperity

(आचार्य)

१ श्रीमान् कृपया परमुरामपुर स्थितिया जमुनिया गलीबा इशारीमपुर परगोनी के रीयों की दरखास्त ।

२ हम कामों के मौज परगोनी बारी के ठेक में हैं और बोरी के ओर मुष्क -- हम बहुत दुख हैं । हमू के यहाँ पयारम के हमें आया जानी है कि हमारी दया पयटयी ।

३ हमें अपने पूर्वजों के समय में नील पीछे ३ कण्ट में नील काठी के लिए करना पड़ता है। यह कार्यवाई विष्णुल गणायन और अनुचित होने के कारण काठी में इसे आम करने के अभिप्राय में सट्टा लिखवाया। हम लोगों ने अपनी इज्जत बचाने के लिए सट्टा तामीन कर दिया। क्योंकि इनकार करने में हमारा सर्वनाश संभावित था।

४ नील-नठिया सट्टा के बाद कोठी में हम में गाड़ी का सट्टा लिखवाया और उसको हम लोगों ने अनिवार्य विपत्ति समझकर अपनी छान्ति की उम्मीद में लिख दिया।

५ हमारे दुर्भाग्यवश नील का दाय बट गया है और बहुत सी कोठियों में जिनमें परमौनी कोठी भी है नील करना बन्द कर दिया है।

६ कोठी अब हम लोगों में १९॥१॥) सामान्य अबका १) उपान के बीचे पीछ के हिसाब से वह कहकर बतूल करना चाहती है कि वह हम नील करने में मुक्त कर रही। इसका यह फल निकलता है कि या तो हमारी मालमुवारी बीचे पीछे २॥१॥) वह बायनी या हम बिलकुल ही बरबाद हो जायेंगे।

७ काठी इस रकम को जबरदस्ती बतूल करना चाहती है और कई प्रकार के बुझ करती है। जैसे इसके लिए छोड़वारी के लूठ मुकदमे लोगों पर लागू पड़ें हैं। हम लोग के माक 'मोट' बकान से जोल्कर कोठी के पठक में दे दिव जाते हैं और जब तक हम जारी जुमला नहीं देते तब तक वे नहीं छोड़ जाते। हम लोगों के आपस के छोटे-मोटे झगड़ों में भी नफ़ा उठाना जाता है। एक बार इस लूठ बयल पर, कि रैपलों ने कोठी के माक जुझ किया है छोड़ी पुलिस की छावनागी कराई गई। अब हमारे दरबार पर बांकि बैरमें और हमें बकाने के बिना बहुत उपान किये जायेंगे।

८ हम लोगों ने जिला मजिस्ट्रेट के पास बरम्बास्त बी पर उन्होंने बाकामद नास्बि करने का हुक्म दिया। तब हम लोगों ने कमिशनर के पास बरम्बास्त बी। उन्होंने हुक्म दिया कि यदि रैपल अभिलेख न लायेंगे तो कुछ नहीं किया जा सकता पर एसा जान पड़ता है कि इस देहात की हानत पर ध्यान रखना चाहिए।

९ मजिस्ट्रेट कमिशनर ने अपने हुक्म के अन्तिम अंश में हमारे साथ उद्दाम्युति दिखलाई है। पर उसने हमारी अवस्था कुछ सुधरती नहीं। जिला मजिस्ट्रेट ने हमें नास्बि करने का कहा है पर इसके लिए हम एकबारगी असमर्थ हैं। नजी बिना पूरा दिवार किम ही कोठी के सिक्का मुकदमा जमाया गया है और इसका फल यह होना है कि रैपलों की कोठी का जुझ अपवाद नष्ट करना पड़ता है।

१० हमारे भूभागमन से हमें अपनी दुःख-बहाली मुनाफ का नाइन हुआ है और हमारी आशा है कि हम अब कोठी के जन्म में बर्सेयें। यदि हमारे जिला मजिस्ट्रेट की हुक्म है कि वह कोठियों की इस बाधाबल तावान बतूल करने के सिक्का हिरासत कर दें तो हमारा जीवन सुख-शांति के साथ बचेगा।

(सम्बर ३)

We, the tenants of Mauza Madhubani, Thana Dhaka District Champaran, beg to offer our humble but hearty and cordial welcome to your Honour on the occasion of your Honour's visit to this District

We are, your Honour voked to the Nirpur Factory which has been demanding an increase of our rent for our holding on the allegation that we will be relieved of the burden of cultivating Indigo for the said Factory. The cultivation of Indigo is indeed a burden and the sooner we are relieved of it, the better in the name of British Justice. But the demand for any addition to our rental is to drive us to the fire from the frying pan and we are naturally reluctant to comply with the new demand of the factory.

But however justified our reluctance might be the Factory is not prepared to put up with it and various sorts of threat were being held out to us by the *Amils* and the creatures of the factory and our very existence is in danger and to safeguard ourselves we filed a petition before the District Officer stating the very threats held out to us as we necessarily thought ourselves to be quite unable to stand the wrath of the factory which is so fearful. The result of our petition to the District Magistrate has been that cases under Section 500 I.P.C. have been started and as your Honour might well conceive, we are quite unable to substantiate the allegation in the petition to the District Officer before the trying Magistrate in opposition to such a strong body as the Factory although our allegations are true to the letter and in one set of cases some of us have been convicted and other sets are still pending judgement and trial but the trial of these cases as well are a foregone conclusion under the circumstances we are surrounded by.

It is argued that tenants are voluntarily entering into agreements for the increase of their rents but slightly independent and unbiased judgements will establish that any such agreement on the part of the tenants cannot but be the offspring of force and coercion and the cultivation of indigo was nothing better.

We are informed that a special Registering Office has been opened and we apprehend that our annihilation is near at hand as the establishment of such an office will expedite greatly the registration and completion of the undesirable agreements for the increase of the rents.

(भाषार्थ)

मौजे मधुबनी जाना जाना के रैयतों की दरकबास्त—

हम लोग नीरपुर कोठी के इलाके में रहते हैं जो हम लोगों से मासगुजारी का इलाका इस बयान में सेना चाहती है कि वह हमें नीक करने से मुक्त कर देगी। नीक होने का बोझ बड़ा भारी है और उससे जितनी ही जल्द हम छुटकारा पावें उतना ही ब्रिटिश स्वाम्य की प्रतिष्ठा के अनुकूल होगा। पर इसके लिए मासगुजारी का बजाना हम कच्चाही से निकालकर आगे में डालने के समान है और इसलिये हम कोठी के इस नये तकाज को पूरा करना नहीं चाहते।

पर कोठी हमारा जग पर ध्यान नहीं देती है और उसके अगले और मुकाबिल हमें तरह-तरह की समस्याएँ दिखाते हैं। अपनी हिजाबन के लिए इन सब बातों के विषय में हमसे जिका अफसर के पास दरकबास्त की पर हमका कम यह निश्चय कि हम पर इम्बियन पीतल कोश की बारा ५० के अनुसार मुकदमे चलाय गये। हजूर समझ सकते हैं कि सब होने पर भी अपना बयान को कोठी में जिकाफ साबित करना हमारे लिए कितना कठिन है। उनमें कई मुकदमों में रैयतों को सजा हो चुकी है। कितने मुकदमों में जमी बल रहे हैं पर बेसी हारत है उससे उनका कैसला कैसा होया यह किरा पर मबिबित नहीं है।

ऐसा कहा जाता है कि रैयत खुशी से खरखेबो की मुआहिरे तामीन कर रहे हैं पर निरपेक्ष मास से विचार करने पर स्पष्ट हो जायगा कि इस प्रकार के मुआहिरे और खरखेबो की ही फज हो सकते हैं और नीक भी इसी प्रकार बुझाया जाता था।

हम लोगों के सुनने में आया है कि बिदेय रजिस्ट्री आफिस बोल ही गई है और हम लोगों को यह होता है कि अब हमारा सर्वनाश शीघ्र हो ही जायगा क्योंकि एने आफिस के स्थापित होने से इन मुआहिरे की रजिस्ट्री होने में सीधता और सुविधा होगी।

ऊपर की गई दरकबास्तों से यह स्पष्ट है कि रैयतों की शिकायतें ताबल और छरखेबो खरखेबो किस्मियान के विषय में थी। इन दरकबास्तों पर, क्या बार्बार्ड हुईं सौ मास नहीं पड़ता। जमी मास के १३ मार्च की मासनीय बाबु अबकिमोर प्रसाद के प्रश्न के उत्तर में प्रातनीय मि मैकफर्सन (The Hon'ble Mr Macpherson) ने कहा था—

"Government have received from time to time petition purporting to be signed by ryots of Champaran and complaining of the relations existing between them and the landlords. The petitions have been referred to the local officers for inquiry but reports have not been received in all cases. In certain cases the local officers have taken steps to redress the grievances, which have been proved to be well-founded. The complete report of the local officers is still awaited and in view of the imminence of the revision of settlement operation in the District which will bring to light all the facts of

the situation Government do not consider that any committee of inquiry is now necessary or expedient."

अर्थात् "अम्बारन के रैयतों की इत्यन्तही बरकबास्त सरकार में समय-समय पर माई है जिनमें उन्होंने रैयत और नीलबरा के पारस्परिक सम्बन्ध की शिकायत की है। ये बरकबास्त स्थानीय अफसरों के पास जाँच के लिए भेज दी गई है। पर अभी तक सब पर रिपोर्ट नहीं माई है। किसी-किसी में स्थानीय अफसरों ने उन शिकायतों को दूर करके का प्रबल किया है या मजबूती साबित हुई है। उन अफसरों की पूरी रिपोर्टों की अभी इन्तजार है और यदि नया सब बन्दोबस्त होन बाका है तबसे वहाँ की सब बात बाहिर हो जायेंगी इसलिए गवर्नमेंट इन समय जाँच करनी नियुक्त करना उचित अबका आवश्यक नहीं समझती है।"

इसी समय राखवेसी के बाँके लिखाय जा रहे थे और तावान बमूय किया जा रहा था। समाचारपत्रों में भी इनकी आलोचना हो रही थी। तारीख ६ जुलाई १९१३ के 'बिहारी पत्र' इन विषय की कड़ी आलोचना करके हुए एक सम्बा लख लिखा था।^१

इन सब बातों के खूब हुए भी लार्ड हार्डिन्ज (Lord Hardinge) ने भी

१ बिहारी का लेख इस प्रकार था—

The failure of natural Indigo to successfully compete with the artificial dye has seriously affected the financial position of the planting community in the Tirhut division of our Province and the loss thus entailed on them has affected to a large extent their relation with the tenants. We have referred to the evils of the *Tinkathia* system, and now their attempt to realise *Taxes* (compensation) or *Sarakhs* (enhancement of rent) for realising the tenants from their obligation to grow Indigo on three katthas of baghas of their holdings has created a situation which deserves the serious attention of the Local Government. Villages in which Indigo is or was grown are held either in *Thas* or *Mokhuri*. In the former cash compensation is being demanded which ranges from Rs. 60 to Rs. 100 per Indigo bigha in the latter enhancement of rent as that would permanently raise the income. Instances have come to light in which coercion is employed to make the tenants agree either to the enhancement of rent or pay the cash compensation. Some of those who do not agree are harassed in various ways till they agree to the terms imposed by the *Sahab*. Numerous petitions, we understand were filed before the District Magistrate the burden of the song in each case being

हम लौप बाँड़ी के ऊपर मालिश नहीं करते हैं निऊ अपने बचाव के लिए बरकबास्त

मीलबरो को एक सर्टिफिकेट बिलामी गई। सन् १९१३ के अन्त में जब वे पटना हाईकोर्ट की दीव बालन के लिए पटना जाय थे उसी अवसर पर मीलबरो ने उन्हें एक अभिनन्दन-पत्र दिया था जिसके उत्तर में उन्होंने कहा था—“Today as far as I know the relations between the Bihar Planters and their *ryots* are cordial and satisfactory in the North Bihar District.” अर्थात् जहाँ तक मुम बात हुआ है आज बिहार के उत्तरी जिलों के मीलबरो और उनके रीयों में बहुत भंतीपजनक सम्बन्ध और बनिष्ठ प्रेम है।

सन् १९१४ में बिहार प्रांतीय सम्मेलन (Bihar Provincial Conference) की बैठक बांकीपुर में ता १ अप्रैल को हुई। उसके अध्यक्ष बाबू बलकिशोर प्रसाद ने बोले हैं कि आह्वान काम जावे और हजूर की तरफ से उन लोगों को तमना दिया जाय कि पुष्प न करें।

And be it said to the credit of the present District Magistrate of Champaran that he has on several occasions while sending copies of such petitions to the factory managers for information, made it perfectly clear that no *ryot* can be compelled to pay compensation in lieu of Indigo against his will, that no sort of pressure can be used to compel him. He has further added that if any *ryot* has executed an Indigo *sale* he is bound to grow indigo, and if he refuses or neglects to do so, damages can be realised by civil suit. But the payment of compensation in lieu of Indigo is absolutely at the option of the *ryot*. Such a clear and unambiguous expression of the views which the District Magistrate entertains on the question of compensation has been a source of relief to the poor tenants. It is, however a well known fact that factory managers and the European Thikadars had been practising a sort of benevolent despotism, but it was despotism after all. The principal source of profit having almost disappeared, there has been more of despotism than of benevolence and it behoves the Government to come to the relief of the poor cultivators, for these latter in their struggle with the powerful organisations of the planter's and Thikadars, a very influential body certainly have to face fearful odds. Sometimes petitions are submitted to the District Magistrate on which it is not possible for him to take any action. For instance in one petition the Magistrate passed the following order—“The petition does not show to what public officer it is addressed. If it is addressed to the District Magistrate, it is for the petitioners to state what action they

मरण भाषण में व्यापार के सम्बन्ध में कहा था—

“The highest officials in the land have utilized their replies to the addresses of welcome from the Planting Community to bestow upon them glowing Panegyrics on the valuable services they are said to have rendered to Tirhut.

I do not grudge the planters their eulogiums and I wish them joy of them. But I do maintain that there is another side of the shield and whatever good the planters might have done, their dealings with ryots have brought about a serious agrarian

desire the District Magistrate to take and under what law? If it is intended for the collector I do not in the least understand what power of interference the Collector has. The petition is, therefore, returned to the Mokhtar so that he may make the petition clear. We can very well understand the difficulties of the Executive head of the District, but there are various ways in which he might take action and we might be permitted to humbly suggest to him that as the head of the police he might see that they are less subservient to the wishes of the Factory managers. Police guards are placed in villages whose inhabitants are said to have gone out of the hand of the Factory and the oppression, the members of this force are said to practise might well be put a stop to and in all cases in which the District Magistrate is satisfied that wrong is being done although he might not be able to employ the provisions of any law to punish the wrong-doers, he might use moral suasion and we are sure this will have the desired effect. Only very recently a case under Sec. 107 Cr. P. C. was tried by a Deputy Magistrate of Motihari exercising first class powers, in which persons were accused of interfering with the cultivation of *Ghar Masina* (गैर मजबूती) land belonging to the Barah Factory and its outwork Gawandra Factory, threatening to commit violence on the servants and those of their tenants who have paid Indigo compensation known as *Tareen*. The case for the defence was that the said factories were demanding *Tareen* from the accused and other people and are coercing them to pay by various acts of oppression and that this case has been instituted by the police of their instigation with a view to put pressure on them so that they may be compelled to pay it and there is no apprehension of a breach of the peace on their part. Now the Magistrate who tried the

मीलबरो को एक सर्टिफिकेट बिलामी गई। सन् १९१३ के अन्त में जब वे पटना हाईकोर्ट की नीब डाखने के लिए पटना आये व उसी अवसर पर मीलबरो ने उन्हें एक अभिनन्दन-पत्र दिया था जिसके उत्तर में उन्होंने कहा था—“Today as far as I know the relations between the Bihar Planters and their *ryots* are cordial and satisfactory in the North Bihar District.” अर्थात् यहाँ तब मुम बात हुआ है जाम बिहार के उत्तरी जिलों के मीलबरो और उनके रैयतो में बहुत सलोपजनक सम्बन्ध और वनिष्ठ प्रेम है।

सन् १९१४ में बिहार प्रांतीय सम्मेलन (Bihar Provincial Conference) की बैठक बाँकीपुर में ता १ अप्रैल को हुई। उसके अध्यक्ष बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद ने बोले हैं कि जाइन्हे काम आये और हुनूर की तरफ से उन लोगों को समझा दिया जाम कि जुस्म न करे।

And be it said to the credit of the present District Magistrate of Champaran that he has on several occasions while sending copies of such petitions to the factory managers for information, made it perfectly clear that no *ryot* can be compelled to pay compensation in lieu of Indigo against his will, that no sort of pressure can be used to compel him. He has further added that if any *ryot* has executed an Indigo *settle* he is bound to grow indigo and if he refuses or neglects to do so, damages can be realised by civil suit. But the payment of compensation in lieu of indigo is absolutely at the option of the *ryot*. Such a clear and unambiguous expression of the views which the District Magistrate entertains on the question of compensation has been a source of relief to the poor tenants. It is, however a well-known fact that factory managers and the European Thikadars had been practising a sort of benevolent despotism, but it was despotism after all. The principal source of profit having almost disappeared there has been more of despotism than of benevolence and it behoves the Government to come to the relief of the poor cultivators, for these latter in their struggle with the powerful organisations of the planter's and Thikadars, a very influential body certainly have to face fearful odds. Sometimes petitions are submitted to the District Magistrate on which it is not possible for him to take any action. For instance in one petition the Magistrate passed the following order—“The petition does not show to what public officer it is addressed. If it is addressed to the District Magistrate, it is for the petitioners to state what action they

मपने मापन म बय्यारल के सम्बन्ध में कहा बा—

The highest officials in the land have utilized their replies to the addresses of welcome from the Planting Community to bestow upon them glowing Panegyrics on the valuable services they are said to have rendered to Tirhut

I do not grudge the planters these eulogiums and I wish them joy of them. But I do maintain that there is another side of the shield and whatever good the planters might have done, their dealings with *ryots* have brought about a serious agrarian

desire the District Magistrate to take and under what law? If it is intended for the collector I do not in the least understand what power of interference the Collector has. The petition is, therefore, returned to the Mokhtiar so that he may make the petition clear. We can very well understand the difficulties of the Executive head of the District, but there are various ways in which he might take action and we might be permitted to humbly suggest to him that as the head of the police he might see that they are less subservient to the wishes of the Factory managers. Police guards are placed in villagers whose inhabitants are said to have gone out of the hand of the Factory and the oppression, the member of this force are said to practise might well be put a stop to and in all cases in which the District Magistrate is satisfied that wrong is being done although he might not be able to employ the provisions of any law to punish the wrong-doers he might use moral suasion and we are sure this will have the desired effect. Only very recently a case under Sec. 107 Cr. P. C. was tried by a Deputy Magistrate of Motihari exercising first class powers, in which persons were accused of interfering with the cultivation of *Ghar Mazrae* (गैर सबकसा) land belonging to the Barah Factory and its outwork Gawandra Factory threatening to commit violence on the servants and those of their tenants who have paid Indigo compensation known as *Taxen*. The case for the defence was that the said factories were demanding *Taxen* from the accused and other people and are coercing them to pay by various acts of oppression and that this case has been instituted by the police of their instigation, with a view to put pressure on them so that they may be compelled to pay it and there is no apprehension of a breach of the peace on their part. Now the Magistrate, who tried the

situation and that they have resulted in considerable suffering and misery to the poor defenceless villagers. It is well known that the *ryots'* allegations against the planters which have been held by courts to be generally well-founded are to the effect that they are found to execute illegal *Sattas* by methods of coercion including the institution of vexatious cases, that fines and cesses are unlawfully realised from them and that they are ill treated if they attempt in the least to refuse compliance with the orders of the Planters. So far as the execution of *Sattas* is concerned it is strange

case, in the course of his judgement* says—I have made a local inspection of this land and compared the Cadestral Survey No. 1310 Mahal and Mauna Gawandra, Tola Sherpure and it is entered in the Khatian as *Ghar Afaruz Rasta* (Road) *chak Pokhta at de Akre Afalik* and it is also shown in the cadestral map as road. I have seen several other lands Plot No. 1681 Mahal and Mauna Gawandra, Tola Randih and 1275 which the factories have dug up in order to cultivate them and these lands are also shown in the Cadestral survey Khatian and map as road. It will therefore be seen that what the factories are anxious to cultivate are *Ghar Afaruz* roads, that is, public roads which have been used by the people as such for many years, perhaps many decades and that it has now suddenly entered their heads to dig up and cultivate them and thus stop the right of way of other people. I may say at once that the factory is not entitled to dig up cultivate and grow crops on these roads and thus stop the traffic altogether. The chief people that are affected by this are the accused and others that have not paid the compensation or *Taroom* and who have got their houses, Gaushalas, Khablhas, Nads, etc. near them. What the factories have done is absolutely a wrongful act which is likely to provoke a breach of the peace and for which they want others to be bound down. The accused in my opinion, were perfectly justified in resisting in the way they are alleged to have done the cultivation of these roads by which the right of way would be stopped. I can understand no other motive on the part of the factory for selecting these roads to be cultivated first before other fallow-lands (which are many) than the intention

Judgment of Mr. K.C. Roy dated 16-10-1913 in Emperor v. Santoo Tiwar and others.

that Registration offices are opened at factories to suit the convenience of the planters. These allegations are serious enough in all conscience to merit a thorough and sifting inquiry in the interests not only of the ryots but the planters as well. In my opinion the Government would be well advised if, far from blinking so serious a problem, they tackle it in the only way possible, namely by appointing a small mixed committee of qualified officials and non-officials to thoroughly investigate the matter by means of an open inquiry and by acting upon the recommendations. Otherwise, I may warn the Government that there are rocks ahead and that they had better look out.

अर्थात्, 'देस' के सबसे बड़े कर्मचारियों व मीठारों के जमिन्दार-पत्रों का उलट

making the existence of these accused and others that have not agreed to pay Indigo Tawan, intolerable in the village. It is a piece of extreme high-handedness on the part of the factories, to say the least of it." In the end, the Magistrate came to the conclusion, "that the factories people have dug up the roads to grow crop there on with a view to stop the way of the accused and others who have not paid Taxes in order to coerce them to submit to the factory terms and this is in my opinion at once unjust and unlawful and that it is they who are provoking a breach of the peace. It is the factory servants who are doing wrongful act and who ought to be bound down and not the accused. If any breach of the peace occurs, I would hold them responsible and not the accused. I accordingly discharge the accused under Section 119 Cr. P. C. Any one who has any experience of Zamindari work will agree with us when we say that it is an ordinary practice to coerce the refractory tenants in this fashion. As the trying Magistrate found there was no other object in selecting roads to be dug up for cultivation, roads which have been used as such for years, which were shown as roads in survey maps, except that of coercion specially when it is pointed out that there are other fallow lands which were not sought to be cultivated. And the first effort to cultivate was made in connection with the roads whose cultivation would seriously affect the accused and others who had not paid the compensation or Taxes. Comment is superfluous and would be nothing better than an act of supererogation.

देन के बजाए पर नीलबरो न तिरहुत की ओ सवा की है उसकी बड़ी प्रबलता की है। मुझे इस तारीफ के लिए नीलबरो से कोई इप नहीं है। नीलबरो न जो कुछ मलाई की हो पर उनका बर्ताव रैयतो के भाव एसा रहा है कि इसके कारण वही एक बड़ी दुखस्वा उपस्थित हो गई है और बचारे गरीब बहानियों को बहुत कष्ट पहुँचा है। रैयतो के बयान सभी लोग जानत है और उनकी बात बहालशर्तों में सब समझी गई है। उनका कथन है कि बबरहस्ती सट्टा सिखा दिया जाता है तब करम के लिए उन पर मुकदमे चाल कर दिए जाते हैं उनसे जुर्माना और नाजायज सस बसूक किया जाते हैं और कोठी के हुजूम में मानन में उन पर तरह-तरह के जुर्म किया जाते हैं। यह सब बाबर्हस्ती की बात है कि सट्टा रजिस्ट्री करन के लिए नीलबरो के मुनीत के क्वास से उनकी कीठियों पर सास रजिस्ट्री आफिस जोल बिय गये हैं। य बात सभी लोग मानय ऐसी है कि इनके विषय में पूरी और बड़ी जाँच होनी चाहिए। इसमें रैयतो की ही मलाई नहीं है बरन् नीलबरो की भी है।—

हमारे विचार से सरकार को उचित है कि वह इस भारी समस्या को न टालकर इसकी मीमासा करे और इसके लिए एक ही रास्ता है—यानी सरकारी और पैरसरकारी लोगों की एक कमेटी कायम की जाय और सरकार उस कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार काम करे। ऐसा नहीं होना से मैं अभी सरकार को बता देना चाहता हूँ कि बाये उम्ह और अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।”

प्रांतीय सम्मेलन में भी एक प्रस्ताव स्वीकार किया जिसमें सरकार से जाँच कमेटी नियत करने की प्रार्थना की गई। पर इस पर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। कलकत्ते के अनुसन्धानार पत्रिका ‘भारतविम’ और कानपुर के ‘प्रदाप’^१ तथा प्रयाग के ‘अम्मुदय’^२ भी अम्बारन के रैयतों और नीलबरो के सम्बन्ध में लेख लिखते रहे और बाबू बलकिशोर प्रसाद ने अपने प्रस्तावों द्वारा उन लक्षों की ओर धर्तमेष्ट का ध्यान आकर्षित और इस विषय में उसकी सचेत करते रहे। ता १ अप्रैल १९१५ को प्रांतिक सम्मेलन की बैठक छपर में हुई। इस अवसर पर बाबू नन्दिशोर लाल अम्मुदय ने। उन्होंने भी इस विषय पर यों कहा—

I gather that in the twelve months that have elapsed since we met last, all has not been well with the relation between the two communities (planters and ryots). The ryots have presented petitions to the Government making very serious allegations against some of the managers of the indigo concerns and the official reply in the council was that the Government had forwarded them in

१ प्रदाप—ता ४१ १९१५ ‘अम्बारन में अम्बर’।

२ अम्मुदय—ता १५ १२ १९१४।

original through the proper official channel for report. This is gratifying but one would like to know soon the result of the inquiries, or are they also to share the fate of Mr Gourlay's Report submitted in connection with the Champaran riot of 1900 and which is popularly believed, and perhaps not unjustifiably to be so damaging to the planters that the Government has not dared to publish it in spite of repeated demands in the Imperial and Provincial Councils for its publication.

अर्थात् "यह वर्ष में श्री रैयतों और नीलमरों का वार्षिक सम्बन्ध अच्छा नहीं रहा है। रैयतों ने सरकार के पास कई दरखास्ते भेजे हैं जिनमें कई कोठियों के मालिकों के विरुद्ध शिकायतों की गई है और इस विषय पर व्यवस्थापिका सभा में प्रस्तावों में सरकार की ओर से यह कहा गया कि वे दरखास्त रिपोर्ट के लिए अफसरों के पास भेज दी गई हैं। यह ठीक है पर हम लोग चाहते हैं कि उस जांच का नतीजा भी सीधे प्रकाशित कर दिया जाय। नहीं तो क्या हम यही समझें कि इनका भी वही हाल होया जो कि पुरस्कों की दत्त १९०८ के चम्पारन विद्रोह सम्बन्धी रिपोर्ट का हुआ था किन्तु विषय में लोगों का साबित ठीक ही लगा है कि रिपोर्ट नीलमरों के विरुद्ध होने के कारण गवर्नमेण्ट उसे प्रकाशित करने का साहस नहीं करती है।"

उन्होंने श्री बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद की तरफ एक जांच कमेटी नियत करने के लिए गवर्नमेण्ट से प्रार्थना की। इस बैठक में श्री जांच कमेटी नियत करने के विषय में एक प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और वह सम्बन्ध योग्य है कि इसी बैठक में चम्पारन के पं. राज कुमार शुक्ल ने जिनके विषय में पाठक जाये बहुत कुछ सुने वे रैयतों के प्रतिनिधि होकर चलकी दुब-कहानी कह सुनायी थी और इस सभा में किसी भी रैयत की उपस्थिति न थी। उही महीने में बिहार व्यवस्थापिका सभा की बैठक की जिसमें बाबू ब्रजकिशोर ने वह प्रस्ताव उपस्थित किया —

That this Council recommends to the Lieutenant Governor in Council that a Committee of qualified officials and non-officials be appointed to make an immediate and searching inquiry into the causes of the strained relations between the Planters and the ryots in the District of Champaran and to suggest remedies therefor "

अर्थात् "सरकार की ओर से सरकारी और निरसरकारी लोगों की एक कमेटी इसलिए नियत की जाय कि वह चम्पारन के नीलमरों के रैयतों के वार्षिक सम्बन्ध की पकड़ी जांच करे और उसके हटाने के उपाय बतावे।"

वह कहने की आवश्यकता नहीं कि सर वास्तु में ही गवर्नमेण्ट ने इसे स्वीकार नहीं किया। उत्तर में वही कहा गया कि सरकार इस विषय में स्थानीय अफसरों से

तब जांच करती रहती है और जिले में सबे बन्दोबस्त जारी है। इसलिए रैयतों के जो कुछ बुका होंगे मेहतमिम बन्दोबस्त के सामने पेश किये जायेंगे और जो इनकी रिपोर्ट होवी वह अवश्य सर्वमान्य होगी। गौडवरो के प्रतिनिधि और बिहार पलैन्टर्स एसोसियेशन के मंत्री माननीय मि फिलगेट (Mr Filgate) ने सार्ज हाकिम की वी हुई सर्टिफिकेट पेश की और कहा कि चम्पारन के गौडवरो और उनके रैयतों का सम्बन्ध बरपन्त संतोषजनक है और वहाँ किसी प्रकार की जांच की आवश्यकता नहीं है। बाबू बबकिशोर प्रसाद ने उत्तर में 'इण्डियन प्लैन्टर्स गजट' (The Indian Planters Gazette) से यह पद सुनाया—

"It seems certain that bad feeling has been brewing for some time between certain of the European Zamindars of Champaran and their tenantry and that very shortly after he was appointed District Officer Mr Heycock found it necessary to circulate a notice among *ryots* with a view to reassure them."

अर्थात् 'वह निश्चय जान पड़ता है कि कुछ दिनों से चम्पारन के कुछ यूरोपीय जमींदारों और उनके रैयतों के बीच बेमनस्व बला बा रहा है वहाँ तक कि मि हिकीक को बिना बफसर मुकर्रर होने के कुछ ही दिन बाद एक नोटिस रैयतों को उसकीन बिमाने के लिए जारी करनी पड़ी थी।

मि फिलगेट ने जो कहा वह उनके लिए तो उचित ही था पर आश्चर्य और दुःख के साथ यह कहना पड़ता है कि व्यवस्थापिका सभा के अन्य वरिष्ठरकारी सदस्यों ने भी इस प्रस्ताव का एक प्रकार से विरोध ही कर दिया। चम्पारन के हाक को बिना जाने-बूझे सान बहादुर स्वाजा मुहम्मद नूर ने बिना पूछे यह सलाह दी कि बाबू बबकिशोर प्रसाद इस प्रस्ताव को उठा न। पर बाबू बबकिशोर जो वहाँ की सत्ता से अनभिज्ञ न थे ऐसा क्या कर सकते थे? उन्होंने उत्तर में वही कहा कि यदि बबकिशोर बारा करे कि जो जांच हो रही थी उसकी रिपोर्ट वह प्रकाशित करेगी तो वे अपने प्रस्ताव को उठा लेंगे। पर यह भी सर चार्ल्स बर्मी क्या स्वीकार करते वाले थे? सम्भव था कि रिपोर्ट गौडवरो के बिकह हो और उनका सर्टिफिकेट बरत निकले। यदि सरकार बाबू बबकिशोर के कहने के अनुसार सन् १९१३ में ही जांच कमेटी नियत कर देती तो सायब जो साधान के स्वयं बमूक हो रहे थे और १९१७ की जांच कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार जो बुर्जाना बतिया राज्य पर किया गया वह करने की आवश्यकता नहीं होती। सरकार को भी इस विषय में नीचा नहीं देखना पड़ता और महारमा गांधी को भी इतने कष्ट करने की आवश्यकता नहीं होती। पर ईस्वर जो करता है ठीक ही करता है। सायब उस समय की कमेटी की जांच इतनी पक्की और पूरी नहीं होती और रैयत तीन कठिया से बराबर के लिए मुक्त नहीं होते। भारत के आधुनिक इतिहास में सत्याग्रह का पहला फल देखने में नहीं आता और

कम्पारन के रैयतों के हित के लिए महात्मा गांधी के आत्मोत्सर्ग का दृष्टान्त बिहार प्रांत के निवासियों को देखने का सीमांत प्राप्त न होता। जो काम बाबू कम्पारन में महात्मा गांधी के प्रबन्ध से रैयतों के आत्मोत्सर्ग के लिए हो रहा है और जिसमें दूर दूर प्रांतों के निवासी सेवा के अवाहक बिहारियों के सामने रक्त नय हैं वह भी जान देखने में नहीं आता।

आठवीं अध्याय

अबबाब

ऊपर कहा जा चुका है कि अम्पारन के पश्चिमोत्तर भागकी जमीन नील के अनुसार नहीं है और वहाँ नील की खेती कभी निमित्त रूप से नहीं हुई पर उस प्रांत में भी जंगलों ने कोठियाँ खोली। वे बेलिया तथा रायनगर राज्य के गाँवों का टीका करते और इसी में अपनी गबरान करते थे। पर इससे यह नहीं समझना चाहिए कि उनके रैयत सुखी थे। वहाँ सगठन नील के बरके और ही उपज मध्य के लिए सोच निकाला जा। ऊपर कहा जा चुका है कि सन् १९७ में सगठी कोठी ने नील के बरके 'पैन खर्चा' बसूल करना आरम्भ किया। और कोठियाँ से भी वहाँ नील नहीं होता था और कहीं-कहीं वहाँ नील होता भी था कोठीवाले कई प्रकार के अबबाब बसूल करते थे। पैन खर्चा इन्हीं में से एक था। कोठीवालों का कहना था कि बहुत पुराने समय से हिन्दुस्तानी जमींदार भी तरह तरह के अबबाब लिया करते थे और उन्होंने देखा ऐसी अबबाब सेवा जारी रखा। वे यह भी कहते थे कि रैयत अबबाब अपनी जुड़ी से देते हैं। जिस रैयत को बीघा पीछे केवल १) रुपये मासदुशारी देनी पड़ती है वह अपनी जमी से १) रुपये और देन का रखी वे। पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि अम्पारन के रैयत एकद्वारकी ऐसे 'बावद' नहीं जो १) रुपये और ६) रुपय की बीघे में अन्तर न समझ सकें। रायनगर के गाँवों के बिपक्ष में कहा जाता है कि वहाँ के जा जाँव ठेके पर बिघे गये हैं कि उनके जमा में अबबाब बढा दिया गया है। सन् १७९३ ई में जब बखामी बन्दोबस्त हुआ तभी से सरकार की ओर से किसी तरह का अबबाब लेने की मनाही है। क्याकि ईमेंगी एक में भी इसकी मनाही है और यदि किसी जमींदार का अबबाब सेवा साबित हों तो उससे अबबाब की कूनी रकम बसूल कर रैयत को दिला बिघे जाने का नियम है। पर अम्पारन के लिए कोई कानून नहीं—मार्ग सन् १७९३ ई की प्रचारित सरकारी आज्ञा आज तक वहाँ पहुँची ही नहीं।

अबबाब फ़िस्त ही प्रकार के हैं। उनके नाम तथा उनके बसूल करने के तरीके सुन कर, यदि रैयतों के कुछ की ओर विचार न रखें तो हँसी जाती है। पाठक नाम से उन्हें समझ न सकेंगे इसलिए उनकी परिभाषा दे दी जाती है।

(१) पैन खर्चा—पैन कहल है नहर को। जो खर्चा नहर का पानी बने के लिए लिया जाता है उसे पैन खर्चा कहते हैं। यदि वास्तव में पैन होने और उनसे पटाने के लिए रैयतों को पानी मिलना और उससे ब लाभ उठाने होने तो इस खर्चे के बसूल करने में किसी को आपत्ति नहीं होगी। सरकारी नहरों से पानी लेने के लिए बिहार ही में नहीं बरम् और प्रांतों में भी रैयत कर देने हैं और इसके सम्बन्ध में कोई नु नहीं करता क्याकि सभी समझते

है कि यह उचित है। पर चम्पारन में पैन खर्चा एकत्रित अवधार है। साठी कोठी में बिना पानी का उचित प्रबंध किये ही पैन खर्चा बसूल किया जाता था। उसी प्रकार और कोठियों में भी यह प्रथा जारी थी। प्रायः सभी जगह बीघा पीछे ३) रुपये पैन खर्चा के रूप में बसूल होते थे। बेतिया के उत्तर भाग में एक खोरवा कोठी है। वहाँ बहुत 'बागड' रैयत हैं। माफकर वहाँ जमीन बन्दोबस्त नहीं होती है। एक हल में जितनी जमीन जोती जा सके उसी पर मासगुजारी बीघावी जाती है। इन 'हलबन्दी' प्रथा कहते हैं। चीनखा कोठी के बाँध रैयत हल पीछे ७॥) रुपये मासगुजारी दिया करते हैं और उनमें ७॥) रुपये पैन खर्चा लिया जाता था। मसबती कोठी में जिसके मालिक चीनखा के ही मालिक हैं एक बाँध है जिसे पिपरासी बाँध कहते हैं। कोठी का कहना है कि यह बाँध कोठी के खर्च से बनाया गया था और उसकी मरम्मत में कोठी का खर्चा पड़ना है। इसलिए कोठी पैन खर्चा बसूल करती है। इनके बनाने में क्या खर्चा पड़ा था मालूम नहीं पर इसकी मरम्मत में साल में ३) रुपये से अधिक खर्च नहीं पड़ना। इसके बरमे कोठी की मालिकाना मामूली इस पैन खर्च और बाँध बेहूरी की ज़ामद में केवल १) रुपये की थी। रैयतों का कहना है कि घामाँ ने बाँध बिना मजदूरी के तैयार कर दिया था। इसी प्रकार बेरुमा और तरईपुर जादि कोठियों में भी पैन खर्चा बसूल किया जाता था और वहाँ भी यही कहा जाता था कि रैयतों के लफ्फ के लिए पैन बना दिये गये हैं पर सब मैटलमेंट अफसरों को कही पैन मिले ही नहीं और वहाँ मिले भी वहाँ जितने बीघों पर पन खर्चा बसूल होता था उनमें बहुत ही कम पैन से काम उठाने थे। मसबती कोठी में तो पैन का होना कोठीवाले भी नहीं बताते पर पैन खर्चा वे भी बसूल कर लेते थे।

एक और कोठी की कबा मुन कीजिये। इसका नाम सिफ्टा है। इसके मालिक मि. बीर्ष नामक एक अंगरेज थे। उन्होंने देखा कि पैन खर्चा धायब अवधार ठहराकर बन्द कर दिया था। इसलिए रैयतों ने उससे बरमे एक ही साथ कुछ बसूल कर लेना ही उन्होंने बन्द का नाम समझा। अतएव उन्होंने ६ वर्षों का पैन खर्चा एक ही साथ बसूल करना चाहा। कुछ रैयतों से बसूल भी कर लिया। कितनों ही ने नहीं दिया। इसी बीच में सब ज़ामा और यह पोछ लख गई। इसी मि. बीर्ष के जिम्मे बतिया राज्य के ठेके की मासगुजारी बाकी पड़ गई थी। कोर्ट और वाइस ने धायब इसी की औरखाही के लिए प्रायः ८ ०) रुपये जो उनके जिम्मे बाकी थे एकत्रित गाफ कर दिये।

(२) सलामी (३) तीन-कोठिया और (४) जोगान—जो अवधार तीन रुपये बीघा पीछे बसूल किया जाता था वहाँ कहो सलामी कहें तीन-कोठिया और वही सलामी के नाम से भी मसहूर है। इसका नाम तीन-कोठिया पड़ना बड़े मार्क की बात है। इनसे यह नहीं साबित होता कि चम्पारन के उत्तरी भाग में भी नील बोया जाता था अवधार तीन-कोठिया प्रथा जारी थी। पर रैयत ऐसा समझते हैं कि जैसे जिसे के बनिजन और पूर्व भागों में नील का बोस जग पर है उसी प्रकार इस अवधार का बोस उत्तर-पश्चिम के रैयतों पर है।

इसका उदाहरण मूमुराड़ी कोठी में स्पष्ट रूप से पाया जाता है। वहाँ कोठी ने पहले बीघा पीछे तीन मन जाल सेना आरम्भ किया और कुछ दिनों के बाद वह उसके बरतने में १) रुपये मकद मैने लये। मुरसा और हरदिया कोठियों में भी यह व्यवहार इसी प्रकार किया जाता था। इसी सम्बन्ध के कारण रैयतों का ऐसा क्या बंध गया है कि चाहे मीर के रुपये हों या व्यवहार के रुपये अगर वे ठेकेदार उनसे किसी न किसी प्रकार से कुछ सेना ही अपना कार्य सम्भालते हैं—उसको बाहर के लोग चाहे जो कहें—पैन जर्चों तीन-कठिया लगान या ससामी।

(५) पैन जर्ची—यह भी पैन जर्चों की तरह व्यवहार है। यह मास्नुवाटी के स्वामा पीछे एक जाना लिया जाता था।

(६) बेठमाफी—ऊपर चौतखा कोठी का नाम था चुका है और वह कहा जा चुका है कि वहाँ हल पीछे ७॥) रुपये मास्नुवाटी और ७॥) रुपये पैन जर्चों वसूल किया जाता था। बेठमाफी भी उसी कोठी में वसूल होती थी। कोठी की कुछ बीघात भी जो रैयतों के हल से ही व्यवहार की जाती थी। इस कोठी के साहब का कहना है कि रैयतों को हल देने में बहुत कष्ट मान्य होता था इसलिए हल के बदले उन्होंने हल पीछे १) सामान्य सेना स्वीकार कर लिया। इसी को बेठमाफी कहते हैं बर्बात बेठमाफ करन के लिए कर। उस कोठी से मरीच रैयतों को इस प्रकार ७॥) रुपये के अतिरिक्त जो वारिज मास्नुवाटी है ७॥) पैन जर्चों और १) बेठमाफी जर्बाल १ ॥) और भी पैन बीघे देने पड़ते थे।

(७) जपूरी पुतही—जब कोई रैयत मर जाता है तो उसके वारिस से कर लिया जाता है। पाठकों से यह कहना उचित है कि बगाल टैमेंटी एक्ट के अनुसार रैयतों को अपने पूर्व पुत्रों की ज़ोत पर कानूनन हक हासिल है। जो भी कोठीवाले बिना इसके वसूल किये वारिस को अपनी मुरिस की व्यवहार का मालिक नहीं समझते थे।

(८) मइबब—सड़की की धाती के समय १) कोठीवाले लेते थे।

(९) समीड़ा—जब किसी विवहा की सवाई होगी भी तो उससे ५) रुपये वसूल किये जाते थे।

(१०) कीस्तुमावत—तेज अबबा ऊन्न पेशने की कल रखने वालों से कोस्तु पीछे १) रुपये लिया जाता था।

(११) बुल्लियावन—वही-कहीं जपूरी बहुत होती है। लोग उसे उठाकर बेचते हैं। उठाने के लिए जो बुल्ला रखता था उससे बुल्ला पीछे १) वसूल होता था।

(१२) बालछपी—यह कर दूध और तेल बचने वालों से कटिया पीछे (किससे मारकर दूध और तेल बेचते हैं) १) वसूल किया जाता था।

(१३) बेबाई—जो कोई वस्त्र बेचता था उससे १) अबबा २) सामान्य कर लिया जाता था।

(१४) फगुयही, (१५) बसहरी (१६) चेत-नबमी और (१७) हाबात-यूबा—
होती बसहरी चेत-नमी और हाबात-यूबा के समान रैयतों से घर पीछे कुछ न कुछ कोठी
बाने या उनके अगले बमूल किया करते थे।

कहते हैं कि होती के अक्षर पर किसी-किसी कोठी में नाच बजाकर सजा कर
दिया जाता था। कोठी के कर्मचारी सब नाच देखते और रैयतों को नाच दिखाते। जो न
चाहे उसको जबरदस्ती बिजाया जाता था। नाच हो चुकने पर उनसे फी आबमी १) के
हिसाब से ले लिया जाता था।

(१८) हुनियही—परिचमोतर कम्पारन में बहुत जगह है। वहाँ साहब कोच
अक्षर सिफार खेकने बाया करते हैं। सिफार के लिए हाथियों की जरूरत होती है।
इसलिए वहाँ के साहब हाथी भी रखा करते थे। जब हाथी मोक लेता होता था तब रैयतों
पर कर बैठाकर उसका काम बमूल कर लिया जाता था।

(१९) मोड़ही (२०) मोटरही अथवा हुबही और (२१) नबही—इसी प्रकार
साहब को यदि मोड़ा अथवा मोटरकार (हवायाही) लेने की आवश्यकता हुई या नाच
बनाना पड़ा तो रैयतों से कर बमूल किया जाता था।

(२२) बबही—साहब के बीमार पड़ने पर जो खर्च हो वह भी रैयत देते थे। एक
साहब के निधन में कहा जाता है कि उनको एक लाख हो गया था। डाक्टर को लाकर
बहुत दिनों तक कोठी में रखना पड़ा जिसमें कोठी का बहुत खर्च हुआ। यह खर्च रैयतों से
बबही के रूप में बमूल किया गया।

(२३) अगही और (२४) कटहलही—जब कोठी के बाय में आम या कटहल बहुत
हो गया तब उसको रैयतों के बीच बाँट देते थे। यदि किसी को ये फल पसन्द नहीं आये
तो कोठी की ओर से उसकी खबर ली गई। आम का पहुँचना था कि सिपाही उसका काम
लेने पहुँचे। आम का आम बाजार की दर से नहीं पर रैयत की हैसियत के अनुसार
देना पड़ता था।

(२५) आमबी सलामी—जब साहब अथवा उनके कोई बड़े मुलाजिम किसी यात्र
में बने तो सब रैयतों को आकर सलाम करना चाहिए। पर इतने बड़े लोगों को आमबी हाव
कोई कैसे सलाम कर सकता है? इसलिए सलाम न भी करे और फी आबमी १) उनसे चढ़े
बाने पर भी दे देते तो औरियत—नहीं तो बरतहमीबी का जुमाना देना पड़ता था।

(२६) रसीबाबन—माकगुबारी में रसीय पीछे एक आना।

(२७) फरकाबन—फरकाती के लिए रैयत ॥ से १) तक।

(२८) बस्तुरी, (२९) हिसाबान (३०) लहरोर और (३१) बीबाब बस्तुरी—
ये भी किसी न किसी मक के लिए रैयतों से खपया पीछे ॥ से -) तक बमूल
किये जाते थे। ये सब अक्षर कोठी के मुलाजिमा की ही मिलते थे। पर कहीं-कहीं यह

रकम भी कोटी ही न लेनी थी ।

(३२) बीसवीं, पण्चवीं बत्तरी—ऊपर कहा जा चुका है कि मिजटा कोटी ने चम्प आदिमियों से सर्वे करने के कुछ पहले कई वर्षों का अवकाश एक साथ बसूल करने की चेष्टा की थी । रैयतों का कहना है कि इसी प्रकार चोतला कोटी ने अपने रैयतों से कहीं बीस वर्ष बड़ी पण्डू और कहीं बस वर्ष के अवकाश एक ही साथ के लिये । जिनके पास रुपये न थे उनसे ताबान की तरह हँबोट आदि भिक्षा लिये । यह भी जैसे ताबान लेकर रैयतों को नील में छन्दारा देने का बहाना किया गया था उसी प्रकार चायद तरीब रैयतों को अवकाश में छन्दारा देने से बहाने बसूल हुआ था ।

इन अवकाशों के अन्तर्गत और भी जिनके प्रकार के अवकाश बसूल किये जाते थे जैसे—(३३) महात्माजी (३४) राजर्षक (३५) मुजदबी (३६) बीबानमेंटी (३७) मुजनेंटी (३८) जंगला इतिमनबीसी (३९) बहीष्मुझाहा (४०) अमनूही इत्यादि ।

ये तो अवकाश हुए । कोटी के साहब चाहे नील की कोठियाँ हो अवकाश पश्चिमोत्तर माय की ठेकेदारी कोठियाँ हों सभी रैयता से जमाया बसूल करने थे । इस बात को कमीशन के सामने बहुत कोटीवालों ने स्वीकार भी किया पर कहा कि छोटी-छोटी रकम बसूल की जाती थी और उसमें से कुछ अपना भण्ड (हफ मासिकाना) रखकर बाकी मासिक करने वाले का हजाना दे दिया जाता था ।

वहाँ के लोगों ने एक निश्चित नाम वाली सजा बतलायी । वही अब कोई स्त्री भ्रष्ट हो जाती है और उसका पता लोगों को लगता है या पुरुष उसके साथ पीसा रहता है उसको सजा होती है । इसको 'मिगारखाट' कहते हैं । लोगों का कहना है कि यह सजा नेपाल राज्य में भी जारी है । अम्मारन के किसी-किसी हिस्से में मिगारखाट लगाकर बड़ी रकमें कोठियों के श्राव बसूल की जाती थी । अवकाशों की सामान्यता में पाठक समझ लेंगे कि हर प्रकार से रैयतों से कुछ न कुछ बसूल कर लेना कोटीवाले का बजाने था । पर यह नहीं समझना चाहिए कि इन साल हर रैयत से सब अवकाश बसूल किये जाते थे । इनमें बहुत ऐसे हैं जो प्रत्येक वर्ष बसूल होते थे—जन्म अवकाश विशेष अवसर पर और अनेक नाम रैयतों से बसूल किये जाते थे । मीटलमेण्ड अफवाज का विचार है कि सब मिलकर अवकाश की रकम सालवारी के अन्तर्गत ही अर्बान् रैयतों का एक के बड़े से होने चढ़ते थे ।

कोटीवाले कहते हैं कि ये अवकाश बहुत प्राचीन समय से चम्प आ रहे हैं और हमको या ठेका दिया गया है उसमें लफा की गुजायत नहीं। एनी कई हैं हमसिय हमको अवकाश देने की मजबूरी है । न यह भी कहते हैं कि कहीं-कहीं तो या जमा रैयतों से बसूल होने वाला है उसमें भी अन्ध पर हमें ठेका मिला है और कहीं-कहीं हमारे पट्टे के जमा में भी अवकाश बसा दिये गये हैं—तो फिर इन बिना अवकाश क कौन रह सकते हैं ? मि एम्मन (Mr Ammon) ने या बल्वा कोटी के मीनेजर हैं और या उस अन्ध में बड़े

नामी और ओरवार कोठीवाले कहमाने हैं कमीशन के नामने अपनी मफाई दिखाने हुए कहा था—“Is the *shinder* to blame for collecting these *shanks* for the *shinder* is paid to squeeze and must squeeze to pay” अर्थात्, ‘अवकाश देने में ठेकेदारों का क्या दोष है ? उन्हें ना रैयतों को बचने के लिए ही रक्ता जाता है और मासिक का भुगतान करने के लिए रैयता का बचना उनके लिए जरूरी है । पर यह कहना कि अवकाश के बिना ठेके में कुछ काम ही नहीं निकल सकता है ।

सैटलमेंट्स अफसर मि. जे. ए. स्पीनी ने कमीशन के सामने अपने दस्तावेज में बनिदा राज्य और रामनगर राज्य के ठेकेदारों के विषय में हिसाब करके यह दिखाया था । बेटिया में मैकडे (१०) रुपये ठेकेदारी हक (इकत नहुमीन) को ही मिलने में । रामनगर राज्य के ७९ पार्षों का हिसाब करके जो ठेकेदारों के साथ बन्दोबस्त है उनका दिखाया था कि ठेकेदारों को ४ ८ ७) रुपये राज्य का देने पड़ने हैं । उनका जमाबन्दी के अनुसार ४०५४७) रुपये अर्थात् अपने अपने में कुछ कम बसूल करने का हक है । पर बकाश और हुशारमीन की आमदनी यदि रैयती जमाबन्दी में जोड़ दी जाय तो उम्ह ७ ७) की आमदनी हो जाती है । अर्थात् ६ ००) देना और ७० =) बसूल करना—3 ०) का सीधा भुगतान—मैकडे ७५ केवल रैयता में बसूल कर देने के लिए । पार्सक याद रख कि हममें अवकाश शामिल नहीं जो ६००) मामाना के सम्मय और होया । इतना और कहना आवश्यक है कि ठेकेदारों को ठेका लेन के समय मासिक की एक बड़ी रकम मसामी देनी पड़नी है । पर जहाँ ७५ मैकडे आमदनी अवकाश छोड़कर है वहाँ मसामी क्या बड़ी रकम हो सकती है ?

इन अवकाशों के बारे में रैयता में सरकार में तथा सरकारी अफसरों के पास दरखास्तें भेजी और अब बाबू ब्रजचिंदर प्रसाद न जीब कमेटी भर्कर करने के लिए बिहार की व्यवस्थापिका सभा में प्रस्ताव पेश किया था उस समय मातृनीय मि. लिविज ने (Hon'ble Mr. Levisage) बिज्जुने सरकार की ओर न उतर दिया था यह दिख साया कि बाबू ब्रजचिंदर प्रसाद न एक बड़ी भूल की है । उन्होंने बम्पारन के सभी कोठीवालों को भीतर कहा है । पर अनेक कोठीवालों ने कमी भीक नहीं किया । आपने धर्मिया कि जो दरखास्तें पश्चिमोत्तर भाग के रैयतों की बीहूई की बेनीक के सम्बन्ध में नहीं भरन् अवकाश के विषय में भी इसलिए भीतरों के सम्बन्ध में जीब की जरूरत उन दरखास्तों के कारण नहीं हो सकती । उन्होंने यह भी कहा था कि सरकार ने इन अवकाश वाली दरखास्तों का त्थानिक अफसरों के पास जीब के लिए पेश दिया है । यह बात ठीक थी पर जैसा बाबू ब्रजचिंदर प्रसाद न उतर में कहा था कि बम्पारन के रैयत भीतरों और अवकाश वाले माहलों में कोई सेप नहीं समझने क्योंकि दानों का भुगतान उनमें कुछ-न-कुछ बसूल ही करना है ।

जो दरखास्तें पनी थीं उन पर जिम्मा क्लककर न जीब की ओर ता १८-५-१९१४

को इस पर एक नोटिस जारी कर दिया कि बीबा पीछे १५) बीतला कोठी की ओर से मंजे जाने की रैयतों की मांगिष भी सो कोठी के साहब ने उग्यें मकीन बिसाया है कि यह नहीं मांगा जाता है इसलिए किमी को भी रैयत लोग ये १५) रुपये मांगने पर भी न देंगे । इसी प्रकार अबबाब के विषय में भी जब तक बैलवा सिकरा बीतला मधुबनी और भरईपुर आदि कोठियों के रैयत भी छोटे काट, कमिस्नर और कलक्तर के पास हरफ्मास्ते भेजते रहे इन सबका सम्बोधस्त (Settlement) के समय निपटारा हुआ और मि स्वीनी ने इसके विषय में सरकार के आज़ामुसार जांच करके जून सन् १९१५ में रिपोर्ट की । उस रिपोर्ट में रैयतों के बयान बहुत सच पाये गये और उसके अनुसार अबबाब रोक देने की आज्ञा हुई । बेसिवा राज्य में तो अबबाब का बसुल होता इस आज्ञा के जारी होने पर एक बया पर रामनगर राज्य के गाँवों में जारी रहा ।

नवी अध्याय सर्वे बन्धोबस्त

पाठकों को स्मरण होना कि बाबू जयकिशोर प्रसाद ने प्रस्ताव कोठीवालों और रैयतों के वारस्परिक सम्बन्ध की जाँच करने के विषय में पेश किया था। उसके उत्तर में मि. जेबिन्स ने कहा था कि इस कमटी की जरूरत नहीं है क्योंकि सरकार ने बम्बारेन में बोम्बारा सर्वे बन्धोबस्त करने के लिए अफसरों को तैनात कर दिया है और जो कुछ रैयतों का कहना है वह सब सैटलमेण्ट अफसर सुनेंगे और यदि कोई कार्रवाई जरूरी समझी जायगी तो वह इस अफसर की रिपोर्ट आने के बाद की जायगी। सन् १९१३ से बन्धोबस्त का काम बम्बारेन में जारी हुआ।

सैटलमेण्ट अफसर ने अबबाब के सम्बन्ध में कुछ ही जाँच की और यह कहना असम्भव नहीं है कि यदि वे इस विषय की पूरी जाँच नहीं करते तो महारवा यात्री को और भी कष्ट उठाना पड़ता। पैस जर्जों को उन्होंने एकबारगी कानून के विरुद्ध बलसाकर रैयतों से कह दिया कि वे इसे देने के लिए मजबूर नहीं किबे जा सकते। उन्होंने गाँव-गाँव में जाकर यह जाँच की कि कितने बड़े और कितने छोटे पैस हैं और उनसे कितने रैयतों का नाम पहुँचता है तथा कितने रैयतों से यह बिना कारण बसूल किया जाता है। सुना जाता है कि एक अफसर ने एक बयान साहब से कह दिया कि आप हमारे सामने पैस बोलबालाकर दिखावा दीजिये कि इससे कितना जोत पट सकता है। जितनी बेर तक पानी जाता रहा वे स्वयं छूरे रहे। पर हजार कोषिध करने पर भी पानी बहुत दूर तक नहीं जा सका और इस प्रकार अपनी जाँचों से पैस की गिरीरी हासल देखकर उन्होंने रिपोर्ट दी कि पैस जर्जों बिलकुल नाजायब हैं और इस बात को स्वयं सैटलमेण्ट अफसर ने भी जाँच करके ठीक पाया। उसी कारण पब्लिकमेंट ने इस अबबाब के रोक देने का हुक्म दिया। जैसा कि ऊपर कहा गया है बेथिवा राज्य में जो सरकार के हाथों में है अबबाब तुरन्त रक पया पर रामनगर राज्य के ठेकेदारों ने अबबाब बसूल करना जारी रखा। हाँ कहीं-कहीं के रैयत इन सब बातों को देखकर कुछ सोच हो गये और अबबाब देने से इनकार करने लगे। पर जहाँ ठेकेदार उनको बचा सके वहाँ उन लोगों से भी अबबाब के ही लिया। पाठकों को यह भी स्मरण होना कि बंगाल टैनेसी एक्ट के अनुसार अबबाब बसूल करने वालों से उसकी कुली रकम बसूल की जाती है। पर ठेकेदारों के यह कसूर करने पर भी कि उन लोगों ने अबबाब लिया उन पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसकी जवाबदेही किस पर है मालूम नहीं। सैटलमेण्ट अफसर ने अबबाब रोकने में जो पैसा की उसके लिए वे सब बन्धबाद के भागी हैं। इसमें उन्होंने बड़ी निरपेक्षता और निर्भीकता से काम किया।

यह तो हुई पश्चिमोत्तर भाग की कथा। पूर्व उक्ति भाग में जबबाब इस प्रकार के नहीं थे। वहाँ तीन-कठिया सरहबेसी और ताबान की ज़ूम थी। ताबान के विषय में सैट्समेन्ट अफसर को बोलने का कुछ अधिकार नहीं था। पर सरहबेसी और तीन-कठिया की बात उनके सामने पेश हुई। इस सम्बन्ध में कुछ के साथ मिलना पड़ता है कि उन्होंने उस सावधानी से काम नहीं किया जिससे कि जबबाब के सम्बन्ध में किया था। रैयतों ने उनके सामने क्या किया कि सरहबेसी के सट्टे उनसे बचालदार ब्याब डालकर लिखे गए हैं। इस पर उन्होंने फैसला दिया कि ब्याब डालने का सबूत नहीं मिलता है। रैयतों की ओर से कहा गया कि सरहबेसी के सट्टे ब्याब टैनेन्सी एक्ट (Bengal Tenancy Act) की २९वीं धारा के अनुसार कानूनन बाधक नहीं है। इस पर उनका फैसला हुआ कि प्रायः सभी ऐसे सट्टे बाधक हैं। यह बात उनकी सभी पक्षपातहीन और पक्की नहीं नहीं या सकती क्योंकि अगर कहा जा चुका है कि तुकोसिया कोठी के नव रैयतों के मुकदमों का फैसला करने में मोतीहापी के मुसिफ को कई महीने लगे थे। पर सैट्समेन्ट अफसर ने प्रायः २५ ३ हजार सट्टों के बारे में अपनी जाँच कई महीनों के भीतर ही समाप्त कर दी। तब पर भी तुकोसिया के मुकदमों में ५ रैयतों के इसबखाह फैसले हुए और केवल ४ ही कोठी के इसबखाह सैट्समेन्ट अफसर के यहाँ प्रायः सभी फैसले कोठीवालों के ही इसबखाह हुए। एक बात और है वहाँ सरहबेसी का जबरदस्ती लेना साबित हो गया जबकि किसी कारण सट्टा नाबाब बच समझा गया वहाँ रैयतों के कठियाग में यह लिख दिया गया कि वे फ्री बीचे दोन कट्टों में नीक करने के लिए बाध्य हैं अर्थात् कोठीवालों को उनके सत्ताने के लिए मानों एक इधमार हाथ में दे दिया गया। एक और भी बड़े मार्फ की बात है। वहाँ सरहबेसी का सट्टा नाबाब बच ठहर गया वहाँ कोठीवालों ने भर-पकड़ कर रैयतों से तुलना में शक्ति करवा दिये। और बावजूब यह है कि सैट्समेन्ट अफसर ने उन्हें स्वीकार भी कर लिया। जो रैयत बराबर से सरहबेसी के निरुद्ध कर रहे थे और जो प्रायः विधाय प्राप्त कर चुके थे वे खुशी से मुकदमों कर लेंगे वह बात मामूली आवसियों की समझ में नहीं आती। पर सैट्समेन्ट अफसर ने इन सब को कबूल करके सरहबेसी कहा थी। इससे रैयतों में बड़ी अप्रतिफल रही थी और वे एक प्रकार से हताश हो रहे थे। उनको आशा थी कि सरकार के भेजे हुए सैट्समेन्ट अफसर इस विषय में इत्फाफ करने पर जब वहाँ से भी निराश हुए, तो उनके दुखों की सीमा न रही। जम्पारन की यही स्थिति थी जब महारमा नाथी का सुभाषमन बड़ा हुआ।

वहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि जम्पारन के रैयतों में प्रथम जीवन डालने का बाबा सैट्समेन्ट अफसर कर सकते हैं। उन्हीं की कबहूतियों में रैयतों ने साहब के मुकदमों के कुछ कहने को सीखा। उन्हीं की कबहूतियों में यह मालूम हुआ कि नीसबरी में और सरकार में अन्तर है और नीसबरी के निरुद्ध भी फैसला हो सकता है। इन्हीं कारणों से जब महारमा नाथी पहुँचे तो रैयत निबर होकर बिना किसी के मुकामे और कोठियों की ओर

से शबाब झाले जाने पर भी उनके मही हवारी की संस्था में पहुँचि तथा अपने दुर्ग की कहानियाँ सुनाते पडे ।

सैटलमेण्ट अफसर के मजबूत धारुबेदी के सम्मुख में गमस्त हुए इसमें हम कुछ भी सन्देह नहीं है । पर यह ऐसा प्रश्न है जिसमें मतभेद हो सकता है । जो हो सब मनुष्यो से सम्झी हो सकती है और यदि उन्होने धमकी भी की जैसा हम समझते ह तो इसके लिए उन पर दोषारोपण हम नहीं कर सकते ।

सैटलमेण्ट अफसर ने एक और बात का फैसला कर दिया । जब कभी बम्बारन के रैमथ तिर उठान की चेष्टा करते जाये ह तो वही के कोठीवाले यही कहने जाये ह कि रैमथ तो बहुत बुरा है कोठी और रैमथ के बीच कोई जनबन नहीं है पर य बाहर के बपवा बम्बारन के हो न्वाबियों के आन्दोलन अबबा बहकाने से कभी-कभी कोठियों के सिपाफ हो जावा करते है इसलिए यदि आन्दोलन करनेवालों को हटा दिया जाय तो फिर धाति हो जायगी । सामर सरकार भी इस बात को कभी-कभी सहानुभूति क साथ सुनती आई । पर यह दिखाया जा चुका है कि जब ऐसा मौका जाता है तो बीच करने पर आन्दोलन करनेवाले नहीं मिले है । रैमथ की बात और छिंकायते टीक पाई गई है ।

सैटलमेण्ट अफसर ने यही पावा और सरकार को जता दिया कि बम्बारन क रैमथ भी मनुष्य है और जब उन पर शराबाचार की भावा बढ जाती है तभी वे कुछ बू वा करते है । इसके लिए भी उन्हें धन्यवाद है क्योंकि महात्मा गाँधी के बम्बारन पहुँचने पर मौकमरों ने ही नहीं बरन् कुछ सरकारी अफसरों ने भी इसी बुचने पीव को गावा वा और हो सकता है कि प्रान्तीय सरकार ने सैटलमेण्ट अफसर की रिपोर्टों को ही देखकर महात्मा गाँधी पर किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं करने का निश्चय किया है ।

दसवीं अध्याय महात्मा गांधी का आगमन

सन् १९१६ ईस्वी के दिसम्बर महीने में काँग्रेस का इकतीसवाँ अधिवेशन लखनऊ में बड़े भूमिगत से हुआ था। इस अधिवेशन में लगभग २५० अनुप्य भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रांतों से आकर सम्मिलित हुए थे। काँग्रेस के इतिहास में यह पहला अवसर था जबकि इतने प्रतिनिधि इकट्ठे हुए थे। भूराष्ट्र की काँग्रेस के बाद यहाँ ही लोकमान्य बाल-गंगाधर तिलक अपने एक के साथ पहुँके-पहुँक काँग्रेस में आये थे। दलिय और सिध के कैम्प प्रतिनिधियों से भरे थे। गुजरात महास मध्यप्रदेश से भी लोग कम न आये थे। संयुक्त प्रांत वालों के लिए वहाँ विशेष संख्या में जाना कोई बड़ी बात नहीं थी क्योंकि वहाँ तो काँग्रेस ही हो रही थी। महास से श्रीमती एनी बेसेन्ट अपने बल-बल के साथ आई हुई थी। बंगाल ने भी समापति के साथ बहुत प्रतिनिधि भेजे थे। बिहार प्रांत भी इस साल खूब ही जाग उठा था और यहाँ से भी बहुत प्रतिनिधि बसे थे। इसका एक विशेष कारण यह था कि बिहार की ओर से इस वर्ष कई मुख्य प्रस्ताव उपस्थित किए जाने को थे श्रीमान् महात्मा गांधी अपने ज्येष्ठ पुत्र के साथ गुजरात से पधारे थे और पंडाक के पास ही एक सीमे में छाव ठहरे थे।

बिहार प्रांत सम्मन्धी वो प्रस्ताव उपस्थित करने का विचार हुआ—एक पटना युनिवर्सिटी बिल्ड के सम्बन्ध में और दूसरा चम्पारन के पीसमरों और उनके रैयतों के सम्बन्ध की जाँच के विषय में। विषय निर्वाचिनी समिति में इस प्रस्ताव के उपस्थित करने के पहले ही कुछ लोग महारमा गांधी तथा पण्डित मदनमोहन मालवीय आदि मुखियाओं के पास जब और चम्पारन की प्रजा की दशा के विषय में बातचीत की। श्री मालवीय जी वहाँ की हालत कुछ जानते थे पर महारमा गांधी इस विषय में बिल्कुल अनभिज्ञ थे। विषय निर्वाचिनी समिति में चम्पारन सम्मन्धी प्रस्तावों पर बक्ताओं के जब नाम बुने जाने लगे तो बिहार के प्रतिनिधियों ने महात्मा गांधी से अनुरोध किया कि आप उस प्रस्ताव को उपस्थित करें, पर उन्होंने कहा कि मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता हूँ और जब तक मैं इनको जान नहीं लूँगा तब तक हम सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकते। इसलिए इस प्रस्ताव के उपस्थित करने का भार बिहार के सुप्रसिद्ध नेता बाबू बरकतुल्ला प्रसाद को दिया गया। काँग्रेस के दूसरे दिन की बैठक में इन भाष्य का प्रस्ताव उपस्थित किया गया—

"The Congress most respectfully urges upon the Government and desirability of appointing a mixed committee of officials and non-officials to inquire into the causes of agrarian trouble and the strained relations between the Indian ryots and the European

Planters in North Bihar and to suggest remedies therefor”

अर्थात् कांग्रेस सरकार से प्रार्थना करती है कि उत्तर बिहार के बमरेज मीसबरो और उनके रैयतो के बीच बैमनस्य और कृषि-सम्बन्धी असाशित के सम्बन्ध में जांच करान और उनके कुछ दूर करने के उपाय बताने के लिए वह सरकारी और नैसर्गकारी लोगों की एक कमेटी नियुक्त करे। यहाँ पर एक उल्लेख योग्य बात यह है कि शायद यह पहला ही अवसर था कि भारत की राष्ट्रीय समा की कृषकों के बुक्तों की कहानी एक कृषक द्वारा सुनने का मौका मिला हो। पं राजकुमार शुक्ल को जिनका नाम ऊपर था था है चम्पारन के कृषकों का अपना प्रतिनिधि बनाकर कलकत्ता गया था और उन्होंने इस प्रस्ताव का समर्थन करते समय चम्पारन की कुछ-गंगा गरी समा में कहा सुनायी।

बिहार और विशेषकर चम्पारन के लोगों की बड़ी इच्छा थी कि महात्मा गांधी प्रजा की शोचनीय बुरा को देखने के लिए चम्पारन स्वयं पधार और उनके बुक्तों का निबटारा करने का प्रयत्न करें। इस सम्बन्ध में चम्पारन के लोग आपकी सेवा में पहले ही पत्र भेज चुके थे और एक सज्जन इसके लिए महात्मा गांधी की सेवा में महमदाबाद तक गये भी थे। पर समय के अभाव से महात्मा गांधी इस अभिलाषा को पूरा न कर सके थे। उपरोक्त प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने के पीछे बिहार के लोगों ने आप से फिर आग्रह किया। आपने उत्तर में कहा कि अगले मार्च-अप्रैल तक उस ओर जाने की वेरटा करूँगा। हमने बहुत कुछ सन्तोष हुआ। कलकत्ता से लौटते समय वहाँ के कुछ लोग आपके साथ कानपुर तक गये और चम्पारन की प्रजा की कुछ-कहानी सुनायी। इससे महात्मा गांधी का हृदय पिबल गया। चम्पारन के लोगों को उनकी बातों से बहुत भरोसा हुआ और वे अपने आगमन के दिन गिनने लगे।

कलकत्ता की काँग्रेस से लौटने के बाद चम्पारन के रैयतों ने पं राजकुमार शुक्ल द्वारा फिर महात्मा जी के पास यह पत्र भिजवाया—

बेसिया

ता. २७-२ १९१७

मान्यवर महात्मा

किस्सा सुनत हो रोने औरों के
आज मेरी भी शास्ता सुनो।

आपने उस अनहोनी को प्रत्यक्ष कर कार्य रूप में परिणत कर लिखाया जिसे टात्सदाय जैसे महात्मा केवल बिचार करते थे। इसी आशा और विश्वास के बसीभूत हाकर हम आपके निकट अपनी रामकहानी सुनाने के लिए तैयार हैं। हमारी कुछ-भरी कथा उस दक्षिण अफ्रीका के जलवाचार से—जो आप और आपके अनुयायी वीर सत्या ग्रीही बहनों और माइयों के साथ हुआ—वही अधिक है।

हम अपना यह कुछ—जो हमारी १९ लाख आत्माओं के हृदय पर बीत रहा है—

सुनाकर आपके कोमल हृदय को दुःखित करना उचित नहीं समझते। बस केवल इतनी ही प्रार्थना है कि आप स्वयं आकर अपनी आँखों से देख लीजिये तब आपको अच्छी तरह विश्वास हो जायगा कि भारतवर्ष के एक कोने में यहाँ की प्रजा—जिसका ब्रिटिश छत्र की मुभीतस छाया में रहने का अधिकार प्राप्त है—किस प्रकार के कष्ट सहकर पशुपत् जीवन व्यतीत कर रही है।

हम और अधिक न लिखकर आपका ध्यान उस प्रतिज्ञा की ओर आकर्षित करना चाहते हैं जो सम्मेलन काँग्रेस के समय और फिर वहाँ से लौटते समय वागपुर में आपने की थी अर्थात् 'मे मार्च-अप्रैल महीना में बम्पारन जाऊँगा। बस अब समय आ गया है। श्रीमान् अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करें। बम्पारन की १९ लाख की प्रजा श्रीमान् के बरन कमल के दशम के लिए टकटकी लगाये बैठी है। और उन्हें साक्षात् ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार मनवान् की रामचन्द्र जी के बरनस्पर्श से अहिम्मा तर पई उसी प्रकार श्रीमान् के बम्पारन में पैर रखते ही हम १९ लाख प्रजावा का उद्धार हो जायगा।

श्रीमान् का बर्तनात्मिकापी
राजकुमार शुक्ल।

इस पत्र के उत्तर में महात्मा जी ने लिखा कि हम ७ मार्च को कलकत्ता जायेंगे और यह पूछा कि राजकुमार शुक्ल उनसे कहाँ मिल सकेंगे ? पास्ट मास्त्रिन की मन्त्री से यह बिट्ठी मुक्ल जी को ७ मार्च के बाब मिली। पर उन्हें यह पता चल गया था कि महात्मा जी कलकत्ते जाने वाले हैं और इसी सूचना पर वह वहाँ यवे पर उन्हें पहुँचाने पर मानस ठुका कि महात्मा जी देखली बापिल चले गये। वह बम्पारन फिर लौट जाये। यहाँ से उन्होंने पुन लिखा। महात्मा जी ने उत्तर में ता १९ ३ १९१७ ई को पत्र मचा और मूहम्मद यूनिज बठिया के एक उत्साही नवयुवक ने महात्मा जी के पास ता २२ ३-१९१७ ई को मचा जिसमें बम्पारन के सम्बन्ध में बहुत बातों और बटनामो का उल्लेख किया। इसके उत्तर में महात्मा जी ने ता ३ ३ १९१७ ई को यह पूछा कि वह मुजफ्फरपुर फिज रास्ते में पहुँच सकते हैं और यह भी जलना बाधा कि यदि वह तीन दिना तक बम्पारन में ठहरे तो जो कुछ देखने की आवश्यकता थी वह सब के देख सकेंगे या नहीं। साथ ही महात्मा जी ने अप्रील में वहाँ पहुँच जान को लिखा। यह पत्र मत्री पहुँचा जा रहा है वहाँ भीपुत मूफेन्गनाब बगु के मकान पर ठहरना आकर वहाँ मिलो। हम भी नहीं था कि ता ३ ४ १९१७ को उन्होंने मुक्ल जी को तार दिया कि मे कलकत्ते गए बाबा की शहर इन समय बिहार में किमी को नहीं थी। यहाँ तक कि अखिल भारत वर्गीय नौबैस कमटी की बैठक में जहाँ महात्मा जी यवे से बिहार के कुछ सम्जन अक्सियन वे पर किमी को इनके इसी यात्रा में बिहार जाने की सूचना न रख के कारण

किसी न महात्मा जी से इसके विषय में कुछ बातचीत न की। राजकुमार शुक्ल से भी किसी की भेंट नहीं हुई कि जिससे सब बात साफ़ होटी।

ता १४ १७ को महात्मा जी सुकस जी के साथ रहना हुए और ता १४ १७ को बाकीपुर पहुँचे। शुक्ल जी उन्हें सीधे लेखक के डरे पर ले गये। वह तो कसकत कथिच रुमेटी की बैठक के लिए सब से और वही से जनभाषपुरी चले गये व और अभी तक पटन वापिस नहीं आये थे। वहाँ पर एक नीकर भाग था। उसन महात्मा जी को पहचाना नहीं और उन्हें किसी मामूली आदमी की तरह बीछ रखा। वहाँ कुछ बेर तक महात्मा जी ठहरे रहे। इतन में माननीय मि मजदहक हक को उनके पटने में आने की सूचना मिली और वे वहाँ आकर उनको अपने मकान पर ले गये। वहाँ पर माननीय बाबू कृष्णसहाय भी महात्मा जी से आकर मिले। महात्मा जी न उसी दिन संध्या की नाड़ी से मुजफ्फरपुर वाला ठीक कर लिया था और इस आशय का तार अपन पूर्वपरिचित श्रीपुत जीवनराम भगवानदास कृपलानी को जो इस समय प्रियर भूमिहार शास्त्रज कामिज मुजफ्फरपुर में अग्न्यापक व भेज दिया। महात्मा जी ने उस दिन बाँकीपुर घूम-फिर कर देख लिया और संध्या की गाड़ी से शुक्ल जी के साथ मुजफ्फरपुर के लिए रहना हुए। नाड़ी मुजफ्फरपुर में एक बज रात के पहुँची। प्रोफेसर कृपलानी को तार मिछ चुका था और वे कुछ छात्रों के साथ स्टेशन पर उपस्थित थे। उस समय तक प्रोफेसर कृपलानी को महात्मा जी से साक्षात् होन का सोमाय्य नहीं प्राप्त हुआ था पर वे सब द्वारा पहले से ही बूब परिचित थे। रात के समय महात्मा जी को किसी ने पहचाना नहीं पर व राजकुमार शुक्ल ने सब लोगों की मीढ़ देवी तो उन्होंने समझ लिया कि व लोग अबश्य ही महात्मा जी के लिए आये है और उन्होंने लोगों को बुलाकर महात्मा जी को दिखा दिया। स्टेशन पर महात्मा जी की आरती हुई और लोगों ने उन्हें गाड़ी पर बिठाकर उसे स्वर्ग बीचा। महात्मा जी प्र. कृपलानी के साथ उनके छात्रनिवास में उठे।

ता ११ ४ १७ को महात्मा जी बिहार प्रेन्टर्स एसोसियेशन के मंत्री मि जे एम विस्सन (Mr J. M. Wilson) से आकर मिले और उनसे अपने आने का कारण बतलावा और कहा कि 'मे अग्न्याग में कोठीवालो और उनके रैसतों के बीच जो जनबग है उसके सम्बन्ध में जीव करना चाहता हूँ और इस जीव में आप से सहायता चाहता हूँ। मि विस्सन ने कहा कि वहाँ तक जाती मयब हो सकेगी वूँगा पर अपने एसोसियेशन की ओर से किसी बात कर भार न के सक्षीय। उसी दिन संध्या समय मुजफ्फरपुर के अनेक बकीक महात्मा जी से मिलने गये। उनमें बाबू रामगजमी प्रसाद भी थे। उन्होंने महात्मा जी से अग्न्याग जान के लिए अनुरोध किया। महात्मा जी इससे सहमत हुए। उसी दिन बाबू बजरिभोर प्रसाद के पास बरनया तार भेजा था चुका था। दूसरे दिन ता १२ ४ १७ को महात्मा जी छात्रालय से बाबू बयाप्रसाद सिंह बकीक के मकान पर आकर ठहरे। उस दिन उन्होंने विरहूत बिनीजन के कमिस्नर माननीय मि एक एक मोरख (Hon'ble

Mr L. F. Morshead) के पास अपने जाने की सूचना की और कारण बताते हुए उनके मिशन के लिए समय माँगा। उत्तर में मि मीरसाब ने ता १२ व १७ को ९ बजे सबेरे मिलने का समय नियत किया। उसी दिन मि बिस्मन ने महात्मा जी के पास एक पत्र भेजा जिससे उन्होंने सिखा कि किसी प्रकार की जाँच की जरूरत नहीं है और महात्मा जी को बम्पारन जान से मना किया। मि बिस्मन व यह भी सिखा कि यदि महात्मा जी इस काम को लवाई के समय में आरम्भ करेंगे तो आन्दोलन करने वाले अपना साम ठठान के लिए बहुत खोरमुख मचावय जिससे उन लोगों की बहुत हानि हो सकती है जिनकी मसाई के लिए महात्मा जी इतने उत्सुक हैं। उसी दिन शामी समय बाबू बचकिशोर प्रसाद बरमसे में मुजफ्फरपुर पहुँच गये। ता १३ व १७ को महात्मा जी कमिस्तर से मिले। वहाँ पर मुजफ्फरपुर के बन्सिस्तर मि डी वेस्टन (Mr D Weston) भी उपस्थित थे। कमिस्तर ने गाँधी जी के बिहार जाने में असह्योष प्रकट किया और पूछा कि आपको वहाँ किसने बुलाया है। माब ही उन्होंने यह भी कहा कि सरकार की ओर से जाँच हो रही है आपका जाला अनावश्यक वा हम आपको किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते हैं और हम यही सलाह देंगे कि आप वहाँ से तुरन्त चले जाएँ। महात्मा जी ने कहा कि वहाँ की प्रजा के भय हुए पत्र तो हमें बहुत बिनासे मिल रहे हैं पर मैं उन्हें आपके नामन पत्र नहीं कर सकता। पत्र काँषम के अक्षर पर बिहार के प्रतिनिधियों ने मुस से बम्पारन सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित करन के लिए अनुरोध किया था। पर मैंने उस समय इस कारण से इनकार कर दिया कि जब तक मैं वहाँ की अवस्था स्वयं न देख लूँगा तब तक इस विषय में कुछ नहीं कर सकता। इस पर उन लोगों ने मुझे वहाँ जान को कहा और मैं उन्हीं के निमन्त्रण पर वहाँ आया हूँ।

पर महात्मा गाँधी इन सब बलों में क्या अपने स्थिर बिचार से बिचलित होने वाले थे ? जैसे-जैसे ज्वैस्टम प्रमामिसेशन के सभी और कमिस्तर उनको बम्पारन जाने से मना करते जाने व उनका सन्नेह और बड़ता जाना था कि अवश्य बाबू व कुछ काला है और इस प्रकार उनका निश्चय भी और दृढ़ होता जाता था कि वहाँ अवश्य जाना चाहिए। इसी मुलाकात के बाद महात्मा जी समझ गये कि इस जाँच में नील्मर और सरकारों अक्षर केवल सहायता न देकर ही नहीं रहे जायें बरन् जाँच में बाधा भी डाल सकते हैं।

कमिस्तर से मुलाकात करके वापिस जाने पर उन्होंने बाबू बचकिशोर प्रसाद बाबू रामनवमी प्रसाद बाबू रामदयाल मिहू बकील और बाबू मयाप्रसाद मिहू से इन बातों का एक पत्र लिखवाकर कमिस्तर के पास भिजवा दिया कि उन्होंने तथा बिहार के ज. प्रतिनिधियों ने काँषम में महात्मा जी से बम्पारन में जाँच करन वा अनुरोध किया था। इस पत्र के माध्य महात्मा जी ने एक पत्र अपना भी भेज दिया जिनमें उन्होंने लिखा कि जो बार्ने रैपनों और नील्मरों के सम्बन्ध में मुस में वही गई है उन्हीं की सन्धता की

जीव करन के लिए मैं आया हूँ। मेरा मतलब यही है कि प्रतिष्ठा के साथ सुरुह हो।

उसी दिन बाबू मोरार प्रसाद बकौल मोतीहारी में बाबू और बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद इस सम्बन्ध में अपने मित्रों से राय लेने के लिए दरमंग गये। महात्मा जी के मुजफ्फरपुर आने का समाचार चम्पारन में पहुँच चुका था और बहुत से रैयत वहाँ से मुजफ्फरपुर पहुँच भी गये। महात्मा जी ने उनके बयान-सुन और जो कागज-पत्र मिलते मेल उन्हें देखा। उनको इस समय तक चम्पारन की दशा का पूरा अनुमान न हुआ था। और जो बाने कही जाती थी वे उनके विश्वास में नहीं आती थी। वह सब हाल सुन-सुन कर बार-बार पूछा करते थे कि क्या ऐसा भी हो सकता है पर साथ ही उनका चम्पारन जान का निश्चय बृद्ध होता जाता था।

ता १४४१७ को महात्मा जी ने निश्चय किया कि वस ता १५४१७ (रविवार) को दोपहर की गाड़ी से चम्पारन जाना चाहिए और जो लोग वहाँ से उनसे कहा कि मुझ एक प्रसाद आदमी चाहिए जो मेरे साथ होमापिय का काम कर सकें क्योंकि मैं वहाँ के लोगों की बोली नहीं समझ सकता। उस समय इतना ही पता हुआ कि इसका प्रबन्धकिया जायगा। उस दिन संध्या समय महात्मा जी निकल के एक शाम में गये और वहाँ के लोगों की दशा देखी। किसी-किसी बरीब के मोर्चों में भी जाकर उन्होंने उनके रहन सहन का हाल निज आँखों देखा और छोटे-छोटे बालकों और स्त्रियों से बात की। वसते समय उन्होंने कहा कि अब इन लोगों की दशा सुचरेगी तभी भारतवर्ष को स्वराज्य होना। आज ही संध्या की गाड़ी से बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद बाबू धरणीधर बकौल के साथ दरमंगे से पहुँच गये और यह निश्चय हुआ कि बाबू धरणीधर और बाबू रामनबनी प्रसाद महात्मा जी के साथ चम्पारन जायेंगे। उस दिन रात के समय महात्मा जी ने जो बात कही उससे लोगों का साहस तथा उत्साह और भी अधिक बढ़ गया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका का हाल कह सुनाया कि किस प्रकार एक आदमी के जल जाने पर कुसरा आदमी उसी काम में लग जाता था और किसी प्रकार उसको भी हटा दिया जाने पर तीसरा आदमी काम जारी रखता था। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूँ कि इसी प्रकार में काम यही भी किया जाय। मैं जानता हूँ कि मैं सोय मुझ से बुरे तीरे में पेन आबेने और मुझ पर गिरफ्तारी का बार्ड किसी समय आ सकता है। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि जितना शीघ्र हो मैं चम्पारन चला जाऊँ और मेरे निकट जो कार्यवाहियाँ हों वह चम्पारन के रयतों के सामने ही हों। मैं जानता हूँ कि इस प्रकार के आदमी बिहार में नहीं हैं जो मेरे साथ रहेना उस केवल कर्क का काम करना होगा पीछ देखा जायगा।

दूसरे दिन ता १५४१७ को किसी जरूरी काम से बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद को फरफरा जाना था। वह पटने होते हुए जान के लिए रवाना हुए। बाबू पारस प्रसाद भी जो मोतीहारी वापस गये वे फिर मुजफ्फरपुर आये। महात्मा जी बाबू धरणीधर, बाबू रामनबनी प्रसाद और बाबू मोरार प्रसाद एक साथ दोपहर की गाड़ी से मोतीहारी के लिए

रवाना हुए। महात्मा भी यही से बिरफ्तारी के बार्ड की राह जोड़ते थे। उन्होंने आवश्यक वस्तुओं को साथ रखकर और सब चीजों को बसबस में रखवा दिया था। मुम्बईपुर के स्टेशन पर महात्मा जी को पहुँचाने के लिए बहुत सज्जन आये थे। रास्ते में भी प्रायः सभी स्टेशन पर बहुत रैयत महात्मा जी के जाने की खबरपाकर आ जुट ब। महात्मा जी तीन बज मालीदारी पहुँचे और सीमें बाबू गोरख प्रसाद व मकान पर जाकर ठहरे। उनके जाने का समाचार बाहर घर में गुरुत्त फैल गया और वहाँ बहुत मीठ जुट गई। कई सरकारी कर्मचारी भी महात्मा जी के दर्शनार्थ आये। पर पुलिस का गन्ध था दूर से ही प्रमाण कर चले गये। आज ही महात्मा जी ने निश्चय कर लिया कि कल सोमवार ता १६ ४ १७ को बसबसी पट्टी गाँव में वहाँ से एक प्रतिष्ठित बृहत् पर अध्याचार की सूचना मिली थी जाना होता और सब गाँवों के रैयतों से कह लिया गया कि उनके बयान मजद्वार को बसबसी पट्टी से लौट जाने पर निम्ने धार्ये।

बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद बोपहर को पटने पहुँचे तो देखा कि मेमक अभी तक पुरी से वापस नहीं आये हैं। पर उसी दिन सध्या की गाड़ी से उनके जान की खबर है। यह इस बीच में और कई सज्जनों से जाकर निम्ने और सध्या के सब बसे मेमक आ गये। यह निश्चित हुआ कि हमारे दिन या तो मेमक स्वयं चले जायेंगे या और किसी को सध्या की गाड़ी से मोतीदारी मजद्वार। यही ठीक करके बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद उसी रात को कसकते चले गये।

ता १६ ४ १७ सोमवार को बसबसी पट्टी जान की तैयारी हुई और महात्मा जी बाबू बरबीबर तथा बाबू रामलक्ष्मी प्रसाद के साथ हाथी पर सवार होकर ९ बज रवाना हुए। यह बैसाफ का महीना था थुल कभी भी पछवाँ हवा भी लूब थोरो से यह रही थी। बाहर निकलते ही देह सुलस जाती थी। महात्मा जी को हाथी पर चढ़ने का भी सम्मत नहीं था तिस पर भी एक हाथी पर तीन आदमी और उन पर लुरा यह कि पछवाँ हवा और बुर की बुजि। पर वहाँ तो महात्मा जी के हृदय में रैयतों के दुक्को को दूर करन की धुन थी धुन और धुन क्या कर सकनी थी। रास्ते में बहुत तरा की बसे होती आ रही थी। बिहार में पर्व के सम्बन्ध में भी बातें छिड़ गई और महात्मा जी ने कहा कि मेरा यह विचार नहीं है कि हमारी स्थिति अजरेजी और-सरीकों का ग्रहण कर पर हम को यह समझना चाहिए कि हम कुप्रका से उनके स्वास्थ्य पर किमनी हाथि पहुँचनी है और इसके कारण से अपन स्वामी को फिटन कायों न सह्यता नहीं से मचती। इसी प्रकार बाले करते-करते से लोग मोतीदारी। भीक की दूरी पर एक बस्ती चन्द्रहिया में प्रायः १२ बज के समय पहुँचे। वहाँ महात्मा जी की इच्छा हुई कि इस गाँव की प्रजा का हाल देख लिया जाय। पूछन पर पालूम हुआ कि यह गाँव मालीदारी कोठी का है और उसके रहनवाले अधिकतर मजदूरी किया करते हैं। इसलिए इस समय सब कोठी में काम करन चले गये हैं। पर एक आदमी ने कहा कि महात्मा जी की इच्छा यह मुनाई और बतवाया कि हम लोगों के गाँव के

सामने कमलटर की क्या मजाल जो कुछ कर सके। उनकी बातों से पता लगा कि वे कोठी से सम्बन्ध रखनेवालों में से कोई थे। वे बात हो ही रही थी कि इतन में एक आदमी सादे लिबास में पीचपाडी पर आते हुए बीच पड़ा। आगे पर माफ़ूम हुआ कि वे पुलिस के बारोगा थे। उन्होंने महात्मा जी से कहा कि कमलटर साहब ने आपको सम्मान दिया है। महात्मा जी ने उनसे किसी सचारी का प्रबन्ध करने के लिए कहा और इसी बीच में अपने साथियों से कहा कि वे वा जानता था कि कोई एसी बटना अवश्य होगी। आप इसकी विन्ता न करें। आप लोग वसवसी पट्टी चले जाइयें और वहाँ जाकर काम कीजिये। यदि आवश्यकता हो तो जान रात को वहाँ ठहर जाइयेंगा। बारोगा जी एक पीचपाडी खोजकर के आये और महात्मा जी पीचपाडी पर उनके साथ मोतीहारी की तरफ रवाना हुए और उनके दोनों साथी वसवसी पट्टी चले गये।

महात्मा जी को रातों में एक इस्का मिला। बारोगा जी के कहन पर महात्मा जी गाड़ी छोड़ इसके पर सवार हो गये। कुछ दूर और आगे जाने पर एक पुलिस मजदूर टमटम पर आते हुए बीच पड़े। समीप जाने पर बारोगा ने इसके को ठहराया और महात्मा जी को टमटम पर सवार करवाया। उस टमटम पर आये हुए सख्त पुलिस के रिप्टी सुप रिटिगेन्ट थे। कुछ दूर जाने पर टमटम बड़ा करके रिप्टी सुप रिटिगेन्ट ने महात्मा जी से कहा कि आपके लिए एक नोटिस है। महात्मा जी ने उसे लेकर सामने आगे से पढ़ लिया और मोतीहारी पहुँचकर उसकी रसीद लिख ली। नोटिस का मसबूम यह था—

(क) नोटिस—

To

Mr M.K. Gandhi

At present in Motihan

Whereas it has been made to appear to me from the letter of the Commissioner of the Division, copy of which is attached to this order that your presence in any part of the District will endanger the public peace and may lead to serious disturbance which may be accompanied by loss of life and whereas urgency is of the utmost importance.

Now therefore I do hereby order you to abstain from remaining in the District which you are required to leave by the next available train

(Sd) W.B Heycock

District Magistrate

Champan. ✓

16th April, 1917

इसका सारांश यह है कि “चूंकि इस विधीन के नगिरन के पत्र से किसी मजदूर

इसके साथ भज रहा हूँ ऐसा माफूम हुआ है कि आपकी उपस्थिति से इस जिले में शांति-
भंग और प्राबल्यता होना का डर है इसलिए आपको हुजूम दिया जाता है कि आप पहली
गाड़ी से चम्पारन छोड़कर चले जाएँ ।

नोटिस के साथ तिरहुत विभाग के कमिश्नर के पत्र की भी एक नकल इस प्रकार
की थी—

(अ) कमिश्नर का पत्र—

To

The District Magistrate of
Champaran.

Sir

Mr M. K. Gandhi has come here in response to what he describes as an insistent public demand and to enquire into the conditions under which Indian works on indigo plantations and desires the help of the local administration. He came to see me this morning and I explained that the relations between the planters and ~~ryots~~ had engaged the attention of the administration since the ~~mutiny~~, and that we are particularly concerned with a phase of the problem in Champaran now but that it was doubtful whether the intervention of a stranger in the middle of our treatment of the case would not prove an embarrassment. I indicated the potentialities of disturbance in Champaran asked for credentials to show an insistent public demand for his enquiry and said that the matter could probably need reference to Government.

I expected that Mr Gandhi will communicate with me again before he proceeds for Champaran but I have been informed since our interview that his object is likely to be agitation rather than a genuine search for knowledge and it is possible that he may proceed without further reference. I consider that there is a danger of disturbance to the public tranquillity should he visit your district. I have the honour to request you to direct him by an order under Section 144 Cr P C. to leave it at once if he should appear

I have the honour to be

Sir

Your most obedient servant.

(Sd.) L.F. Morshead

Commissioner of the Tirhut Division.

अर्थात्—“मैं गांधी आये हुए हैं और यह कहते हैं कि उनका जाना लोको के बहुत अनुरोध के कारण हुआ है कि जिसमें वे यह देख सफ कि हिन्दुस्तानी नीस के लगे म किम प्रकार काम करते हैं। और वे स्वाभिम कमचारियों की सहायता चाहते हैं। वे आज मरेरे मुझ से मिले वे और मैंने उन्हें बताया कि रीयनों और नीसमरो के सम्बन्ध पर सरकार की रजि मम् १८३० से ही चली जाती है और आजकल हम लोग उसी समस्या के एक विषय के हल करने में विशेष रूप से लगे हुए हैं। पर इसी बीच में किसी अजनबी के पड़ने से काम बिगड़ने का डर है। मैंने उनको समझा दिया और उनसे यहाँ मुझसे जाने का बहुत मोया और यह कहा कि इस विषय में गर्वमेष्ट से राय देने की आवश्यकता हो सकती है। यही कारण था कि मि० गांधी चम्पारन जान से पहले मुझ को सूचना देने पर जब मामूम हुआ है कि वह आन्दोलन करने के अधिप्राय से न कि सच्ची बात की खोज करने के लिए यहाँ आये हैं और हो सकता है कि वह बिना खबर दिये ही यहाँ चले जायें। मेरे व्यास में उनके चम्पारन जान से छाति भंग होने का डर है और इसलिए मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि यह यदि यहाँ कार्य हो १४४ धारा के अनुसार उन्हें मुरस्य जिमा छोड़ देने की आज्ञा दीजिये।

महात्मा जी ने गोटिस के उत्तर में यह पत्र मन्डिस्ट्रेट के पास मुरस्य भेज दिया—

Sir

With reference to the order under Section 144 of the Criminal Procedure Code just served upon me, I beg to state that I am sorry too that the Commissioner of the division has totally misinterpreted my position. Out of a sense of public responsibility I feel it to be my duty to say that I am unable to leave this District but if it so pleases the authorities, I shall submit to the order by suffering the penalty of disobedience.

I must emphatically repudiate the Commissioner's suggestion that my object is likely to be agitation. My desire is purely and simply for a genuine search for knowledge. And thus I shall continue to satisfy so long as I am free.

16th April, 1917

M. K. Gandhi

अर्थात्—“१४४ धारा के गोटिस के उत्तर में मुझे यही लिखेयन करना है कि मुझे इस बात का खेद है कि आपको इस गोटिस को जारी करने की जरूरत पड़ी है। मैंने इस बात का भी खेद है कि विजीवन के कमिस्तर ने मेरी स्थिति को बिलकुल गलत समझा है। सर्वसाधारण के प्रति जो मेरा वर्तमान है उसका ध्यान रखते हुए मैं इन बिले को छोड़ नहीं सकता हूँ पर यदि कमचारियों की ऐसी राय हो तो इस आज्ञा के उल्लंघन करने के लिए जो इच्छा हो उसे सहन करने के लिए तैयार हूँ। कमिस्तर की इस बात का

कि मेरा उद्देश्य आत्मोन्नत मर्यादा है ये जोर बिरोध करता हूँ। मेरी इच्छा कबल असल बात जानने की है और जब तक ये स्वतन्त्र रहेगा हम इच्छा को पूरा करता ही जाऊँगा। उसी समय मि एच एम पोल्स मासमीय पत्रित मदनमोहन मासमीय केसक तथा माउन्टवर्क घर के नेताओं के पास हम कार्रवाई की सूचना तार द्वारा दे दी गई, मि सी एच एम्बेडज को तुरन्त चले आने के लिए तार दिया गया।

महारामा जी ने इसी बीच में एक निबन्धावली उन लोगों के लिए लिखकर तैयार कर दी जो उनके बाद उस काम को चलाने वाले थे।

उपर बाबू धरवीर और बाबू रामनरसी प्रसाद जमखली पट्टी का बने पहुँचि। उनमें पहुँचने-पहुँचने एक दूसरे बागेलों वही पहुँच गये। य किमी समय में बाबू धरवीर के काम और बाबू रामनरसी प्रसाद के सबपाटी थे। इस पर भी उन्होंने असल बात का छिपाया अपना बर्तन समझा। पूछने पर इन्होंने कहा कि हम एक दूसरे मकदम के सम्बन्ध में यहाँ आय हुए हैं और आप लोगों का धाना मुझ पर आपसे मिलने चले जाये है। पीछे पना मना कि महारामा जी के मोतीहारी पहुँच जाने पर वहाँ से वे उन लोगों के पीछे चले गये थे। उन्होंने पुराने सम्बन्ध के जोर पर आप लोगों का मन्साह दी कि आप लोगों का इस काम में पटना अच्छा नहीं हुआ। बाबू धरवीर और उनके सहकारी कुछ लोगों के इजहार लेकर बार बजे के करीब मोतीहारी की ओर आपस चले। रास्ते में जब मोतीहारी के पास पहुँचि तो एक गाड़ी जो उन दोनों को लान जा रही थी मिली। उस गाड़ी में एक सज्जन थे जिनसे १४४ बारा के मोटिस का हाल उनको मालम हुआ। वे १ ॥ बने रात को मोतीहारी जाने के पीछ दिन प्रकार से कार्य करना होया हमका पूरा ध्योरा बतला दिया। इसके बाद उन कामा में यह भी कहा कि यदि आप काम देने पीछे जेक में आ जायें तो सब काम सफल हो जायें।

ता १७-४ १७ संवत्सर का बैहानी में जापो के जाने के लिए तारीख मुकुरर की जा चकी थी। इमकिण्ड बहुत से रैयन जाये और उनसे इजहार लिये जाने लये। पुलिस के दारोमा भी जाकर जम गये और जिन लाला के इजहार लिये बात थे उनके नाम पहले तो छिपकट पर पीछ प्रत्यक्ष रूप में लिखने लये। आज इसल रैयन आ पहुँचि कि लिखने वालों को हम मारने की फर्मत नहीं थी। महारामा जी तो जान सब कि आज उसल बन करने के हेतु अवश्य जेक जाना होया। इमकिण्ड काम में किमी प्रकार से कमी नहीं की गई और न रैयनों में इन बात का कुछ भी जिक्र निभा गया। आज ही वह निश्चित कर लिया गया कि कल ता १८-४ १७ को मौआ परमीनी जी मातीहारी में १६ पीक बरिबन है जाना होया और हम बात की सूचना उन लोगों का दे दी गई। सवारी इत्यादि का भी प्रबन्ध कर लिया गया। बिहार हुआ कि मातीहारी में लोग ३ बजे रात को रवाना हों। और यदि सबारी जाले में किसी प्रकार की बाधा का बिलम्ब हो तो पीछ चला जाय।

इसपर तो यह सब तैयारियाँ हो रही थीं जो उम्मीदों के साथ भारतवर्ष भर से तार पर तार आ रहे थे। मि. पोल्क ने प्रयास से तार दिया कि मैं पठने आ रहा हूँ। माननीय मि. मजूमदार ने पूछा कि आवश्यकता हो तो जाऊँ ? सेक्सन ने पूछा कि गम से क्या सेवा हो सकती है ? मि. हक के पास तार गया कि हमारे जेल जाने के बाद आपकी आवश्यकता होगी। सेक्सन के पास तार आया कि आप स्वयंसेवकों के साथ दीर्घ चर्चे जाइये। मालवीय जो ने तार दिया कि सूचना दीजिए क्या हाल है। म. हिन्दू विश्वविद्यालय का काम छोड़कर आ रहा हूँ। उनके भी उत्तर दिया गया कि अभी आपके काम की आवश्यकता नहीं है इत्यादि इत्यादि। आज महात्मा जी ने मोतीहारी के उधारचित पादरी मि. जे. जे. होड्ज (Mr J Z Hodge) से मेट की। दिन भर इन्हें हार लिखने का काम भी साथ ही साथ करना पड़ा। आज ही दरभंगे के उत्साही स्वयंसेवक बाबू रामनारायण आये।

जब कोई सम्मन आजा संघ के अधिनियम में संख्या तक नहीं आया तो महात्मा जी ने सम्मन को एक पत्र लिखा मजिस्ट्रेट के पास भेजा जिसमें उन्होंने अपने देहात जाने के विषय में सूचना दी और कहा कि हम छाप कोई काम छिपाकर नहीं करना चाहते इसलिए यदि हमारे साथ कोई पुलिस अफसर आ जाय तो अच्छा ही होगा। इस पत्र ने पाठे ही मजिस्ट्रेट ने सिखा कि कल १८८ बारा (पिनक कोड) के अनुसार आप पर अधिनियम लगाया जायगा। और इसका सम्मान आपको दिया जायगा। इसलिये आशा करता हूँ कि आप मोतीहारी छोड़कर न जायेंगे। इस पत्र के पहुँचने के कुछ देर के बाद एक सम्मन भी आ पहुँचा जिसमें महात्मा जी को ता. १८४ १७ को १२। बजे सब-मिनीस्ट्रस अफसर की कचहरी में उपस्थित होने की आज्ञा थी। इसके बाद फिर भी बाबू बरबीधर और बाबू रामनारायण प्रसाद की आम की कार्रवाई के विषय में महात्मा जी समझाने लगे। पहले विचार हुआ कि वे पूर्व निश्चय के अनुसार परसीजी अवसर आयें पर फिर ऐसा क्या कह दिया गया कि इसकी आवश्यकता नहीं। महात्मा जी ने उन लोगों से पूछा कि मेरे जेल जाने के बाद आप क्या करयें ? प्रश्न बहुत जटिल आ और उत्तर देना सहज नहीं था। बाबू रामनारायण जो उम्र में बहुत छोटे पर उत्साह से कम न बच रहे। बाबू बरबीधर ने कहा कि अभी मैं इतन ही के लिए तैयार हूँ कि यदि आप जेल चले जायेंगे तो मैं इस काम को जारी रखूँगा और यदि मुझ पर भी १४४ बारा का नोटिस जारी होगा तो मैं अपने स्वाम पर हमारे की रकम यहाँ से जमा जाऊँगा। इसी प्रकार कम से कम कुछ दिनों तक यह काम चम्पता रहेगा। इससे महात्मा जी पूरे सन्तुष्ट नहीं हुए। बाबू बरबीधर और बाबू रामनारायण प्रसाद इस विषय पर विचार करते रहे। सम्मन आने के बाद महात्मा जी को पूरा इतमीनान हो गया। वह चिट्ठियाँ लिखन बैठ गये और रात भर बैठे-बैठे काम करते ही रहे बड़े मोये बिलकुल नहीं। इस अश्रुत घण्टि को देखकर वहाँ बितने आदमी ने गवर्नर भिन्न हो गये। रात को ही एक बयान सरकार के सामने पढ़ने के लिए तैयार किया। प्लान्टर्स एसोसिएशन (Planters Association) के मंत्री और कमिश्नर के नाम से भी

पत्र लिखकर तैयार किया जिसमें उस समय तक जिनकी धिकायते रीयतो की माहूम हुई थी लिख दिया और उनके हटाने के उपाय भी बताये। इन तथा अन्य पत्रों को अपने बेल जाने के बाद छोड़ने की आज्ञा दे रखी।

पटन में तार पहुँचने पर लेखक ने वहाँ के सब मताओं से जाकर महात्मा की और बम्पारन का सब हाल जो वह बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद से पहले ही सुन चके थे कह सुनाया और बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद के पास १४४ पारा की एक सूचना भेज दी। इसी बीच में एक तार में पोल्क का मि हमन प्रसाद के पास आया कि वह सध्या को पञ्जाब में एक पहुँचेंगे। सब लोग जाकर उनको स्पेशल से भिजा काय। रात के समय एक छोटी-सी पोली हुई जिसमें यह निश्चय हुआ कि मि पोल्क लेखक और उनके साथ और और बा बा सबें कल ता १८४ १७ के मधेरे की माड़ी से मातीहानी चले जायें। बाबा की बाती थी कि बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद भी दूसरे दिन सबेरे पहुँच जायेंगे।

ता १८४ १७ बम्पारन के इतिहास में ही गद्दी बरन् भारतवर्ष के वर्तमान इतिहास में एक बड़े महत्त्व का दिन है। आज जयतिबिख्यात सर्वप्रथम स्वायत्तकारी एवं प्रतापी राजपि राजा जनक के देश में जाकर वहाँ की बरिष्ठ एवं बुद्धी तथा जीवन रहित प्रजा के हित के लिए महात्मा गांधी जेल जाने की तैयारी कर रहे हैं। आज ही भारत के वर्तमान इतिहास में सत्याग्रह का एक पवित्र एवं ज्वलन्त उदाहरण मिलन वाला है जिसमें समस्त भारतवर्ष की आँसे खुलने वाली है। साथ की आँच नहीं है—यह हमारे देश की एक पुरानी कहावत है पर इसको बरिष्ठता के कर महात्मा गांधी आज सत्तार की इसकी सत्यता सिद्ध करने वाले हैं। बम्पारन की प्रजा के बुद्धों को बुर करने के लिए कटिबद्ध तथा साथ ही दुःख देने वालों को तनिक भी हाथ नहीं पहुँचाने की इच्छा रखने हुए महात्मा गांधी की पवित्र आत्मा मार्गो मनुष्य रूप में इसीलिए अवतरित हुई है। क्या ऐसे महापुरुष के सम्मुख कोई बाधा उठर सकती है ?

एक छोर से दूसरे छोर तक सभी की आँख आज इसी ओर लगी है। ऐसी अवस्था में क्या समय बीतते कुछ देर लम्बी है ? देखते-देखते बारू बज गया। महात्मा की न उन चीजों को बिम्बु वह जेल में भेजा जाता बाहुन से एक जगह करके बाकी चीजों को दूसरी जगह रख दिया। आज ब्रजहार लिखन बा बाग भी बन्द रहा। रीयतो से कहा गया कि यह काम ठीक वक्त में प्रारम्भ होगा। १२। बने गाड़ी पर सवार हो महात्मा जी बाबू बरनोहर और बाबू रामनबमी प्रसाद के साथ कचहरी की ओर चल। रास्ते में बाबू धरनीधर न महात्मा जी से कहा कि आपके जल बल जल के बाद चाहे और कोई कुछ करे बा न करे, किन्तु हम दोनों ने यह निश्चय कर लिया है कि हम साथ-साथ आपके पीछे चल जायेंगे। इन बात को सुनते ही महात्मा जी का चित्त प्रफुल्लित हो गया और उन्होंने बड़े माहुर के साथ कहा "जब अब काम चल गया।

यद्यपि १४४ पारा के नाटिल तथा मुकदमे की बात रचना में कही नहीं गई थी

तथापि वह बाप महर ही न गही बरम् बुर-बुर के बेहानों तक फैल गई और उस दिन कई हजार रैयत कचहरी में आकर बस बजे से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी यही आत्मा थी कि उनके उधार के लिए जेल जाने वाले महारमा बापी के एक बार वर्धन तो हो जायें। कचहरी में जब महारमा जी इजलास पर गये तो उनके पीछे-पीछे प्रायः २० मनुष्यों ने बुरसे की कोशिश में कचहरी के दरवाजों के छीसे तोड़ डाले। हाकिम मि. जार्ज बन्जर ने यह हाव्य देखकर महारमा जी से कहा कि बाप कुछ देर मुक्तारखाने में ठहरे मैं फिर बुल्डा भूमा। महारमा जी मुक्तारखाने में गये। इन्हीं बीच में कचहरी देखकर हाकिम ने शरनवारी पुलिस बुल्डा की कि जिससे लोग फिर भीतर बसना न पाव और काम करने में बाधा न पड़े। उधर महारमा जी मुक्तारखाने में बैठे हुए थे और वहाँ दर्याको की बड़ी भारी मीढ़ लगी हुई थी। तब एकटक उनकी ओर देख रहे थे और उनमें बित्तो ही की बाँकी से अचुमार पल रही थी। कुछ देर के बाद बुल्डाट जाने पर महारमा जी फिर इजलास पर गये। वहाँ सरकारी बकील अपनी किताबों को लिये पहुँचे थे ही तैयार थे। उन्होंने आश्चर्य समझा था कि महारमा बापी जैसे एक बड़े आदमी पर यह मुकदमा चल रहा है। वे स्वयं भी एक बड़े नामी बैरिस्टर हैं। इसमें बहुत बड़ी बहुत करम की आशंका होती। इसी धुन में वे आश्चर्य रात भर मजिरो को झुँडते रहे। जब महारमा जी वहाँ पहुँचे तो हाकिम ने पूछा “बापके कोई बकील हैं?” महारमा जी ने उत्तर दिया “कोई नहीं। इस पर सब लोग कुछ शकित हो गये पर तो भी लोग समझते हैं कि वे बड़े मारी बैरिस्टर हैं अपनी बहुत स्वयं करें। सरकारी बकील ने अभियोग पढ़ सुनाया और कहा कि १४ बाप के मोटिस के अनुसार मि. बापी को ता. १६.४.१७ को रात की नाही से जामान छोड़ पके आना चाहिए था किन्तु वे अभी तक नहीं गये हैं। इसलिए उन पर १८८ बाप के अनुसार अभियोग लगाया जाता है। इस पर महारमा जी ने कहा कि मैंने मोटिस पान के बाद एक पत्र जिज्ञा मजिस्ट्रेट के पास भेज दिया था जिसमें उस आश्रा के सम्बन्ध का कारण बताया था उस पत्र को मिसिल में सामिल कर दिया गया। मजिस्ट्रेट ने कहा कि वह पत्र नहीं गही है। यदि आप उसकी जल्दत समझते हैं तो दरखास्त दीजिये। इसके बाद महारमा बापी ने अपने बयान की बहुत शान्त किन्तु बृहत् मात्रा से पढ़ सुनाया। जिस समय वे उसे पढ़ रहे थे उस समय इतने आश्चर्यों के रहते हुए भी प्रगाढ़ निम्नत्वता छा रही थी और वही तितने मनुष्य थे सभी एकटक उनकी ओर देख रहे थे। जैसे-जैसे वे उसे पढ़ते जाते थे उनके चेहरे पर आश्चर्य और प्रेम का भाव प्रकट होते जाते थे। बयान बड़ी बर—

“With the permission of the court I would like to make a brief statement showing why I have taken a very serious step of seemingly disobeying the order made under Sec. 144 of Cr. P. C. In my humble opinion it is a question of difference of opinion between the local administration and myself. I have entered the country with

motives of rendering humanitarian and national service. I have done so in response to a pressing invitation to come and help the *ryot*, who urge they are not being fairly treated by the Indigo planters. I could not render any help without studying the problem. I have, therefore, come to study it with the assistance, if possible, of the administration and the planters. I have no other motive and cannot believe that my coming can in any way disturb public peace and cause loss of life. I claim to have considerable experience in such matters. The administration, however have thought differently. I fully appreciate their difficulty and I admit too that they can only proceed upon information they receive. As a law-abiding citizen my first instinct would be, as it was, to obey the order served upon me. But I could not do so without doing violence to my sense of duty to those for whom I come. I feel that I could just now serve them only by remaining in their midst. I could not, therefore, voluntarily retire. Amid this conflict of duty I could only throw the responsibility of removing me from them on the administration. I am fully conscious of the fact that a person holding in the public life of India, a position, such as I do, has to be most careful in setting example. It is my firm belief that in the complex constitution under which we are living, the only safe and honourable course for a self-respecting man is, in the circumstances such as face me, to do what I have decided to do, that is, to submit without protest to the penalty of disobedience.

"I venture to make this statement not in any way in extenuation of the penalty to be awarded against me, but to show that I have disregarded the order served upon me not for want of respect for lawful authority but in obedience to the higher law of our being—the voice of conscience."

अर्थात् "महात्मा की आज्ञा से मैं संक्षेप में यह बतलाना चाहता हूँ कि नोटिस द्वारा जो मुझे आज्ञा दी गई उसकी अवज्ञा मैंने क्यों की। मेरी समझ में यह स्वतंत्र अधिकारियों और मेरे मध्य में मतभेद का प्रश्न है। मैं इस देश में राष्ट्रीय तथा मानव सेवा करने के विचार से आया हूँ। वही आकर उन रीयतों की सहायता करने के लिए, जिनके साथ कहा जाता है कि नीलबर छाहब अच्छा व्यवहार नहीं करते। मुझ से बहुत आग्रह किया गया था पर जब तक मैं सब बातें अच्छी तरह न जान लेता तब तक उन लोगों की कोई सहायता नहीं कर सकता था। इसलिये मैं यदि हो सके तो अधिकारियों और नीलबरों की सहायता से सब बातें जानने के लिए आया हुआ हूँ। मैं किसी दूसरे उद्देश्य

से यहाँ नहीं आया हूँ। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि मेरे यहाँ आने से किसी प्रकार शांति भय या प्राण-हानि हो सकती है। मैं कह सकता हूँ कि ऐसी बातों का मुझे बहुत कुछ अनुभव है। अधिकारियों को जो कठिनाइयाँ होती हैं उनको मैं समझता हूँ और मैं यह भी मानता हूँ कि उन्हें जो सूचना मिलती है वे केवल उसी के अनुसार काम कर सकते हैं। कानून मानववासे व्यक्ति की तरह मेरी प्रवृत्ति यही होनी चाहिए थी और उसी प्रवृत्ति हुई थी कि मैं इस आज्ञा का पालन करूँ। पर मैं उन लोगों के प्रति विनये कारण मैं यहाँ आया हूँ अपने कर्तव्य का उल्लंघन नहीं कर सकता था। मैं समझता हूँ कि मैं उन लोगों के बीच में रहकर ही उनकी सहाई कर सकता हूँ। इस कारण मैं स्वेच्छा से इस स्थान से नहीं जा सकता था। दो कर्तव्यों के परस्पर विरोध की वृत्ति में मैं केवल यही कर सकता था कि अपने हृदय की सारी जिम्मेवारी सासको पर छोड़ दूँ। मैं अभी भीति जानता हूँ कि भारत के सार्वजनिक जीवन में मेरी जैसी स्थिति वाले लोगों को आदर्श उपस्थित करने में बहुत ही संशय रहना पड़ता है। मेरा कुछ विश्वास है कि जिस स्थिति में मैं हूँ उस स्थिति में प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति को यही काम करना सब से अच्छा है जो इस समय मेने करना निश्चय किया है और वह यह है कि बिना किसी प्रकार का विरोध किये आज्ञा न मानने का दण्ड सहने के लिए तैयार हो जाऊँ। मेने जो बयान किया है वह इसलिये नहीं कि जो दण्ड मुझे मिलना वाला है वह कम किया जाय पर इस बात को दिखाने के लिए, कि मेने सरकारी आज्ञा की अवज्ञा इस कारण से नहीं की है कि मुझे सरकार के प्रति भ्रष्टा नहीं है बल्कि इस कारण से कि मेने उससे भी उत्त्तर आज्ञा—अपनी विवेक-बुद्धि की आज्ञा—का पालन करना उचित समझा है।”

अब एक बराबर तथा सरकारी बकीलों का विश्वास था कि महात्मा जी कुछ सफाई देंगे। यहाँ पर वह कह देना उचित जान पड़ता है कि १४४ भाग का जो प्रयोग महात्मा जी के विरुद्ध किया गया था वह किसी प्रकार से नहीं किया जा सकता है। अच्छे कानूनी लोगों का विचार था और यह विचार ठीक है कि यदि उस पर ग़ौर होटी तो निजी जीवन के लिए सजा देते भी तो वह फैसला हाई कोर्ट से अवश्य रह जाय। इसी कारण सरकारी बकील को अपनी किताबों की आवश्यकता थी। पर इस बयान को सुनकर बराबर नहीं और मजिस्ट्रेट की समझ में यह नहीं आया कि वे अब क्या करें? उन्होंने महात्मा जी से बार-बार पूछा कि आप अपराध स्वीकार करते हैं या नहीं? महात्मा जी ने उत्तर दिया कि मुझे जो कहना था मैंने अपने बयान में कह दिया। इस पर हाकिम ने कहा कि उसमें अपराध का साफ़ इशारा नहीं है। महात्मा जी ने कहा कि मैं बराबर का अधिक समय नष्ट करना नहीं चाहता मैं अपराध स्वीकार कर लेता हूँ। हाकिम और भी बड़वा गये। उन्होंने महात्मा जी से कहा कि यदि आप अब भी बिना छोड़कर जाने वाले और न जाने का वादा करें तो यह मुकदमा उठा लिया जायगा। महात्मा जी ने उत्तर दिया “यह हो नहीं सकता इस समय की कील कहे जेल से निकलने पर भी मैं आचरण ही में

बपना घर बना लूंगा। हाकिम यह बुझता देख अबाक हो गये और उन्होंने कहा कि इस विषय में कुछ विचार करने की आवश्यकता है आप ३ बजे यहाँ आइये तो मैं हुषम मुला उँढा। ये सब बातें आये बच्चे के भीतर ही समाप्त हो गई और महात्मा जी मकान पर वापस जाने के लिए तैयार हुए कि इतने में पुलिस के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेंट ने आकर कहा कि आप से सुपरिन्टेन्डेंट मिसमा चाहते हैं। महात्मा जी उनके साथ सुपरिन्टेन्डेंट के पास गये। वह किसी समय बलिवी अफीका में रह चुके थे और उन्होंने महात्मा जी को बलिव अफीका का मकानापी बलाकर उनसे बहुत बात की। राजकुमार भुषन की बहुत विकायत की और कोठीवालों से महात्मा जी की मुलाकात कराने का वादा किया। इसके बाद महात्मा जी बिजा मजिस्ट्रेट मि डबल्यू बी हिक्की (Mr W B. Heycock) से मिले। उन्होंने इस कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर प्रकट किया और कहा कि आपको पहले मुझ से मिलना चाहिए था। इस पर महात्मा जी ने उत्तर दिया कि जब मैं कमिस्तर से मिला था तो उन्होंने मेरे साथ जैसे बर्ताव किया उसके बाद मेरे लिए कैसे उचित था कि मैं फिर आप से मिलूँ। मजिस्ट्रेट ने महात्मा जी से तीन दिनों तक देहली में बाना बन्ध करने के लिए कहा और उनकी यह बात महात्मा जी न मान ली।

तीन बज के कुछ पहले ही महात्मा जी मजिस्ट्रेट के इजलास में पहुँच गये। मजिस्ट्रेट ने कहा कि मेरा ता २१ ४ १७ को हुषम मुलाउँढा और तब तक आप १) की जमानत दे लीजिये। महात्मा जी न उत्तर दिया कि मेरे पास कोई जमानतदार नहीं है और न मैं जमानत ही दे सकता हूँ। फिर मुश्किल पड़ी। अन्त में मजिस्ट्रेट ने अपने स्वयं मुचलका लेकर उन्हें जाने की आज्ञा दी। महात्मा जी तीन बज के लगभग डेरे पर और आपके साथ ही उन सबों से यह अनुरोध किया गया कि इन विषय में जब तक सरकारी आज्ञा न मालूम हो जाय तब तक किसी प्रकार का आन्दोलन नहीं करना चाहिए।

उत्तर तार पठते ही बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद कमल से चल पड़े और ता १८ ४ १७ के सवेरे वे ७ बज पटन पहुँचे। उसी समय उन्होंने मि पोल्क और मि हक से मुलाकात की और वह निश्चय हुआ कि मि हक भी मोतीहारी बनें। बाबू अनुग्रहारायण सिंह बकील तथा बा बम्बारेन बर्मा बकील भी साथ हो गिये। पन्ने से ७ बज सवेरे की माड़ी मे रवाना होकर मि पोल्क मि हक बाबू ब्रजकिशोर, बाबू अनुग्रहारायण बाबू बाम्भारय और कैलक रास्ते में महात्मा जी की बगल में मुनने हुए तीन बजे मोतीहारी पहुँचे। बा कार्रवाई मुकदमे में हा चुकी थी सब वहाँ पहुँचने पर मुनने में जाई और उना स्थल होने लगा कि मायब मुचबला उठा लिया बायला और बाट जाने न बड़ने पाययी। पर माय ही यह भी निश्चय हुआ कि अगर सरकारवा नहीं उठाया नहीं गया और महात्मा जी को किसी प्रकार की नजा मिली तो उन अवस्था में भी काम जारी रखता होगा। नवायन माय पहले की बीड़ी हुँ बानों से सूचित किये गये और सब लोग ७॥



महात्मा जो राधेकृष्णानु धीर महादेव भाई (बम्बाल-महाबाहू के कार्ययोगी)

जब संघा के लगभग इकट्ठे होकर आगे की कार्रवाई पर विचार करने लगे । यहाँ भी फिर वही प्रश्न उठा कि महात्मा जी के जेल चले जाने के बाद क्या होगा । इसमें तो संदेह नहीं था कि काम जारी रखना होगा । पर यदि जारी रखने में जेल जाने की मोखत आई, तो क्या किया जायगा । बाबू धरपीबर तथा बाबू रामनबमी का निश्चय सुनकर नवामल कोर्गे का भी साहस बढ़ गया और एक स्तर से सभी ने कहा कि आवश्यकता पड़े पर हम भी पीछे नहीं हटेंगे । जिस समय ये लोग आपस में इस बात पर विचार कर रहे थे महात्मा जी वहाँ नहीं थे । जब इन लोगों ने इसका निश्चय कर लिया तो महात्मा जी को वहाँ बुलाकर यह कह दिया गया । यह जानन्द से गव्वन हो गये और मि पोलक भी सुन कर बहुत खुश हुए । अन्त में महात्मा जी ने कहा कि कार्यक्रम बना लेना उचित है । स्थिर हुआ कि यदि महात्मा जी जेल चले जायें तो मि हक बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद इस दल के नेता बनें और इस बात की सूचना सरकारी कर्मचारियों का दें दें । यदि वे भी किसी तरह से हटा दिये जायें तो बाबू धरपीबर और बाबू रामनबमी प्रसाद इस काम का भार अपने ऊपर लेंगे । जब वे भी हटा दिये जायें तो सेलक और बाबू शम्भूधर और अनुग्रहनाथय्य सिंह इस काम को जारी रखें । आधा की गई कि इन लोगों वहाँ के हटाते-हटाने और मोन भी आ जायेंगे और उनके जाने पर जाले का कार्यक्रम ठीक कर दिया जायगा । इसी निश्चय के अनुसार मि हक और ब्रजकिशोर प्रसाद का पटना तथा दरभंगा जाना स्थिर हुआ कि अपना घर का सब प्रबन्ध इत्यादि ठीक कर ता २१ ४ १७ तक जो हुजूम मानने का दिन था आ जायें । मि हक को एक मुकदमा गोरखपुर में था और वे वहाँ से ता २१ ४ १७ की संघा या २२ ४ १७ के सुबह की साड़ी से आ जाने वाले थे । मि हक ने एक सम्भा तार बड़े सज़ की सेवा में यहाँ की सब हासत के वर्जन के साथ भेज दिया । रात की साड़ी से मि पोलक मि हक और बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद मोतीहारी से रवाना हुए ।

ता १९ ४ १७ से शूड के शूड रैयत जाने लगे और महात्मा जी के सहकारी पण उनके बयान लिखने लगे । महात्मा जी भी स्वयं किसी-किसी का बयान लिख लेते थे और दूसरों से लिख हुए बयानों को पत्र लिखा करते थे । बयान लिखनेवाले को यह दिया गया था कि वहाँ तक हो सके रैयतों से खिरह करके आ बात मज्जी प्रणीत हों, उन्हीं को लिखना और यदि कोई बात ऐसी जान पड़े जिसमें शीघ्र जीव की आवश्यकता हो तो उमजी सूचना महात्मा जी का देना । बयान लिखनेवाले एक तरफ रैयतों की बुक-कहानी मिल रहे थे और उधर पुष्पिम के बारोगा जी दूसरी तरफ बैठकर अपना नां तैयार कर रहे थे । बाब भी हिमुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रायों में बहुत सारा बाब । बाब तक जो कार्रवाई हुई थी उसका सारा सभ मित्रों के पास लिखकर महात्मा जी ने भिजवा दिया । बाब ही पीन बज मेपहर को मि भी एक एण्ड्रूज (Mr. C. F. Andrews) आ पहुँचे । जम्पारन के लोगों ने उनको मिलन का कमी सीमाय्य नहीं प्राप्त हुआ था और कमी ऐसे किसी दूसरे बंपरेज की भी जम्पारनवालों को देखन का मौका नहीं मिला था । उनका सारा निवास

सीधी बाटें और सबसे बढ़कर प्रेम और कर सभी युक्त हो गये। महारानी जी ने उनसे सब बातें कह सुनाई और वह सभी दिन कसबदार से मिलने गये पर मुलाकात नहीं हुई। जब तक सभी कोई बाबू और सब प्रकार के मकान में ठहरे थे पर लोगों की संख्या बढ़ जाने के कारण और सब विचार कर कि यह काम बहुत दिनों तक चलने वाला है एक स्वतन्त्र मकान के लेना उचित समझा गया। बाबू रामबहाल प्रसाद ने जो वहाँ के शिष्ट साधु घराने के एक उस्ताही नवयुवक हैं एक मकान भी ठीक कर लिया। सब लोगों का दूसरे मकान में जाना निश्चित हुआ। महारानी जी की आज्ञा हुई कि आज ही वहाँ चले जायें और सब लोग रात को प्रायः १० बजे गये मकान में चले गये। यहाँ पर यह कह देना अनुरोध नहीं होना कि जब तक महारानी जी और उनके सहकारी जम्मू में रहे, साधु घराने के लोगों ने सब प्रकार की सहायता की।

उधर घटने में मि पोखर पहुँचे। वहाँ बिहार प्रांतीय सेवा की बैठक भारतीय राजबहादुर कुलसहाय की अध्यक्षता में हुई। उसमें मि पोखर ने जम्मू का सब हाल कह सुनाया और सब नेताओं से जम्मू जाने का अनुरोध किया। वहाँ पर निश्चित हुआ कि इस काम में महारानी जी की हर प्रकार से सहायता की जाय।

ता २०-४ १७ को सबेरे मि एड्जुट जिला कलेक्टर मि हिकीक से जा मिले। वहाँ उन्हें बताया कि मुकदमा उठा लिया जायगा और सरकारी बख्तर महारानी की जाँच में मदद देने पर इसकी सूचना अभी तक हम लोगों को नहीं मिली थी। ता १९ को ही निश्चय हुआ कि घटने के सब गताओं को जम्मू बुलाना चाहिए और इसी निश्चय के अनुसार मि हुसैन हुसैन मि सल्लिखाना सिद्ध तथा भारतीय राजबहादुर कुल सहाय की तार भेजा गया। आज ही बाबू बलकिशोर जी बरभने से वापस आये। आज भी सारा दिन रैयती के बयान लिख गये। जब रैयती की पूरी बीड होने लगी थी कि सबेरे ६॥ बजे से संध्या ६॥ बजे तक उनका ताता ही नहीं टूटा था। बरतों को रात को नहीं रह जाता पड़ता और दूसरे दिन भी उनके बयान लिख जाने का कोई ठिकाना नहीं रहता। यह देखकर निश्चय किया गया कि संध्या के समय उन रैयती के काम तिर सिये जायें जो आ गये हैं। पर समयोपाय के कारण जिनका बयान नहीं लिखा गया है और दूसरे दिन उनके बयान लिख लेने के बाद दूसरे रैयती के बयान लिखे जायें इसी काम के अनुसार काम करने लगा।

आज शाम को ७ बजे मुकदमा उठाने का नोटिस आ गया।

ता २१-४ १७ को सभी प्रकार कायम किया जाता रहा। आज रैयती की बीड भीड़ थी। सभी को सबर थी कि महारानी जी के मुकदमे में आज ही कुछ सुनाया जायगा इसलिए बहुत दूर-दूर से रैयत आये थे। केवल बतिया से प्रायः ४०० से अधिक मनुष्य पहुँचे थे। मुकदमा उठा लेने की सबर कुछ नहीं आनन्द मनाने लगे और अपने बयानों को लिखवाने लगे। दो पुलिस सब-इन्स्पेक्टर्स जो पहले बराबर हम लोगों की कारवाई देखने

के लिए रहते थे आज से हटा दिया गये। आज तीन बजे की गाड़ी से पटने से मि सचिन्दागन्द सिंह और रामबहापुर कुम्भसहाय मोठीहारी आये और महारमा जी से बहुत देर तक बातचीत हुई। मि हसन इमाम स्वयं तो नहीं जा सके पर उन्होंने आर्थिक सहायता मेज की। महारमा जी ने आज निश्चय किया कि कल ता २४ ४ १० (रविवार) को वह बतिया चलेंगे।

मि एड्ज का फिजी द्वीप में पहले से ही जाने का निश्चय था। महारमा जी की राम हुई वह नहीं चाहे। हम लोगों का विचार हुआ कि अभी नीलबरो की सब गडबड़ मिटी नहीं है। समझ है कि फिर कुछ गोलमाल करे। इसलिए यदि मि एड्ज जैसे एक सज्जन रहेंगे तो कार्य में सहायता मिलेगी। हम लोगों ने मि एड्ज से कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि महारमा जी बेसी राय दें। ऐसा किया जायगा। सम्प्रति समय महारमा जी ने इसकी चर्चा की नहीं और कहा गया कि मि एड्ज को रोक लिया जाय। इस पर जो बातें महारमा जी ने कही उनका प्रभाव हम लोगों पर बहुत पड़ा। उन्होंने कहा कि मैं समझता हूँ कि आप लोग मि एड्ज को क्यों रोकना चाहते हैं। आप लोग समझते हैं कि यह लड़ाई जोरे नीलबरो से है और यदि एक गोरे मि एड्ज आपके साथ रहेंगे तो आपकी यह रक्षा कर सकय पर मैं ऐसा नहीं चाहता हूँ। मेरी समझ में आप लोगों का मि एड्ज का आग्रह सेना अच्छा नहीं है। इसीलिए मैं समझता हूँ कि उनका चला जाना ही अच्छा है। हाँ यदि मि एड्ज ऐसा समझ कि बम्पारन का काम फिजी ने नाम से अधिक आवश्यक है तो वह ठहर सकते हैं, पर इसका निश्चय वह स्वयं कर स। अन्त में वह निश्चय हुआ कि वे फिजी द्वीप आये और इसके लिए वह दूसरे दिन २२ ४ १७ को सवेरे की गाड़ी से रवाना हो जायें।

आज की तिपहर की गाड़ी से मुजफ्फरपुर से बाबू रामदाससिंह बकील आये और उन्होंने भी इन्हार सिन्धने में सहायता की। ता २२ ४ १७ को छपने और मुजफ्फरपुर से कई बकील सहायता आये। आज इन्हारों की बड़ी घूम रही। मि एड्ज सवेरे इस बज की गाड़ी से चले गये और उची गाड़ी से मि हक मोरखपुर से वापिस पहुँचे। आज एक गाँव से सूचना मिली कि वहाँ के एक आदमी को कोठ के जमलों ने गाँगी घर में बन्द कर दिया है। महारमा जी ने बाबू अनुग्रहनाथरायण को तुरन्त वहाँ जाने की आज्ञा दी और एक पत्र पुलिस सुपरिन्टण्डेंट के पास लिख भेजा कि वे इस कार्य में पुलिस को सहायता दें। बाबू अनुग्रहनाथरायण वहाँ पहुँचे पर उनके पहुँचने की खबर पाकर कोठी वालों ने उस आदमी को छोड़ दिया और उसे घूमरी राह से निकल जाने को कहा। इसी बीच में उसकी अनुग्रह बाबू से भेंट हो गई और वह उसका साथ लेकर मोठीहारी लौट आये।

आज तिपहर की गाड़ी से महारमा जी तथा बाबू ब्रजबिन्दोर प्रसाद और बाबू राम नवमी प्रसाद बतिया गये और मोठीहारी में बाबू धरबीधर, सेखन बाबू अनुग्रहनाथरायण सिंह बाबू राममूर्तारण वर्मा और बाबू रामबहापुर रह गये।

भारतवर्ष में सलसली

जब महात्मा गांधी पर १४४ ब्रह्म के अनुसार नोटिस दिया जाता मुकदमे का होना और फिर उसका उठा दिया जाना इत्यादि बातों की सबर प्रकाशित हुई, तो हिन्दुस्तान के प्रायः सब समाचारपत्रों ने कमिश्नर की इस कार्रवाई पर कड़ी समालोचनाएँ कीं और सरकार की मुकदमा उठा लेने तथा सब देने के लिए हुजूम देने के विषय में बड़ी प्रशंसा की ।

मुकदमा उठा लेने के पहले मद्रास के 'इंडियन पेट्रियट' (Indian Patriot) ने १९ अप्रैल को लिखा—

"We are frankly horrified to learn that some foolish officials have taken into their heads to interfere with Mr Gandhi. It is impossible to resist the temptation to use violent language against officials who have sprung this upon the people of India today. They have helped to rouse the indignation of the young and old, the politician and the layman. We hope that good sense will prevail and that the Government of India will prevent what will be nothing short of calamity any harmful touch of this monarch of the Indian heart. The Judge before whom Mr Gandhi was taken has deferred passing orders at once. That is encouraging. The Government of India must at once interfere and ask the Bihar authorities to take off their unholy hands from this patriot saint. Touch him (Mr Gandhi) and all that is spirited and high in India will flow to him in sympathy. Educated Indian young men will be more inclined to go to Motihari and attempt to conduct enquiry which Mr Gandhi was forbidden to conduct, defy the authorities, be hanged and be flung into jails or be deported, than offering themselves to the Defence of India Force."

भाषार्थ—“हम लोगों को यह सुनकर सचमुच बड़ा ही आश्चर्य हुआ है कि कुछ नाममन्न बख्तरों ने मि. गांधी की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करने की ठानी है । एम बख्तरों के विषय में कड़ी भाषा प्रयोग न करना असम्भव है किन्तु हमें इस कार्रवाई से हिन्दुस्तानियों को विस्मित कर दिया है । उन्होंने अपनी कार्रवाई से बड़े-बच्चे राजनीतिक या आ राजनीति में अपना कोई सम्बन्ध नहीं रखते उन सभी के हृदय में जोष की जाग मड़का दी है । हम भाषा करते हैं कि भारत सरकार उन भाषति को नहीं जान देगी जो भारतीयों के हृदय-मुकुट

के साथ हस्तक्षेप करना से अवश्य होगी। जिस पत्र के यहाँ मि गांधी का मुख्यमा है उन्होंने उसमें हुक्म देना चुस्तगी रखा है। यह आपाजगक है। भारत सरकार को इसमें तुरन्त हस्तक्षेप करना चाहिए और बिहार सरकार को अपना अपवित्र हाथ इस दोगमक श्रमि के ऊपर से धीरे से हटा लेने को कह देना चाहिए। मि गांधी ने छड़-छाड़ हुई और हिन्दुस्तान के उष्ण भाग के सभी उत्साही मनुष्यों की उनके साथ पूरी सहानुमति हो जायगी। विशेषकर शिक्षित मध्यमवर्ग मोटीहारी जग के मित्र तैयार हो जायेंगे और वही जाँच करना आरम्भ कर देंगे जिसके करने में मि गांधी मग किम्वं यम है। वे सरकारी कर्मचारियों के हुक्म का उत्संजन करेंगे जैसा कि मि गांधी ने किया है और भारत सरकार में भर्ती होने की अपेक्षा जल बने या देन निकाल जान की सजा मुमलना भी पसन्द करेंगे।”

गन्धर्व के मेसेज (The Message) पत्र ने अपने २ अप्रैल के पत्र में मलिखा—

“From the particulars so far to hand, it is plain that the action taken is arbitrary and, we think, also illegal in spirit, if not in the letter. In the first place it is absurd to impute to Mr Gandhi any intention of obstructing or causing injury or disturbing public tranquility etc. There is no doubt that his enquiry would cause annoyance to the planters if it resulted in throwing open the flood gates of light on the dark spot of labour recruitment and labour management on the plantations and might as well cause them injury if it further resulted in removing the condition under which sweating of labour would be impossible. But that is the view of the matter in which Government officials cannot take side of the planters against labour and their business is to remain neutral if they cannot assist in bettering the condition of labour.”

भाषार्थ—“जो विवरण कि हमको प्राप्त हुआ है उससे साफ दिखित हुआ है कि सरकारी कार्रवाई बिल्कुल मनमानी हुई है और हम लोगों के विचार में यह हुक्म एकदम कानून के विरुद्ध है। महारमा गांधी पर यह दोष लगाया कि उनकी इच्छा किमी को हानि पहुँचाने या शांति भंग करने इत्यादि की है बिल्कुल बंधक बुनियाद की है। इसमें मन्सह नहीं कि यदि उनकी जाँच से नीम की लेनी के प्रबन्ध और वहाँ के मजदूरों की भर्ती के सम्बन्ध में कुछ राज मूल जाय तो उनसे वहाँ के नीलकारों को कुछ पहुँचगा। और यदि इस जाँच के कारण मजदूरों के दोष दूर हो जायेंगे तो उममे उनका हानि भी पहुँच सकती है पर यह ऐसी बात है जिसमें सरकारी कर्मचारी मजदूरों के विरुद्ध नीलकारों की ठरफदारी नहीं कर सकते। उनका कर्तव्य है कि यदि वे मगमीचियों की बसा मुबारने

में मयब गही दे सकते हैं तो चुप रहें।

मद्रास के 'न्यू इण्डिया' (New India) ने १९ अप्रैल को लिखा—
 "The forcible stoppage of Mr. Gandhi is natural, seeing that so much is taking place, which is vital to conceal."
 अर्थात् "महात्मा गांधी को जबरदस्ती रोक देना स्वाभाविक है क्योंकि किसी बातों ऐसी हो रही हैं जिनका छिपाना जरूरी है।

लाहौर के 'पंजाबी' (The Punjabee) ने २४वीं मई के अग्र-लेख में पूरा हाल बयान करते हुए नवमनेष्ट के इस कार्य पर सम्मोच प्रकाशित किया और कहा कि—
 "The conclusion will be awaited with greatest interest and expectancy

अर्थात् 'महात्मा गांधी की जाँच का तरीका जानने के लिए खोम बड़ी उत्सुकता से इंतजार करेंगे।

बम्बई के 'इण्डियन सोशल रिकॉर्मेर' (The Indian Social Reformer) ने २२वीं अप्रैल के अंक में लिखा—
 "The extraordinary order passed by the District Magistrate of Champaran ordering Mr. Gandhi to leave the district as his presence in any part of it would endanger the public peace has created widespread indignation."

अर्थात् "कम्यारन के जिला मजिस्ट्रेट के इस असाधारण हुक्म से जिसके द्वारा उन्होंने घातित भय होने की भावना फैलाकर महात्मा गांधी को कम्यारन छोड़ देने को कहा है चारा और ओषधियाँ मड़क गई हैं।

कलकत्ता के 'एडवोकेट' (The Advocate) ने २४वीं अप्रैल को बिहार नवमनेष्ट को महात्मा गांधी पर मुकदमा उठा लेने के लिए बर्बाद होने हुए लिखा—
 "Little thought could have revealed to the Commissioner that he was taking an enormous responsibility and that he was drawing India in an agitation, the like of which she witnessed not for some time

"After consultation and consideration the order was withdrawn. Nay official co-operation in the noble task which Mr. Gandhi has undertaken in selfless spirit has been promised
 "But the ways of bureaucrat are inscrutable and his mentality is too deep for words."

भावार्थ—“जरा सोचने में कमिशनर महोदय का पता लग जाता कि वह अपनी जमानत में एक बड़ी गरीबी जवाबदाही अपने सर पर उठा रहे हैं और एसा काम कर रहे

है जिससे हिन्दुस्तान में एक ऐसा आंदोलन पैदा हो जायगा जैसा कि यहाँ कुछ दिनों से नहीं हुआ था।

“सोच-विचार के बाद हुजूम उठा लिया गया है। इतना ही नहीं बल्कि गांधी किया गया है कि सरकारी कर्मचारी महारमा गांधी के इस निस्वार्थ काम में मदद भी करेंगे।

“पर नौकरशाहियों का रास्ता बिचल है और उनके मानसिक भाव की गहराई का पता शर्मों से नहीं मिल सकता।”

प्रयाग के ‘लीडर’ (The Leader) के २३वीं अक्टूबर के अंक में एक बड़ा लेख प्रकाशित हुआ जिसमें चम्पारन की झुलसत आरम्भ से वर्णन करते हुए सम्पादक ने कमिशनर की बिद्वो की समालोचना की और बड़ा १४४ के हुजूम को नाजामद बतलते हुए अन्त में लिखा था—

“Officials who act as the Honourable Mr. Morshed has done, and who write of educated Indians in terms bordering on contempt make all co-operation impossible.”

अर्थात्, ‘ऐसे अफसर जो माननीय मि. मोर्शेड की तरह काम करते हैं और जो शिक्षित हिन्दुस्तानियों के लिए बुरा भरे शब्दों का प्रयोग करते हैं हिन्दुस्तानियों के साथ सहयोग को असंभव कर देते हैं।’

मद्रास के ‘मद्रास टाइम्स’ (Madras Times) ने लिखा—

“To our mind the notice on Mr. Gandhi was a great mistake and suggests a great want of tact.”

अर्थात्, “हम लोगों के विचार में मि. गांधी पर मोटिव जारी करना बड़ी भूल हुई है और इससे सरकारी अफसरों में समाहित से कार्य करने के इश्व की कमी माहूम पड़ती है।”

बम्बई के ‘बॉम्बे क्रॉनिकल’ (Bombay Chronicle) ने भी कमिशनर की कार्रवाई पर निम्नलिखित कड़ी समालोचना की—

“We trust that the higher authority will lose no time in rectifying the blunder of the local authorities in Bihar who are responsible for serving an order on Mr. Gandhi under Sec. 144 Cr. P. C. to leave the District of Champaran. The order from every point of view seems absolutely without justification and one cannot avoid the reflection that the relation between the Bihar Planters and the Ryots must be in a very undesirable state if it is feared that the very presence of Mr. Gandhi to investigate conditions would act like a lighted torch to inflammable materials.”

भावार्थ—“हमें विश्वास है कि उच्च पराधिकारीगण उस भूल के सुधारने में जल्द

भी न चुकने जिसको बिहार के स्थानीय कर्मचारियों ने मि गांधी पर १५४ धारा के मोटिस के जरिये जल्दी अप्पारण जिले से चले जाने के लिए हुजम देने में की है। जिस तरह से बेका बाय इस हुजम के लिए कोई उचित कारण नहीं है और यह कहे बिना नहीं रहा या समझा कि जहाँ इच्छा जाँच करने के स्थान से मि गांधी का उपस्थित हो जाना ही इतना मर्यादित समझा जाता है कि उससे ज्यादा महत्व उठने की आवश्यकता होती है तो इसमें सन्देह बाहिर है कि बिहार के जील्लर और उनके रेजिस्ट्री के बीच का सम्बन्ध सम्तोषजनक नहीं है।

कलकत्ते के 'बंगाली' (The Bengalee) ने २१वीं अप्रैल के अंक में लिखा—

"Mr Gandhi has submitted a manly and dignified protest in which he sets forth the reason why he can not submit to the order of the magistrate of Motihari and leave the District. All India is with him."

भाषार्थ—“मि गांधी ने मोतीहारी के मजिस्ट्रेट की आज्ञा अस्वीकार करने तथा बिकान छोड़ने का कारण बताते हुए जो उचित वेम किया है, वह दिलेखता और मर्यादापूर्ण है। इसमें सारा हिम्मुशान उनके साथ है।”

मुकदमा उठा लेने पर आत्म्य प्रकाश करते हुए फिर उस पक्ष ने लिखा—

"Mr Gandhi has achieved a signal moral triumph. His protest has been heeded!"

अर्थात्, मि गांधी को बड़ी भारी नैतिक जीत हुई। उनका उद्यम असफल निकला।”

इसी प्रकार 'ट्रिब्यून' 'अमुतबाबार पत्रिका' और 'यहूदा' आदि पत्रों ने कमिश्नर के हुजम की तीव्र समालोचना की।

यह बड़े मारके की बात है कि किसी भी मुख्य एंको-इन्चिवाल समाचारपत्र की कमिश्नर के हुजम समर्थन करने का साहस न पड़ा और उसने हम विषय में एक मन्त्र भी नहीं कहा।

आहौर के 'ट्रिब्यून' (The Tribune) पत्र ने २४वीं अप्रैल को लिखा कि—

"The Government deserves to be thanked for placing public policy above consideration of prestige. The Government has shown wisdom in directing the withdrawal of proceeding against Mr Gandhi and in offering him instead official assistance in the conduct of the enquiry."

भाषार्थ—“सरकार ने लोकमत की नीति का अपनी प्रतिष्ठा से बढ़कर समझा है। इसलिए वह सरकार के योग्य है। महात्मा गांधी के ऊपर से मुकदमा हटाकर और जाँच करने में सरकारी सहायता का वादा कर सरकार ने अपनी बुद्धिमानी का परिचय दिया है।”

बारहवीं अध्याय बेतिया में महात्मा गांधी

ऊपर कहा जा चुका है कि ता. २२ व २३ को तीन बज गपहर की गाड़ी में महात्मा जी अपने सहकारियों के साथ ब्रिजवा गये। अब जिसे मर म मरहमा उठा मन का समाचार फैल गया और महात्मा जी के उभ गाड़ी से बेतिया जाने की भी खबर लोगो को मिल गई। प्रत्येक स्टेशन पर बर्मेनागिलापियों की भीड़ जुट गई थी और गाड़ी के पहुँचने ही अप्पनि तथा धूमों की वर्षा होनी गई। पाँच बजे के लगभग गाड़ी बगिया स्थान पर पहुँची। वहाँ इतनी भीड़ थी कि गाड़ी को स्थान के प्लेटफार्म में कुछ इधर ही रोक देना पड़ा। महात्मा जी तीसरे बर्थे की गाड़ी में सवार ब। दाहर तथा जहार के लोगों ने आपका स्वागत किया। बसबसकार से आकर धूम उठा और पुष्प-वृष्टि सब ही की गई। महात्मा जी गाड़ी पर सवार हुए। लोगों ने बोगों को ज्ञान दिया और गाड़ी बीच से जाना चाहा। परन्तु महात्मा जी न उन्हें ऐसा करने में मना किया। न गाड़ी से उतर जाने को प्रस्तुत हो गये। हार मानकर लोगों ने फिर बोगे गाड़ी में जोड़ दिये। वहाँ बस हजार में सबिष मनुष्य एकत्रित ब। गाड़ी के निकलने में बड़ी कठिनाई हुई। किन्ती प्रकार बीरे-बीरे गाड़ी दाहर की ओर गयी। रास्ते के बोवा किनारे पर पुरुष और स्त्रियों की अप्पनि भीड़ थी। बाब लोगो की बहुत बिनी की अभिभाषा पूरी हुई—महात्मा गांधी वहाँ पहुँचे। उनके बस कुछ दूर होव हममें अब किन्ती प्रकार का उन्हें समेह नही रहा। लोगो का वह विस्वाम उनके सरस हृदयो पर दुड था। बिनी ने लोगों को महात्मा जी के बिषय में कुछ कहा नही था। बहुत से तो महात्मा जी के जीवन-चरित को जानते भी गही बें। ऐसे बहुत कम आवसी बें जो आपके इतिव अफ्रीका के सत्याग्रह की लड़ाई में परिचित ह। पर बिना यह सब जाने बाह्य वृष्टि से बिना किन्ती कारण के ही बोयों का यह विस्वाम क्यों हुआ। हम इनका उत्तर नही दे सकते। बिस्वास सम्पा या धुड हृदय का था इसलिए फल भी मिला। स्थान से महात्मा जी बाबू हजारीमल की बर्मसाला में गये। वही बाबू हजारीमल के छोड़ भाई बाबू सूर्यमल न महात्मा जी का स्वागत किया और आपके रहन का कुल प्रबन्ध करा दिया। जब तक महात्मा जी बगिया में रहे, पही टहरे रह। ये साथ आपकी मचा में बराबर तत्पर रहते बें।

महात्मा जी हमारे दिन सबेरे ही बेतिया के मजिस्ट्रेट मि डब्ल्यू एच लिविस (Mr W H Lewis) और बेतिया राज के मैनेजर मि ज टी बिनी (Mr J T Whitty) से बाकर मिले। महात्मा जी के बिषय में इन अफमनों के पास कलक्टर की बिन्टी पढ़ने ही जा चुकी थी।

बेतिया में बस उनी प्रकार इजहार लिया जाने लगा। यहाँ भी बड़ी भीड़ रहा करनी

बी। ता २४४-१७ की महात्मा जी बाबू बजकिशोर प्रसाद के साथ लौकरिया गाँव में गये। वहाँ के लोगों ने आकर उन्हें अपनी बुसगाथा कह सुनाई। छोटे-छोटे लड़कों से भी महात्मा जी ने वहाँ का हाल पूछा और उन्हें कोठी से और गृहस्थों की ओर से क्या सबकूटी मिस्सी भी इस बात का भी पूरा-पूरा अनुसंधान किया। जिस स्थान में इन्हें आ रहे थे वहाँ बतिया ने मजिस्ट्रेट मि. क्रिचिस भी गये और कुछ देर तक ठहर रहे। उनके रहने पर भी रैमटो ने गिबर होकर सब बातें कह सुनाई। बाबू बजकिशोर प्रसाद जिरह कर करके यहाँ के इन्हें स्पर्श लिखते जाते थे। लोगों का विश्वास है कि मि. क्रिचिस इस बीच से सन्तुष्ट होकर अपने घर लौटे। उस दिन महात्मा जी वहाँ बाबू सन्तर प्रसाद राम नामक एक मूख के घर पर रहे गये। इस यात्रा में वे बैरिया कोठी के मैनेजर मि. एच. पेस से मिले और उनकी कोठी तथा उनके बेहातों के सम्बन्ध में बहुत सी बातें की। महात्मा जी जब कोठी से लौट रहे थे तो एक बटना हुई जो उससे समीप है। वे लौटकर बोड़ी ही दूर गये होने कि एक कोठी का कर्मचारी चौड़ा हुआ उनके पास आया। उसने कहा कि मुझे इस बात का डर था कि शायद साहब आपके साथ बुरी तरह से घेस जायें। इसलिए मैं वहाँ छिपे छिपे कुछ बातों को सुन रहा था और प्रस्तुत था कि यदि जरूरत जाये तो मुझ पर जो कुछ बीते में आपकी सहायता करें। उसके कथन से सचाई टपक रही थी और इससे जान पड़ता है कि कोठी के कर्मचारियों में भी बहुत से ऐसे मनुष्य थे जो सुस्मसुस्मा महात्मा जी के साथ रैन म. असमर्थ होने पर भी हिस से उनकी विजय के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे और कोई कठिन जरूरत आने पर उनकी सहायता करने को तैयार भी थे। परन्तु साथ ही कहना पड़ता है कि ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक न थी।

ता २४-५-१७ की रात को महात्मा जी लौकरिया से बैरिया पैदल ही वापस जाये। यहाँ से पैरों में कुछ घुब आ गया था वह बर्न बल से बाँधा गया।

मोतीहारी में इन्हें आने का काम जारी रहा पर महात्मा जी के वहाँ से चले जाने पर बैरिया में बहुत ही भीड़ होने लगी। इसलिए बाबू सम्मूहचरण कार्य में सहायता देने के लिए बैरिया ही चले जाये। इसी समय छपरे से बाबू बन्नेवेश नाटयण बकील तथा भारे से पं. पारसनाथ मिश्रा भी इन्हें आने और लिखने में सहायता देने के लिए आये। जो इन्हें मोतीहारी में लिये जाते थे वह प्रतिदिन रात की बाड़ी से एक आधमी के हाथ महात्मा जी के पास बैरिया में चले जाते थे।

ता २६-४-१७ को महात्मा जी बाबू रामनरमी प्रसाद को साथ लेकर दुड़िया कोठी के बेहात मोरे मिवाकपरा में गये। यह बीच बैरिया से बोड़ी ही दूर पर है। आपके साथ पुलिस के कर्मचारी भी थे। रात के आठों ओर बूमबूम कर महात्मा जी ने वहाँ की अवस्था देखी। वहाँ का दृश्य देखकर उनका हृदय पिचक गया। लोगों के घरों के चारों ओर नील बोया हुआ था। बहुत से लोगों ने वहाँ की स्थिति का पता लगाकर महात्मा जी बतिया लौट आये।

ता २७-४ १७ को महात्मा जी बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद बाबू रामनथजी प्रसाद तथा पं राजकुमार शुक्ल को साथ लेकर बेल्वा कोठी के वेहात में गये। रास्ते में बाबू बिष्णु-वासिनी प्रसाद भी योरसपुर से महात्मा जी की सहायता के लिए आये थे। मिले और वह भी साथ हो गिये। महात्मा जी नरकटियामंज स्टेशन में सुबह ५ म उत्तरकर पैदल ही मुरमी भरहुवा के लिए चले गये। छ-सात मील की दूरी पर ही रखाया गया। रास्ते में भिकारपुर के दीवान जी की ओर से बहुत आग्रह हुआ कि महात्मा जी जाकर उनका घर पवित्र करें और बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद आदि जो उनके पहले के परिचित थे उनके यहाँ कुछ जमपान करें। महात्मा जी ने बहुत कुछ कहने-सुनने पर स्वीकार किया कि ५ मिनट के लिए हम लोग रुक सकते हैं। वहाँ पहुँचने पर ५ मिनट के भीतर ही सब लोगों ने मूँह-हाथ का जमपान कर लिया और बड़ी देरकर निवृत्त समय पर ही मार्च की आजा हुई और सभी चल पड़े। बैसास की कड़ी धूप में चलकर सब के सब ग्राम बन बजे मुरमी-भरहुवा पहुँचे। वह वही गाँव है जहाँ के रहने वाले पं राजकुमार शुक्ल हैं। बिष्णु चम्पारन की प्रजा ने अपना प्रतिनिधि बनाकर बलनठ काँच में मजा का और जो महात्मा जी के साथ चलकर थे वे भी। राजकुमार शुक्ल ने अपने घर को दिखाया जिसे वह कहते थे कि गत मास कोठी में कूट किया था। घर की छतरी उबड़ी हुई पड़ी थी। कोठिया जिनम ममा रक्षा पाठा है। उल्टी पड़ी थी और केले के पेड़ तितर-बितर होकर पड़े थे। उनके कोठे में जिल्हे, उनके कपड़ानुसार, कोठी में मवेशियों से चरवा दिया था अभी तक टूटी डाटे स्त्री लड़ी थी।^१ महात्मा जी ने यह सब अपनी आँखों देखा और बहुत दुःखित हुए। वहाँ पर बहुत लोगों के इबहार किये गये। लैकड़ों आश्रमियों ने रुट की बात कही। उनमें कुछ आवनी ऐसे भी थे जिनके मवेशियों से जोत चरवाया गया था। महात्मा जी इस मात्ता में बेल्वा कोठी के मनेबर मि ए सी ऐमन से जाकर मिले। उस के समय सब लोग बेल्वा गाँव में गये और सप्तपत्तन नामक गृहस्थ के मकान पर ठहरे। दूसरे दिन सब लोग बेठिया लौट आये।

बल्वा से लौटने के बाद महात्मा जी मि लिबिस और मि बिनी से फिर मिलने गये और उन लोगों से बहुत देर तक बातें की। महात्मा जी के आने से नीलम्बर तथा स्वादिक कर्मचारि बचरा से भले थे। मि लिबिस तो बहुत ही डर भय थे। उन्होंने अपने सामने एक प्रकार का भ्रमकर बच्चे का काष्पनिक चित्र लीज रखा था और समझने लग थे कि अब सरकारी अफसरों की कोई कुछ नहीं सुनेगा। महात्मा जी से बातें हुईं उनसे स्पष्ट यही बात पता कि सामान्य इस विषय की कोई रिपोर्ट अब सरकार में भेजी जायगी।

भाव ४॥ बब सेपहर को ललक भी मोटीहारी से चके जाये और सब लोग मिलकर

१ राजकुमार शुक्ल ने अपने घर लट जाने की बात कमीशन के सामने कही थी और बेल्वा कोठी के साहब मि ए सी ऐमन ने इनकार कर दिया था।

विचार करने लगे कि यदि फिर भी सरकार की ओर से कुछ कार्रवाई की गई, तो ऐसी बचस्पा में क्या किया जायगा। सरकार हम लोगों को बिना अनिवार्य के तब तो ले नहीं सकती थी। १९४४ बारा की कार्रवाई जब पीकी पड़ जाती। हाँ भारत रक्षा कानून (Defence of India Act) के अनुसार हम लोग बम्पारन से हटा दिये जा सकते थे। हम लोगों ने विचार किया कि यदि ऐसा किया गया तो हम सब के सब एक ही साथ हटा दिये जायेंगे। पर इस समय तक हम लोगों ने इलाक़े की जनता के इजहार के लिये थे। बम्पारन भर की धाव सभी बात जानने में जा गई थी। कोई भी स्वाम ऐसा नहीं था जहाँ के कुछ रैलियों ने जाकर बयान न किम्बा दिव हों। कोई भी कोठी ऐसी नहीं थी जहाँ की कार्रवाई से पूरी तरह हम लोग परिचित न हो सकें। यदि हम सब एक साथ हटा दिये जायेंगे तो मुश्किल है कि जो इजहार हमारे पास थे सबका जो कागजी सबूत हमारे पास जायेंगे वे वे एकदम बेकार हो जावें। हम लोगों को हटाये जाने पर भी एक दूसरा दम जाकर इस काम को करन लयेगा। परम सबूत उन्हें फिर से एकत्रित करने होंगे और सब था कि कागजी सबूत उस हीघठा और मुगमठा से फिर न मिलें। फिर गया दम जो जायगा वह बम्पारन से एकदम अपरिचित रहेगा। इन्हीं बातों पर हम लोगों की एक मोट्टी बिठाकर महात्मा जी बहुत बेर सब विचार करते रहे। कुछ लोगों की राय हुई कि सब कागजी और इजहारों की कई प्रतिमाँ तैयार कर ली जायें जिससे नये दम वाले उसे देख सकें और जो प्रति हमारे पास रहे वह यदि सरकार जप्त भी कर ले तो भी हमारे पास सब कागजी की प्रतिमाँ मौजूद रह जावें। महात्मा जी न विचार कर कहा कि हमारे साथ सरकार चाहें जो करे पर इन सबूतों को जप्त करना या नाश करना उसके लिये ऐसी नासमझी का काम होगा कि वह ऐसा कभी नहीं करेगी क्योंकि जो सबूत हम ने एकत्रित किये हैं उन्हें यदि सरकार पास कर ले तो हम लोग बिन्दुओं तक की लज्जा है या पड़ा है उनके विषय में जो कुछ कहेंगे उसे सब मानना पड़ेगा और इससे सरकार की शिकायत होगी और उन्हें एक भयंकर आन्दोलन के अतिरिक्त कुछ हाथ न जायेगा। हाँ इसका अवश्य कर लना चाहिए कि सब चीजों को एक में अधिक प्रतिमाँ रखी जावें। इनकी जगह से पीछे भी पड़ सकती है। यदि सरकार के पास इन सबूतों को पक्ष भी करना हुआ तो भी य अतिरिक्त प्रतिमाँ काम में लायेंगी। इन्हीं सब विचारों में अधिक रात बीत गई। उनी रात को ८ बजे के बाद मि. किमिन म. एक रिपोर्ट जो वह जर्नलमेंट के पास भेज रहे थे महात्मा जी के पास भेजने को भेज दी और कहा कि यदि वह कुछ उस विषय में कहला चाह तो लिख भेजें। महात्मा जी ने उस पर अपनी सम्मति भेज दी। महात्मा जी के जो जाने पर भी मि. किमिन की एक बिट्टी आई जिसका उत्तर उन्होंने दूसरे दिन सुबह को दिया।

ता १०-४-१७ को महात्मा जी बाबू चम्पारन को साथ लेकर नाडी काटी गये और वहाँ के साहब मि. सी. स्टिल (Mr. C. Still) से मिले। वहाँ पर परना कोठी

के मैनेजर मि गार्डन कनिंग (Mr Gordon Canning) जी आये थे। उन लोगों से बहुत बातें हुई। कुछ रैयतों के इजहार भेजे हुए महात्मा जी सभ्या की यात्री से बेनिया कीट आये।

ता १-५ १७ को महात्मा जी बाबू बजरकिशोर प्रसाद को साथ लेकर मोतीहारी गये। ता २-५ १७ को नीलबरों की एक बैठक हुई। वहाँ बहुत से नामी-नामी नीलबर उपस्थित थे। महात्मा जी को भी उन लोगों ने अपनी बैठक में बुलाया था। बहुत बेर तक सब विषयों पर विचार हुआ परन्तु इस सभा से कुछ फल नहीं निकला। ता ३-५ १७ को महात्मा जी बिना सविस्ट्रेट मि हिलीक तथा सर्टकमेन्ट अफसर मि स्वीनी (Mr Sweeney) ने मिले और उसी दिन बेनिया वापस आ गये।

इसर बिहार गवर्नमेन्ट से भी चम्पारन की बातें छिपी न थी। स्वामीय कर्मचारीगण रिपोर्ट रंगकर भेज ही रहे थे उन्पर नीलबरों ने भी अपने प्रतिनिधियों को गवर्नमेन्ट के पास भेजा और वहाँ तरह-तरह की शिकायत की। मुजफ्फरपुर के यूरोपियन डिफेन्स एसोसिएशन (European Defence Association) ने भी कलकत्ते के मुख्य सम्रा की ओर से भारत सरकार के पास बरखास्त लिखावायी कि महात्मा गांधी की जाँच रोक दी जावे और यदि सरकार ऐसा करना नहीं चाहती हो तो वह अपनी ओर से एक कमीशन मुकदर करे। माकूम होता है कि जब २-५ १७ को महात्मा जी की नीलबरा से भेंट हुई और उसका फल नीलबरों को समोपजनक नहीं दीख पड़ा तब उन्होंने यह सब कार्रवाईयाँ की। महात्मा जी जो कुछ कहते थे साफ नीलबरों से और सरकारी कर्मचारियों से कह दिया करते थे इसर नीलबर छिये-छिये ऐसी शिकायत किया करते व और उनकी खबर तक महात्मा जी को नहीं पहुँचने पाती थी। इसी ईपुनेशन के फलस्वरूप ता ६-५ १७

१ एसोसिएट्रेड प्रेस का एक तार ता ११-५ १७ को बाकीपुर से निम्नलिखित आत्म का निकला था—

"The Conference between Hon'ble Mr Maude and Mr Gandhi is said to be the result of a deputation of the Planters Association which waited on the Government at Ranchi last week. It is reported that the deputation pointed out that the enquiry which is being carried on now has created a great stir and agitation amongst the raihs and asked that either this enquiry should be stopped or in the alternative the Government should appoint a Commission including representatives of planters and raihs to hold a public enquiry. The Muzaffer pur branch of the European Defence Association have also through their parent body in Calcutta submitted a representation to the Government of India on the subject. In the meantime, news has been received from Motihari of a factory at Olaha an outwork of a huge indigo—

को रात्री से चीफ सेक्रेटरी का मेजा हुआ एक तार महात्मा जी के पास पहुँचा। इस तार में उन्होंने लिखा था कि माननीय मि डब्ल्यू मीड (Mr W Maude) ता १-५ १७ को बाँकीपुर में महात्मा जी से मिलने के लिए आवेंगे अतएव उन्होंने महात्मा जी को वहाँ जाकर उनसे मिलने का अनुरोध किया। हम लोग समझ गये कि फिर अब सरकार की ओर से कुछ कार्रवाई होयी पर इस समय ऐसा भय नहीं था कि जीव लोक सी जावेगी।

इस रैयतो की मीड नियत बढ़ती ही गई। बिहार के कई जिलों से इसहार के काम में सहायता देने के लिए स्वयंसेवक आ जुटे और काम शुरू ज़ोरों से जारी रहा। बीच-बीच में बिहार के नेता लोग भी आ बाधा करते थे। ता ५ ५ १७ को पटने से बाबू प्रेमेश्वरकाष्ठ बेतिया आये और कई दिनों तक वहाँ ठहरे रहे।

concern, known as the Turkanlia concern, having been completely burnt down by fire involving a loss of thousands of rupees, and planters suspect it as a case of incendiarism. What happened at the Conference between Mr Maude and Mr Gandhu has not yet transpired, but it is understood that Mr Gandhu would continue his enquiry."

भावार्थ—'पत सप्ताह में रात्री में गीसबरो की एक डेपूटेशन गवर्नमेन्ट के पास गया था। कहा जाता है कि मि गांधी तथा माननीय मि मीड के बीच जो कांफ्रेंस निश्चित हुआ वह उसी का फलफा है। डेपूटेशन में सरकार के समक्ष यह पेश किया कि जो जीव मि गांधी कर रहे हैं उससे रैयतों के बीच बड़ी सन्तुष्टि हो गई है। इसलिए या तो ऐसी जीव रोका देनी चाहिए जबकि सरकार की ओर से कमीशन नियुक्त होना चाहिए, जिसमें गीसबरो और रैयत दोनों के प्रतिनिधि रहें और जो जुले तीर पर जीव करें यूरो-पियन डिफेन्स एसोसिएशन मुजफ्फरपुर छात्रा समा की ओर से अपनी कमकत की प्रमाण समिति द्वारा भारत सरकार के पास एक इस विषय की दरदवास्त भजी गई है। इस बीच में मोलीहारी में सबर आई है कि तुर्कोनिया की काँड़ी जोलहा कोठी एकदम बन्दर साक हो गई जिससे हजारों रुपये की नति हुई है। गीसबर लोगों को समझ है कि यह बात किसी ने लया थी है। मि मीड के दरमियाय क्या-क्या बातें हुई, यह अभी तक नहीं मालूम हुआ है पर ऐसा समझा जाता है कि मि गांधी अपनी जीव जारी रखेंगे।

तेरहवाँ अध्याय माननीय मि मीड से भेंट

ता १-५ १७ को सभरे की यात्री से महात्मा जी न बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद के साथ माननीय मि मीड से मिलने के लिए प्रस्थान किया। बाबू ब्रजकिशोर साहब को सभी तक बेचिबा में वे साथ हो लिये। महात्मा जी के वहाँ जाने की खबर पहले ही फैल चुकी थी। रास्ते भर में प्रायः सभी स्टेशनों पर बर्थों की बैसी ही मीड बैसी ही बम्पनि बैसी ही पुष्प-भूषि जो महात्माजी की और यात्रियों से देखने में आई थी फिर भी मिलती गई। राँघवा को ७ बजे महात्मा जी बाकीपुर स्टेशन पर पहुँचे। उस समय वहाँ बड़े जोरों से पानी बरस रहा था पर इस पर भी बर्थों की मीड कम न थी। पटना के प्रायः सभी नेता और कई हजार अनुप्य स्टेशन पर महात्मा जी के स्वागत के लिए मौजूद थे। महात्मा जी मि मजहबलहक के मकान पर जाकर उतरे।

ता १-५ १७ को महात्मा जी की मि मीड से भेंट हुई। प्रायः दो घण्टे की बात हुई। इसके एक दिन पूर्व ही मि मीड बम्पारन के कलक्टर मि हिस्कीक तथा बरिया के मि बिटी और मि बिबिस इत्यादि को बुलाकर उनसे मिल चुके थे। महात्मा जी और मि मीड में क्या बातें हुईं यह जानूँ नहीं। पर इतना जान पड़ता है कि नीलबरी ने सरकार के कान खूब फूँके थे और विशेषकर महात्मा जी के सहकारियों पर बहुत साक्षेप किया था। सरकार को वह बात खूब समझा दी गई थी कि महात्मा जी के साथ जो बकील काम कर रहे हैं वे ही सब फसाव के मूल हैं और उन्हें वहाँ से अभिमुख हटा देना चाहिए। पाठकों को स्मरण होना कि बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद के नाम से वे पहले ही से परिचित थे और बिहार व्यवस्थापिका सभा में रैपटो का पक्ष लेने के कारण उनसे नीलबरी बहुत ही बिपदे रहते थे। अब महात्मा जी से मि मीड की भेंट हुई तो ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने और सब भावों के बलाने इस पर भी बड़ा जोर दिया कि उन लोगों को महात्मा जी बम्पारन से हटा दें। महात्मा जी ने सरकार को विश्वास दिलाया कि जो उनके साथ काम कर रहे हैं वे राजशेही व किसी प्रकार की अधासि फैसाने वाले नहीं हैं और इसी कारण से उन्होंने उनको बम्पारन से हटा देने से एकदम इनकार किया। अन्त में स्मिर हुआ कि महात्मा जी अपनी जीप की रिपोर्ट सरकार में वहाँ तक सीधे हो सके जब दँ और जीप के काम में कुछ बोझ-सा परिवर्तन कर दिया जाय परन्तु जीप जारी रहे।

ता ११-५ १७ को महात्मा जी पटने से बेचिबा वापस आये। लौटने पर मि मीड के कथानुसार रिपोर्ट सिक्कने की तैयारी की जाने लगी। सब सबुदों को देख-भाक कर

रैयतों की शिकायतों का निचोड़ निकालकर एक रिपोर्ट छा १२-५ १७ को तैयार की गई। उस रिपोर्ट को पूरी-पूरी यहाँ से बेना अभिष्ट है क्योंकि पाठक उससे देख सकेंगे कि रैयतों के जो बयान थे वे बर्षा कमेटी के सामने भी घरकारी अप्सरों के इजहार से प्रायः बराबर सत्य निकले। इस रिपोर्ट की प्रतियाँ जिसे के सब कर्मचारियों तथा बेठिया राज्य के मैनेजर और प्लान्टर्स एसोसिएशन के मन्त्री के पास भेज दी गई। रिपोर्ट इस प्रकार थी—

In accordance with the suggestion made by Hon ble Mr Maude I beg to submit herewith the preliminary conclusion which I have arrived at, as a result of the enquiry being made by me into the agrarian conditions of the *ryots* of Champaran.

At the outset I would like to state that it was not possible for me to give the assurance which Mr Maude would have liked me to have given viz., that the *vakil* friends who have been assisting me would be withdrawn. I must confess that this request has hurt me deeply. It has been made ever since my arrival here. I have been told viz., after the withdrawal of the order of removal from the district that my presence was harmless enough and that my *bona fides* were unquestioned, but that the presence of the *vakil* friends was likely to create "a dangerous situation" I venture to submit that if I may be trusted to conduct myself decorously I may be equally trusted to choose helpers of the same type as myself. I consider it a privilege to have the association in the difficult task before me, of these able, earnest and honourable men. It seems to me that for me to abandon them is to abandon my work. It must be a point of honour with me not to dispense with their help until any thing unworthy is proved against them to my satisfaction. I do not share the fear that either my presence or that of any friends can create "a dangerous situation" the danger if any must be in the causes that have brought about the strained relation between the planters and the *ryots*. And if the causes were removed there never need be any fear of "a dangerous situation" arising in Champaran so far as the *ryots* are concerned.

Coming to the immediate purpose of this representation I beg to state that nearly 4,000 *ryots* have been examined and their statements taken after careful cross examination. Several villages have been vinted and many judgements of courts studied. And the enquiry is in my opinion capable of sustaining the following conclusions.

Factories or concerns in the District of Champaran may be divided into two classes

- (i) Those that have never had indigo plantations and (ii) those that have.

- (i) The concerns which have never grown indigo have exacted *shams* known by various local names equal in amount at least to the rents paid by the *ryots*. This exaction although it has been held to be illegal has not altogether stopped.

- (ii) The Indigo growing factories have grown indigo either under the *Tibatka* system of *Shams*. The former has been most prevalent and has caused the greatest hardship. The type has varied with the progress of time. Starting with indigo it has taken in its sweep all kinds of crops. It may now be defined as an obligation presumed to attach to the *ryots* holding whereby the *ryots* have to grow a crop on 3/20th of the holding at the will of the landlord for a stated consideration. There appears to be no legal warrant for it. The *ryots* have always fought against it and have only yielded to force. They have not received adequate consideration for the services. When however owing to the introduction of synthetic indigo the price of the local product fell, the planters desired to cancel the indigo *Sattas*. They therefore, devised means of saddling the losses upon the *ryots*. In lease hold lands they made the *ryots* pay *Taxes*, i.e. damages, of the extent of Rs. 100 per bigha in consideration of their waiving their right to Indigo Cultivation. This the *ryots* claim was done under coercion. Where the *ryots* could not find cash, hand-notes, and mortgage deeds, were made for payment instalments bearing interest at 12 per cent per annum. In these the balance due has not been described as *Taxes*, i.e. damage, but it has been fictitiously treated as an advance to the *ryots* for some purpose of his own.

In Mokarrari land the damage has taken the shape of *Shams* *Sattas* meaning enhancement of rent in lieu of indigo cultivation. The enhancement according to survey report has in the

case of 5 955 tenancies amounted to Rs. 31 062 the pre-enhancement figure being Rs. 33 865. The total number of tenancies affected is much larger. The *ryots* claim that these *Sattas* were taken from them under coercion. It is inconceivable that the *ryots* would agree to an enormous perpetual increase in their rents against freedom from liability to grow indigo for a temporary period which freedom they were strenuously fighting to secure and hourly expecting.

Where *Taxes* has not been exacted the factories have forced the *ryots* to grow oats sugarcane or such other crops under the *Tinkathas* system.

Under the *Tinkathas* system the *ryot* has been obliged to give his best land for the landlord's crops, in some cases the land in front of his house has been so used. he has been obliged to give his best time and energy also to it so that very little time has been left to him for growing his own crops—his means of livelihood.

Cart-hire *Sattas* have been forcibly taken from the *ryots* for supplying carts to the factories on hire insufficient even to cover the usual outlay. Inadequate wages have been paid to the *ryots* whose labour has been impressed and even boys of tender age have been made to work against their will.

Ploughs of the *ryots* have been impressed and detained by the factories for days together for ploughing factory lands for a trifling consideration and at a time when they have required them for cultivating their own lands.

Dastan has been taken by the notoriously ill paid factory *Amdas* out of the wages received by the labourers often amounting to the fifth of their daily wages and also out of the hire paid for the carts and in some villages the *chamars* have been forced to give up to the factories the hides of the dead cattle belonging to the *ryots*. Against the carcasses the *chamars* used to supply the *ryots* with shoes and leather strap for ploughs, and their women used to render services to the latter's families at childbirth. Now they have ceased to render these valuable services. Some factories have for the collection of such hides opened hide-godowns.

Illegal fines—often of heavy amounts have been imposed by factories upon *ryots* who have proved unbending.

Among the other (according to the evidence before me) methods adopted to bend the *ryots* to their will the planters have impounded

the ryots' cattle, posted peons on their houses withdrawn from them barber's, dhobi's, carpenter's, and smith's services, have prevented the use of village wells and pasture lands by ploughing up the pathway and the land just in front of or behind their home steads, have brought or promoted civil suits or criminal complaints against them and resorted to actual physical force and wrongful confinements. The planters have successfully used the institutions of the country to enforce their will against the ryots and have not hesitated to supplement them by taking the law in their own hands. The result has been that the ryots have shown an abject helplessness such as I have not witnessed in any part of India where I have travelled.

They are members of District Board and Assessors under the Chankidari Act and keepers of pounds. Their position as such has been felt by the ryots. The roads which the latter pay for at the rate of half an anna per rupee of rent paid by them are hardly available to them. Their carts and bullocks which perhaps most need the roads are rarely allowed to make use of them. That this is not peculiar to Champaran does not in any way mitigate the grievance. I am aware that there are concerns which form exceptions to the rule laid down but as a general charge the statements made above are capable of proof.

I am aware too that there are some Indian Zamindars who are open to the charges made above. Relief is sought for in their case as in those of the planters. Whilst there can be no doubt that the latter have inherited a vicious system, they with their trained minds and superior position have rendered it to an exact science, so that the ryots would not only have been unable to raise their heads above water but would have sunk deeper still had not the Government granted some protection. But the protection has been meagre and provokingly slow and has often come too late to be appreciated by the ryots.

It is true that the Government await the settlement officers report on some of these matters covered by this representation. It is submitted that when the ryots are groaning under the weight of oppression such as I have described above an inquiry by the settlement officer is cumbersome method. With him the grievances mentioned herein are but an item in an extensive settlement operation. Nor does his inquiry cover all the points raised above. More

over grievances have been set forth which are not likely to be disputed. And they are so serious as to require an immediate relief.

That *Taxes* and *Sharak-beki sallas* and *abwas* have been exacted can not be questioned. I hope it will not be argued that the *ryots* can be fully protected to as to these by recourse of law. It is submitted that where there is wholesale exaction, courts are not sufficient protection for the *ryots* and the administrative protection of the *sarar* as the supreme landlord is an absolute necessity.

The wrongs are two-fold. There are wrongs which are accomplished fact and wrongs which continue. The continuing wrongs need to be stopped at once and small inquiry may be made as to past wrongs such as damages and *abwas* already taken and *Sharak-beki* payment already made. The *ryots* should be told by proclamation and notices distributed broadcast among them that they are not only not bound to pay *abwas Taxes* and *Sharak-beki* charges but that they ought not to pay them, that the *sarar* will protect them if any attempt is made to enforce payment thereof. They should further be informed that they are not bound to render any personal services to their landlords and that they are free to sell their services to wherever they choose and that they are not bound to grow indigo, sugarcane or any other crop unless they wish to do so and unless it is profitable for them. The Bettiah Raj leases given to the factories should not renewed until the wrongs are remedied and should, when renewed, properly safeguard *ryots* rights.

As the *Dastar* it is clear that better paid and educated men should substitute the present holders of responsible offices and that no countenance should be given to the diminution in *ryots'* wages by illegal exaction of *Dastar*. I feel sure that the planters are quite capable of dealing with the evil although it is in their language as old as the Himalayas.

The *ryots* being secured in their freedom it would be no longer necessary to investigate the question of inadequacy or otherwise of the consideration in the indigo *sallas* and cart-hire *sallas* and the wages. The *ryots* by common agreement should be advised to finish indigo or other crops for the current year. But henceforth whether it is indigo or any other crop it should be only under a system of absolute free will.

It will be observed that I have burdened the statement with

as little argument as possible But if it is the desire of the Government that I should prove any of my conclusions I shall be pleased to render the proofs on which they are based.

In conclusion I would like to state that I have no desire to hurt the planters feelings. I have received every courtesy from them. Believing as I do that the *ryots* are labouring under a grievous wrong from which they ought to be freed immediately I have dealt as calmly as possible for me to do so, with the system which the planters are working I have entered upon my mission in the hope that Thevas Englishmen born to enjoy the fullest personal liberty and freedom will not fail to rise to their status and will not be grudge the *ryots* the same measure of liberty and freedom.

I am sending copies to the Commissioner of the Tirhut Division, the Collector of Champaran, the Sub-Divisional Officer of Bettiah, the Manager of the Bettiah Raj the Secretaries respectively of the Bihar Planters Association and the District Planters Association. I am circulating also among those leaders of public opinion in the country who have kept themselves in touch with the work being done by my colleagues and myself The copies are being marked for publication as there is no desire to invite a public discussion of the question unless it becomes absolutely necessary.

I need hardly give the assurance that I am at the disposal of the Government whenever my presence may be required.

I remain,

Yours faithfully

(Sd) M.K. Gandhi.

उपरोक्त रिपोर्ट का सारांश इस प्रकार है—

माननीय मि लीड के कहने के मुताबिक मैं इस पत्र के साथ बम्पारन कृषि-सम्बन्धी अपनी जाँच का प्रारम्भिक छत्र भेज रहा हूँ। आरम्भ में मैं यह कह देना चाहता हूँ कि मि लीड ने मुझ से अपनी यह इच्छा प्रकट की थी कि मैं अपने उग्र बकील दोस्तों को जो हमारी जाँच में सहायता दे रहे हैं वहाँ से हटा दूँ। मुझ कहना पड़ता है कि उनकी इस बात से मेरे दिमाग पर गहरी चोट आई है। मेरे वहाँ जाने के आरम्भ से ही यह बात कही जा रही है, जब से यह हुजूम को बम्पारन बिल्का छोड़ देने के लिए बुलाया गया तभी से मुझ से कहा जाता है कि मेरे वहाँ रहने से कोई हानि नहीं है। मेरी मज्बूरी के विषय में किसी को कोई सन्देह नहीं है पर मेरे बकील दोस्तों की उपस्थिति से एक भयंकर स्थिति के हो जाने का डर है। मेरा निवेदन है कि यदि यह बात मान ली जाती है कि मैं स्वयं बिलगा

के साथ काम कर सकता हूँ तो उसी प्रकार मुझ पर बिबिधता करना चाहिए कि मैं अपने लिए उपयुक्त सहायक भी चुन सकता हूँ। जो महान् कार्य मेरे सामने है उसमें इन योग्य उत्साही तथा मान्य सम्मान की सहायता पाना मेरे लिए सीमाव्य की बात है। मुझे ऐसा ज्ञान पड़ता है कि उनको छोड़ देना अपने इस कार्य को ही छोड़ देना है। मेरे लिए यही उचित है कि जब तक इन लोग के बिना कोई उपयोग्य बात साबित नहीं की जाय तब तक हम इनको न छूटाव। मझ हम बात का कुछ भी भय नहीं है कि मेरे या मेरे साथियों के खून से यहाँ की अराजकता घटकर हो जायगी। यदि कोई भय की बात है तो वह उन कारणों से ही है जिनसे रैयत और नीकबरो के बीच वैमनस्य हो गया है और यदि वह कारण उपस्थित हाने की सम्भावना नहीं हो सकती।

अब जो विषय बिबिधता है उसके सम्बन्ध में मेरा यह निवेदन है कि जब तक प्रायः रैयतों का इजहार किया गया है और अराजक के कितने ही फैसले पड़े हैं। हमारी हम सोचों में कई एक चीजों की देखा है और अराजक के कितने ही फैसले पड़े हैं। हमारी सोच से निम्नलिखित बातें साबित हुई हैं—

बम्पारन में दो प्रकार की कोठियाँ हैं पहली वे जिन्होंने कभी नील नहीं किया और दूसरी वे जो नील करती हैं।

(१) उन कोठियों में जिन्होंने नील नहीं किया है वित्तों प्रकार के अवकाश बसूल किया है जो कम से कम उनकी असल मासिकवारी की रकम के बराबर है यद्यपि अवकाश का बसूल करना लाजायज ठहराया गया है तथापि बिम्बुल बन्द नहीं हुआ है।

(२) नील की कोठियों में जिन दो प्रकारों से नील कराया है वे तीन-कोठिया की प्रथा और कुचकी है। तीन-कोठिया की प्रथा अधिक प्रचलित है और यह बहुत बुरा का कारण हुआ है। सममानुबन्ध इसकी मूल बरकती गई है। बारंबर में इनके द्वारा केवल नील ही कराया जाता था पर पीछे इसी रीति से प्रायः अन्य सभी प्रकार की फसल भी रैयत की ओर पर इसकी पाबन्दी है कि वह अपनी जोत के दूध हिले में मासिक की क्वांटिटी के मुताबिक कोई फसल पैदा करे और उनके लिए एक नियत दाम पावे। इसका कोई कानून नहीं लागू पड़ता है। रैयत लोग इसका बराबर विरोध करते जाय है और यह उनसे बलात् स्वीकार कराया गया है उनका हमके लिए पूरी मजदूरी नहीं हो गई है। अब बलाबली के कारण दाम घट गया तो नीलबरां ने नील के मद्धों को रद्द कर देना चाहा और इसलिए नील के कारण जो उनका मुबलान हुआ था उसको पूरा करने के लिए उन्होंने रैयतों की पीठ पर तरह तरह के लाजायज टैक्सों का बोझा साध देने का उपाय साध निकाला। ठेके के पौदा में उन्होंने रैयतों से ताबान बसूल किया अर्थात् नील बाने की पाबन्दी से छुटकारा देने के बदले रैयतों से बीबा पीछ १० रुपये तक बसूल लिया। रैयतों का कहना है कि यह

जबरदस्ती बसूक किया गया। जब रैयतों के पास से मकद बसूक न हो सका तो उससे १२ रुपये सड़के के महाभारी सूय के साथ हूँदमोट और रेङ्गनामा सिखाया गये।

इन बरीकों में तावान का कोई जिक्र न लिखकर यह गमन बात लिखी गई कि उनके रुपये रैयतों ने अपनी बकश्चात के लिए मकद किये हैं।

मुकररी गाँवों में रैयतों से सरहबेसी सत्या सिखाया गये हैं बर्मान् मील से कुटकारा देने के बदले में उनकी मासगुजारी बढ़ा दी गई है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार ५ १५५ बोड़ी पर जिनकी इजाजत के पहले की मासगुजारी ५३ ८६५ रु की ३१ ६२ रु इजाजत कर दिया गया है पर उससे कहीं अधिक बोड़ों की मासगुजारी बढ़ा दी गई है। रैयतों का कहना है कि ये सट्टे उनसे जबरदस्ती किये गये हैं। यह समझ में नहीं आता कि रैयत कब दिनों के मेहमान मील से कुटकारा पाने के लिए अपनी मासगुजारी में इतना इजाजत खुशी से कैसे बसूक कर लेने जब कि यह बराबर से इनके लिए लड़ते बस्य और समझते थे कि अब यह भीषण उससे कुटकारा पाने वाला है।

जिन कोठियों ने तावान बसूक नहीं किया है वहाँ उन्होंने रैयतों ने बर्मान् जपो उस और दूसरी फसल तीन-कठिया प्रजा से तैयार कराई है।

तीन-कठिया प्रजा के अनुसार अपनी सबसे अच्छी जमीन रैयत का कांटी को दे देनी पड़ती है। कहीं-कहीं उनके लिफ्तार की जमीन भी इसके लिए के ली गई है। उन्हें अपने सबसे बहुमूल्य समय तथा अपनी मेहनत उन बोड़ों की आबादी के लिए देनी पड़ती है और इस कारण अपनी अन्य फसलों की आबादी के लिए, जो उनकी जीविका के आभार है बहुत कम समय बचता है।

रैयतों से चाँदी के लिए मट्टा जबरदस्ती लिखा किया गया है और कोटी मजदूरी इतनी कम देती है कि उनसे लार्च भी नहीं चल सकता।

रैयतों से बहुत कम मजदूरी पर काम जबरदस्ती लिया जाता है और छोटे-छोटे बच्चों से भी उनकी इच्छा के बिना काम कराया जाता है।

कोटी रैयतों के हुक बँक को अपनी जमीन जोतने के लिए एक साथ कई दिनों तक जबरदस्ती रक लेती है और सिर्फ नामनेहावी मजदूरी देती है और जिन समय रैयतों को अपना हुक-बँक की जरूरत रहती है उस समय कोटी उन्हें अपने लिए रोक रखती है।

जो मजदूरी मजदूरों को दी जाती है उसमें से कोटी के कम तनखाह पाने वाले सबसे दस्तुरी काट लेते हैं कभी-कभी वे मजदूरों का दैनिकी खिस्त दस्तुरी में ले लेते हैं।

कितन ही गाँवों में जमाराँ का मृत जामवरों की आत्म कोटी को दे देने के लिए बाध्य किया जाता है। जमीन जमराँ के बदले में जमाराँ रैयतों को पूता और हुक बाँचने के लिए जमीनी दिया करन वे उनकी सिखा प्रत्यक्ष के समझ काम किया करती थी। अब जमाराँ ने यह सब बन्द कर दिया है। कई कोठियों ने इन जमराँ को इकट्ठा करने के लिए जमराँ का गोशाम खोल दिया है।

जिन रैयतों ने कोठियों के बिछड़ सिर उठाया उनसे लाजाबज जुर्माना कमी-कमी यही रकम वा बचक किया जाता है।

देरे सामने जो सबूत पेश हैं उससे मालूम होता है कि रैयतों को बचाने के लिए नीलबरो ने उनके माल को फटक म फेंक दिया है। उन पर घिपाही तैनात किने है। मोबी हजाम बड़ई मोहोर बन्द कर किये हैं।

गाँव के कुजों व पानी और परती में भी जराना रोक दिया गया है। गाँव के रास्ते और निकसार पिछवार की जमीन को फुटवा दिया है। बीबामी और फौजदारी मुकदमे बकाये गये हैं बचवा बीरो से बाहर कराने गये हैं और रैयतों को मारपीट किया है तथा उन्हें बंद भी कर रखा है। नीलबरो देश की संस्थाओं (अवाकत इत्यादि) की रैयतों को अपने कानूनानुसार बचाने के लिए सफलतापूर्वक अपने काम में लागे हैं और बचरत पड़ने पर अलग-अलग लाचारी की हानत को पहुँच गये हैं। जैसे हिन्दुस्तान को किसी प्रांत में जहाँ मुझे बाने का बचसर मिला है ऐसी सुरक्षा कहीं भी नहीं देखी।

नीलबरो डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के मेम्बर और बीबीदारी के बचसर हैं और उन्हीं के इनके फटक भी हैं। रैयतों पर इन सब बलों का बसर पड़ता है। जिन सबकों का बचाने के लिए रैयत अपने में आब आना के हिसाब से बेचे हैं वे उनके काम नहीं आते। उनके बल तथा गाँधी जिनको सबकों की अधिक आवश्यकता है उन सबको पर बलने नहीं पाते। यह बात और जगहों में प्रबलित होने के कारण इसको कम कष्टकर नहीं बनाती। वे जानता हूँ कि ऐसी कोठियाँ भी हैं जिनमें उपरोक्त बात नहीं पाई जाती पर लाचारत उनके प्रमाण दिये जा सकते हैं।

मुझे यह भी मालूम है कि कतिपय हिन्दुस्तानी बीबीदारी के सम्बन्ध में उपरोक्त बातें नहीं जान सकते हैं। उनके बिरद भी नहीं कार्रवाई होगी चाहिए जो नीलबरो पर। इसमें कोई संदेह नहीं कि नीलबरो ने इस बुरी प्रथा को बीरो से सीखा है। पर उन्होंने अपनी बलि और उच्च स्थिति के द्वारा इस दुप्रथा को वैज्ञानिक रूप में परिचित कर दिया है। इसका मतीजा यह हुआ कि रैयत केवल अपना सिर बचाने में ही असमर्थ न वे बरन् यदि समय-समय पर सरकार उनकी महायता न करती तो अधिकारिक बच जाते। पर सरकार की महायता बहुत बोरी और इनमें विमर्श के बाव मिली है कि लोगों को उन विषय में संविह होने जया है।

हाँ यह सच है कि जन्म भागों के लिए सरकार मैटलमण अफसर की रिपोर्ट की प्रत्याशा कर रही है। मेरा निवेदन है कि जब रैयत उपरोक्त दुस्मियों के बोस से घिन जा रहे हैं तो जहाँ अवस्था में मैटलमण अफसर द्वारा गाँव करना बहुत ही मरा लीका है। मैटलमण अफसर की जालों में उपरोक्त आपत्तियों का विचार उनके मुख्य बराबर के काम में एक काम है। फिर उनकी जाँच में उपरोक्त सब बातें माली भी नहीं। हमारे बचाने

बहुत सी ऐसी आपत्तियों का भी ऊपर उल्लेख किया गया है जिनके विषय में कोई सदेह हो ही नहीं सकता है। और वे ऐसी हैं जिनसे गुरुत्त छटकारा दिया जाना चाहिए।

इस बात से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है कि ताबान और गरहुबसी के सटटे रैपटो की इच्छा के विरुद्ध विधायक गम है तथा उनसे अबबान बसूक किये गये हैं। मे आदा करता हूँ कि ऐसा नहीं कहा जायगा कि इनके विषय में कानून के अनुसार रैपट अपनी रक्षा कर सकते हैं। मेरा निवेदन है कि वहाँ तयाम जिसे के साथ बबरवस्नी की गई है वहाँ केवल बदावत ही से रैपट की हिफाजत नहीं हो सकती और सरकार को जो सब जमीनारो की भी मालिक है इस विषय में अपने अधिकार से उनकी रक्षा करनी आवश्यक है।

बराहवाँ दो प्रकार की है—एक वे जो हो चुकी हैं और दूसरी वे जो दिन प्रतिदिन होती आ रही हैं। दूसरे प्रकार की बराहवाँ को अधिकतम रोक देना उचित है और बीनी हुई बराहवाँ के विषय में जोड़ी आँच होनी चाहिए जैसे कि अबबान हरजा और राखुबसी के विषय में जो अब तक भिन्ने जा चुके हैं। रैपटो को मोटिस बाँटकर और घोषणा देकर जता देना चाहिए कि उनको केवल अबबान ताबान और गरहुबसी देने की कोई पाबन्दी ही नहीं है बल्कि उस देने की मनाही है और यदि बसूक करने का कोई जोर करेगा तो सरकार उन्हें उनसे बचावेगी। उन्हें यह भी बताया चाहिए कि उनको मालिक के लिए मजदूरी करने की कोई पाबन्दी नहीं है और वे जहाँ चाहे मजदूरी कर सकते हैं। नील ठल अबबा और कोई फसल अपनी इच्छा के विरुद्ध और बिना मुआवजे के वे करण के लिए बाध्य नहीं हैं। बेतिया राज्य की ओर से कोठियों का ठेका उस समय तक न दिया जाय जब तक वे बराहवाँ को न हटा दें और जब मना ठका दिया जाय तो उसमें रैपटो के हकक बचाने के लिए उर्वर रहे।

दस्तूरी के सम्बन्ध में स्पष्ट है कि अधिक मेसाहरेबाके और पिछित लोग शान्ति के स्वात पर रक्ते जायें और दस्तूरी काटने के दस्तूर को रोक दिया जाय। मुझे विश्वास है कि यदि नीलबर बाह तो उस गुरुत्त हटा सकते हैं यद्यपि वे बारा करते हैं कि यह बचा उतनी हो पुर्ण है जिसका कि हिमाकम बहाक।

जब रैपटो को इस प्रकार की स्थगनता प्राप्त हो जायगी तो इस विषय की जोब करण की आवश्यकता न रहे जायगी कि उन्हें नील और बाही के सटटे के लिए मजदूरी काफ़ी मिलती है या नहीं। नील अबबा दूसरी फसल जो इस मध्य सेठ में बसी है उसे रैपटो को तैयार कर देने की सलाह सबको मिलकर देनी चाहिए। पर इसके बाद चाहे नील हो अबबा दूसरी कोई फसल रैपट अपनी खुशी में चाहे तो कर वा न करें।

यह बीच पड़ेगा कि मेने इस पक्ष में जहाँ तक हो सका है कोई बहस नहीं पेस की है पर यदि सरकार यह चाह कि मैं अपने बयान की हुई किमी बात को साबित कर दूँ तो मैं अपना सबूत पेस कर दूँगा।

अन्त में यह कह देना चाहता हूँ कि मैं किमी प्रकार नीयबरी का दिल दुखाना नहीं

चाहता। उन्होंने मेरे साथ बराबर अच्छा व्यवहार किया है। मेरा विश्वास है कि मतों पर बहुत जुम्म हो रहा है जिससे उनको सीधे छटकारा मिलना चाहिए। और इसी विचार से मैं वहाँ तक धान्तभाव से हो सका हूँ। उन प्रश्नों की आलोचना की है जिसके अनुसार मौलबर काम कर रहे हैं। मैं इस कार्य में इस पूर्ण विश्वास के साथ प्रवृत्त हुआ हूँ कि मौलबर संयोजकों के कारण व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को आजन्म से मावते जाये हैं और वही स्वतन्त्रता ईसतों को देने से वे अपने कर्तव्य-पालन से विमुख न होंगे।

मैं इसकी तकल्ल सिरुत डिबीजन के कमिशनर अम्पारन के कन्स्टर बेतिया के सब-डिबीजनल अफसर, बेतिया राज्य के मैनेजर, बिहार और अम्पारन के प्लेस्टर्स एमो-सिपेशन के मंत्री तथा उन माध्तीय मंताओं के पास जो मेरे और मेरे सहयोगियों के कार्य की सबर रखते हैं भेज रहा हूँ। इन प्रतियों पर लिखा दिया है कि वे प्रकाशित न की जायें क्योंकि इन विषयों पर अब तक ऐसी आवश्यकता न था वह मुक्तमजुम्मा आलोचना करान की मरी इच्छा नहीं है। इस बात के कहने की आवश्यकता नहीं कि सरकार अब और वहाँ मुझे कोजेवी में हाजिर रहूँगा।

एन के गांधी

बीदहर्मा अध्याय नीलबरो की घबराहट

पटने से लीटने के बाद इजहारो के लिजने के काम में कुछ परिवर्तन हो गया । अब तक सब रैयतों के बयान पुरे-पुरे मिले जाते थे और हम प्रकार प्रायः चार हजार रैयतों के बयान मिले जा चुके थे । अब कुछ भिदापतो की एक प्रकार की सूची तैयार कर ली गई और पूरा-पूरा बयान लिखने की जरूरत नहीं रही । इसलिए अब से रैयतों के बयान जब सजेप में मिले जाते जय । इससे कुछ काम हल्का पड़ गया और सब सख्तों को जली भांति देखन का समय कुछ सहायको को मिलने जया ।

हर नीलबर और उनके पलपाती बबरा रहे थे और महात्मा जी के काम में पन पन पर बाधा देने की पूरी कोशिस कर रहे थे और रैयतों को उनके पान कामे से रोकते थे । पर अब रैयतों की बहु ह्मात न थी कि बात की बात में कोठियों की जरा-सी बमपी पर से मयभीत हो जायें । सेकड़ो बपों से पबबलित रैयत अब समझन लग कि बहि हम अबबर पर उनका छद्धार न हुआ तो वे बराबर के लिए उसी बबम्बा में पब रहेंगे । महात्मा जी के साहस और कामे की देखकर उनके मन में उम्माह जा गया था । नीलबरो के रोकन से बहु कम रक सकते थे ।

बेनिबा की बर्मछात्ता के दोमह्म पर एक बहुत छद्ग-या कमरा था । महात्मा जी उसी में रहा करते थे । उनके सहाकारी गीके ठहरकर बयान लिखते बबबा जो काम होता किया करते थे । रैयतों की मीढ़ रोनामा इस प्रकार बनी रहती थी कि काम करना कठिन हो गया था । बाह्य का फाटक बंद कर दिया जाता था । केबल उन्ही रैयतों को महात्मा जी के पास पहुँचाया जाता था जिनके बयान में कुछ बिदापता रहनी थी बबबा जिनको अन्य कार्यों से उनसे मिलना जामबबक समझा जाता था । पर रैयत अपना बयान ही देकर सतुष्ट न होते थे वे महात्मा जी का दर्शन बिना किये घर नहीं लौटते थे । इसलिए प्रतिदिन मध्या समय फाटक खोल दिया जाता था और सब लोग बर्मछात्ता की भिदाक छत पर जाकर महात्मा जी का दर्शन करते थे । उस समय मीढ़ियों पर से जाना कठिन हो जाता था ।

महात्मा जी नीलबरो के बान्धोलन को जब समझत न और वे भी उचित उपाय सोचते और करते जाते थे । अब-अब जरूरत समझते सरकारी कर्मचारियों को सब बाजों की बबर देते और भारत सर के नेताओं को बम्पारन की सब बाजों से सूचित रखते थे । समय-समय पर बहू की स्थिति पर रिपोर्ट भिजकर सबों के पास भेज दिया करते थे और जिस प्रकार की सहायता की जरूरत पड़ती थी उनसे मांगते थे या उस प्रकार की

भव के लिए तैयार रहने को निम्न लेते थे। साथ ही इन सब बातों में से एक भी समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं होने पाती थी क्योंकि महात्मा जी का मठमठ रैयतों का दुःख दूर करना था जानबोझ नहीं। तिस पर भी नीम्बूर उस अन्धाय और अत्याचारजनक साम की संभावित हानि देखकर उनके काम में हर प्रकार से बाधा देने की कोशिश करते थे।

सरकार ने महात्मा जी की रिपोर्टें मंजूर करने पर बिस्के के जेफर्सो सैटममण्ट जेफर्स और नीम्बूरों से ता १०-१७ तक उस रिपोर्ट पर सम्मति माँगी। पर बीच ही में नये गुरू मिलने लगे। नीम्बूर इतन चुप क्यों रहने लगे थे। ता ११-५ १७ को ऐमोचियेटेड प्रेस का सेवा हुआ एक तार, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ जिसमें लिखा था कि तुर्कानिया कोठी की एक घासा ओकहा कोठी बम बई है जिससे कोठी को कई हजार की नुकसानी हुई है। नीम्बूर समझे हैं कि यह बम किसी ने लगा ही है।

बेठिया से कुछ दूर पर ओकराहा एक कोठी है। वहाँ के मैनजर मि ए के होल्त्स (Mr A. K. Holtum) है। उन्होंने महात्मा जी से कहा था “बकि आप चाहें तो मेरे देहस्तों को देख सकते हैं वहाँ रैयतों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। जो-जो चिकापत आपके निष्पत्ति की गई है वे एकदम सूखी हैं। उन्होंने मि बिबिस से भी ऐसा ही कहा। निश्चय हुआ कि ता १५-५ १७ को महात्मा जी ओकराहा कोठी के पास गरिमबा गाँव में जहाँ एक बाजार भी लगता है जायेंगे। पाठक को इस बात का स्मरण दिला देना भी उचित है कि मि हास्टम वही महाशय है जिनको रैयतों को चिकापत थी कि छाछबेसी लिखा करने के बदले उन्होंने उन सब रैयतों के साथ बाँटी-बोड़ी ज़ीरात की जमीन बन्नाबस्त कर दी थी और उस जमीन की मालगुजारी के साथ छाछ बेसी करने पर जितनी मालगुजारी बढ़ सकती थी वह भी जोड़ दी गई थी।

ता १५-५ १७ को महात्मा जी लेसक और प्रोफेसर रुपकाणी (जो अब मुंबयपुर पुर कॉलेज से अबाध पाकर महात्मा जी के पास एक असेस व और इन लोगों को अम्पारन के काम में सहायता कर रहे थे।) प्रभृति का साथ लेकर ओकराहा के लिए रवाना हुए। बेठिया में हम लोग बहुत सभरे लगे। गवारी माय थी पर लव बिगी का पैरल ही चम्पे का विचार हुआ। हम लोग गरिमबा बाजार जो बेनिया में प्रायः ८ मील की दूरी पर है ८ बजे बिम को पहुँच गये। वहाँ इन लोग क पहुँचने के पूर्व ही से रैयतों की भीड़ लग गई थी। रास्ते में कुछ रैयतों ने आकर कहा कि गाहब कुछ ऐसे आप्तियों को अपने साथ तैयार करके लावेंगे जो यह कहें कि वहाँ सब लोग सुन्नी हैं रैयतों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं है इत्यादि। हम लोग यह सब बातें सुनने लगे।

वहाँ पहुँचकर महात्मा जी ने स्नान किया। हम लोग अभी स्नानादि कर ही रहे थे कि इनमें ही में मि हास्टम भी आ गये। एक छाट में बायीं ओर से इन दृष्ट हुए। लवमग

बोलींग ही रैयत वहाँ मौजूद थे। महात्मा जी और मि. होस्टम ने बातचीत की थी वही कि इतने में मि. लिबिस भी हुआई गाड़ी पर जा पहुँचे। मि. होस्टम ने महात्मा जी को कुछ कागज-पत्र दिखलाया और कहा कि जो पिकायत गारहबेदी के विषय में रैयतो ने की है वह बिलकुल गलत है। हमने अपने जीरात को रैयतो के साथ जबरदस्ती बन्दोबस्त नहीं किया है। रैयतों ने बहुत कह-मुनकर हमसे जीरात की जमीन ली है। मरा हममें कुछ भी काम नहीं है। जितना वे देते हैं उससे बहुत अधिक मैं उध जमीन से पैसा कर सकता हूँ और यदि रैयत चाहें, तो जीरात की जमीन से इस्तीफा दे सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वहाँ बहुत से ऐसे रैयत भी हैं जो कोठी से बहुत भूख हैं। अन्य रैयतो न जो महात्मा जी से पिकायत की है वह केवल दूसरों के बहकाव से की है। यह कहकर उन्होंने एक बहुत बड़े रैयत को जिसकी अवस्था ७०-८० वर्ष के लगभग होगी दिखाकर कहा कि इस इलाके में इस बड़े से बढ़कर प्रतिष्ठित रैयत कोई भी नहीं है इसी से आप सब बातें सम्झी-सम्झी पूछ सकते हैं। महात्मा जी ने उस बूढ़े से पूछा कि बड़े कोठी से तुम्हें कुछ कष्ट या दुःख है? उसने सर कहा कि नहीं सरकार! सब लोगों को कोठी से बहुत मुक्त है और उनसे हर प्रकार का आराम मिलता है। हुन्दा बन्दोबस्त भी सभी ने अपनी खुशी से किया है। कम उस बूढ़े का यह कहना था कि वहाँ जितने रैयत इकट्ठे थे मारे कोष और दुःख के अधीन हो गये। वे चिन्ताकर कहने लगे कि यह बूढ़ा कोठी की तरफदारी करने वाला है इसे साहब तिलाकर ले जावे है और वे बूढ़े की पुकार-मुकारकर कहने लगे कि इस बुढ़ापे में तुम असम्यक् भाषण कर यह पाप की डेर क्यों बटोर रहे हो? तुम्हारे मरने का समय आ गया है, अब भी तो ईश्वर का स्मरण करके एक बार सब बातें सब-मण कह दो। उस समय इतनी अधिक आत्माकी मण गर् कि कुछ समय उस हृत्पत्र को ध्यात करने में ही लगा। बूढ़े-की-सी बातें लगभग १५ और रैयतों ने भी कहीं। महात्मा जी ने और रैयतों से पूछा तो वे सब के सब इन सब बातों का प्रतिवाद करने लगे। महात्मा जी ने कहा कि साहब कहते हैं कि तुम लोगों ने जतन बहुत कह-मुनकर हुन्दा बन्दोबस्त किया है और यदि तुम को यह पसन्द नहीं है तो जीरात की जमीन को तुम लोग इस्तीफा दे सकते हो। इतना सुनते ही सब रैयतों ने एक स्वर से यह दिया कि हम सब जीरात छोड़ देंगे उनकी बरकरार नहीं। साहब उनमें जो चाहें पैसा करें, हमें कुछ आपत्ति नहीं है। यह सुनते ही मि. होस्टम बहुत खराबे। उन्होंने कहा कि यदि ऐसी बात है तो मैं इन लोगों से नीक करवाऊँगा। महात्मा जी ने मुस्कराकर उत्तर दिया कि अभी आपण कहा है कि इस हुन्दा बन्दोबस्त से नीक का कुछ सम्बन्ध नहीं है और यह कि आप इस जमीन को अपनी आदारी में लाकर इतने अधिक लाभ उठा सकते हैं। ऐसी हानत में आपके लिए लाभ और बच दोनों की बात यह होगी कि आप इन जमीन को बापिस ले लीजिए और इन रैयतों को हमसे मुक्त कर दीजिए। इस पर मि. होस्टम ने कहा कि बाकिर मुझे भी तो करना है (I have also to live.)।

रैयतों में इस प्रकार की निर्भीकता का यही बी कि वे मि लिबिस की भी शिकायत उनके मामले करते लगे। यह दृश्य अम्पारन के लिए अपूर्व दृश्य था। कौन जानता था कि जो रैयत कोटी के जमींदार को देखकर डर के मारे परम बन जाते थे और सब दुर्गों और अत्याचारों को बिना मुँह खोलें बोलकर पी जाते थे वे ही आज कोटी के साहू के सामने इस प्रकार उन पर बोपागोपन कर सकेंगे। यही गद्दी बरम्-बिबिजनन मजिस्ट्रेट की शिकायत उनके मुँह पर कर सकेंगे। हम लोग इन सब बातों को देखकर अकित रह गये।

बम्-बिबिजनन मजिस्ट्रेट और मि होस्टम के लगे जान पर महारमा जी की आज्ञानुसार उन रैयतों के नाम लिखे गये जिनको हुन्ना जमीन रजम की जमाईत नहीं। नाम लिखते-लिखते संख्या हो गई तो बी सब नाम नहीं लिखे जा सके। प्रायः छ बजे बाद हम लोग वहाँ से बेचिबा के लिए रवाना हुए। मि होस्टम ने महारमा जी से पुछा था कि यदि आपको हममें आपत्ति नहीं हो तो वे अपनी गाड़ी उनके बास्ते भेज देंगे। महारमा जी ने उनकी बात मजूर कर ली और उनी यादों पर वहाँ से बापिस आये। रात को लगभग ९ बजे हम लोग बतिया जा पहुँचे।

बोकराहा और लोहुरिया कोटियाँ दोनों एक ही मालिक की हैं और मि होस्टम ही इन दोनों के मजदूर हैं। वह प्रायः लोहुरिया ही में रहा करते हैं। ता १७-५-१७ को इन दोनों कोटियों के रैयतों की बड़ी भीड़ बतिया में लग गई। वे सब जीराट का इस्तीफा देने के लिए आये थे। उन सबों के जी नाम लिख लिये गये। जो पट-लिख सकते थे उनके इस्तफा और जो बेपढ़े थे उनके अँवुठे के निघान से लिखे गये। महारमा जी ने एक पत्र जिसमें उन दिन की सारी बटनाओं का सविस्तर बर्नन था लिखकर मि होस्टम के पास भिजवा दिया और जिन रैयतों ने इस्तीफा दिया था उनकी नामावली भी जेब दी। पाठक को यहाँ यह जान लेना बहुत जरूरी है कि उन साल की सारी मामूलाठी रैयतों में बसूत हो चुकी थी और बाज खेतों में जायबाव भी लगी हुई थी। परन्तु रैयत उनको छोड़ देने के लिए और हुन्ना में अपनी जान बचाने के लिए इतना उत्सुक थे कि उन्होंने सत्ता के साथ ही जायबाव का भी साहब का बापिस कर दिया। प्रायः ५ से अधिक रैयतों ने इस प्रकार का कितों के भीतर ही जीराट जमीन से इस्तीफा दे दिया। इस पर भी कहा जाता है कि उन्होंने उनको अपनी ज़ारी में किया था।

ता १८-५-१७ की रात को बोकराहा कोटी के एक कोठे में एकल में जान सब गई और वह जग भी गया। रैयतों ने तुरंत जाकर महारमा जी से कहा कि यह जाय कोटी ने स्वयं लमा दी है और यह हम कार्यों के पैमाने का एक हिस्सा बना है। महारमा जी ने भीम ही बाबू बिम्ब्यबागिनी प्रसाद बर्मा को वहाँ जाकर सब बातों की बख्शी तरह से बेस-माल कर जहाँ तक हो सके सबकी जान का पता लगाने के लिए भेज दिया। उसके बाद उनकी रिपोर्ट और रैयतों का बयान सरकारी बफ़्तरों के पास भेज दिया गया।

हमारा विश्वास है कि यह आप रैयतो न कभी नहीं लगाई थी। हम लोग समझते हैं कि आप समय का कारण चाहे जो हो परन्तु नीलधर इस विषय में कुछ ही घम मन्चायेंगे। इसके पूर्व ही एमोसियट्स प्रेस का तार पढ़कर महात्मा जी ने ता १४-५ १७ को मोहिता कोठी से एक बामे के विषय में एक पत्र मि. हिक्की के पास भेजा था जिसके उत्तर में उन्होंने उस जमी कोठी का विवरण लिखा और कहा कि आपके इस जिन्मे में आप के कारण बहुत हलचल है इसी से लोग आपके विषय में तरह-तरह की अफवाह उठा दिया करते हैं।

ता १५-७-१७ का एक बड़ा रात के समय महात्मा जी अपने सहकारियों के साथ

महात्माजी और मि. हिक्की के दरमियाँ जो इस विषय में पत्र-व्यवहार हुआ वह इस प्रकार है—

Dear Mr Heycock

I beg to refer you to the enclosed. All kinds of rumour have come before me. Pressure is being put upon me to take a statement. But I do not want to make any unauthorised statement. Will you kindly let me know for purpose of publication, the damage caused by the fire, the nature of the out work burnt, whether it was inhabited or otherwise protected and whether any connection has been shown between my presence in Champaran and the fire.

I am sending a special messenger who will await answer
Bertah. Yours Truly
14th May 1917 M. K. Gandhi.

इसका उत्तर मि. हिक्की ने महात्मा जी के पास इस प्रकार भेजा—

Dear Mr Gandhi

Your letter of the 14th May 1917 I am able to give you the following information—

Olha factory is an out-work of the Turkaulia concern. The buildings burnt down were the engine room, press house, and cake house. The value of the building has been roughly estimated at Rs. 20 000 but this is only a rough estimate. No Manager or Assistant Manager is in residence at the out work. There are however factory servants to look after the buildings. The out work is situated about 20 miles south-east of Motihari.

The fact that the buildings were burnt down shortly after you came to the District and that your visit of enquiry has caused considerable excitement etc. may possibly account for the rumours of all kinds which you say have come before you.

Motihari
15th May 1917

Yours Sincerely
W.B. Heycock.

बैठकर कुछ बातें कर रहे थे कि एक आरामी बेलू बाला काठी के देहात से आया और कहा 'मे परसीनी गाँव का कुछ हिस्सा रकनबाबा मालिक हैं। उस गाँव के दूसरे हिस्सेदारों ने अपने हिस्से को कोठी के साथ ठेका लिख दिया है किन्तु मैं अपना हिस्सा नहीं किसता हूँ इसलिए कोठी मुझ पर बहुत जोर-जुस्म करती है और आज रैयती इस बात की कर रही है कि उस गाँव में जो मेरी एक छोटी-सी कचहरी है वह झूट ली जाय। यह सुनकर महात्मा जी ने सेन्सल तथा प्रोफेसर रूपरानी को आज्ञा दी कि वहाँ बहुत सीधे जाकर सब बातों की जाँच करो कि वह कहाँ तक सच है। पुलिस सब-इन्स्पेक्टर का इस बात की सूचना जसी रात को वे भी गई कि यदि वह जाना जाह तो हम लोगों के साथ चल सकते हैं। हम लोग रात में ही रवाना हो गये। परसीनी बेतिया से ३०-३५ मील की दूरी पर है और सब से मजबूत रेलवे स्टेशन मोसला है। वहाँ से ८९ मील दूरकी जाना पड़ता है हम लोग मोसला दूसरे दिन आठ बजे सवेरे उठे और परसीनी गाँव में प्रायः १ बजे पहुँचे। बेतिया के सब-इन्स्पेक्टर हम लोगों के साथ नहीं गये किन्तु वह गाँव जिस बाने में था उस बाने के बारोगा को इस बात की सूचना भेज दी गई। हम लोगों के पहुँचते ही बारोगा जी भी पहुँच गये। हम लोगों ने वहाँ जाकर बहुत से रैयतों का इन्हार लिया कोठी के मुलाजिमों ने भी जो कुछ कहा लिख लिया गया। वहाँ बारोगा जी बराबर उपस्थित रहे। लोगों को समझा-बुझाकर शाम को हम लोग उस गाँव से रवाना हुए और ११ बजे रात का मोसला स्टेशन पर आये और दूसरे दिन ता १९-५ १७ को ९ बजे मुम्बई में बेतिया पहुँचे।

इस सब कारनामों से नीलबर तथा स्थानीय कर्मचारी बहुत खबरदार रहे थे। और जो बिना मि लिबिस ने पहले से अपने सामने जाँच रखा था वह इससे तथा धरिसना बाजार की बटमा से और भी उचित होकर लगे। नीलबर और उनके पञ्चपाती महात्मा गांधी और उनके कार्य को छाना दिखाने तथा उनका और उनके सहकारियों का जम्हारन से हटाने को बचासाध्य चेष्टा कर रहे थे। उभर रैयतों पर भी बचाव कुछ ही जाला जा रहा था कि जिसमें वे महात्मा जी के पास न जायें।

ता २०-५ १७ को महात्मा जी ने जम्हारन के कंसक्टर मि हिक्की के पास इन्हीं सब बातों के विषय में एक पत्र बाकड़ाहा और बेसबा के रैयतों के बयान के साथ भेजा जिसमें उन्होंने अपने उद्देश्य बताने हुए इस बात पर जोर दिया कि जब तक रैयतों के दुख दूर न हो जायें तब तक किसी तरह वह स्वयं जम्हारन से नहीं हट सकते हैं। इस पत्र से महात्मा जी के काम करने की रीति उनका कुछ निश्चय और बहिर्मात्रक रूप से आत्मोन्मर्ष द्वारा उद्देश्य-निष्ठि पर जटल विश्वास पाठकों को भली भाँति दीख पड़े। पत्र इस प्रकार था—

Dear Mr Heycock,

I have hitherto refrained from bringing to your notice stato-

ments which have continued to stream into the effect that the *ryots* are being prevented from coming into me and that those who have come in have been subjected to all kinds of pinpricks by the *kulkis* and in some cases by the Managers themselves. I have discounted some of the statements. I have taken down a few. But if what I have heard about the doings of the Belwa and Dhokaraha concerns is true, it is calculated to end on one side atleast the friendly spirit in which the enquiry has hitherto been carried on. I am most anxious to continue and to increase the friendly spirit. I am straining every nerve so far as in me lies to so conduct my mission that nothing but good-will should be left behind when its labours are finished. I send you the statements taken in regarding the Belwa and Dhokaraha concerns. If the statements are true they do not reflect any credit upon the concerns in question. I enclose too my letters to Mr Hottum which was written before I heard of the fire and which was despatched before I took the statements of Dhokaraha men last evening after 6-30 p.m.

I can understand and even appreciate the feelings which are bound to fill those who are called upon to contemplate the prospect of having to forego huge income which they have hitherto been in the habit for a long time of receiving from their *ryots*. One cannot therefore mind any legitimate effort on their part to hold on to what they have considered as their right. But what is reported to have happened at the Belwa and the Dhokaraha *dehats* does not, in my opinion, fall under such a category.

It is a known fact that the desire of the planters generally is that my friends and I should not carry on our work. I can only say that nothing but physical force from the Government or an absolute guarantee that the admitted or provable wrongs of the *ryots* are to stop for ever can possibly remove us from the District. What I have seen of the condition of the *ryots* is sufficient to convince me that if we withdrew at this stage, we would stand condemned before man and God and, what is most important of all, we would never be able to forgive ourselves.

But the mission is totally of peace. I cannot too often give the assurance that I bear no ill-will against the planters. I have been told that that is true of myself but my friends are fired with an anti-English feeling and that for them it is an anti-English movement.

I can only say that I do not know a body of men who have less of that feelings than my friends. I was not prepared for this pleasant revelation. I was prepared for some degree of ill-will. I would have held them excusable. I do not know if I have not been guilty of it myself under circumstances which have appeared to me most provoking. But if I found that any of my associates were in the conduct of this mission actuated by any ill-will at all, I should disassociate myself entirely from them and insist upon their leaving the mission. At the same time the determination to secure freedom for the *ryots* from the yoke that is wearing them down is inflexible.

Cannot the Government secure that freedom? This is a natural exclamation. My answer is that they cannot in cases like this, without such assistance as is afforded to them by my mission. The Government machinery is designedly slow. It moves, must move along the line of least resistance. Reformers like myself who have no other case to grind but that of the reform they are handling for the time being specialise and create a force which the Government must reckon with. Reformers may go wrong by being over zealous, indiscreet or indolent and ignorant. The Government may go wrong by being impatient of them or overconfident of their ability to do without them. I hope in this case neither catastrophe will take place and the grievances which I have already submitted and which are mostly admitted will be effectively redressed. Then the planters will have no cause to fear or suspect the mission of which I have the honour to be in charge and they will gladly accept the assistance of volunteers who will carry on the work of education and sanitation among the villagers and act as links between them and the *ryots*.

Pray excuse the length of this letter as also its argumentative character. I could not avoid it, if I was to place my true positions before you. In bringing the two matters which have necessitated this communication I have no desire to seek legal relief. But I ask you to use such administration influence as you can to preserve the friendly spirit which has hitherto prevailed between the *kulkis* and my friends and myself.

I do not wish to suggest that the *kulkis* in question are responsible for the fires. That is the suspicion of some of the *ryots*. I have talked to hundreds of them about the two fires. They say that the

riots are not responsible for them, that they have no connection with the mission. I readily accept this repudiation because we are incessantly telling the riots that this is not a mission of violence or reprisals and that any such thing on their part can only delay relief. But if the riots may not be held responsible for them they may not seek to establish a connection between them and the mission. Fires have taken place before now and, mission or no mission, they will take place for ever. Neither party may blame the other without the clearest possible proofs.

There is talk too about the life of the planters being in danger. Surely this cannot be serious talk. Any way the mission cannot render them less safe than they are. The character of the mission is wholly against any such activity. It is designed to seek relief by self-suffering never by doing violence to the supposed or real wrong-doer. And this lesson has been inculcated among the riots in season and out of season.

Lastly, there is I fear ample proof of intimidation such as is described in the statements hereto attached. Intimidation can only mean more trouble all round without meaning. The slightest relief to the planters in the shape of retention of the present system.

I seek such help as you can vouchsafe in the circumstances I have ventured to place before you.

Bettiah,

20th May, 1917

Yours truly

(Sd.) M. K. Gandhi

(भाषार्थ)

प्रिय मि. हिकौक

मैंने इन सूचनाओं की खबर अभी तक आपको नहीं दी है जो हमारे पास बखराव का रही है कि रीबट मेरे पास जाने से रोके जा रहे हैं और जो हमारे पास जाने हैं उनको कोर्टी के बमक और कहीं-कहीं उनके मनेजर भी तरह-तरह से रोक रहे हैं। मैंने बहुत से ऐसे बयानों को काढ़ दिया है और आप को लिख दिया है। पर यदि जो कुछ कि मैंने बोलवा और बोकपड़ा कोर्टियों की कार्रवाईयों के बारे में सुना है वह गलत है तो इसका एक यह होना कि कम से कम एक जोर से वह मित्रता का माक नहीं रहना जिस भाव से आज अभी तक की गई है। मुझे इन बात की बड़ी उत्प्रेक्षा है कि हम लोगों के बरमिमान मित्रता का माक कायम रहे और बड़े। मुझे यहाँ तक हो मरता है मैं इस बात की चप्टा में हूँ कि मैं अपने काम को इस प्रकार से करूँ कि काम बहुत हो जाने पर मैं केवल बन्का ही माक अपने पीछ छोड़कर जाऊँ। जो बयान कि बलवा और बोकपड़ा

में रैमों से लिये गये हूँ उनको मैं इस पत्र के साथ आपके पास भेज रहा हूँ। यदि मैं बयान सच हूँ तो इनसे इन काठियों की इच्छा कुछ भी नहीं बचती है। मैंने जो पत्र होस्टम साहब के पास भेजा है उसकी नकल भी आपके पास भेज रहा हूँ। मगर इस पत्र की बाय भगने की अक्षर मुद्रने के पहले ही लिखा था और जोकराहा काठी के रैमों के बयान भिन्न के पहले ही जो पत्र १॥ बयं सच्चा को दिया गया था मैं इस पत्र को होस्टम साहब के पास भेज चुका था।

जो भोग बहुत जिनो से रैमों से एक बड़ी बामदनी पाने जा रहे हैं उस बामदनी से बाज आना पड़े सकता है इस विचार से उनके दिल में जो भावनाएँ उठती होती उनको मैं अच्छी तरह समझता हूँ। इसलिए यदि वे उस भीष को बचाने के लिए जिसको वे अपना एक समझन माने हैं किसी तरह की सामय कांक्षा करें तो इसमें किसी को कुछ कहने की मुँसाइय नहीं है। पर जिस तरह की बटनाओं की रिपोर्ट बल्लवा और जोकराहा के वेहालों से आई है वह इस भोगी में नहीं आती।

महजानी हुई बात है कि साधारणतः नीलबरो की यह इच्छा है कि हम और हमारे सहकारीगण जिस काम को कर रहे हैं उसे न करें। मैं इस विषय में यही कह सकता हूँ कि हम लोग उस समय तक किसी प्रकार से इस जिले को नहीं छोड़ सकते हैं जब तक कि या तो हम लोग सरकार की ओर से बल्लू हटा न दिये जायें या रैमों के उन दुश्मनों के महा के लिए दूर कर देने की पक्की मारंगी न मिल जाय जो मकबूला या साबित के साथक हैं। यहाँ के रैमों की जो कुछ बसा हमने देखी है यदि उनको उसी बसा में छोड़कर हम लोग इस समय यहाँ से चले जायें तो हम लोग मनुष्य और ईश्वर दोनों के सामने दोषी ठहराने जायेंगे और सब से बड़ी बात तो यह है कि हम लोग लूट भी अपने को कभी क्षमा न कर सकेंगे।

पर मेरा मन्तव्य केवल घाति के साथ काम करने का है। मैं इस बात का बार-बार विश्वास दिला सकता हूँ कि मुझ नीलबरो के विरुद्ध किसी प्रकार का डेपमाब नहीं है। मुझ से कहा गया है कि यह बात मेरे विषय में तो सच है पर मेरे मित्रों के दिल में अंगरेजों के प्रति दुर्भाव मर रहा है और वे इस बात का कभी भाव से प्रेरित होकर कर रहे हैं। मैं किसी ऐसी अमायत को नहीं जानता हूँ जिनके दिल में अंगरेजों के अविश्वास इतना कम दुर्भाव हो जितना कि मेरे मित्रों के दिल में है। मुझे आशा नहीं थी कि यह झूठे अच्छे होंगे और यह जानकर मुझे बड़ा ही हर्ष हुआ। मैं यह सोचता था कि इन लोगों के दिल में अंगरेजों के विरुद्ध कुछ तो डेप-भाव अवश्य हुआ और यदि यह भाव होता भी तो मैं उसे जल्द समझता। मैं नहीं कह सकता कि मेरे दिल में भी अभी-कभी ऐसे-ऐसे भोग भड़काने वाले चीकों पर दूरे भाव नहीं आ गये हों, पर यदि मुझे वह मात्तम ही आय कि मेरे सहकारियों में से कोई ऐसे है जो इस काम को किसी प्रकार के डेप-भाव से प्रेरित होकर कर रहे हैं तो ऐसी शक्त में मैं उनसे एकदम अपने को अलग कर लूँगा और उनको इस काम से हट

बात पर जार हुआ पर साथ ही रैयनों को दुश्मन के संयोजन में मुक्त करने का सम्भव भी सम्भव है।

तब यह सवाल महज ही उठता है कि क्या सरकार उनको इन बुद्धि से मुक्त नहीं कर सकती है? यहाँ उत्तर यह है कि एसी-एसी बातों में बिना उस प्रकार की मदद के जैसा कि हम लोग वे सकते हैं सरकार कुछ नहीं कर सकती है। सरकार के बल पुर्जे जान-बूझ कर ऐसे बनाय गये हैं जो धीरे-धीरे चले। वे चलते हैं जबर पर सब से कम फ़कामत वाली राह पकड़कर ही चलते हैं। मेरे जैसे सुधारक जो तब तक उसी सुधार के काम में लगे रहते हैं जिसका भार वे उठा केते हैं और उन बीच में जिसका और कोई बर्ष नहीं रहता उस विषय के विसेषज्ञ हो जाते हैं और एक ऐसी राशि पैदा कर देने हैं जिसको महात्मना सरकार को लाना चाहिए। सुधार करनेवाले अत्यधिक जोर से आफ़र या अमावशानो या मुस्लीमों में या अपनी अनभिज्ञता के कारण भुल कर सकते हैं और सरकार इन लोगों की कार्रवाई से बचड़ाकर या अपनी योग्यता में अत्यधिक विश्वास कर कि मैं उनके मदद के बर्ष में भी कार्य संपादन कर सकता हूँ भुल कर सकती है। भुल जाना है कि इन मामलों में इन दोनों में से एक को आफ़र नहीं आयोगों और या भिन्नाने में वेग कर चुका है और जिसमें मैं अधिकतर मकसूदा है पूरी तरह से दूर कर दी जायेंगे। उन समय नीलबरों को उस काम में या मरी निश्चयनी में हो रहा है किनी तरह के प्रयत्न या मन्देह का कारण नहीं रह जायगा और नीलबर हमारे उन स्वयंसेवकों में जिनमें अपने काम में मदद करने जो बेहात के लोगों के बीच प्रिया-प्रचार तथा सफ़ाई के काम करेंगे और जो उनके और उनकी रैयतों के हरमिबान विचरानी का काम करेंगे।

यह बिट्टी लम्बी हो गई है और हमें दलीलें भी दी गई हैं। हमने लिए आर धना करेंगे। मुझ का आपके सामने मन्त्री स्थिति रखनी को और उनके लिए एसा करना बहुरी था। जिन सा चटनाओं के कारण हम बिट्टी के निश्चय को ज़रूरत पड़ी है उनका मैं कानूनन निपटारा नहीं चाहता हूँ। पर मैं चाहता हूँ कि उन सम्बन्ध में आप प्रामाणिक की हिंसा में मे जहाँ तक हो सके अपना प्रमाण हासिल कर निश्चय का साथ कायम रखने का प्रयत्न करें जो कोठियाँ मेर और मेरे सहकारियों के बीच अब तक रहा है।

मैं यह इमारा करना नहीं चाहता कि आप काग़िज़ों को थोर से लप्ता हो गई है कुछ बातों का जमा मन्त्रेह है। मैं इन बातों अवलमियों के विषय में मेकदा रैयनों में बात की है। उनका कहना है कि उनके लिए रैयत जबाबदेह नहीं है और मैं उनका सम्बन्ध हम लोगों की मही की कार्रवाई में है। मैं उनकी इन बात को बल्लटके मान बना हूँ क्योंकि हम रैयतों में कहते आ रहे हैं कि हम लोगों का काम बचना केन या बल प्रयोग करने का नहीं है और यदि वे लोग जमा करेंगे तो हम उन लोगों के मुखर हानिक होने में बेर लयनी। पर यदि उन चटनाओं के लिए कोठियाँ जबाबदेह नहीं पाई जायें तो उन्हें उन चटनाओं का मरोकार हम लोगों की कार्रवाई में लवाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

इसके पहले भी अमूमनियाँ हुईं हैं और हमारा यह काम होता रहे वा न रहे ऐसी बात बरकर होती रहनी। ऐसी हाजत में किसी फरीक को दूसरे फरीक पर इसका बोध नहीं लगाया चाहिए जब तक कि उसके बिच्छ साफ तीर से काफी समुत्त न मिले।

ऐसा भी कहा जाता है कि नीलबरो की बात बतारे में है। मरकस ही ऐसी बात सम-सुख गब समझकर नहीं कही जा रही है। जो ही हम लोग उनको जैसे संरक्षित में है उनसे कम संरक्षित नहीं बना सकते हैं। हम लोगों का काम हम तरह की बुरकतों के बिलकुल बिकार है। हम लोग स्वयं कष्ट सहकर अपने उत्प्रेय को हासिल करना चाहते हैं न कि उस समुत्त पर बल प्रबोध करके जो बुराई करना चाहते हैं या जिसको कि हम समझते हैं कि उसने बुराई की है और यही बात रैयतों को सीके-से-सीके बरबोर समझाई गई है।

अन्त में मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो बजाल में इसके साथ बंध रहा है उसमें बिना बमकियों की बात नहीं गई है उनके काफी समुत्त है। इस प्रकार की बमकियों से केवल संभत हर तरह बड़ जायदा यह नीलबरो की वर्तमान पद्धति कायम रखने में बरा भी मदद नहीं दे सकती।

जो हाजत में बजाल की है उसमें आप से जो मदद हो सके वह मैं आप से चाहता हूँ।

बेनिया

बापका

२-५-१७

एम के गांधी

इस समाचारपत्र में कुछ भ्रम चलने लगे। पाठकों को स्मरण होना १९१५ ईस्वी के अर्थस महीने में बाबू बमकियोर प्रभाव ने जीव कमेटी नियत करने का प्रस्ताव किया था। उस समय नीलबरो के प्रतिनिधि मि. फिल्लेट (Mr. Fillet) ने इसका बहुत ओरों में बिरोध किया था। आज उन्ही नीलबरो के पक्षपाती यूरोपियन डिफेन्स एसोसिएशन (European Defence Association) ने जीव के लिए कमीशन नियत करने का प्रस्ताव सरकार में पेश किया और उनके पिछले कुछ ऐंग्लो-इण्डियन समाचारपत्र की इन पर बहुत जोर देने लगे। वा १५-५-१७ का अंगरीय भारत के मुख्य ऐंग्लो-इण्डियन समाचारपत्र 'प्रायोनीयर' (Pioneer) ने बम्पारन के विषय में आलोचना करते हुए लिखा—

"It appears to us that the Government of Bihar could do well forth with to appoint a commission to investigate the differences which exist between the planters and the ryots in the indigo Districts. It is difficult to see what good can come of Mr. Gandhi's investigation. But an enquiry conducted with strict impartiality by a commission containing possibly a non-official element would give both sides a fair opportunity of stating their cases and ought to result in a lasting peace."

अर्थात्, 'हमारी राय है कि यह अच्छा होया कि रैयनों और मीलवरो के बीच के मतभेद की जाँच करके के लिए एक कमीशन रीटाया जाय। यह समझ में नहीं आता कि मि गांधी की जाँच से क्या मछ होया ? पर यदि निरपेक्षता में एक ऐसा कमीशन जिसमें चापल गैरसरकारी भावमी भी हों जाँच करे और दोनों पक्षों को अपनी-अपनी बात कहने का पूरा अवकाश दे तो फल बहुत शान्तिप्रद होगा।"

मद्रास के 'मद्रास मेल' (Madras Mail) ने महात्मा जी की जाँच के विषय में जाहोचना करते हुए लिखा—

"Mr Gandhi's difficulties with the Bihar authorities regarding his self-imposed mission to investigate the labour question in that province appears to have been amicably settled and the Hon'ble Mr Maude, a member of the Executive Council has been deputed to confer with him "with special regard to the situation created since the investigation began," a proviso which seemed to imply that the inquiry has not perhaps been conducted as discreetly as it might be Mr Gandhi is a politician of ability and no one doubts his sincerity in what he believes to be the cause of his fellow-countrymen—a sincerity abundantly tested by his sufferings in South Africa. Since his return to India, however he has come under the influence of politicians of the more advanced school and his actions have not always been characterised by the same discretion (as in South Africa) in the present instance, we think he has been particularly ill-advised in coming forward as the self-appointed champion of the alleged grievances of the Indigo Estate labour of Bihar—a particularly prosperous and contented class of labour as a rule. The problems of planting labour are difficult enough in ordinary circumstances without the intervention of professional agitators."

साबार्द—“बात पड़ता है कि बिहार प्रान्त के भूम-जीवियों को राजा की जाँच के विषय में मि गांधी की जो कठिनाइयाँ वहाँ के सरकारी कर्मचारियों के साथ उपस्थित हो गई थीं उनका निपटारा हो गया। एग्जिक्यूटिव काउंसिल के मेम्बर मि मौड को आज्ञा मिली है कि वे मि गांधी के साथ बात करें—बिनापकर उस स्थिति के सम्बन्ध में जो उनकी जाँच शुरू होने के समय में उपस्थित हो गई है। ऊपर का ध्यान में ध्यान पड़ता है कि जाँच उचित सावधानी से नहीं की गई है। मि गांधी साम्य राजनीतिज्ञ हैं और उनको अपने देशवासियों के हित के लिए अच्छा अनुराग है, हममें किसी को मन्त्रेह नहीं है। हमको काफ़ी जाँच दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने जा बट मचा है उसमें ही चुकी है। पर हिन्दुस्तान

में लीटने के बाव से वह यहाँ के मरम्मत वृत्त के राजनीतिज्ञों के कहने में आ सके हैं और यहाँ का उनका काम उस सावधानी से नहीं हुआ है जैसा कि दक्षिण अफ्रीका में हुआ करता था। बिहार में नील की लकी के सम्बन्ध में जो शिकायते बंगाल की जाती हैं उनकी बीच का बीड़ा ठटकाकर मि. पासी का इस समय खुद-ब-खुद भागें बढ़ना हमारे बिहार में अच्छा नहीं हुआ है जब कि नील के मजदूरों की दशा विशेषकर अच्छी है। एक तो नील की लेटों की मजदूरी का समान स्वरूप कठिन है और उस पर यदि बीच में ऐसे जाहमी आ जायें जिन का काम ही आन्दोलन करना है तो स्थिति और कठिन हो जाती है।

एक दूसरे केस में इस पक्ष में ऐसीचिम्मेटेड प्रेस के ता. ११-५ १७ वाले छार के बल पर फिर लिखा—

"The records of the past show that it takes very little to create a very turbulent and unsettled state of affairs between the planters and the ryots that is to say in most cases except some big proprietary or Zamindari concerns the manufacturers of indigo and the growers of the plant. We quite anticipated that such a state of affairs would arise when we learnt of Mr. Gandhi's mission of enquiry and the telegram which we publish today confirms this to some extent with the prosperous condition of the industry caused by the War and the prospect of restoring it to the splendid position at once occupied among the staple products of India. It does seem regrettable that anything should happen to hamper progress in any way."

जावार्न—“पहले के अनुभव से यह साफ बाहिर है कि रैक्टरों और नीलमरों के बीच अनबन बरा देना और एक अलिखित स्थिति पैदा कर देना कोई कठिन बात नहीं है। जब हमें माधुम हुआ था कि मि. पासी बीच करने के लिए आ रहे हैं उन्ही समय हमने समझ लिया था कि ऐसी स्थिति आ पड़ेगी और जो छार इस सम्बन्ध में आया है उससे यह बात ठीक मालूम होती है। महात्मर के छिड़ जाने से नील की लकी बच्छी हो गई थी और तब समय में जब कि हमें अपनी पूर्ण समुझ दशा पर फिर पहुँचने की आशा की किसी ऐसी घटना का हो जाना जिससे हमकी उन्नति में बाधा पहुँचे बड़े दुःख की बात है।”

कलकत्ता के स्टेट्समैन (Statesman) में ‘अमलिन नामक किसी नीलमर महात्मर से यों लिखा—

"My memory carries me back to very many years and I do not recollect a single instance when these buildings were destroyed, that was not in some way connected with disagreement between planters and certain ryots pending in the law courts and this is generally through the influence of agitators. The bonafide cultivator is, as a rule a peaceful man and is only disturbed when his feelings

are worked on by gas-bags who have no interest in the land and who are really connected with a certain political crowd howling for Home Rule.

It is indeed a great pity that this private inquiry was permitted. I fear unless it soon ceases further damage to the planting community will be reported. As it is, there is a general feeling of insecurity amongst the isolated planters especially as they are forced to absent themselves two days a week to attend drills at the different centres.

भाषार्थ— 'बहुत दिनों की बातें याद पड़ जाने में मुझ मालूम होता है कि जब-जब बम्बारन में मकान बसाय गया है तब-तब ऐसा ऐसा पड़ा है कि उसका सम्बन्ध नीलबरो और उनके मर्तों के बीच की अवबन से है जिसके बारे में अवबलत में मुकदमा पेश है। और ऐसा प्रायः आम्बोलन करनेवालों ही के प्रभाव से होता है। सच्चे किमान साधारणतः सावित्रिय होते हैं और वे सभी विचलित होते हैं जबकि एक लोग जिनको स्वयं अमीन से कोई भी सम्बन्ध नहीं है और जो होम क्ल के लिए बिम्बारते फिरते हैं उनको उमाड़ते हैं।

मह बड़े अफ़सोस की बात है कि मि बांधी को इस प्रकार जानबी तरीके में जीव करने की इजाजत दी गई। यदि यह गुरल्ल बन्ध न हुई तो मुझे डर है कि नीलबरो की और अधिक क्षति हान की रिपोर्ट मिलेगी। जैसी अवस्था है उसमें नीलबरो लोग अपने को सुरक्षित नहीं समझ रहे हैं विशेषकर इस कारण से कि सप्ताह में दो दिन उनको अपनी कोठी छोड़कर मिन्न-मिन्न केन्द्रों में कबायद करने के लिए जाना पड़ता है।

सब है जब-जब रीयतो ने अपने कुर्छों को असह्य समझकर सिर उठाने की चेष्टा की तब-तब कोठियों में आग लगी—पुल्लिम की लौ लगी हुई और रीयत सब गये और अल्ल र्यों-का-र्यों बना रहा। पर इस बार कोठियों को केवल अल्लम ही हाथ लगा उनके और सब उपाय विफल हुए।

इन अमूल्य लाञ्छनाओं का प्रतिवाद प्रायः सभी हिन्दुस्तानी पत्रों में किया। ता १९-५ १७ के अंक में प्रभाग के 'लीडर' (Leader) ने अपने अग्र-लेख में लिखा—

We are not in the least surprised that the Pioneer finds it difficult to see what good can come out of Mr Gandhi's investigation. We advise to wait and see. Mr Gandhi's inquiry is not impartial. How can it be? Would Sir Oracle have, however addressed the Government of Bihar to appoint a commission forthwith if Mr Gandhi had not gone to Champaran? Had it ever made a suggestion ever before? And now what is its idea of impartial inquiry? The suggested commission may possibly contain a non official element. What magnanimity is there not here?

भाषार्थ— "पाबोलीयर को मि बांधी का जीव से कोई भय नजर नहीं आने में

इमें कुछ भी आश्चर्य मानूम नहीं होता। हम उसे यही सलाह देते हैं कि ठहरा और देखो। कहा जाता है कि मि गांधी की जीब पक्षपातहीन मही है। मला यह कैसे हो सकता है। यदि मि गांधी चम्पारन में नहीं जाते तो क्या पायोलोयर कमी कमीशन नियुक्त करने के लिए सरकार को कहता? क्या इससे पहले उसने इस विषय में कमी इधारा भी किया था? अब बरा यह मानूम होना चाहिए कि पक्षपातहीन जीब के सम्बन्ध में इसकी क्या बारम्बा है? जीब कमेटी में सामय गैरसरकारी जाबदी रहे। क्या जूब उधारता है।

साहीर के 'ट्रिब्यून' (The Tribune) ने लिखा—

The enquiry which the champion of the submerged classes Mr Gandhi is conducting into the relations between the planters and the *ryots* in the Indrag District has created a flutter in the Anglo-Indian dovecotes and every attempt has been made to dissuade him from undertaking and proceeding with his philanthropic work. The latest attempt is on the part of the Pioneer

The Indian public has a right to enquire whence comes this over solicitude on the part of the spokesman of Anglo-India? Since when, one wonders, has our Allahabad contemporary become a convert to the need of holding an inquiry into the relations between the planters and the *ryots*? So, it is that there is something behind the scene which when exposed will inevitably lead to an interference with the vested interests."

भावार्थ—'गिरी हुई जातियों के सहायक मि गांधी जो जीब मोसबारों और उनकी रैमों के सम्बन्ध के विषय में कर रहे हैं उससे ऐंग्लो-इण्डियन पत्रों में बड़ी असमझी पड़ गई है और हर तरफ़ से इस बात की कोशिश की गई है कि वह इस काम को न करने पालें। हाल में पायोलोयर न इस प्रश्न को उठाया है हिन्दुस्तानी जनता को इस बात के पूछने का अधिकार है कि ऐंग्लो-इण्डियन के इस सबबष को कहाँ से इस विषय में ऐसी चिन्ता आ गई है। लोय हैरत में हैं कि हमारे इलाहाबाद के सहायों को मोसबारों और उनकी रैमों के बीच के सम्बन्ध के विषय में जीब करन की जरूरत पत्र में सूझने लगी। अबत ही हाल में कुछ काला है जिनके जाहिर होने में मोसबारों के जमावे हुए हक में रकाबट पहुँचिनी।

मि वासक ने 'महाय मैल' के उपनाम लला को पत्रकर एक बड़ी दीव समासोधना ता २४-२५, १७ वां मिल भेजी जिसमें उन्होंने 'महाय मैल' की भूयें बतलान हुए लिखा—

"You are likely shortly to have a severe shock and your vaunted knowledge will be immensely enlarged when you come to know the contents of the preliminary report just submitted privately by Mr Gandhi to Bihar Government. Had Mr Gandhi been the

Indiscreet, professional agitator that you suggest him to be, India would now be aflame from end to end and an angry demand would be put forth from every platform in the country to put an end to the horror that has disgraced your countrymen and mine for many years in Bihar. When all things come to light it will not be Mr Gandhi who will have the slightest cause to feel ashamed of anything that he has done or left undone."

अर्थात्—“जन्मा है कि बहुत जल्द आपके दिल को खबरदार बक्का पहुँचा और अब आपको उस धार्मिक रिपोर् की बात माननी होगी जिसे मि गांधी ने कानगी ठीर से बिहार सरकार के पास भेजा है तो आपको अपने जिन ज्ञान का इतना बमझ है उसमें भी कासी बुद्धि बहर होगी। यदि मि गांधी ठीक वैसा ही बसबसान मान्यमान करनेवाले होते वैसा कि आप उनको बताते हैं तो अब तक सारा हिन्दुस्तान एह सिरे से बूझने मिरे तक आनबबूझा हो गया होगा। बिहार में आपके और हमारे बेसबासी जिन मत्स्याचारों के कारण बन्धित होने जा रहे हैं उनका क्षीप्त बन्धन के लिए बाज खाना बेम बन्धनता की माँग से गूँज उठता। अब तक बात लोगों पर प्रकाशित हो जायेगी तो उस समय यह मान्य हो जायेगा कि मि गांधी से कोई ऐसा काम या ऐसी बृत्ति नहीं हुई है जिसने उनके बरा भी समाने की बजह हो।

ता १०-५ १७ के अंक में पढ़ने के बिहारी (Beharce) बखबार में लिखा—

"Mr Gandhi's presence in Champaran has excited the spleen of the Anglo-Indian world and drawn it into the tactics either of condemnation or of patronage. A great deal of organised effort is apparent behind this campaign. The atmosphere is resonant with suggestions and comments which sound like the dull echoes of the same of a repeated thing

अर्थात्— मि गांधी के चम्पारन में आने से एंग्लो-इण्डियन पक्षा में बनी बालबली मच गई है। उन्होंने उन्हें बुरा बक्का कहकर या उनकी पीठ ठोककर बालाकी से उनका काम को बुरा बालने की बगटा की है। साफ है कि भीतर ही भीतर मनगिण बगटा हो रही है जो टीका-टिप्पणियों की जा रही है मब एक ही मुर-ताक की मान्य पड़ती है।

पढ़ने के माप्याहिक हिन्दी पत्र 'प्राज्ञिपुत्र' ने अपन जट कृष्ण १२ मर्गत १९७४ के अंक में इस विषय पर आलोचना करते हुए इस प्रकार लिखा—

"पावोनीयर कई कमीशन बिठाना तथा उसमें कोई वरमरवारी सम्बर नी बिठाना चाहता है। इसमें हमें कुछ भी आपत्ति नहीं। किन्तु बसबामियों द्वारा बसबामियों की बृत्ति दुर्गता की बीच हाथ बल यह क्यों बबरा रहा है? किम प्रमाण से यह कह रहा है कि मि गांधी की बीच का बन्धन मत्तापजनक नहीं होगा? पर बालबामियों का पूर्व

विश्वास है कि कर्मबीर गांधी के अनुसंधान से बचप्य शुभ फल होगा।

कलकत्ता के मुख्य हिन्दी दैनिक पत्र भारतीय मित्र ने अपने अंक में १२ के अंक में इस विषय पर यह लिखा—

यदि सरकार कमीशन नियुक्त करना उचित समझता उसमें सरकारी कर्मचारी तथा निम्नही साहस ही न रहे बल्कि कर्मबीर गांधी भी रहें जायें। और उसका अध्ययन भी कोई निरपेक्ष मनुष्य नियुक्त हो।

कलकत्ता के 'बंगाली' ने भी ता १८-५-१७ को लिखा कि यदि 'पादोनीवर' की राम के अनुसार कमीशन नियुक्त हो तो उसमें मि गांधी भी अवश्य सदस्य हो और दादाभाई नौरोजी का बन्नी कमीशन में सदस्य नियुक्त होना जिसमें उन्होंने सदस्य होकर भी इजहार दिया था उदाहरण में पद्य किया।

बर्मा के 'रंगून मेल' (Rangoon Mail) ने इसी विषय पर आलोचना करते हुए लिखा—

"Attempts are being made to discredit the good work that Mr Gandhi is doing in Bihar. A commission means waste of time and money and the result would be the case of a mountain labouring and bringing forth a rat. We have no faith in commission. We think that Mr Gandhi should be allowed to pursue his independent inquiry which is certainly according to law and to publish his Report which could be verified, if necessary by officials later on."

बर्बत्ति— 'जो अच्छा काम मि गांधी बिहार में कर रहे हैं उसका बजन बड़ा डामने के लिए तरह-तरह की कोसिश की जा रही है। कमीशन का नियुक्त होना समय और रुपय का नष्ट करना है और उसका एक पड़ाव जाकर बुनियाद निकालने के समान होगा। हमको कमीशन में विश्वास नहीं है। हमारा विचार है कि गांधी को अपनी स्वतन्त्र जांच कराने और अपनी रिपोर्ट प्रकाशित कराना चाहिए। यह कानून के मुताबिक ही कार्यवाई होगी। पीछे यदि सरकारी कर्मचारी आवश्यक समझें तो वे अपनी जांच से उस रिपोर्ट की बातों की समीक्षा कर सकते हैं।

फिर ता २९-५-१७ का प्रयाग के 'पादोनीवर' ने लिखा—

"The Government of Bihar propose to institute an enquiry into the alleged grievances of ryots of Champaran District. The present position of affairs there is obviously unsatisfactory and it is said that Mr Gandhi's presence has aroused expectations among the cultivators which are impossible of realization. It is, therefore, desirable that no time should be lost in arranging for an authoritative and impartial investigation and that the enquiry should not be confined to the differences between the European planters and ryots."

but should also include the relations between ordinary Zamindars and *ryots*

अर्थात्— जिमा चम्पारन के रैयतो के दुस्सा का मुन्ने के लिए बिहार की सरकार न एक कमीशन नियत करने का बिचार किया है। इस समय बहो की हालत मनोपजनक नहीं है। कहा जाता है कि मि घोषी के बहो रहन में लोरी के मन में लगी लाजमान आ गई है जा कमीषनी नहीं हो सकनी। इसलिये एक प्रभावशाली तथा भावमीन कमीशन बैठान में दर नहीं करनी चाहिए। कमीशन केवल जयरेज मीसबर और रैयतो के बीच के भद की ही जांच न करे बल्कि जमींदार और रैयतो के बीच के सम्बन्ध का भी अनुसंधान करे।”

इस विषय पर महात्मा जी ने बिचार किया और अपने सहकारियों व भी सलाह ली। अन्त में वह निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सूचना महात्मा जी की ओर से समाचारपत्रों में भेजी जाय—

“If continuing known wrongs are immediately redressed an impartial enquiry covering definite issues with time limit as to its findings is likely to meet the existing situation. The work of my colleagues will then, for the time being, mostly consist in marshalling and leading evidence before the Enquiry Committee.”

अर्थात्— ‘यदि रोज गेज की होती हुई बुराई चल रहा हो जाय तो एक व्यावसीक कमीशन जा नियत समय के भीतर रिपोर्ट दे वर्तमान हालत को सुधार सकता है। वैसी हालत में सर नाबियों का और भद काम उस कमेटी के सामने बहुत पघ करना होगा।’

पन्द्रहवाँ अध्याय महात्मा गांधी की बुलाहट

इस 'पायोनीयर' कमेटी नियत करण की सलाह ब रहा था और उबर मीसबर सरकार से जाय लयने के विषय मे बूब कानाफूरी कर रहे थं । इसका फल यह हुआ कि ता २९-५ १७ को महात्मा जी को बिहार-सरकार से राखी जाने की सलाहट पहुँची । छोटे साट सर एडवार्ड गैट (Sir Edward Gait) न महात्मा जी से भिन्न के लिए ४ बून नियत की ।

हम लोग बिचार करने लग कि इसका क्या मतलब है । अभी जिला मजिस्ट्रेटों ने महात्मा जी की रिपोर्ट पर कुछ सम्मति दी नहीं । इसलिए हम विषय में यह बुलाहट हो नहीं सकती थी । ठब रहे मीसबर और एम्को-इन्डियन पत्रों का आन्वोसन हो कोटियों में जाय लगता और स्थानीय कर्मचारियों का अस्थाति का स्वकस्मिप मय । हम लोगों न निश्चय किया कि कुछ हाल में काला अवसर है । इसलिए जान-पीछे सब देख-भाल कर सब प्रकार की स्थितियों के लिए प्रस्तुत रहना ही उचित समझा गया । अपने हल को संभाल लेना चाहिए और बहि कोई दुर्घटना का सामना करना पड़ तो उसके लिए भी भली भाँति सब को तैयार रहना चाहिए । हम लोगों के मन मे ऐसा संदेह हुआ कि महात्मा जी कदाचित् राखी से लौटने न पावेंग । बीसी हाऊस में क्या किया जायगा इस पर भी बिचार हुआ । बेतिया में सब बातों पर बिचार करके पढ़ने न जाने के लिए प मदनमोहन मालवीय को तार दिया गया । महात्मा जी ने अपनी पत्नी को राखी बाकर मिलने के लिए तार भेज दिया । जाय उस समय कलकत्ते थी । उसी समय महात्मा जी क कनिष्ठ पुत्र देवदाम गांधी जो साबरमती सत्याग्रह आश्रम में थे राखी बुलाये गये । सेक्टर को कहा गया कि पढ़ने बाकर सब नताबी से मिले । ता २९ १७ की रात की बाड़ी से चलकर महात्मा जी बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद के साथ २-९ १७ की दोपहर को पढ़ने पहुँचे । वं मालवीय उनके पूर्व ही ता १९ १७ की संध्या को पंजाब सेक से आ गये थं । माननीय मि ह्क रायबहादुर इन्ज सहाय वं मालवीय मि परमेश्वरदास बाबू बैचनाथ नाचयथ सिंह इन्वारि कठियप सज्जनों की एक गोष्ठी हुई । इनमें निश्चय किया गया कि यदि महात्मा जी क साथ किसी प्रकार की कार्रवाई हुई ता माननीय मि ह्क अपना वं मदनमोहन मालवीय अप्पारन के कार्य का भार अपने ऊपर लेकर उगका संभालन करेंग । फिर बत १८ अप्रैल के जैसा ही कार्यक्रम तैयार किया गया । रेल के जय नेताजा के साथ पत्र-व्यवहार होन लगा । अभी दिन महात्मा जी बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद को साथ लेकर राखी और वं मदनमोहन मालवीय प्रयाण करते थं ।

नीतिबद्धों ने अपने धानस मङ्गारमा जी और इनके सहकारियों को चम्पारन से हटाने और उनके कार्य को निष्फल करने को कोई उपाय उठा नहीं रखा था। ता २१-५ १७ को 'यूरोपियन डिफेंस एसोसिएशन (European Defence Association) के मुख्यालय की साखा ने यह प्रस्ताव पास किया—

1 That the presence of Mr Gandhi in his self imposed mission has been accompanied by unrest and crime.

2 That his continued presence there is likely to disastrous to the welfare of the Europeans in Champaran and the peace of the District.

3 That they request the European Central Association in Calcutta to press on the Government the absolute necessity if they wish to maintain law and order in Champaran District, to have Mr Gandhi and his assistants removed from there at once and also that there is a great fear of lawlessness spreading to the neighbouring Districts.

अर्थात् (१) मि गांधी ने जो बाँध बुर-ब-बुर शुरू की उससे वहाँ बहुत अशांति फैल रही है।

(२) उनके वहाँ रहने में चम्पारन के अंगरेजों के बहुत कुछ अप्रिय की समझना और जिसे में शांति-मग का मय है।

(३) यूरोपियन सेंट्रल एसोसिएशन कम्पकता से निवेदन है कि वह सरकार से निवेदन करे कि यदि वह चम्पारन जिसे में शांति रखना चाहती है तो वह नितांत आवश्यक है कि मि गांधी और उनके सहायकों को वहाँ से बाँध हटा दें क्योंकि बासपास के जिलों में अशांति फैलने का डर है।

ता २१ १७ को पाबोनीयर में मोतीहारी कोठी के मैनेजर मि इरविन (Mr Irwin) की एक कम्बी चिट्ठी छपी। उस पत्र को मि इरविन ने ता २१-५ १७ को छिन्न भेजा था। पर 'पाबोनीयर' ने उसको ता २१ १७ को ही छापा। यहाँ पर मि इरविन

१ मि इरविन का पत्र इस प्रकार था—

"Very occasionally brief paragraphs appear in your columns alluding to Mr Gandhi and his so-called mission in Champaran but it is more than evident you have no appreciation of the harm he is doing and already succeeded in doing

"When the local authorities first became aware of Mr Gandhi's threatened visit they very wisely and correctly took action to restrain him but, on appeal by him this order was upset by the

का भी कुछ परिचय होना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि मि इरविन ने बहुत से समाचारपत्रों में बम्पारन की जीव के सम्बन्ध में लेख छपवाये थे जिन्हें हमें आलोचना करने का समय आयेगा। मि इरविन का नाम इरविन (Mr W S Irwin) एक पुतले और जबरदस्त नीलमर मयज बाल है। वह मालीहारी कोठी के मालमर है। इस कोठी के माल उसका सम्बन्ध बहुत दिनों से बना आता है। घरइरविनी और ताबान के म म यह एक प्रचार से अनुज्ञा प क्योंकि उन्होंने ही नील के बहने म घरइरविनी और ताबान के विषय में

Provincial Government and Mr Gandhi was permitted to continue his mischievous intention. He wanted to go to a village in the Peepra factory dihat and thereby encourage the villagers some of whom were under trial for severely assaulting the European Sub-Manager but he was stopped by the Police. Then when detained by the local authorities and awaiting the order of the Government he occupied himself in Motihari recording the ex parte statements of some hundreds of Peepra and Turkaula concern १९२४ who were induced by his encourage to come to him. When Government orders were received revolting the earlier proceedings he passed on to Bettiah but his doings in Motihari bore fruit, and shortly after his departure an outbreak of the Turkaula concern was burnt down. I may here say parenthetically that of 20,000 १९२४ (more or less) not a dozen men attempted to go near Mr Gandhi and of those the majority went out of curiosity pure and simple and no serious charges of any kind were made. So in this matter I have no 'personal' quarrel with Mr Gandhi. Naturally his arrival in the Bettiah Sub-Division was objected to by both planters and officials and the former sent a deputation to Ranchi to try to get the Government to put an end to, or at any rate keep under some control Mr Gandhi's activities. This resulted in the local officials and Mr Gandhi being summoned by wire to attend a Conference in Bankipore which ended in Mr Gandhi's being permitted to return and continue his doings now more uncontrolled than ever and clothed the १९२४ mind in the garment of recognition and approval by Government. He visited a village in Dhakrha factory dihat the १९२४ of which in his presence and before the S.D.O and Factory Manager foully abused in Hinduathani the Factory head servant and while Mr Gandhi was still in the neighbourhood, but not actually with in assaulted and grossly maltreated a most respectable old man,

बकीरों से राय की थी और सरकार से लिखा-पढ़ी की थी। १९०६ ई. में पहले-पहल जगदी ही कोठी में इसका बाह-विबाह मारम्भ हुआ था। उनको फटा है कि उनके पैसों की उनके खिलाफ अशास्त्र में नालिया नहीं करने। सरखुसेरी और तावान के विषय में भी उनके बहुत कम पैसों में हाकिमों के पास शिकायत पहुँचाई थी। इस सब बातों से वे लोगों को बताया चाहते हैं कि उनके पैसों बहुत कम हैं और उनसे किसी प्रकार की सतबन नहीं है। पर पैसों का कहना कुछ और ही है। वे कहते हैं कि मि. डबिन का प्रबंध ऐसा कहा और बाकिर है कि बुक रखने की पैसों में वे किसी को हिम्मत कचहरी की ओर टसकने की नहीं पड़ती। इन्हीं मि. डबिन के विषय में उनके एक पटवारी ने महारजा जी से

who too aged and infirm to walk, had come in a cart to make statements in the Factory's favour and finally two days or so later the factory office was set fire to and burnt down. There can be no possible doubt in any reasonable person's mind as to cause and effect in both this and Turkanlia incident. But everybody he deserves to be in a position to know knows that the whole movement is malicious (?) and Champaran has been selected for the exploitation of it for the following reasons

1 There is practically only one proprietor (malik) in the whole District—The Betuah court of wards Estate i.e. the local Government. In Tirhut and Saran most villages are owned by several small share-holders, many residents, and an agitator who would venture to go in there and act, as has been doing here, would meet with short shifts. The engineers of the movement have no desire to get up against the Maharaja of Darbhanga.

2 Champaran with its large community of European Zamindars is eminently the place to start with hopes of success a class agitation. Mr. Gandhi, I believe, is a well intentioned philanthropist but he is a crank and fanatic and is too utterly obsessed with his partial success in South Africa and his belief that he has been ordained by the providence to be a righter of wrongs. To be able to realise that, he is being made a cats paw by (1) Pleader and Mokhtars etc. who know that planters settle free, gratis and for nothing at least 75 % of disputes amongst ryots which would otherwise be grist of their mills (2) Mahajans and money lenders whose usurious dealings with ryots have been greatly checked and who can not now owing to the action of the planters, acquire the debtor's best lands without the consent of the landlords and (3) by

का भी कुछ परिचय दे दना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि मि
ममाधारपत्रों में अम्पारन की जीब के सम्बन्ध में लेख छपवाये थे जि
वरण का समय जावेगा। मि डब्ल्यू एस हविन (Mr W S I:
और अबरवदन नीलवर समझ जात है। यह मोनीहारी कोठी के मेनजर
साब उनका सम्बन्ध बहुत दिनों से बना आता है। सरहदारी और तान
प्रकार से अनुशासक क्योंकि उन्होंने ही नील के बचसे में सरहदारी और

Provincial Government and Mr Gandhi was permitted
his mischievous intention. He wanted to go to a
Peepra factory, dihat and thereby encourage the
of whom were under trial for severely assaulting
Sub-Manager but he was stopped by the Police
detained by the local authorities and awaiting a
Government he occupied himself in Motihari reco
statements of some hundreds of Peepra and Turke
who were induced by his encourage to come to him
ment orders were received revolting the can
passed on to Bettiah, but his doings in Motih
shortly after his departure an outwork of the T
burnt down. I may here say parenthetically
(more or less) not a dozen men attempted
and of those the majority went out of curio
no serious charges of any kind, were made
no personal quarrel with Mr Gan
in the Bettiah Sub-Division was obje
officials and the former sent a deputa
Government to put an end to, or at
Mr Gandhi's activities. This res
Gandhi being summoned by wire
which ended in Mr Gandhi's
his doings now more uncontro
mind in the garment of reco
He visited a village in D
which in his presence and
soully abused in Hindustan
Mr Gandhi was still in
sight, assaulted and gro

पायोनियर ने उसी राष्ट्रीय अर्थात् ३६१० को यूरोपियन डिफेंस एसोसिएशन से प्रस्तावों को प्रकाशित कर सम्पारण की स्थिति पर विचार किये हुए लिखा—

"It is quite clear from the resolutions just passed by the members of the European Association, Bihar Branch, Muzaffarpur that the view expressed by the writer of the letter coincide fairly closely with those of the whole planting community of which he is a member. The writer it will be noticed, is prepared to believe that Mr Gandhi is a well-measuring philanthropist and that he has been made a cat's paw by the individuals who have engineered the movement. What appears to be beyond dispute is that, whatever Mr Gandhi's intention may have been, regrettable incidents have happened since he started his mission. Mr Gandhi himself has ingeniously published a letter from the District Magistrate of Champaran in which the latter pointed out that Mr Gandhi's enquiries had as a matter of fact caused considerable excitement. But Mr Gandhi has so far failed altogether to explain what particular qualification he possesses for instituting any mission of enquiry in Bihar or elsewhere in India. His escapade at Banars not so long ago suggested that he was a gentleman of extremely little discretion, and one cannot help thinking it somewhat astonishing in the circumstances that the Bihar and Orissa Governments should have permitted him so much license. We now hear of him being asked by the Lieutenant Governor to proceed to Ranchi to see his Honour about Champaran affair. And meanwhile the good Pandit Madan Mohan Malviya must need consider that his presence is urgently required at Bankipore to put things straight. It is high time, we think, that the Provincial Government took measure to discourage the activities of all rooting commissioners whose interference in matters which do not concern them and with which they cannot claim to have any special competence to deal, is likely to result in far more harm than good. If matters require to be investigated, it is the local Government's business to appoint its own commission of enquiry but while the assistance of non-official Indians in the Province concerned may be welcomed there is every argument to be urged against the intervention of outsiders."

अर्थात्—'यूरोपियन एसोसिएशन मुजफ्फरपुर को दावा के उन प्रस्तावों से जो नमी खींचते हुए हैं यह स्पष्ट है कि सेवक (मि इबिन) की समिति समस्त नौकरों

कहा था 'साहब के नामने मी मजिस्ट्रेट और बारोगा कुछ भी नहीं है। इन्हीं का बिना पत्र
 ता १९१७ के 'पायोमीयर' में छपा था। इस पत्र में उन्होंने महारणा जो की थिकायत
 करते हुए तुकी सिमा कोठी की फाँड़ी बल्लने का कारण उन्हीं की जाँच को बतलाया था।
 उन्होंने अपनी सफाई बतलाते हुए कहा कि उनके समय में २० ईयतों में मि गांधी
 के पास एक दर्जन से अधिक नहीं जाये है और उनमें से भी अधिक केवल कीमूहसबस
 जाये है। उन्होंने यह भी लिखा कि मि गांधी के बेतिया पहुँचने पर नीलबरो न एक
 डेनटेगन राखी इसलिसे जा कि उनका काम रोक दिया जाय। इस पर मि गांधी कोठी-
 पर बुलाये गये पर उनको वहाँ से अपना काम जारी रखने को कहा गया जिसका फल
 यह हुआ कि रीयत समझने लगे कि यह सरकार के हुक्म से जाय हो रहा है। उन्होंने
 पाकपाहा कोठी में जाय जयने का कारण भी महारणा जी का जाना ही बतलाया।
 बम्पारन की बल्लबकी को बनावनी बताते हुए उन्होंने यह कहा कि यद्यपि गांधी जी की
 निमत अच्छी हो पर वह बलिज अफीका की बोड़ी सफस्ता पाकर फूल गये है और
 भूत स्वराज्यवादियों न उन्हें पँसाकर बम्पारन में इसकि बुलाया है कि बम्पारन में
 अजोब अधिक हान के कारण वहाँ उनके बिकट बान्धवजन बूब बल सकेगा। हमने बकील
 मुष्टार और महाजन मरब करते हैं क्योंकि यदि नीलबरो रैयतों के लमहे मिटा देता छोड़
 दे और उन्हे कम सुब पर नपया देना बन्ध कर दे तो इन लोगों की जेब बूब मर होमी। अत
 में उन्होंने सरकार को मलाह दी कि मि गांधी को बम्पारन से तुरन्त हटा देना चाहिए
 नहीं ता नीलबरो अपन बचाव के लिए जो उचित समझें करेंगे।

इस पत्र के विषय में अधिक बालोचना न करके इसका ही कह देना बस होना कि
 मि इतिन था यह कहना कि उनके रैयतों में से १०-१२ गवें से एकवारागी बसत
 बा क्योंकि उस वारीक तक हम लोगों ने उनके १०-१२ गवें बसिक १ रैयतों के इजहार
 लिख चुके थे।

Home Rule politicians who hope to demonstrate on the, for them,
 happy hunting ground of Champaran that officials and non-officials
 go hand in hand to oppress the population and so prove that the
 District, and incidentally all India, is being misgoverned under the
 British Raj. What do these people care for you save to make use
 of them for their own purpose? For the protection of the property
 of the Champaran planters one and probably only one step is
 essentially necessary and that is the removal of Mr. Gandhi from
 the District. The extreme forbearance of the planters has so far
 prevented the outbreak of any very serious disturbances, but unless
 Government can see its way to protecting them, they will unavoidably
 be forced into taking the steps necessary for their own protection."

पावोलीयर ने उसी तारीख अर्थात् १६ १७ को यूरोपियन डिफेंस एसोसिएशन के प्रस्तावों को प्रकाशित कर सम्पारण की स्थिति पर विचार करते हुए लिखा—

"It is quite clear from the resolutions just passed by the members of the European Association, Bihar Branch, Muzaffarpur that the view expressed by the writer of the letter coincide fairly closely with those of the whole planting community of which he is a member. The writer it will be noticed, is prepared to believe that Mr. Gandhi is a well-intentioned philanthropist and that he has been made a cat's paw by the individuals who have engineered the movement. What appears to be beyond dispute is that, whatever Mr. Gandhi's intention may have been, regrettable incidents have happened since he started his mission. Mr. Gandhi himself has ingenuously published a letter from the District Magistrate of Champaran in which the latter pointed out that Mr. Gandhi's enquiries had as a matter of fact caused considerable excitement. But Mr. Gandhi has so far failed altogether to explain what particular qualification he possesses for instituting any mission of enquiry in Bihar or elsewhere in India. His escapade at Banarès not so long ago suggested that he was a gentleman of extremely little discretion, and one cannot help thinking it somewhat astonishing in the circumstances that the Bihar and Orissa Governments should have permitted him so much license. We now hear of him being asked by the Lieutenant Governor to proceed to Ranchi to see his Honour about Champaran affair. And meanwhile the good Pandit Madan Mohan Malviya must need consider that his presence is urgently required at Banápur to put things straight. It is high time, we think, that the Provincial Government took measure to discourage the activities of all rooking commissioners whose interference in matters which do not concern them and with which they cannot claim to have any special competence to deal, is likely to result in far more harm than good. If matters require to be investigated it is the local Government's business to appoint its own commission of enquiry but while the assistance of non-official Indians in the Province concerned may be welcomed, there is every argument to be urged against the intervention of outsiders."

अर्थात्—“यूरोपियन एसोसिएशन मुजफ्फरपुर की शाखा के उन प्रस्तावों के जो गांधी स्वीकृत हुए हैं यह स्पष्ट है कि लेखक (यि इविन) की सम्यक्ति समस्त नीतिगत

की सम्मति संपूर्ण-पूरी मिलती है। लेखक (मि डब्लिन) इस बात को मानने के लिए तैयार है कि मि गांधी एक बाह्याध्य उपकारी पुरुष हैं और जिन लोगों ने इस मान्यता को खड़ा किया है उनका हाथ में वह एक कठपुतली-से हो रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं किया जा सकता कि मि गांधी की जाहे जो इच्छा हो पर जब से उन्होंने यह काम शुरू किया है तब से कई सरबनक बटगाएँ हो गई हैं। मि गांधी ने स्वयं अपने सीनेपन के कारण चम्पारन जिले के एक मजिस्ट्रेट का एक पत्र भी प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि मि गांधी की तहकीकात में बहुत सम्मेलनी पैदा कर दी है। पर उन्हें (मि गांधी) ने यह अभी तक नहीं बताया है कि बिहार में या हिन्दुस्तान के किसी और स्थान में किसी तरह के आंध करने की उमम क्या विधाय योग्यता है? अभी जोड़े ही दिन हुए आप बनारस से जो हट मागे थे उससे मामूम हुआ कि आप बहुत कम विचार के आचमी हैं और यह बड़े आश्चर्य की बात है कि बिहार सरकार ने इतने दिनों तक आपको इतना अधिकार क्यों दे छोड़ा है। अब सुना जाता है कि छोटे कान में चम्पारन के सम्बन्ध में आपको रांची बुलाया है। और इधर पं मदनमोहन मालवीय आगस्ता यह समझकर कि उनकी आवश्यकता बातों को सुलझाने की बाकीपुर में है वहाँ जा पहुँचे हैं। अब समय आ गया है कि प्रांतीय सरकार इस प्रकार के परिवाजक कमिशनरों को रोक बिना ऐसे कामों में जिससे उनको कोई सम्बन्ध नहीं है और जिनके विषय में वे कुछ विधेय योग्यता भी नहीं रखते हैं, हस्तक्षेप करने से मसाले के बहसे बुराई की अधिक संभावना है। अबर कोई एसी बात है कि जिसमें तहकीकात की जरूरत है ता वह प्रांतीय सरकार का काम है कि वह उसके लिए कमीशन मुफरर करे और पछपि इन प्रांत के नैरसरकारी हिन्दुस्तानियों की सहमता इस काम में सहर्ष भी आ सकती है पर बाहर बाकों के हस्तक्षेप से हानि ही हानि हो सकती है।

‘पापेलीयर’ में मि डब्लिन की पिठ्ठी यूरोपियन डिफेंस एगोसिएशन का प्रस्ताव और अपनी आलाचना तीनों का एन ही दिन निकम्मा और वह भी ३ जून को जब महारमा की राखी का बुक से जीन सर एडवर्ड मंट म ता ४ जून उनके मुलाकात करने के लिए नियत कर दिया जा — इसमें भी भायव कुछ रहस्य था। जो हो हिन्दुस्तानी पत्रों में भी इन सब बातों के विषय में कड़ी आलाचना की और मि पोस्कर ने भी इसका उत्तर प्रकाशित कराया।

इस विषय पर मिळते हुए कमकतों के अपुनबाजार पत्रिका ने (Threatened White Mutiny) नामक एक अग्र-लेख में लिखा—

“The cry murder help has been raised by the European Association and their organs. So not only are Mr Gandhi and his friends charged with fomenting unrest and crime in Champaran but the Government is dictated to drive them bag and baggage from the District at once, otherwise law and order would not be maintained

there. The standard of a white mutiny is thus in course of being raised. But we trust the Government of Sir Edward Gait is too strong to be coerced by these threats."

अर्थात्—“यूरोपियन एसोसिएशन और उनके मुखपत्र आज बिस्मय रहे हैं कि ‘मदद दो नहीं तो जान गई’। मि. गांधी और उनके मित्रों पर केवल भयानक में अशांति उत्पन्न करने का बोध ही नहीं मड़ा जाता है पर सरकार को उन्हें बिल्के से बाहर निकाल देने का परामर्श भी दिया जा रहा है—नहीं तो कहा जाता है कि शांति नहीं रहेगी। इस प्रकार ‘मीणों’ के बल्ले का अंदा उठ रहा है पर हम आशा करने हैं कि सर एडवर्ड गेट की सरकार में इतना बल है कि इन सब बातों से वह नहीं डरेगा।

कलकत्ते के दैनिक ‘बंगाली’ न लिखा—

‘No one need be surprised at the Pioneer’ flinging an attack on Mr. Gandhi and his mission in Bihar. The resolutions of European Association at Muzaffarpur backed by the letter of Mr. Irwin of Motihari seem to have fired the virtuous indignation of the Pioneer and it has no scruple in calling on the Bihar Government to account for permitting the self-imposed inquiry by Mr. Gandhi. It will not be wise to remove Mr. Gandhi from the District at the instance of an association, however influential it may be.

अर्थात्—“इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पायोनीयर न मि. गांधी और उनकी कार्यवाही पर आलोच किया है। यूरोपियन एसोसिएशन के प्रस्ताव और मोतीहारी के मि. इरविन की बिट्ठी देखकर मालों पायोनीयर आज-बबूला हो गया है और उसे बिहार सरकार से इस बात की कैफियत पूछने में कुछ भी संकोच नहीं होगा है कि इसने मि. गांधी को बाँध क्यों करने दिया। किन्ती भी संस्था के कहने से चाहे वह कितनी ही प्रभावशाली संस्था क्यों न हो महात्मा गांधी को हटाना मुझिमानी का काम नहीं होगा।

प्रयाग के ‘जीडर’ ने एक बहुत बड़ा लेख ता ७ जून के अंक में छपा जिसमें यह लिखा—

“Mr. Gandhi is an Indian. Motihari is his country and *ryots* are his countrymen. Mr. Irwin is a sojourner from a foreign clime and so are the other planters. Their interest in the land is limited to the money they make here. They are alien exporters and make what they can out of the estate and *ryots*. And Mr. Irwin has the impudence to demand the removal of Mr. Gandhi and threaten that the Planters will take the law in their own hands if their mandate is not obeyed.

It is absolutely necessary for Government to keep the threatening Planters in check and compel

की सम्पत्ति संपूर्ण-मुरी मिलती है। सनक (मि इबिन) इस बात को मानने के लिए तैयार है कि मि गांधी एक सदासय उपकारी पुरुष है और जिन लोगों ने इस आन्दोलन को सदा किया है उनके हाथ में वह एक बटुलकी-से हा रहे हैं। इसमें संदेह नहीं किया जा सकता कि मि गांधी की भावों को दृष्टि हो पर जब से उन्होंने यह काम शुरू किया है तब से कई बहजनक बटमार हो गई हैं। मि गांधी ने स्वयं अपना सीनेपन के कारण चम्पारन जिले के एक मजिस्ट्रेट का एक पत्र भी प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने लिखा है कि मि गांधी की लहकीकात ने बहुत सनकसी पैदा कर दी है। पर उन्हें (मि गांधी) ने यह जमी तब नहीं बताया है कि बिहार में या हिन्दुस्तान के किसी और स्थान में किसी तरह के जीव करने की उमम क्या बिनाप योग्यता है? जमी बोध ही दिन हुए आप बनारस से जो हट जाग से उससे माफम हुआ कि आप बहुत कम बिचार के आदमी हैं और यह बड़े आश्चर्य की बात है कि बिहार सरकार ने इतन दिनों तक आपको इतना अधिकार क्यों दे छाड़ा है। अब मुलाजाता है कि छोटे काट ने चम्पारन के सम्बन्ध में आपकी राय बनारस और इतर पं महममोहन मास्कीय आमला यह समझकर कि उनकी आश्चर्यका बाटी को मुलाजाने की बाकीपुर म है वही का पहुँचे हैं। अब समय आ पड़ा है कि प्रांतीय सरकार इस प्रकार के परिवाजक कमिस्मरों को रोके जिनके ऐसे बाजों में जिनसे उनको कोई सम्बन्ध नहीं है और जिनके बिपय म के कुछ बिरोध योग्यता भी नहीं रखत है इस्तमप करने से मलाई के बजले बुराई की अधिक सम्भावना है। अगर कोई ऐसी बात है कि जिसमें लहकीकात की बहरत है तो वह प्रांतीय सरकार का काम है कि वह उसके लिए कमिशन मुकरर करे और यद्यपि इन प्रांत के गैरसरकारी हिन्दुस्तानीयों की सहायता इस काम में सहर्ष की जा सकती है पर बाहर बाजों के इस्तमप से हालि ही हालि हो सकती है।

‘पायोनीयर’ में मि इबिन की बिट्ठी यूरोपियन बिफन एमोमिएसन का प्रस्ताव और अपनी आलोचना तीमा का एक ही दिन निकलना और वह भी ३ जून को जब महात्मा जी राखी जा चुके थे और मर लड़कें बट म ता ४ जून उनसे मुलाकात करने के लिए नियत कर दिया था—इसमें भी शायद कुछ रहस्य था। आ हा हिन्दुस्तानी पत्रों में भी इन सब बाजों के बिपय म कड़ी आलोचना की और मि वोल्कन भी इनका उत्तर प्रकाशित कराया।

इस बिपय पर मिलने हुए कमकसे के अमृतबाजार पत्रिका में (Threatened

White Mutiny) नामक एक अग्र-मन्त्र में लिखा—
 “The cry ‘murder help has been raised by the European Association and their organs. So not only are Mr Gandhi and his friends charged with fomenting unrest and crime in Champaran but the Government is dictated to drive them bag and baggage from the District at once, otherwise law and order would not be maintained

there. The standard of a white mutiny is thus in course of being raised. But we trust the Government of Sir Edward Gait is too strong to be coerced by these threats."

बर्बात— यूरोपियन एसोसिएशन और उनके मुखपत्र आज लिखा रहे हैं कि 'मर्द हो नहीं तो जान गई'। मि. गांधी और उनके मित्रों पर केवल सम्पत्ति में बर्बात करने का दोष ही नहीं मढ़ा जाता है पर सरकार को उन्हे जिले से बाहर निकाल देने का परामर्श भी दिया जा रहा है—मही तो कहा जाता है कि शांति नहीं रहूँगी। इस प्रकार 'घोषवो के बच्चे' का झंडा उड़ रहा है पर हम जाना करते हैं कि सर गडबर्ड गेट की सरकार में इतना बल है कि इन सब बातों से बड़ नहीं डरेगा।

कलकत्ते के दैनिक 'बंगाली' ने लिखा—

"No one need be surprised at the Pioneer flogging an attack on Mr Gandhi and his mission in Bihar. The resolutions of European Association at Muzaffarpur backed by the letter of Mr Irwin of Motihari seem to have fired the virtuous indignation of the Pioneer and it has no scruple in calling on the Bihar Government to account for permitting the self imposed inquiry in Mr Gandhi. It will not be wise to remove Mr Gandhi from the District at the instance of an association, however influential it may be."

बर्बात— "हम कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पायोनीयर ने मि. गांधी और उनकी कार्यवाई पर आलेख किया है। यूरोपियन एसोसिएशन के प्रस्ताव और मोनोहारी के मि. इरविन की चिट्ठी देखकर मानो पायोनीयर आम-बच्चा हो गया है और उसे बिहार सरकार से इस बात की कसबत पूछने में कुछ भी मकोश नहीं हुआ है कि हमने मि. गांधी को जाँच क्यों करने दिया। किसी भी संस्था के कहने में चाहे वह कितनी ही प्रभावशाली संस्था क्यों न हो महात्मा गांधी को इतना बढ़िमानो का काम नहीं होता।"

प्रयाग के 'सीडर' ने एक बहुत बड़ा लेख या ७ मूल के अंक में छपा जिसमें यह लिखा—

"Mr Gandhi is an Indian. Motihari is his country and *ryots* are his countrymen. Mr Irwin is a sojourner from a foreign clime and so are the other planters. Their interest in the land is limited to the money they make here. They are alien exporters and make what they can out of the estate and *ryots*. And Mr Irwin has the impudence to demand the removal of Mr Gandhi and threaten that the Planters will take the law in their own hands if their mandate is not obeyed. It is absolutely necessary for Government to keep the threatening Planters in check and compel

them to respect law and order instead of making provocative utterances or indulging in irritating threats. The allegations against Mr. Gandhi are both wanton and untrue and do not hurt him though they cause the greatest pain to his countrymen who revert him as the revere but one other living Indian in the whole country

अर्थ— 'मि गांधी भारतवासी है और मोतीहारी उनके देश में है। वहाँ के रैयत उनके देशवासी है। मि इबिन तथा दूसरे नीकबर बम्पारनीय पात्री है जिनका इस देश के साथ केवल यही सम्बन्ध है कि वहाँ अपना उपार्जन करे। वे बाहर से आकर वहाँ तक हो सकता है यहाँ की भूमि और रैयतों से मुनाफा कपटें हैं। तो भी मि इबिन की यह गुस्ताखी है कि वह कहते हैं कि मि गांधी हटा दिये जायें और यह बमकी देते हैं कि यदि उनकी आज्ञा न मानी गई तो नीकबर कानून को अपने हाथ में ले लेंगे। यह अव्यक्त आवश्यक है कि सरकार ऐसे बमकीबाज नीकबरो को हटाकर रखे और उनको कानून का बाहर करना सिखावे ताकि वे इस प्रकार की कटु बातें और बमकियों से बाज रहें। जो लक्ष्मणों मि गांधी पर की गई है एकबल झूठी है और उनसे मि गांधी का कोई नुकसान नहीं हो सकता। यद्यपि उनके कारण उनके देशवासियों को नष्ट होता है। वे उनके प्रति ऐसी नवित रक्ते हैं जैसा कि सिर्फ एक ही दूसरे जीवित भारतवासी के लिए।

लखनऊ के 'एडवोकेट' (The Advocate) ने (The Cry for blood) चीपंक सेक में लिखा—

"The Allahabad Anglo-Indian paper has made venomous attack on Mr. Gandhi and Pandit Madan Mohan Malviya. This vile defender of the vested interests is furious that Mr. Gandhi should make enquiries in Bihar. Unfortunately the Government is not prepared to declare war on Indians though the Pioneer may want that. It is a pity that such irresponsible and poisonous attack on public leaders are not prevented"

अर्थ— "इलाहाबाद के अवरेजी पत्र न मि गांधी और न मदनमोहन मालवीय पर बहुत कड़ा आक्षेप किया है। मि गांधी को जाँच कर रहे हैं उससे हम पत्र को बड़ा रंज है। उसके लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि सरकार हिन्दुस्तानियों के साथ यह लड़ाई नहीं ठाम रही है। बड़े दुःख की बात है कि इस प्रकार के अनिमित्त के आक्षेप को नेताओं पर नियो जात है रोके नहीं जाते।

मद्रास के 'इण्डियन पैट्रियट' (The Indian Patriot) ने अपने छठी जून के अंक में एक बहुत ही बड़ा अधःस्त^१ लिखा जिसमें उन्होंने सरकार का बतलाया कि महात्मा

१ 'इण्डियन पैट्रियट' का लगभग इस प्रकार का—

We are not surprised at the letter which a Planter has written

पाँधी पर किसी प्रकार से हाथ छोड़ने का फल यह हुआ कि समस्त भारतवर्ष में सन्तुष्टी पड़ आयी। उसने यह भी कहा कि नीलमर जो पकड़ा रहे हैं उससे साफ बाहिर है कि वह डर रहे हैं कि आज तक जो जोर-बज्जरासी और जुम्ले से किया करते थे अब न करने पावेंगे और बम्पारन की प्रथा जो आज तक रही हुई थी अब रही न रहेगी।

मरास के जस्टिस' (The Justice) ने लिखा—

"No one will believe Mr Gandhi will incite the labourers to acts of violence. He is opposed to the applications of physical force under any circumstances but if the complaint about the ill-treatment of labourers has any foundation in fact Mr Gandhi is sure to lift it and the prosecution of his inquiries cannot be agreeable to the to the Pioneer. The surprise is that it did not appear earlier. It is now too late for this valiant champion to connect the fire with Mr Gandhi's enquiry after the opinion of the owner of the factory. Whatever it is, the Government must not for the sake of its prestige tolerate a threat of the kind this impertinent planter is indulging when he writes—The extreme forbearance of the planters has so far prevented the outbreak of any very serious disturbances. But unless the Government can see its way to protecting them, they will unavoidably be forced into taking the steps necessary for their own protection. When Mr Gandhi's report is published we hope the Government will not drive him to publish it, it will be found how the Bihar planters have been accustomed to have their own rule. Why should Mr Gandhi's presence be so alarming. What has he preached? What crying for Mr Gandhi's removal. The ryots are disturbed. They have borne all along much and they are certainly not going back to their slavery without a protest. Impatience of the planters is itself the best proof we have of the effectiveness of Mr Gandhi's presence. Let us carefully gauge the situation, and proceed carefully. To interfere with Mr Gandhi is out of question, unless the government is prepared to throw the entire population of India into an uproar. The planter cannot lord it over hereafter and he will continue to fret and foam.

The Government must hurry on the enquiry with extreme promptitude, act up to the recommendations calculated to remove the grinding oppression to which people are subject. We appeal to the Government, not to be led into any unnecessary meddling with Mr Gandhi following the advice of the Anglo-Indians."

की और सरकार से पूछा कि ऐसे कब तक सरकार ऐसे धमकीवाजा की बात बर्दाश्त करती है।

मागपुर के 'हितवाद' ने ता १६ ६ १७ के अंक में 'पापेलीयर' इत्यादि पत्रों के महात्मा गांधी के विषय के लेखों पर समालोचना करता हुआ लिखा—

"A noble sainted hero who has worked the white flower of blameless life, that is how India regards Mr Gandhi. It will be a terrible day not only for India but for England also if owing to the vilification of a few Anglo-Indian journals and sordid self-interested spite of handful of Europeans, the Government is foolishly persuaded to translate the hero into a martyr."

बर्बाद—“भारतवर्ष में गांधी को एक महात्मा समझता है। भारतवर्ष और विद्यमान दोनों के लिए यह बहुत बड़ा दुःखिन होता कि जब कुछ अंगरेजी पत्रों की दालिमों से और अन्य मीन बुद्धिवाले स्वार्थी अंगरेजों के कहने पर सरकार उस महात्मा पर किसी प्रकार हाथ छोड़ेगी।”

बंबई के 'यंग इण्डिया' (Young India) न ता ६ ६ १७ को या लिखा—

"It is all very well for Mr Irwin to prate as he thinks. But the question is whether the Bihar Government will put up with the impertinent factory manager who has chosen an impudent way of telling the Government what it should do or should not do."

बर्बाद—“मि इर्विन जो चाहे कह सकते हैं पर प्रश्न यह है कि बिहार सरकार ऐसे सोख कोश्रीवाले की बात को जो इस तरीके से सरकार को कहता है कि उस क्या करना और क्या न करना चाहिए बर्दाश्त करता है या नहीं।”

planters. Their threat of taking the law into their hands is as amusing as it is undoubtedly reprehensible."

वर्षात्— 'कोई इस बात को विश्वास नहीं कर सकता कि मि गांधी मजदूरों को बर्बाद करने को मजबूर रहे हैं। उनका सिद्धांत है कि सब अवस्था में अहिंसा बर्तन है। पर यदि मजदूरों के साथ बुर बर्तन के विषय में जो शिकायतें की जाती हैं वे सच हैं तो मि गांधी उन्हें अवश्य ही काट निकालने और इसलिए उनकी जांच नीसबरी को कभी बर्बाद नहीं बन सकती। उनकी यह धमकी कि वे कानून को अपने हाथ में ले लेने उतनी ही हास्यास्पद है जितनी कि वह छाछनीय है।

मंत्रालय के 'न्यू इंडिया' (The New India) ने लिखा—

"To attribute as Mr Irwin did, the recent incendiarism to Mr Gandhi's presence for or near or to his influence however remote, is distinctly malevolent"

वर्षात्— 'मि इर्विन का यह कहना कि मि गांधी की उपस्थिति के कारण ही कोटियाँ जली हैं साफ बहानीबारी के कारण है।

मंत्रालय के 'हिन्दू' (The Hindu) ने लिखा—

"The situation in Bihar regarding the grievances of the *muslims* and Mr Gandhi's enquiries thereto appears to be fast developing into a crisis of some magnitude. There is reason to believe that the interview arranged by His Honour Sir Edward Gait, Lieutenant-Governor was to discuss with Mr Gandhi the undesirability of the latter continuing his investigation into labour condition in European Indian plantation. The Indian public will await the result of this interview with anxiety for they feel that it would be a pity if such an enquiry conducted on strictly impartial, if humanitarian lines as the one which Mr Gandhi has taken upon himself, were to be abruptly forbidden simply because vested interests strongly oppose it."

इसका भावार्थ यह है, 'जम्मारन में मि गांधी रैयनों के कुछ सम्बन्धी को जांच कर रहे हैं उसमें वहाँ की स्थिति बहुत कठिन होती जा रही है। धातूम होता है कि सर एडवर्ड गेट न मि गांधी के साथ जो मुलाकात मुकर्रर की है वह इसलिए है कि उस बात पर विचार किया जाय कि मि गांधी का जम्मारन में रहना उचित है या नहीं। सर्व साधारण इस मुलाकात के मनीज की राह जोहने रहेंगे क्योंकि उनकी धारणा है कि जो जांच मि गांधी ऐसी निरपेक्षता से कर रहे हैं उसका स्वाभाविक रोक रोक दिया जाना बड़ दुःख की बात होगी।

वर्षात् के 'मंसज पब्लिक मी इमी प्रचार मि इर्विन की चिट्ठी की बड़ी ममानोचना

की और सरकार से पूछा कि इसे कब तक सरकार ऐसे बयक्रीबाजों की भाग बर्बात करती है।

नागपुर के 'हितवाह' ने ता १६ १ १७ के अंक में पायोनीयर इत्यादि पत्रों के महात्मा गांधी के विषय के लेखों पर सवालिया करते हुए लिखा—

"A noble sainted hero who has worked the white flower of blameless life, that is how India regards Mr Gandhi. It will be a terrible day not only for India but for England also if owing to the vilification of a few Anglo-Indian journals and sordid self-interested spite of handful of Europeans, the Government is foolishly persuaded to translate the hero into a martyr

जवाब—“भारतवर्ष में गांधी को एक महात्मा समझता है। भारतवर्ष और विदेशों दोनों के लिए यह बहुत बड़ा दुःखिन होगा कि जब कुछ अंगरेजी पत्रों की गालियों से और अन्य नीच बहिवारे स्वार्थी अंगरेजों के कहने पर सरकार उस महात्मा पर किसी प्रकार हम छोड़नी।

बंबई के 'यंग इण्डिया' (Young India) ने ता ६ १ १७ को यों लिखा—

It is all very well for Mr Irwin to prate as he thinks. But the question is whether the Bihar Government will put up with the impertinent factory manager who has chosen an impudent way of telling the Government what it should do or should not do."

जवाब—“मि इरविन जो चाहे कह सकते हैं पर प्रश्न यह है कि बिहार सरकार ऐसे दोख कोठीवाले की बात को जो इस तरीके से सरकार को कहता है कि उस क्या करेगा और क्या न करेगा चाहिए बर्बात करता है या नहीं।

सोलहवीं अध्याय जाँच कमेटो की नियुक्ति

इस पत्र में इस प्रकार की भूमि सब रही थी और ता ४ ६ १७ को सर एडवर्ड वेट महात्मा जी के साथ सम्मेलन की स्थिति पर बातें और परामर्श कर रहे थे। हम लोग अपने-अपने स्थानों पर ४ जून को पहुँच गये थे और संघा के समय प्रतिभाग रांची से तार की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम लोगों के मन में तरह-तरह की भावनाएँ उठ रही थीं जिस प्रकार सरकारी अधिकारियों ने कास्मनिक असांति और बाबाएँ देख उन्हें दूर करने के लिए सहस्रशत गांधी जी को सम्मेलन से हटाने का यत्न किया था उसी प्रकार हम लोग कास्मनिक बहिष्कार की आज्ञा का अनुसरण कर रहे थे। बहिष्कार की आज्ञा का मय नहीं था केवल एक प्रकार का कर्तव्य-भाव ही रहा था। हृदय में उच्छ्वास और अभिमान की तरफें उठ रही थी। उसी प्रकार सोचते-विचारते भावनाओं में गोले लगाते ४ जून की रात कट गई। ता ५ जून को ८ बजे मधेरे एक तार आया दिखाई पड़ा। उस उस ओर सब कं सब बैठ पड़े। जब तक वह तार खोलकर पढ़ा नहीं गया हृदय में बड़ा उद्वेग था। पर तार के पढ़ने से कुछ संतोष नहीं हुआ क्योंकि कोई बात साफ-साफ नहीं लिखी थी। तार में केवल इतना ही लिखा था कि आज की मुलाकात अनोपग्रह है फिर कल मिसमा है। फिर ९ बजे से हम लोग दूसरे तार की उसी प्रकार बात देखने लगे। आज बिना उस प्रकार उद्दिष्ट नहीं था और वे भावनाएँ भी उस प्रकार नहीं उठ रही थी पर अभी तक पूरी मानि न थी। और कौतूहल बराबर बना रहा। ता. ६ जून भी उसी प्रकार बीत गई ७ जून को महात्मा जी का तार मिला कि हम शाम ८ जून को रांची में वापिस आवम।

४ जून से ६ जून तक सर एडवर्ड वेट तथा कौन्सिल के सदस्यों से महात्मा जी बातें करते रहे और अन्त में यह निश्चय हुआ कि एक जाँच कमिटी नियुक्त की जायगी जिसमें महात्मा गांधी भी सम्मिल रहेंगे। अन्य सदस्यों के नाम भी उसी समय निश्चित हुए और उनकी अनुमति गयी रहने के कारण सरकार ने यह निश्चय किया कि जब तक अनुमति न आ जाय यह लहर प्रकाशित न की जाय। रांची जाने के समय आम्सलान स्टेशन में महात्मा जी की बर्मपत्नी तथा आपके सुयोग्य कनिष्ठ पुत्र श्रीमंत बबराज गांधी आ मिले थे और सब लोग एक साथ वहीं रांची गये थे। रांची में महात्मा जी बाबू बज क्रिश्नोर प्रसाद भीमनी गांधी तथा श्रीमंत देवराज गांधी सब एक साथ ही पटना ७ जून को मधेरे पहुँचे। वहाँ प्रयाग से र्व मदनमोहन मालवीय फिर आ गये थे। सब लोगों से घेंट करके ८ जून को महात्मा जी पाने में गये और संघा समय बतिया पहुँचे।



भस्माज-भावाग्रह में महात्मा गांधी अपनी कर्म-कठिनी के साथ

यहाँ पहले ही समाचार आ चुका था कि इस बार श्रीमती गांधी भी आने वाली हैं इसलिये स्टेशन पर बहुत भीड़ हुई। लोगो न बड़े धूमधाम से उनका स्वागत किया। श्रीमती गांधी भी बर्मिंघम की एक दूसरी कोठरी में रहने लगीं।

इस मरकार के मना करने पर भी न मालूम पन्ने के एमोसिएटेड प्रेस के संवाददाता को कहीं से खबर मिल गई और उसने ७ जून का तार से माग कि सरकार बर्मीसम नियुक्त करेगी। यह समाचार ८ जून के पत्रों में छप गया और सरकार को इसमें बहुत मूर्ख पीछ पड़ी। ता ११ जून को सरकार की ओर से एक प्रतिवाद इस प्रकार का प्रकाशित हुआ—

“The attention of the Government of Bihar and Orissa has been drawn to the communication dated June 7th on the subject of the agrarian situation in Champaran which emanated from Bankipur correspondent of the Associated Press. It was published in several newspapers of June 8th. The communication was made without the knowledge or authority of the Local Government and contained various incorrect and misleading statements. The Local Government intend to appoint a Committee to enquire into the relations existing between the landlords and the tenants of the Champaran District and will shortly announce its constitution and terms of reference.”

अर्थ—“बिहार और उड़ीसा की बर्मिंघम का ब्याम चम्पारन की वृषि-सम्बन्धी अवस्था पर पत्रों में जो एक मवाद निकला है उसकी ओर आकर्षित हुआ है। यह एमोसिएटेड प्रेस के बाँकीपुर के संवाददाता न ७ जून को मना है और वह कई एक अवधारों में ८ जून को प्रकाशित हुआ है। यह मवाद सरकार के बिना आने और बिना आदेश के ही प्रकाशित हुआ है और इसमें बहुत सी बातें गलत हैं। प्रांतिक सरकार बर्मीसम की ओर रबर्तों के वर्तमान सम्बन्ध के विषय में जाँच करने के लिये एक कमेटी नियुक्त करने का विचार कर रही है और छीम ही इसने मेम्बरों के नाम और कार्य प्रकाशी प्रकाशित करेगी।

ता ११ १२ का सरकारी मन्तव्य जिसमें कमेटी की नियुक्ति की सूचना और सदस्यों के नाम दिये हुए थे छप गया।

ता १२-१३ को जब महात्मा गांधी आने के लिये प्रस्तुत हो रहे थे हम सोच भी तरह-तरह के विचार कर रहे थे। ता ८ जून का जब यह वहाँ से नगरबाद होने के बरत मणलीक मुपुन और सदस्य बेलिया ५ बज लौट आये पर इसी के बीच में फितना बल्लर पड़ गया। आ उस दिन एक प्रकार अनियुक्त होकर मर मरकब गेट के पास बुलाये गये थे वही आज चम्पारन की बुद्ध-निवारिणी कमेटी के सदस्य बनकर आये।

चम्पारन में महात्मा गांधी

जैसे ही पूछ सकते हैं कि इसका कारण क्या है। मन्ने हुबय से रीयों की दुख भाति की मनोकामना और साथ ही नीलबन्ने के प्रति किसी प्रकार के हिंसक विचार को न जाने देने का बृह सकस्य अपन सिद्धांत और कर्तव्य-वाक्यार्थ दुख सहन करने के लिए प्रस्तुत रहता सत्य पर कर्म विश्वास और उसके सामने पुम्बी की अग्य अनित्यों से निर्भीकता—जस इन्ही गुणों के कारण एसा परिवर्तन समन हुआ। इन्ही पर आकाङ्क्ष होने को सत्याग्रह कहते हैं।

कमेटी नियुक्त होन का समाचार पाते ही ऐल्को-इण्डियन पक्षो न कोनाहाल मचा दिया। ता १० जून के अपने अक में पायोनीयर, स्टेसमैन और इंपनिशमैन ने एक स्वर से किर साऊ-साफ लिखा कि अब महात्मा गांधी को चम्पारन में हुटा देना ही संमत है क्योंकि कनिटी हो जाने पर उनके यहाँ रहने की आवश्यकता नहीं। वे यह नहीं जानते थे कि महात्मा गांधी भी कमेटी के एक सदस्य नियुक्त हुए हैं। ता ८ जून को खबर पाते ही कम्पकले के यूरोपियन एसोसिएशन (European Association) के मंत्री मि एलेक मार्श (Mr Alec Marsh) ने यह पत्र भेजा जिसमें उनकी पहली कार्रवाइयो का भी पता चलता है—

"I have the honour to address you by direction of the Council of the European Association with reference to Mr Gandhi's visit in Champaran District and the matters that have arisen in consequence of his presence. On the 3rd May last I telegraphed you a copy of a telegram dispatched to the Government of India regarding the grave situation in the Champaran District and on the 4th May I forwarded you a copy of letter no. 1575 addressed to the Government of India regarding the same matter

"My Council observe with great satisfaction the decision of your Government to appoint a committee to enquire and investigate into the relations between landlords and tenants in the Province of Bihar and Orissa.

"My Council are of opinion that terms of reference should be as wide as possible so as to compromise not merely the questions which have resulted in the appointment of the committee but any which have actually proved a source of trouble in the past or may do hereafter. It is extremely important that so far as can possibly be now effected all grievances real and imaginary should be finally enquired into and removed.

I am also directed to urge that the enquiry should be held in public and not in camera. Proceedings of this nature in camera

invariably afford ground for criticism that there is something to be concealed from the public that some person is being sheltered. In a matter of this kind the Council consider that the public should be permitted to form its own opinion.

My Council desires to impress on your Government that Mr Gandhi having completed his self-appointed task of investigating the relation between the landlords and the tenants in the Champaran District and having submitted his report to you in his letter of May 15th, there is no further necessity for his presence & that District Your Government are doubtless aware of the grave anxiety existing among the planting community that serious trouble may arise at any moment. Also that the opinion is generally held by the same committee that the continued presence of Mr Gandhi and his entourage in Champaran is likely to precipitate serious trouble in various directions. My Council would, therefore, urge upon the Government as strongly as possible that Mr Gandhi and his entourage be required by Government to remove themselves from the Champaran District except and in so far as Mr Gandhi's presence may be desired by the proposed committee.

जबाँबू— मुराविजन एसोसिएशन की ओर से मेरा सम्मान है कि गांधी जीर उनकी बाँब के सम्बन्ध में यह निवेदन है कि मैंने ३ मई को भारत सरकार के पास सम्मान की स्थिति सम्बन्धी तार की नकल भेज दी है और ता ४ को उनकी विषय में सरकार के पास भेज दिये पत्र की भी नकल भेज दी है। मेरे निवेदन को यह सूचना बहुत सतोष हुआ है कि आपकी सरकार ने बिहार के जमींदार और रैयतों के सम्बन्ध के विषय में जाँच करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की है। हम लोगों की राय है कि कमेटी को जहाँ तक हो सके सब बातों की जाँच करने का अधिकार दिया जाय ताकि फिर कोई लगवा बाकी न रह जाय।

“हम लोगों की यह भी राय है कि यह जाँच जल्द तरीके से हो। इस प्रकार की जाँच यदि बन्द करने में होती है तो सर्वसाधारण को शक रह जाता है कि इसमें कुछ ऐसी बातें हैं कि जिनको छिपाया आवश्यक है जबकि कुछ लोगों का बचावा है। इसलिए सर्वसाधारण को अपनी स्वतंत्र राय कायम करने का मौका देना चाहिए।

“हमारा सादरपूर्वक यह कहना है कि जब कि गांधी ने अपनी जाँच अन्त कर ली थी और आपकी सरकार में उसकी रिपोर्ट ता १३ मई को भेज दी है तो ऐसी अवस्था में बन्दे वहाँ अब ठहरने की कोई आवश्यकता नहीं है। सरकार से यह बात छिपी नहीं है कि वहाँ के मौजदर किस प्रकार से पहरा रहे हैं और उसको यह है कि कि गांधी जीर उनकी

चम्पारन में महात्मा गांधी

साधियों के रहने से बलवा किसी समय हो सकता है। इसलिए मि गांधी और उनके साधियों को सुरक्षित हटा देना चाहिए और मि पाथी कमेट्री की बखरत के सिधाय और किसी काम के लिए वहाँ न रहे।

इस पत्र की आलोचना करते हुए कमरतो के 'डेली न्यूज' (The Indian Daily News) ने यह लिखा—

"Now that the Bihar and Orissa Governments have decided to appoint a small committee of enquiry to investigate the whole question of relations between the landlord and the tenant in the province, it seems impossible that they can allow a Roving Commission to an agitator who has to make his case good or stand discredited."

अर्थात्—“जब बिहार सरकार ने वहाँ के जमींदारों और रैयतों के सम्बन्ध के विषय में जाँच करने के लिए एक कमेट्री नियुक्त कर दी तो वह अवश्य जान पड़ता है कि वहाँ की सरकार ऐसे आदमक को वहाँ बनने की आज्ञा देगी जिसको अपनी बातों को सच्चा साबित करना अवश्या मुश्ल बनाना है।”

अफसोस ! कमेट्री के लिए भी महात्मा गांधी की आवश्यकता पड़ गई और यूरोपियन एग्रीविशन् की आवरिक इच्छा कि कमेट्री की जाँच महात्मा जी के हटा दिये जान के बाद बारम्ब हो पूरी नहीं हो सकी और भी अच्छा कि (Roving Commissioner) परिवाक कमिशनर की सब बातों को कमेट्री ने सत्य ठहराया। कमेट्री की नियुक्ति के सम्बन्ध में बिहार सरकार ने एक बखतब्य वा १ ६ १७ को निकाला और वह वा १२ ६ १७ के समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ। उस बखतब्य से ही स्पष्ट मानून होता है कि चम्पारन में रैयतों की शिकायत कुछ गई और आशोकन करने वालों की कल्पना-मात्र न थी। उसे यहाँ उबुव कर देना आवश्यक है।

बिहार सरकार का मतब्य इस प्रकार था—

On various occasions during the past fifty years the relations of landlords and tenants and the circumstances attending the growing of indigo in the Champaran District have been the cause of considerable anxiety. The conditions under which indigo was cultivated when the industry was flourishing required re-adjustment when it declined simultaneously with a general rise in the prices of foodgrains, and it was partly on this account and partly owing to other local causes that disturbances broke out in certain indigo concerns in 1908. Mr Gourlay was deputed by the Government of Bengal to investigate the causes of the disturbances and his report and recommendations were considered at a series of conferences presided over by Sir Edward Baker and attended by local officers of Government and represen-

tatives of the Bihar Planters Association

The result of these discussions revised the conditions for the cultivation of indigo in a manner calculated to remove the grievances of the *ryots*. The revised conditions were accepted by the Bihar Planters Association.

(2) In 1912 a fresh agitation arose connected not so much with the conditions under which indigo was grown, as with the action of certain factories which were reducing their indigo manufacture and taking agreements from their tenants for the payment in lieu of indigo cultivation of a lump sum, in temporarily leased villages or of an increase of rent in villages under permanent lease. Numerous petitions on the subject were presented from time to time to the local officers and to Government, and petitions were at the same time filed by *ryots* of villages in the north of the Bettiah Sub-Division in which indigo had never been grown, complaining of the levy of ~~absurd~~ or illegal additions to rent, by their leaseholders, both Indian and European. As the issues raised by all these petitions related primarily to rent and tenancy conditions and as the revision of the settlement of the district was about to be undertaken, in the course of which the relations existing between landlords and tenants would come under detailed examination, it was thought advisable to await the report of the settlement officers before passing final orders on the petitions. The revision settlement was started in the cold weather of 1913. On the 7th April, 1913 a resolution was moved in the local Legislative Council asking for the appointment of a mixed committee of officials and non-officials to enquire into the complaints of the *ryots* and to suggest remedies. It was negatived by a large majority including 12 out of the 16 non-official members of the council present, on the ground that the appointment of such a committee at that stage was unnecessary as the settlement officers were engaged in the decision of the questions at issue and an additional enquiry of the nature proposed would merely have the effect of further exacerbating the relations of landlord and tenant, which were already feeling the strain of the settlement operations.

(3) The settlement operations have been now completed in the northern portion of the districts and are approaching completion in the remainder and a mass of evidence regarding agricultural conditions and the relations between landlords and tenants has been

collected. A preliminary report on the complaints of the tenants in the leased villages in the north of the Bettia Sub-Division in which no indigo is grown has been received and action has already been taken to prohibit the levy of illegal cesses (cases) and in the case of the Bettiah Raj to review the terms of the leases on which the villages concerned are held. As regards the complaints of the ryots in other parts of the district the final report of the settlement officer has not yet been received, but recent events have again brought into prominence the whole question of the relations between landlords and tenants, and in particular the taking of agreements from the ryots for compensation, or for enhanced rent in return for the abandonment of indigo cultivation. In these circumstances and in reference to representations which have been received from various quarters that the time has come when an enquiry by a joint body of officials and non-officials might materially assist the Local Government in coming to a decision on the problems which have arisen, the Lieutenant Governor-in-Council has decided without waiting for the final report of the settlement operations to refer the questions at issue to a committee of enquiry on which all interests concerned will be represented.

(4) The following committee has accordingly been appointed with the approval of the Government of India. President Mr F G Sly C.S.I Commissioner Central Provinces. Members The Hon. Mr L.C. Adami, I.C.S. Superintendent and Remembrancer of Legal Affairs, Bihar and Orissa. The Hon. Raja Harihar Prasad Narayan Singh, Member of the Bihar and Orissa Legislative Council, the Hon. Mr D.J. Reid Member of the Bihar and Orissa Legislative Council, Mr G. Raley I.C.S. Deputy Secretary in the Finance Department of the Government of India and Mr M.A. Gandhi, Secretary Mr E.L. Tanner I.C.S. Settlement Officer in South Bihar

(5) The duty of the Committee will be—

(a) To enquire into the relation between landlords and tenants in Champaran District, including all disputes arising out of the manufacture and cultivation of indigo

(b) to examine the evidence on these subjects already available, supplementing it by such further inquiry local and otherwise as they may consider desirable and

(c) to report their conclusions to the Government stating the measures they recommend in order to remove any abuses or grievances which they may find to exist.

The Lieutenant-Governor-in-Council desires to leave the committee a free hand as to the procedure they will adopt in arriving at the facts. The committee will assemble about the 15th July and will it is hoped complete their labours within three months.

अर्थ— गठ पचास वर्षों में चम्पारन जिले में कई बार अमीशर और रैम्लो के बीच के सम्बन्ध तथा नील उपजाने की घनों के कारण सरकार के मकल नरपुत्र हुआ है। जब नील की विचारण अच्छी हालत में थी तब जिन घनों पर नील उपजाया जाता था उनमें उस समय कुछ बदल-बदल करने की जरूरत पड़ी जब कि उनकी निजामत बन गई और माध-माध गले का काम बन गया। और कुछ बरा में इसी कारण में और कुछ बरा में कुछ हमारे स्वाधीन कारण में नील को कई कोठियों में मन् १९०८ में हूयाया हुआ गया। बलात्क सरकार की ओर में बलात्क के कारणों के विषय में अनुसन्धान करने के लिए मि. पोर्टल नियुक्त किए गए और उनकी रिपोर्ट और मि. एडवर्ड बकर (Sir Edward Baker) की सम्मेलन में कई काफलों में विचार किया गया। इन काफलों में स्वाधीन सरकारी कर्मचारी और बिहार प्लांट्स एग्जामिनेशन के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

इन विचारों का मतीका यह हुआ कि नील की खेती करना की जा सकेगी उनमें इस प्रकार के बदल-बदल किये गए जिसमें समझा गया कि रैम्लो के कुछ दूर हो जायेंगे। बदली हुई घनों का बिहार प्लांट्स एग्जामिनेशन ने बहुत कर किया।

(२) मन् १९१२ में एक दूसरा आयोग गठ करा हुआ। इसका सम्बन्ध नील उतारना की घनों में उठना नहीं था जिसका कि चन्द काठियों की कार्यवाही में या नील का विचारण को कम कर रहे थे और चम्पारन टोके के याँबा के रैम्लो में नील की खेती से छुटकारा पान के बड़ों में एकमुक्त रुपये के रहे थे और मुकदमी गाँवों के रैम्लो में बाबू मुखारी का इन्चाफा बने के लिए सत्ता लिखा रहे थे। इस विषय में जितनी ही दरकवाले स्वाधीन अफसरों तथा गवर्नमन्ट के पास समय-समय पर भी गई। उन्ही समय बनिया सब विधीमन के उत्तर के रहने वाले रैम्लो में भी अच्छी नील की खेती कभी मारी हुई थी दरकवाले की जिनमें 'अबबाब' बने के विषय में हिन्दुस्तानी तथा यूरोपियन टेनेंटारों के जिलाधिकारियों की गई थी। चूंकि इन सब दरकवाला में की गई रिपोर्टों में मुख्यतः माधमुखारी और टेनेंसी (Tenancy) की हालतों में सम्बन्ध रखती थी और चूंकि इन जिले में फिर सब बन्दोबस्त शुरू होनेवाला था जिसमें अमीशरों और रैम्लो के सम्बन्ध के विषय में पूरी तरह में जीब करने का मौका बालबाला था इसलिए यह मुतासिब समझा गया कि

उन दरखास्तों पर आखिरी हुक्म देन के पहले सैटकमेण्ट अफसर की रिपोर्ट की इंतजारी की जाय। डिबीजन बम्बोबस्त का काम स १९१३ ईस्वी के आड़े में शुरू किया गया और ७ अप्रैल १९१५ ई. को स्थानीय व्यवस्थापिका सभा में एक प्रस्ताव हम आसन का पेश किया गया कि रैयतों की शिकायतों की जाँच करन तथा उनके निवारण का उपाय बतमान की नीयत से सरकारी और गैरसरकारी लोगों की एक कमेटी म्यूचरर की जाय। यह प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया जिसमें १५ उपस्थित गैरसरकारी सदस्यों में से १२ ने इसके विरुद्ध सम्मति दी और इसका कारण यह बतलाया गया कि उस समय कमेटी नियुक्त करना अनावश्यक था क्योंकि जो सवाल पेश था उनके निपटारे के लिए जिन बाधा की बबरत थी उनको सैटकमेण्ट अफसर इकट्ठा कर रहे थे और इस नई जाँच से जमींदार तथा रैयतों का आपस का सम्बन्ध बिध पर सैटकमेण्ट की कार्रवाईसों का असर पड़ ही रहा था बुरा हो जाता।

(१) जिले के उत्तरी भाग में बम्बोबस्त का काम अब चलन हो गया है और बाकी हिस्से में भी अब ख म हो चला है और खेती की हाफ्तों तथा जमींदार और रैयतों के आपस के सम्बन्ध के विषय में बहुत से सबूत इकट्ठ किये जा चुके हैं। बतिया सब-डिबीजन क उत्तर भाग के ठके के गाँवों की शिकायतों के सम्बन्ध में एक प्रारम्भिक रिपोर्ट आ चुकी है और माजामज सेमों की बमुकी के रोकन के विषय में कार्रवाई भी की जा चुकी है। और बतिया राज्य के विषय में यह निष्पत्ति किया गया है कि उन सत्तों पर फिर से नजराना की जाय जिस पर वे गाँव ठके पर दिय गये हैं। जिले के दूसरे भागों के रैयतों की शिकायतों के सम्बन्ध में सैटकमेण्ट अफसर की रिपोर्ट अभी नहीं आई है पर हाल में जो बटनार्ड हुई है उनसे वहाँ क जमींदार तथा रैयतों के आपस के सम्बन्ध का सारा सवाल बिसयकर यह बात कि मीरु होन में छत्कारा पान के बहाने में रैयतों में डरबाना बन या इजाजत लगाय देन के लिए सट्टा मिलबाय गम है जोग में फिर नजरों के सामन आ गई है। एसी हालत में उन दरखास्ता पर विचार करके जो कई जगहा में आई है और जिनमें कहा गया है कि अब वह समय आ गया है जब कि सरकारी और गैरसरकारी लोगो की एक कमेटी की जाँच से उपस्थित समस्याओं की भीमामा न सरकार का कामी भइर निक सकती है अधिण्टेन्डन्स ने अपन काउन्सिल की राय में यह तयबीज किया है कि बिना सैटकमेण्ट की आखिरी रिपोर्ट की इंतजारी बिध हुए जयन की इन सब बाटों को एक कमेटी क हवाफ किया जाय जिसमें उन सब अधियों क मजबन हा जिनको हम मामले में सरोकार है।

(४) हमनिए नीच लिखे हुए सदस्यों की एक कमेटी भारत सरकार की मंजूरी से नियुक्त की गई है। नि एफ. जी. सलाई मी एम. आर्. (Mr F.G. Sly C.S.I.) बरिस्टर, मध्य प्रदेश राजस्थान राज्य नि एफ. मी. आशानी आर्. मी. एम. बिहार आर्. कानून विभाग के क्लर्क एंडेन्स तथा अफसर (Mr L. C.

Adams I C. S.) माननीय राजा हरिहर प्रसाद नारायण सिंह बिहार कौशिक के मेम्बर माननीय मि डी ज रीड (Mr D J Reid) बिहार कौशिक के मेम्बर मि बी रेनी आई सी एस (Mr G Rainy I C S) भारत सरकार के फाइनांस विभाग के डिप्टी सचिव और एस के राणी—कमेटी के कमिशनर तथा मि ई एक टनर आई सी एस (Mr E.L. Tanner I C. S) पब्लिश बिहार के स्टैटिस्टिकल बफसर, सक्सेन्टी नियुक्त किये जाते हैं।

(५) कमेटी के काम में होय—

(अ) सम्पत्ति जिनके क जमींदारों तथा रैयतों के बीच के सम्बन्ध के बिषय में तथा नीस के उपजान और उनके तैयार करने के सम्बन्ध में जो सत्य हुआ करता है उनके बिषय में जाँच करना।

(ब) इन सब बिषयों में जो सबूत मौजूद हैं उन पर विचार करना अगर मुना व समझा जाय तो कमेटी स्थान पर जाकर या बूझरी तरह से और जाँच करके और भी सही इकट्ठा कर सकती है।

(ग) अपनी जाँच के परिचाय को सरकार में पेश करना तथा जा शिकायत या तकलीफें उनकी समझ में ठीक निकलें उनके निपटारे के लिए उपाय बताना। कमेटी की जाँच का तरीका क्या होगा इसके निश्चय करने में कौशिक सहित लफ्टिनेन्ट-गवर्नर कमेटी को पूरी जाजावी देते हैं। कमेटी की बैठक ता १५ जुलाई के लगभग शुरू होगी और जाया की जाती है कि तीन महीन के भीतर यह अपना काम खतम कर दगी।

यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि माननीय राजा हरिहर प्रसाद नारायण सिंह के बख्श हो जान पर उनका स्थान पर कौशिक के माननीय राजा हृदयानन्द सिंह की ज कमेटी के सदस्य नियुक्त हुए। कमेटी के नियुक्त होने पर प्रायः सभी समाचारपत्रों ने इस बिषय में आलोचना की। अंगरेजी वर्षों में भी महारामा बायी का सदस्य बनाया जाता पसन्द न करन हुए भी सब बातों का विचार कर उनकी नियुक्ति का बिरोध न किया।

कमन्स के 'स्टैंड्समैन' ने ता १५ १ १७ को सरकारी मन्तव्य की जाओचना करते हुए लिखा—

"The selection of the members has been admirably made. The President Mr Shy distinguished himself by excellent service on the Public Service Commission and some special qualification can be discovered in each member of the Committee not excluding Mr Gandhi whose appointment is a bold and judicious stroke."

बर्नाल्—मेम्बरों का चुनाव बहुत प्रशंसनीय हुआ है। सम्भाषन मि स्नाइल पब्लिक सर्विस कमीशन में अपना कार्य में मुक्याति पाई है। अग्य सब मेम्बरों में भी

कोई-न-कोई विरोधता है। मि गांधी का चुनाव भी बुद्धिमानी और बुद्धता का परिचय देता है।

इस प्रकार 'पायाबीयर' तथा १४ १ १७ को कमेटी के अध्यक्ष की प्रशंसा की और महात्मा गांधी के सम्बन्ध में यों लिखा —

"As for Mr Gandhi's selection as a member of the committee all that can be said is that it is less open to objection than the licence previously accorded to him to conduct, to the prejudice of the planting community an irregular inquiry of his own."

अर्थात्—“मि गांधी के सेम्बर होने के विषय में केवल इतना ही कहना है कि उनको भीखरों का हानिकारक मनमाना अनियमित अनुसंधान करने देने से उनका सबस्य नियत होना बहुत ही कम हानिकारक है।

कलकत्ते के 'डेली न्यूज' (The Indian Daily News) ने भी जिसकी जाँच में महात्मा गांधी का बम्पारल में रहना काट-छा चुम खाया यों लिखा —

His appointment to the Commission whether it is justified or not by amount of practical knowledge he can bring to bear on its deliberations is, we think, commendable under the circumstances if it tends to induce a greater sense of responsibility"

अर्थात्—“कमेटी में उनकी यथार्थ अभिरक्षा से उसके विचार में क्या फल होता इस दृष्टि से मि गांधी का कमेटी में रहना अच्छा हो या नहीं पर हमार विचार में यदि इनसे उनका दायित्व भाव बढ़ तो वह बहुत ही प्रशंसनीय कार्य हुआ है।

ऐसी समाचार-पत्रों के अनुसार समस्या का चुनाव सन्तोषजनक नहीं था। वे चाहते थे कि उसमें और भी हिन्दुस्तानी रहते तो अच्छा था। बिगपकर मि टैमर का जो १९ ८ के बम्बे के समय बेरिया के सब-डिवीजनल अफसर रह चुक थे मरी का पद पाना बहुतों ने पसन्द नहीं किया। मान ही महात्मा गांधी के कमेटी में रहने से सबको विस्वास था कि उनके रहने से किसी प्रकार का अग्रय नही होना पावेगा और सीपापोली रिपोर्ट नही लिखी जावेगी।

प्रमाण के 'सीडर' ने इस विषय में यों लिखा—

"Mr Gandhi will sit with other members of the Committee and the ~~now~~ can never hope to be represented by a more sincere or wiser friend. We think it would have been well if the Government of Bihar had appointed another eminent Indian and a native of Bihar as a member of the Committee, such as one for instance, as Sir Syed Ali Aram. As it is constituted we do not think its composition is altogether satisfactory"

अर्थात्—“कमेटी में हमारे सेम्बरों के साथ मि गांधी भी बैठेंगे। रैयनों के लिये इनसे

अधिक हिंसा और बुद्धिमान मित्र मिलना कठिन है। इन्हारे विचार से यदि सरकार एक और प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी को जो बिहार का रहने वाला हो जैसा कि मर बाजी इमाम नियम करती तो बहुत अच्छा होता। हम लोग कमेटी के इस सभ्य स पूरे ठीर से संतुष्ट नहीं हैं।

लाहौर के पंजाबी 'The Punjab' न ता० २०-६ १७ के अंक में लिखा—

"The action of Bihar Government in appointing Mr. Gandhi a member of the Committee of enquiry has been eminently statesmanlike."

अर्थात्—"बिहार सरकार का मि बांधी को कमेटी का मेम्बर बनाना बड़ी ही नीतिमता का कार्य हुआ है।"

महाम का 'इन्विजन पेट्रियट' मि टैनर की नियुक्ति से बहुत नाराज था। उसने कमेटी के सम्बन्ध में यह आरोपना ता० १२-६ १७ को की—

"In spite of the Pioneer and Mr Irwin committee of enquiry is to sit in Champaran and adjoining indigo tracts of Bihar and Mr Gandhi is also to be a member. We do not know the position of those who form the committee but we must frankly confess that we are rather concerned to hear that the secretary of the committee was the officer who was on the spot when riots occurred some years ago."

अर्थात्—'पायोनियर' और मि इरविन के सिपाफ होन हुए की चम्पारन और उसके आसपास के नील उपजाने वाले स्थानों में बांध करन के लिए एक कमेटी सभ्य हुई है और मि पाबी उसके मेम्बर है। हम और सभ्यों के बारे में कुछ नहीं जानते पर यह देख मम होता है कि मि टैनर जो उसके सेक्रेटरी है वही मन्बन है जो कुछ वर्ष पहले बनने के समय वहाँ के एक कर्मचारी था।

लाहौर के 'ट्रिब्यून' ने भी सब बातों को विचार कर कमेटी की नियुक्ति पर संतोष प्रकट किया पर सभस्या के चुनाव के बारे में बो लिखा—

"There is absolutely no reason again why the Indian Representation should be so disproportionately small to European official element. Why has not a leader of the position of the Hon'ble Pandit Madan Mohan Malviya or Mr Hasan Imam been put on the committee to give it a thoroughly representative character and inspire public confidence in its working?"

अर्थात्—"हमका कोई कारण नहीं कि हिन्दुस्तानी अपने-बी मरचारी मेम्बरों में इनके कम क्यों हैं। कमेटी में व मदनमोहन मालवीय तथा मि हुसन इमाम जैस कोई नेता क्यों नहीं रख कये। इनके रहने से कमेटी के कामों पर लोगों का अधिक विश्वास होना।"

समकाल के 'बंसासी' न कमीनी की नियुक्ति के लिए बिहार सरकार और सर एडवर्ड गेट को बर्बाद होते हुए महामा गांधी का सदस्य बनाना सरकार के लिए बहुत प्रशंसनीय बतलाया। इसी प्रकार जमुतबाजार पत्रिका' न भी सरकार को बर्बाद हो और सदस्यों के चुनाव से बहुत सलोप प्रकट करते हुए 'पायोमियर' जैसे पत्रों के पूर्व तर्कों का हवाला देकर अपन १२ जून १९१७ के अंक में एक अव्यपूर्ण अग्र-अल लिखा।

पर महामा गांधी की नियुक्ति न मीस्टर मन्जुट नही हुए। मि ज बी जेमसन न जिनका बिक ऊपर आ चुका है ना १२ ६ १७ के स्टुडसमेंन' में एक पत्र छपवाया जिसमें उन्होंने लिखा—

'With regard to Mr Gandhu's appointment to the committee it is difficult to see what his qualifications for the post consist of. He is a complete stranger to the Province and ignorant of its complicated and varied system of land tenure. He came to the District frankly prejudiced in his views on the question which he professed his intentions of making an impartial enquiry. He has spent a considerable time at the head of a band of agitators who by means of exaggerated stories as to his position and authority have attempted to induce the ryots to break their agreements and to ignore the decisions of the settlement and civil courts and have succeeded in raising a considerable amount of racial ill-feeling. As his and his colleagues activities are very important factors in the present relations between landlords and tenants they must inevitably come within the scope of this Committee's enquiry and it would surely be more filling that he should be required to justify his actions and the statements to Government the very point in which this Committee is required to report rather than that he should be put in the judicious position of judging his own case and reporting on the very conclusions and recommendations which he has himself put forward

अर्थ—“मि गांधी के सदस्य होन के विषय में यह नही समझ में आता है कि उनमें इस पद के लिए क्या योग्यता है। वह इस प्रांत में बिल्कुल नय हैं और यहाँ के जमीन सम्बन्धी अतिक्रान्त न बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। वह इस विषय में विषय बाल की निरपेक्ष ओष के बहान में आय उनके विषय में यह पूर्व ग ही पत्र के चुके न। उन्होंने अन्य ऐसे आशक्तों के साथ यहाँ बहुत समय बिताया है जिसमें उनक (मि गांधी के) अधिकार के बार में सम्भी-बोरी बल उड़ाकर रैयतों का अपने मुबाहिदे तोन और सम्प्रदाय तथा दीवानी अशक्तता के रैयतों के बिन्दु बाम करने की उचमाया है और जिन्हें अनदेखी और हिन्दु स्थानियों के बीच आति-विवाद ना सजझा बहा दिया है। चूँकि उनकी और उनके साथियों

की कार्रवाईयों या जकस जमींदार और रैयतो के बीच की अमबन के बिसेप कारण है इसलिए वे कमीशन के सामने अवश्य पेश होंगी। और यह अधिक मुनासिब होगा कि वह अपनी कार्रवाईयों तथा अपने उन बयानों और सिफारिशों की जिन्हें उन्होंने सरकार में पेश किया है धुष्टि कर, न कि वह अपनी की हुई सिफारिशों के बिषय में फैसला कर।

मि जमसन का यह कहना सर्वथा निर्मूलक है कि महात्मा जी चम्पारन का पल लेकर जाये से। महात्मा जी के जो विचार चम्पारन सम्बन्धी हुए वे वहाँ की हामत दसन और मुनन के बाद। महात्मा जी की आरम्भिक रिपोर्ट दसन से सभी समझ जायेंगे कि उन्होंने वहाँ की सब हाकल किम प्रकार जान ली थी और कमेटी की रिपोर्ट में यह भी साबित हो जायगा कि उनकी कहीं सब बातें अच्छरस ठीक निकली।

सत्रहवाँ अध्याय जीव कमेट्री की बैठक

जीव कमेट्री की नियुक्ति हो जाने के बाद महात्मा जी न सोचा कि उसके काम शुरू होने के पहले वह एक बार बंबई प्रांत से हो जाने और इसी बीच में आपके सहकारी भी अपने-अपने घर से लौट जायें। जीव का काम ता १५ जुलाई से होना था और सरकार के मन्त्रिमंडल जीव के बाद अब महात्मा जी को जीव करने की आवश्यकता न रह जाने के कारण ता १२ ६ १७ से रैयतों का इजहार लेना जो उस समय तक जारी था बन्द कर दिया गया। ता ११ ६ १७ को महात्मा जी बंबई प्रांत को चले गए और उनके सहकारी बेठिया से हटकर मांसीहारी चले आये और कमेट्री के सामने क्या सबूत पेश किये जायेंगे इस पर विचार करने लगे। इस समय तक महात्मा जी की अध्यक्षता में प्रायः ५० रैयतों के पूरे बयान और ८० से अधिक रैयतों के सलिप्त बयान किये जा चुके थे। पर ऊपर कहा जा चुका है कि जम्पारन जिले में २८४१ गांव हैं और जो रैयत अपने बयान दे गये थे वे प्रायः ८५० गांव के रहने वाले थे। और उनके बयान प्रायः ६ कोठियों के बरत थे। इसके अतिरिक्त हम लोगों के पास मुकदमे आदि मिस-मिश्र विषयों के कायबों का एक बड़ा ढेर रक्ख गया था। अब तक बयान किये जा रहे थे सहकारियों को इन कायबों की अच्छी तरह रक्खन का अवसर नहीं मिला था। अब बयान मिलना बन्द कर दिया गया तो अवकाश पाकर लोग इनको ध्यानपूर्वक पढ़ने लगे। इन इजहारों और कायबों के डर को देखकर मह निकालना था कि कितने महात्मा और कौन-कौन कागज कमेट्री के वास्तु पेश किये जाने चाहिएँ। ता १२ ६ १७ के बाद बसपि नये बयानों का मिलना बन्द कर दिया गया था पर रैयत अब भी बहुत आया करते थे। उनका कह दिया जाता था कि अब उनका बयान न लिखे जायेंगे और उनके हुजों की जीव कमेट्री के सामने होयी। अब रैयतों को मास्म हुआ कि उनके बयान नहीं लिख जा रहे हैं तो बहुतरा न डाक द्वारा अपनी बुख-बुखानी लिख भरी। कमेट्री के निबल हो जाने पर भी पुमिड के कर्मचारियों ने हमारा पीछा न छोड़ा। किमी पसिम के बारोगा गाहिर न नवर्गमण में यह लखर बेरी कि ता १२ ६ १७ के बाद भी इजहार मिले जा रहे हैं। लखर मिलन पर बानू बजकिप्योर प्रभाव न आ महात्मा जी की अनुपस्थिति में प्रमुख का काम लिया करन न हमका प्रतिबाध किया। इन्हीं कामों में प्रायः दो सप्ताह बीत गये और महात्मा जी ता १८ ६ १७ का बंबई से मांसीहारी लौट आय। इस बार महात्मा जी के साथ सर्वेंट आफ इण्डिया सामाजिकी (Servant of India Society) के संवी डा हरि धी दूख बब एक एम एम जी इन कार्य में महात्मा का इन काम। लौटन पर महात्मा जी भी नवर्ग का देखने-आलन सब यय ।

अम्मारन में बाँच आरम्भ होने के पहले बाँच कमेटी की एक बैठक रांची में होनेवाली थी जिसमें बाँच के कार्यक्रम तथा प्रारम्भिक विषयों पर विचार हुआ जाता था। इस काम के लिए महात्मा गांधी बाबू बजरकिशोर प्रसाद को साथ लेकर ता ५ जुलाई की रात को मोठीहारी से रांची के लिए रवाना हुए। और पटना होते हुए ता ७ जुलाई को रांची पहुँचे। वहाँ बाँच कमेटी की बैठक ता. ११ जुलाई को हुई। उसी दिन वहाँ में बैठकर ता १३ जुलाई को महात्मा जी मोठीहारी वापिस आ गये। यह निश्चय हुआ था कि ता १७ जुलाई से बाँच कमेटी की बैठक बतिया में होगी। मोठीहारी की अगवा बतिया इस कारण से चुना गया कि वहाँ राजधानी होने से आगन्तुक सम्मेलनों के ठहरान का सुबब हो सकता था। कमेटी के अंगरेज सदस्य राजा के अतिथि-गृह में ठहराये गये और बनेसी के राजा साहब के लिए राजमहल में ठहरान का प्रबन्ध किया गया। महात्मा जी अपने घर के साथ उसी पुराने स्थान बाबू हजारीमल की अगवा में आकर ठहरा। महात्मा जी के सिवाय और सब सदस्य ता १४ जुलाई को ही बतिया पहुँच गये। ता १५ जुलाई को सबेरे की गाड़ी में महात्मा जी भी बीमनी गांधी आ बस बाबू बजरकिशोर प्रसाद बाबू परशीमर बाबू अनुसुहारायण सिंह बाबू रामनबनी प्रसाद और मन्त्रक इत्यादि के साथ बेटिया गये और उसी दिन तिपहर का प्रोटेक्टर कुपलानी भी इबदान गांधी और महात्मा जी के पुत्र प्रभुदास गांधी बतिया पहुँचे। कमेटी के सामान्य पक्ष किम जान जाने सबूतों को ठीक करके हम लोग साथ लगे गये। मोठीहारी के आश्रम में छपर के बकीस बाबू सिद्धनन्द प्रसाद को हजहार मिलाने के समय में सहायता रख कर रख गये।

कमेटी की ओर से पहले ही विज्ञापन निकाल दिया गया था कि कमेटी की बैठक अगस्त १५ जुलाई में बतिया मोठीहारी तथा अन्य स्थानों में होगी जिस किसी का अम्मारन सम्बन्धी विषय पर कुछ कहना हो वह लिखकर कमेटी के सभी के पास भेज दे। यही विज्ञापन समाचारपत्रों में छाप दिया गया था और जिस की कचहरियों में बिपटा दिया गया था। जिस तरह रैयनों को इसकी खबर हो गई थी कि ता १५ जुलाई में बतिया में बाँच होने लगी है।

अम्मारन की प्रथा के हृदय में आज क्या-क्या आबनाएँ उठ रही थी इसका कहना कठिन है। वह जान गई थी कि महात्मा जी के आग में उसके बुझ दूर होना और अब देखा कि सरकार की ओर से भी बाँच करने के लिए कमेटी नियुक्त हो गई जिसमें महात्मा जी भी एक सदस्य रहेंगे तो वह बाधा और भी दृढ़ हो गई और ता १५ जुलाई से बतिया में रैयनों की भीड़ होने लगी। गड़कों पर, बाजारों में वहाँ के बिदाक मैदानों में जहाँ दलिय रैयनों की भीड़ लगी हुई है। माना वहाँ कोई भारी मला होना जाता है। महात्मा जी जिस अगवा में ठहरे थे वहाँ का क्या कहना है। वहाँ तो हम लोग इस भीड़ का हटाटा हटान परमान रखने से पर तो भी भीतर जान के किछ रास्ता भिन्न में बटिनाई होती थी।

ता १९ जुलाई को रैयता की भीड़ बहुत ही बड़ बड़ी। लीर लोपो का अनुमान है कि उस दिन १ ०० रैयता से कम बतिया न गये। इधर महात्मा जी चौब कमेटी के सम्बन्ध में आये हुए कावको को पत्रन में लग गये और उनके सहकारियों को दम लग की फुरसत में ली उन्तर रैयता लोग महात्मा जी के दर्शन के लिए व्याकुल थे। चौब कमेटी की बैठक ता १९ जुलाई का होनवाली थी पर किसी अनिवार्य कारण से उस दिन काम आरम्भ न हो सका। महात्मा जी यह चाहत थे कि रैयता लोग किसी प्रकार से निरन्तर रह जायें इसलिये ता १९ जुलाई को सम्मेलन के समय महात्मा जी बाहर आये। उनके साथ ही लोपो की भीड़ और बड़ बड़ी और धर्मशास्त्र की फुसकारी तथा अन्य स्वान लोपो में सर गया। इस अवसर महात्मा जी ने एक छोटे-से व्याख्यान में लोपो का समझाया कि "कमेटी सरकार को और न उन्ही लोपो के दु लो को दूर करके के लिए नियुक्त हुई है। उन लोगो का अधिक सबका व कमेटी की बैठक के निकट जान की आवश्यकता नहीं। जो बयान उनको सिखाना है वह वही जाकर बकीलो के पास सिखावें। इन्ही बातों को फिर बाबू बजकिशोर प्रसाद ने उलटकर समझा दिया। आप हुए रैयता महात्मा जी का मायाय मुनकर धक्का डो गये और अपने घर लौट गये।

उन्तर कहा जा सका है कि कमेटी की ओर न सूचना उसके पास बयान मेजने के लिए पूर्व में निकल चुकी थी। इस मोटिव पर बिहार प्रेसिडेंट एसोसिएशन हो कोटियों के मैनेजर २५ रैयता बतिया राज्य के मैनेजर मि ज जी बिटी सेटमसेष्ट अफसर मि ज ए स्वीनी बतिया के सब-डिबीजनल अफसर मि डब्ल्यू एच लिबिब विरहुत डिबीजन के कमिस्तर मि एल एच मोरमड तथा बतिया के जूतपूर्व सब-डिबीजनल अफसर मि ई एच जैम्सगन ने बयान लिखकर कमेटी के पास भेजा था। बिहार प्रेसिडेंट एसोसिएशन से इस सम्बन्ध में विशेष तप में अपना बलम्य पत्र करने को कहा गया था। पर उनकी ओर से यह उत्तर आया कि हम हम नियम में कोई बलम्य नहीं बना है।

ता १७ जुलाई से बतिया में बहाली का इनहार आरम्भ हुआ। कमेटी की बैठक का प्रारंभ बतिया राज्य स्टेशन के छात्रालय में हुआ था। बीसवग की ओर से मुजफ्फरपुर के प्रसिद्ध बकील मि जी पी केनेरी बैठक में कार्जवाई बलन के लिए नियुक्त हुए थे। रैयता तथा महात्मा जी के सहकारियों को बैठक में जाने के लिए आन दिवट दिया गया था। हम लोपो के समझाने पर ली रैयता की भीड़ में बड़ी नहीं हुई। बैठक की कार्जवाई आरम्भ होने के पड़े ही मध्याह्न पर रैयता अधिक सम्मेलन में आ जम गे। महात्मा जी के सहकारियों में न हो आदमी उन भीड़ की गैरम के लिए नियुक्त कर दिए गये थे। यद्यपि पुलिस का दतबान लूने तीर में अधिक नहीं किया गया था पर वे माद बिबाय में जगह जगह पर तप दिए बड़ थे। कमेटी की बैठक टीक ११ बज दिव को आरम्भ हुई। आना निगन्ड प्रेम समुदायकार पवित्रा तथा बहाली की ओर से कमेटी की कार्जवाई की रिपोर्ट बरन के लिए बिबाय महादयाना आये हुए थे। सब में पड़े मि स्वीनी का इनहार

हुमा और सारा पिन उसका इजहार होगा रहा । ता १८ जुलाई को मि मिनिश और टिपहर को मि मिनी की गवाहियाँ हुई। ता १९ जुलाई को रैयतो की मार मे पं राजकुमार दुबल तथा मग राबत जो पहले एक कोठी के मुमालता रह चुक स और खन बरराय के इजहार लिये गये । ता २ जुलाई को कमेटी की बैठक मुम्तवी रही । ता २१ जुलाई को परमा कोणी के मालिक और मैनजर मि डबल्यू ज एम तथा बठिया कोठी के मैनजर मि एफ यल की गवाही हुई । कमेटी की पाँचवी बैठक ता ३ जुलाई को हुई। आज साठी कोठी के मैनजर मि भी स्टिस और बम्पा कोठी के मैनजर मि ए सी एमल के इजहार लिये गये । कमेटी की छठी बैठक मोतीहारी म ता २५ जुलाई को होनवाली थी इसलिए ता २३ जुलाई की रात को महान्ना जी तथा उनके सहकारी मोतीहारी चले आये ।

मोतीहारी में जी रैयतो की भीड़ बैसी ही थी जैसी बठिया म । यहाँ की बैठक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के आफिस म ता २५ जुलाई को ११ बज मे आरम्भ हुई । आज बम्पारन के क्लकटर मि डबल्यू बी ब्रिकीक प्लैन्टर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि मि ज बी जमसन तथा रायपुर कोठी के मैनजर मि ई एच हडसन की गवाहियाँ हुई । ता २६ जुलाई को मोतीहारी कोठी के मैनजर मि डबल्यू एस डब्लिन न बिमस पाठक परिचित हो चके हैं कमेटी के सामने इजहार दिया । मि डब्लिन के इजहार के पीछे महारना जी तथा अन्य सदस्य बैठिया लौट आये । ता २७ जुलाई को कमेटी का काम बन्द रहा । ता २८ जुलाई को कमेटी के सदस्यों ने परसा कोठी पर बाहर तहकीकात की । यहाँ पर यह कह दना अनुचित न होगा कि बेहतरों म जाने की खबर रैयतों को नहीं दी जाती थी ताकि जैसा कि नीलबर कहा करते थे आन्दोलको को पहले से जाकर रैयतों को सिखा-पढ़ाकर तैयार करके रक्तन का मौका न मिले । पर किसी को तयार करने की बात ही क्या थी ? बिबर कमेटी के सदस्यों की मोटरें चलती उसी ओर भीड़ लग जाती और बिच कोठी पर वे बात उनक पहुँचत ही आस-पास के गाँवों में बिघुत की तेजी के साथ खबर पहुँच जाती थी और वहाँ के रैयत अपनी बुद्ध-बहागियाँ मुनाम के लिए हवारों हवार मा जुत्त म । कोठी वालों को सूचना पहले इसलिए दे दी जाती थी कि बिचसे वे अपन कायज-पत्र रजिस्टर इत्यादि कमेटी के अक्लाफनार्थ प्रस्तुत रलें । इसी प्रकार ता २९ जुलाई को सदस्य कुड़िया कोठी और उसके बेहान में गये और जाँच की । इन यात्राओं में कोठी के कायज बख पाते थे । बिग कोठीवालों के इजहार की जरूरत समझी जाती थी उनक इजहार लिये जल और रैयतों से पूछताछ की जाती थी । कहा जाता है कि इन यात्राओं में जो कुछ कमेटी के मेम्बरों न देखा और मूला उसका उन पर बहुत प्रभाव पड़ा ।

ता ३ जुलाई को कमेटी की बैठक फिर बठिया में हुई । आज मधुबनी कोणी के मैनजर मि एफ धनीबल और उसके मालिक मि डबल्यू डबल्यू कृष के इजहार लिये गये । आज फिर कमेटी के कुछ सदस्य मरहिया कोठी के बेहान में गये और वहाँ की

हाम्म अपनी बीबी बेबी तथा कोठी के रजिस्ट्रारों का मुलाहिजा किया। ता ३१ जुलाई को इसी प्रकार मेम्बर लोग बोकराहा तथा लोहबरीया कोठी के बेहतरों में गये और जाँच की। आज फिर राठ की गाड़ी से खाना होकर महारानी की कुछ सहकारियों के साथ मोतीहारी चले गये। ता १ अगस्त को इनहार का काम बन्द रहा। ता २ अगस्त को कमेटी के मेम्बर तहकीकात के लिए राजपुर कोठी में गये। वहाँ के मेनेजर मि हब्सन ने इसकी सूचना अपने बेहतरों में पहुँच से बरी थी। अतएव रैयतों की समायत प्राप्त पाँच-छ हजार की हो गई थी। ता ३ अगस्त को पिपरा तथा बीबी की तुफ़ी लिया कोठी में तहकीकात हुई। इन कोठियों पर भी तीन बार हजार आदमियों की भीड़ थी। उसी दिन सर्वात् ४ अगस्त को महारानी की मि हब्सन की कोठी पर बसे और ता ५ को वह इनकी अनुमति से उनके एक बड़े राजपुर कौलीनी में बसे और वहाँ जाँच पड़ताल करके तिपहर की गाड़ी से बेतिया वापिस आये। ता ६ अगस्त को राजघाट हरिया कोठी में तहकीकात की गई। ता १४-८ १७ को मि जेमसन का जलहा कोठी के मेनेजर की हस्तियत से फिर इनहार हुआ। इसके बाद और कोई बग़ाही नहीं की गई। महारानी की न कितने ही रैयतों के इनहार और बख़ास्तों के फँसने इत्यादि जिनमें सबसों को आवश्यकता के साथ माफ़ूम हा सचती थी कमेटी के पास मज दिये।

यहाँ पर यह कह देना उचित है कि जिस-जिस दिन बग़ाही के इनहार नहीं हुए बख़ा कमेटी के सबसब बेहतरों में नहीं मज उस-उस दिन उनकी मुठ बैठक हमी, रही और मुजरे हुए सबसों पर बिचार तथा अन्य बातों पर परामर्श होता रहा। इन प्रकार की भी कई बैठकें हुई। उन बैठकों में क्या होता था वह लोगों को मालूम नहीं पर पीछे यह बात प्रकाशित हो गई कि इनही बैठकों में तुफ़ी लिया कोठी के मि हब्सन पिपरा कोठी के मि नीमन तथा मोतीहारी कोठी के मि हब्सन बुलाय गये व और सरहबरी के सम्मुख में उनके और रैयतों के बीच के झगड़ तब करने के लिए मुहूर्त करने का प्रयत्न किया गया था।

यहाँ पर यह भी कह देना आवश्यक है कि महारानी की सरहबरी को बिल्कुल ही न हटाकर उसमें कुछ नमी ही कर हम पर नवी राखी हुए। रैयतों की राह में बहुत कठिनाई थी। उन लोगों ने अपने हाथ काटकर चाहे जबरदस्ती में हा चाहे कुधी में सरहबरी के मुलाहिजा लिख दिये। यह मुलाहिजा जबरदस्ती बख़ा करके दे लिया गया था। यह साबित करने का जोश उन पर था। मैटलमेन्ट अफ़सर ने प्राप्त ममी सरहबरी के मुलाहिजों को आयक ठहरा दिया था और आ लगान हम मुलाहिजा में बर्ब हुआ था वही ममान सबे अनिजान में भी बर्ब दिया था। बंगाल टैन्मी एक्ट की १०३वीं धारा के अनुसार आ कुछ अनिजान में बर्ब होता है उन बख़ाल ठीक मानन का बाध्य है और उसको यत्न साबित करने का बार रैयतों पर होता है। यद्यपि तुफ़ी लिया के भी मुजबर्त में मे पाँच रैयतों के हमबलाह तयफिया हुए थे और केवल बार काफी न हमबलाह ता भी इन मफ़रमों में बहुत खर्च और गरह ब पडा था। उधर कोठी घनी और जोरजाबर,

उसके मैनजर सिद्धि और हाथियार उनके कागज-पत्र सुरक्षित थे। इस रैयत गरीब और कमजोर तथा अधिक्षित और उनके कागज-पत्र का कुछ ठिकाना नहीं था। इस ब-बोज की लड़ाई में मरीजा क्या होता। ईस्वर ही जानता है। पर इन सब बातों से भी अधिक साधन की बात यह थी कि यदि इन सब बारहवेंसी सन्तो को तोड़ने के लिए मुकदम बायर किया जाते तो प्रायः ५० मुकदमे बायर करने पड़ते। उन सब मुकदमों में जिनमें कोठीबाना की हार होती उन्हें वे बिना हार्डकोर्ट तक पहुँचाए बाज मानवाने नहीं थे। पर जो बाज महारपा जी के दिल में सब से अधिक सटखती थी वह यह थी कि यदि इन सगड़ का निपटारा कमेटी द्वारा नहीं हुआ और रैयतों को कचहरियों में बाज की आशयवकता मनी तो रैयत और कोठीबानों में इतना वैमनस्य बढ़ जायगा कि वह एक दूसरे के बन्टर दुमन हा जायेंगे। आपका आशय तो यह था कि रैयतों के बन्ट दूर हो। पर माघ ही मीलबग और रैयतों के बीच मित्रता हो जाय। उनके आपस के सम्बन्ध कुछ हो जायें और वे एक दूसरे की मलाई के इच्छुक हो जायें। दोनों अपने-अपन स्वत्व पर रहें और दोनों के एक दूसरे के प्रतिहिमा के साथ गल्ट हो जायें। पर अब तक कि यह सगड़ा दानो की रास न न मित्रता यह कैसे हो सकता था? इसीलिए महात्मा जी तथा कमेटी के और सदस्य जी जी से चाहते थे कि दोनों दल इस विषय में मुलह कर लें।

कई दिनों की गल्ट बैठकों के पीछे ता १४-८ १७ को मि वैमन के इबहार के बाद कमेटी का काम वहाँ समाप्त हो गया और निरन्तर हुआ कि कमेटी की बैठक अब निरन्तर महीने में रांची में होती। कमेटी के सब सदस्य वहीं-वहीं बसे गए और महात्मा जी भी ता १९-८ १७ का अहमदाबाद के लिए रवाना हुए। इसके बाद स बाबू रामनन्दी प्रसाद तथा केवल चम्पारन में रह गए और अन्य महात्मा कार्यकर्ता भी अपने अपने स्थान पर बसे गए।

ता २२ सितम्बर को महात्मा जी अहमदाबाद से रांची पहुँचे। बाबू बन्किमोत्र प्रसाद भी आपकी आज्ञानुसार वहाँ पहुँचे हुए थे। वहाँ महात्मा जी बाज ही ज्वर में पीड़ित हो गये। पर ज्वर रहता हुआ भी कमेटी के काम को करते गये। रिपोर्ट तैयार करने के लिए कमेटी की कई बैठकें हुई और बारहवेंसी सम्बन्धी प्रश्न को तय करने के लिए मि इबिन तथा अन्य मीलकर फिर रांची तार हाथ बुलाये गये। कई दिनों तक विचार करने के बाद कमेटी ने ता ३ अक्टूबर को एकमत होकर अपनी रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करके ता ४ अक्टूबर को उसे बिहार सरकार में बालित कर दिया। ता १८ अक्टूबर को बिहार सरकार ने कमेटी की रिपोर्ट पर विचार करके अपना मन्तव्य प्रकाशित करने की आज्ञा दी। यहाँ पर इतना ही कह देना उचित है कि सरकार ने कमेटी की प्रायः सभी बातें मान ली।

रांची से महात्मा जी चम्पारन बापिस जाय और १२ अक्टूबर तक वहीं रहे। महात्मा जी के रांची में बापिस आने पर रैयत उनके बर्नानार्थ तथा हम बाज व जाजन के लिए कि कमेटी का निरन्तर बना हुआ उनके पास मुँह-के-मुँह बाज लग। महात्मा जी ने उन लोगों

को रिपार्ट की मुख्य बातें कह दी और इसमें उन्हें बहुत कुछ सम्योप हुआ। हम साथ महात्मा जी को बिहार के छात्रों में अपने वायिक सम्मेलन का समापति बुलाया। यह सम्मेलन भागलपुर में १५ अक्टूबर को होनवाला था। इसलिए महात्मा जी का १९ अक्टूबर को मोतीहारी में भागलपुर गया और वहीं से फिर बम्बई कीट गये। इस बीच में मोतीहारी के माफिस में रहने के लिए बाबू जलकवारी प्रसाद कबीर मुजफ्फरपुर से आगये और व वहाँ रहने लगे।

अठारहवाँ अध्याय जीव कमेटो की रिपोर्ट

ऊपर कहा जा चुका है कि जीव कमेटो के सदस्यों ने अपनी रिपोर्ट दस्तखत करके ता ४ अक्तूबर को सरकार में हाजिर कर दी थी और सरकार ने कमेटो की प्रास-सप्तरी बातों को मंजूर करके इस विषय में अपना मन्तव्य ता १८ अक्तूबर को प्रकाशित कर दिया था। कमेटो की रिपोर्ट बढ़ी होने के कारण यहाँ पर विस्तार में नहीं दी जा सकती ॥ पर उसके सदस्यों ने जो-जो सिफारिश की थी जिन्हें सरकार ने मंजूर करके अपने मन्तव्य में प्रकाशित किया था उनका सारांश नीचे दिया जाता है—

(१) तीन-कठिया प्रवा बाहे मील बोन के लिए या किसी और मसल के पेश करने के लिए हा पूर्ण रूप से उठा दी जाय।

(२) यदि मील बोन के लिए रैयतों से कोई इकरारनामा (सट्टा) लिखाया जाय तो नीचे लिखी हुई बातों पर लिखाया जाना चाहिए—

(क) इकरारनामा पूर्वत स्वेच्छापूर्वक लिखा जाय।

(ख) सट्टे तीन वर्ष से अधिक के लिए न लिखे जायें।

(ग) जिस जल में मील बाना हो उसको रैयत ही चुन।

(घ) जिस मूस्य पर वा दर से मील का पीसा बचना हो उसे रैयत अपनी इच्छा नुसार ठीक करें।

(ङ) मील के पीसों को तोलकर ताम दिया जाय। रैयत यदि राजी हो तो पीसों को काट पर न तोलकर उसकी मनी का अन्दाजा पीसों के द्वारा ठीक किया जा सकता है।

(३) मोतीहारी और पिपरा कोठियों में जो धारदबसी हुई हैं उसमें फी सैकड़ा २६) कम हो जायगा और तुकी किया कोठी में फी सैकड़ा १) कम होगा।

(क) जमहा और सीरणी कोठियों में मोतीहारी और पिपरा कोठिया के हिसाब से धारदबसी कम होगी।

(ख) जिस रैयतों के जित्तियान में तीन-कठिया लगान सबे बन्दोबस्त से दर्ज किया गया है उनको ऊपर के हिसाब से धारदबसी लगान बना पड़ेगा।

(ग) राजधान कोठी न किसी रैयत पर मील के खपान का बाधा नहीं किया है। वहाँ पर धारदबसी न करने की धर्न पर रैयतों ने कोठी के लिए मील करने का सट्टा मिल दिया था। अब वर्तमान बन्दोबस्त में कोठी न धारदबसी के लिए प्रार्थना नहीं की। वहाँ के रैयत अब मील छोड़ बना चाहत हैं। इसलिए उनकी लगान बेसी करने के लिए बन्दोबस्त

में प्रार्थना करन का अवसर दिया जायगा ।

(४) जिन रैयतों न कोठियों को ताबान (नकब वा हुंडनोट के जरिये से) दिया है उनको उस ताबान का बीघाई हिस्सा कोठी से वापस मिलेगा । उन बीघों में जो कोठियों को हाम में टका दिय गये हैं रैयतों से किये हुए ताबान का कुल रूपया बीटा इना पड़ेगा । बतिया राज्य को उन रैयतों से गसलों के मूख बढ़ जान के कारण बन्धोवस्त की कचहरियों द्वारा जो इजाफा सगल मिलगा वह घात वर्ष तक उनसे न लेगा ।

(५) अबदाब खेना पूगत कानून के विरुद्ध है और मजिप्प में किसी रैयत को अपनी बतियान में वर्ज की हुई मालगुजारी के सिवाय और कुछ भी जमींदार को नहीं देना चाहिए ।

(६) बाबिल-कारिज के लिए कारिज से फीस लेना लाबायब है और अन्य लोगों से यह फीस एक निश्चित हिसाब में लेनी चाहिए । रेवेन्यू बोर्ड से कहा जायगा कि वह बेतिया राज्य के बिपय में फीस का हिसाब ठीक कर बने के प्रस्न पर विचार कर और मुकरीदारों से भी इसी हिसाब से फीस लेन की ठाकीए की जाय ।

(७) बेतिया राज्य के इलाकों में जहाँ महम तोड़ दिया जाना चाहिए पर हम बिपय में कोई निश्चित आज्ञा देना उस समय तक मुस्तबी रहे जब तक कि रामनगर राज्य में इस बिपय में पूरी जाँच न हो के ।

(८) मिट्टी का लेम बचने के बिपय में लाइसेन्स जारी करना कानून के विरुद्ध है और यह प्रथा एकदम बन्द हो जानी चाहिए ।

(९) बेतिया राज्य में रैयत बूखों में मासिक का आधा हिस्सा मुनासिब मूख पर जारी करने है पर यदि किसी इलाके में कुछ बाछ कट जाने का मय हो तो बेतिया राज्य के मैनजर रैयतों की बरकबास्तों की हद नियत कर दे सकते हैं ।

(१०) मजेधिया के चलने के लिए गोचर या परती रखने के लिए सब जमींदारों मुकरीदारों और ठेकेदारों के पास खबर भेजी जायगी ।

(११) रैयतों पर जुर्माना करना और उसे बमूस करके से लेना कानून के विरुद्ध है । रैयतों को इस बात की सूचना दे दी जायगी और हमके लिए सब जमींदारों मुकरीदारों और ठेकेदारों को मनाही भेजी जायगी ।

(१२) गाड़ी का सट्टा ५ वर्ष से अधिक का नहीं होना चाहिए और यह स्वेच्छा पूर्वक किया जाना चाहिए ।

(१३) मजदूरी की पूरी-पूरी स्वतन्त्रता रहेगी ।

(१४) मालगुजारी की प्रत्येक किस्म के लिए रसीद देन के बिपय में कमटी न जो सिफारिश की है उसके मुताबिक यदि सम्मय होगा तो रसीद का एक नमूना तैयार किया जायगा ।

(१५) घाटकों का ठेका कोठी या और ठेकेदारों को न दकर साम अपने तात्क

में रखने की परीक्षा करने के लिए डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को सूचित किया जायगा।

यहाँ पर यह कह देना उचित है कि इस रिपोर्ट तथा सरकारी मन्तव्य के प्रकाशित होते ही ता. १८.१०-१७ को सरकार की ओर से मन्तव्य के अनुसार एक नोटिस रैयों की जागाही के लिए छापकर बिजे भर में बाँट दिया गया जिसमें कमेटी की सिफारिशों का साक्ष्य दिया हुआ था।

कोटी के कई साहसों का इससे बड़ा रंज हुआ और मोड़ीहारी कोटी के मनेजर मि. हर्बिन ने बसवार में एक प्रकार का आन्दोलन खड़ा कर लिया जिसका पूरा हान्य आप विना आपसा। कामपुर के 'प्रताप' ने अम्मारन सम्बन्धी कई लेख लिखे थे और एक अवसर पर उसन वहाँ की प्रजा से उनके सब दुखों का एक पुस्तक रूप में भित्ति के लिए उसका सामान माँगा था और उसके जमा करने के सम्बन्ध में एक विज्ञापन छत्राया था पर जिस समय यह हो रहा था सरकार की कुछ और ही नीति थी और उसने उस नोटिस के वितरण को रोक दिया था। उम्मी प्रताप ग्रन्थ में सरकारी नोटिस पर टिप्पणी-स्वरूप एक छोटी-सी 'अम्मारन का उद्धार' नामक पुस्तिका छपकर प्रकाशित हुई और उसकी बहुत-सी प्रतियाँ अम्मारन में बिककर बर-बर पहुँच गईं। शीलबरा का ऐसा मंवेह हुआ कि यह पुस्तिका महात्मा गांधी की ओर से वितरण की गई है पर यह बात तो थी नहीं इसलिए महात्मा जी ने इसका प्रतिपाद किया। ओ हो इन सब कारणा से बिजे भर में कोई भी ऐसा स्थान नहीं था जहाँ कमेटी की सब बातें पहुँच न गई हों। रैयता का अब अनुभव होने लगा कि महात्मा जी के उद्योग से उनके दुःख के दिन दूर हो गये और वे अपने हृदय से अपने उद्धार-कर्ता महात्मा गांधी की अवययकार मनाने लगे और मुक्त की नींव सोने लगे।

उन्नीसवाँ अध्याय नीलबरो में खलबली

जोष कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित होन के पहले ही मि इबिन को उसको मुख्य बाता की खबर लग गई थी और ता ७-१ १७ को ही उन्होंने एक लम्बा पत्र 'स्ट्रट्समन' और 'इन्क्विजमन' में छपन के लिए लिखकर भेज दिया था। इस पत्र में उन्होंने लिखा—“बनिया में कमेटी ने पिपरा और तुकी भिया बोठी व मीनेबरो को तथा मुझे बुलाकर धरदुबेधी के सम्बन्ध में मुलाह कर सैन की सलाह दी और वहाँ नीलबरो की ओर स सेकड़े २५ तक की कमी सैन इस धर्त पर कबूल की कि ताबान स्या का त्यो छोड़ दिया जायगा। सैन यह भी बिलगला था कि २५ सेकड़ कम होने से मरी अपनी आमदनी १३) रुपये सालाना कम हो जायगी। पर इन पर भी मि यात्री ने इस बात को स्वीकार नहीं किया और वह ४ सेकड़े कम करने पर सह रहे। इसी प्रकार फिर राबी में बाने हुई और वहाँ बहुत कहने-सुनने पर ये २६ सेकड़े पर राबी हुआ किन्तु ताबान के बिपय में कोई भी बात नहीं हुई पर कमेटी की रिपोर्ट में माकूम इला है कि २५ सेकड़े ताबान भी वापिस करना होगा जिसका फल यह होता है कि मुन () खपद वापिस करने होंगे। मि इबिन ने इन बातों को बिलगाने हुए आगे बचकर उक्त पत्र में लिखा—

“That our representati e signed a report of this sort is a matter which will have to be settled with him. But I hereby absolutely decline to submit to any treatment of this kind and I as publicly as possible now revoke repudiate and withdraw the concession of 25 p.c. of the *Sharabvski* from the beginning of the coming year and will if obliged to spend this money in fighting this to a finish.”

अर्थात्—“इस बात का निपटारा अपने प्रतिनिधि के साथ पोछ कर लय कि उक्ताने लगी रिपोर्ट पर क्या इत्फाअर किया। मैं इस प्रकार के व्यवहार के सामन सर झुकाने का लक्ष्यम इनकार करता हूँ और इसके द्वारा जहाँ तक प्रभाव रूप में हो सकता है २५ सेकड़े धरदुबेधी घटान की जो रियायत सन को थी उस में अगल भाग के आरम्भ में साफ-साफ रद्द करना और वापिस लिय लेना हूँ और यदि उनके लिए मजबूर किया गया तो उसी रूप का मैं इस मामले में बाहिर तक लड़न में सगा दूँगा।

मि इबिन का पत्र ता २१ १ १७ के स्ट्रट्समन और २० १०-१७ के इन्क्विजमन में छपा। ता २३ १ १७ को सरकार ने इसका बिपय रूप में पण्डित किया। उसमें उल्लेख रहा कि जो साझाने कमेटी के अध्यक्ष तथा सदस्यों पर लयायी

परि हूँ ने टीक नहीं हूँ तथा

The Lieutenant-Governor-in-Council is unable to believe the allegation made by Mr Irwin that the committee obtained his consent to the reduction of Shamabeds by leading him distinctly to understand that it (Taras) would not be interfered with.

अर्थात्—'छोटे काम' लाह्व और उनके महापरी मि इबिन को इस बात का विश्वास नहीं करने कि कमटी न उनमें इस बात पर लाह्ववासी जमान की अनमति पाई थी कि लाह्वान ज्यों का त्यों छोड़ दिया जायगा।

मि इबिन ने मा २४ १० १३ का एक पत्र छत्रवाया त्रिमम महापरा सादी पर यह लाह्वना सवाई कि उन्होंने छोटे काम की एक बिट्टी त्रिम म उन्होंने महापरा जों को कमटी की निष्कारियों को नैयनों को बना देने की आज्ञा दी थी त्रिना के सब-इबिजेशन अन्तर्गत मि त्रिबिम को हिसाबाई थी और इन्हीं पत्र में प्राणीय सरकार पर भी आज्ञा किया कि सरकार नैयनों का पत्र कर रही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बिट्टी हिसाबन वाली बात एकदम सत्य थी क्योंकि महापरा जी न कोई त्रिम बिट्टी मि त्रिबिम को नहीं हिसाबाई थी।

यहाँ पर यह भी कह देना उचित है कि मि इबिन न ज्ञान पहले पत्र में यह भी कहा था कि मि नेनी न जब कमटी के अध्यक्ष न और चम्पारन में पहले कलक्टर एड्मंड्स ने अपनी कलक्टरों के समक्ष नीलधरा को लाह्वान कम की राय दी थी। महा बात फिर त्रिनी बजान नाम नीलधर म 'अल्ड चम्पारन (Old Champaran) के नाम से बम्बहार में छत्रवाई और पूछा कि मि नेनी न मलाह देकर फिर कमेटो की रिवाज पर त्रिम म उन्ही लाह्वान को बापिन करान की निष्कारिया की हस्तगत करा किया।

ता ५ १०-१३ को मि इबिन न सरकारी खजान का उत्तर दिया। त्रिमम उन्होंने यह किया—

"I would like to know if his Honour has made any enquiries from the only people in position to say whether my allegation is true or not, viz. the managers of Turkania Ltd. and Pipra who, with Messrs. Rainy and Reid and myself, were the only persons present at the preliminary discussion.

अर्थात्—'मैं यह जानना चाहता हूँ कि लाह्व लाह्व न क्या उन जादो में पूछ-पाछ की है या कह सकते हैं कि सर आपस तक ह या शक्य प्रमाण सुनी लिया और त्रिना के र्मनेकर जो वहाँ उपस्थित थे जब मि नेनी और मि पीछ और मेरे बीच में यह बात हुई थी। बे ही मेरी बातों के महा या शक्य हाल का तहकीकत कर दे सकते हैं।"

ता २ ११ १३ को मि त्रिनाम न एक लम्बा पत्र 'अन्वर्दन में छत्रवाया त्रिमम उन्होंने कमटी की कार्यवाही पर कहीं आलोचना करत हुए कहा कि

उप्रीसवा अध्याप मीसबरो में खलबली

बापि कमली की रिपोर्ट प्रकाशित होना के पहले ही मि इबिन को उसकी मुख्य बातों की खबर कम मई की और ता ७-१ १७ को ही उन्होंने एक कम्पा पत्र 'स्ट्रूम मैग' और 'इम्पियरमें' में अपने के लिए लिखकर भेज दिया था। इस पत्र में उन्होंने लिखा—“कमेटी ने पिपरा और लुकीँ मिया कोठी के मैनबरो को तथा मुझे बुलाकर सरखुबरी के सम्बन्ध में सुझाव कर लेन की सलाह दी और वहाँ मीलबरो की आर से मैकडे २५ तक की कमी मेने इस बार्त पर बकूक की कि तावान व्यो का लो छोड़ दिया जायगा। मैंने यह भी लिखवाया था कि २५ मैकड कम होने से मेरी अपनी आमदनी १३०) रपय मामाना कम हो जायगी। पर इस पर भी मि बाधी ने इस बात का स्वीकार नहीं किया और बह ४ मैकडे कम करने पर अड़े रहे। इसी प्रकार फिर रांची में बात हुई और वहाँ बहुत-बहुत-मुलने पर मैं २६ मैकड पर राबी हुआ किन्तु तावान के बिपय में कोई भी बातें नहीं हुई पर कमेटी की रिपोर्ट से माफ्य होता है कि २५ मैकड तावान भी बापिम करना होगा जिसका फल यह होता है कि मुने / ०) रपय बापिम करने होय। मि इबिन ने इन बातों को विचाराते हुए बापि बनकर उत्तर पत्र में लिखा—

“That our representative signed a report of this sort is a matter which will have to be settled with him. But I hereby absolutely decline to submit to any treatment of this kind and I as publicly as possible now revoke repudiate and withdraw the concession of 25 p.c. of the *Sherakhshe* from the beginning of the coming year and will if obliged to spend this money in fighting this to a finish.”

अबतू—“इस बात का निपटारा अपने प्रतिनिधि के साथ पोछ कर लें कि उन्होंने अपनी रिपोर्ट पर क्या हस्ताक्षर किया। मैं इस प्रकार के व्यवहार के सामने मर झुकान का लक्ष्य हीनकार करता हूँ और इसके द्वारा अभी तक प्रकाश न करने की सलाह है २५ मैकड सरखुबरी बनाने की जो रियायत मेन का थी उस में अगले साल के आरम्भ में साफ-साफ रद्द करना और कार्रवाई करने सेना हूँ और यदि उसके बिना संकटूर किया गया तो उसी रूप से मैं इस मामले में आगिर लड़ लड़न में लगा हुआ।

मि इबिन का पत्र ता २१ १०-१७ के स्ट्रूममैन और २७ १०-१७ के 'इम्पियरमें' में छपा। ता २३ ११ १७ का करार न समाप्त विषय रूप में लखनव दिया। उसमें उल्लेख है कि सा लाफनार्ड कमेटी के अध्यक्ष तथा सदस्यों पर लगायी

गई है मे ठीक नहीं है तथा

"The Lieutenant-Governor-in-Council is unable to believe the allegation made by Mr Irwin that the committee obtained his consent to the reduction of *Sharabshi* by leading him distinctly to understand that it (*Tanen*) would not be interfered with

अर्थात्—“छोटे साट साहब और उनके सहकारी मि इरविन की इस बात का विश्वास नहीं करते कि कमेटी ने उनसे इस बाबे पर धरहबशी बटान की अनुमति पाई थी कि तावान अ्यों का त्यों छोड़ दिया जायगा।

मि इरविन ने ता २४ १०-१७ को एक पत्र छपवाया जिसमें महात्मा गांधी पर यह लांछना बघाई कि उन्होंने छोटे साट की एक बिट्ठी जिस में उन्होंने महात्मा जी को कमेटी की सिफारिशों को रैयतों को बता देने की आज्ञा दी थी बैठिया के सब-इन्चिजनल अपसर मि सिबिस को बिलकाई की और हमी पत्र में प्राचीय सरकार पर भी आक्षेप किया कि सरकार रैयतों का पक्ष कर रही है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बिट्ठी बिलसान बाकी बात एकदम यलत थी क्योंकि महात्मा जी न कोई ऐसी बिट्ठी मि सिबिस को नहीं बिलकाई थी।

यही पर यह भी कह बना उचित है कि मि इरविन ने अपने पहले पत्र में यह भी कहा था कि मि रेनी ने जब कमेटी के सबस्य में और चम्पारन में पहले कमिन्टर रह चुके थे अपनी कमिन्टरी के समय मीमबरो को तावान केम की राय दी थी। यही बात फिर किसी बजात नाम मीलवर ने 'ओल्ड चम्पारन' (Old Champaran) के नाम से अबबार में छपवाई और पूछा कि मि रेनी ने सक्ताह बेकर फिर कमेटी की रिपोर्ट पर जिस में उसी तावान को आपिस कराम की सिफारिश थी इस्तखत क्या किया ?

ता २५ १ १७ को मि इरविन ने सरकारी बंडन का उत्तर दिया। जिसमें उन्होंने यह लिखा—

"I would like to know if his Honour has made any enquiries from the only people in position to say whether my allegation is true or not, viz., the managers of Turkaulia Ltd and Pipra who with Messrs. Rainy and Reid and myself were the only persons present at the preliminary discussion

अर्थात्—“मैं यह जानना चाहता हूँ कि साट साहब ने क्या उन लोगों से पूछ-ताछ की है जो कह सकते हैं कि मेरे आलप ठीक है या यकत अर्थात् तुको लिया और पिपरा के मैनजर जो वही उपस्थित थे जब मि रेनी और मि रीड और मेरे बीच में यह बातें हुई थी। वे ही मेरी बातों के सही या यकत हान का तहकीक सबर है सकते हैं।”

ता २ ११ १७ को मि जेनमन ने एक सम्भा पत्र 'स्टेटमैन' में छपवाया जिसमें उन्होंने कमेटी की कार्रवाई पर कड़ी आलोचना करण हुए कहा कि तावान

मि रेनी की अनुमति से लिया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि जिस प्रकार सर एडवर्ड बेकर (Sir Edward Baker) ने सन् १९१९ में मि गुरके की रिपोर्ट के बाव मीसबरो से गोप्यी करके कुछ मीस का काम बढ़ाया था उसी प्रकार इस बार भी सरकार को उचित था कि यदि कोई परिवर्तन आवश्यक था तो वह अपचाप मीसबरो को बुलाकर समझा बुझा कर सब बातें तय कर लेती। पर जिस प्रकार सरकार ने बिना जकरत कमेटी नियुक्त करके और मि गांधी के आन्वोकन को न होकर वार्नबाई की है उससे यही जान पड़ता है कि सरकार मीसबरो के साथ इन्साफ करना नहीं चाहती है और इस कारण मीसबरो का विस्वास सरकार की ओर से उठ गया है। उन्होंने कहा—

"The Government would have retained the confidence of the planting community had it shown itself genuinely anxious to deal honestly with the whole question on its merits and to allay the unrest caused by its mistaken policy

अर्थात्—“सरकार ने मीसबरो का विस्वास उम हासल न रखा है जब वह पूरी समस्वा को ईमानदारी के साथ हल करने और जो उसकी भ्रात नीति के कारण असन्ति हो रही है उसका निवारण करने की सच्ची चिन्ता दिखाती है।

एक बार सरकार ने रैयतो के साथ इन्साफ करना चाहा उसका यह नतीजा।

यहाँ पर यह कह देना उचित है कि जो बातें मि इबिन ने तावान के सम्बन्ध में कही थी वे बलत थी और शायद उनके समझने में कुछ भूल हुई थी। सरकार की ओर से हम विषय में पूरी सहकीकात की गई और पिपरा कोठी के मैनवर मि मोर्मन जिनका हवाला मि इबिन ने अपने पत्र में दिया था ता २७-१ १७ को यह सिद्धा—

"To the best of my recollections and it is my firm impression that the question of *Taxes* was never mentioned or referred to in any way at either of the two Committee meetings I have attended but personally I was under no misunderstanding about the committee's idea regarding the refund of 25 p.c. as I was told they intended recommending this refund in a conversation at Bettiah just before the Committee meeting there which Hill Irwin and I attended. It is my impression that both Hill and Irwin were told the same as I was

I wrote to Hill and Irwin when I was in Ranchi in August last

I asked Mr Sly if the *Taxes* question would be in any way influenced by what was settled over *Sherakheski* and he informed me that *Taxes* was an entirely different matter and whatever was settled regarding *Sherakheski* would in no way affect their decision about *Taxes*."

“अर्थात्—यहाँ तक मुझे स्मरण है और यह मेरी धारणा है कि कमेटी की उन

दो बैठकों में जिनमें मैं उपस्थित था तावान के विषय में कोई बातें नहीं हुई। तावान का नाम तक नहीं किया गया था। पर मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि कमेटी तावान में २५ रुपये सैकड़ बापिस बिलाने की राय देगी। इस विषय में मुझ से बठिमा में उपस्थित बैठक के पड़े ही कहा गया था कि कमेटी ने एमी सिद्धारिष करने की राय कर ली है। मेरी धारणा है कि मि हिल तुर्की किया के मेनजर और मि इबिन से भी यही बात कही गई थी। मैंने यह बगस्त में उनी से मि हिल और मि इबिन के पास इस विषय में भिजा था कि मैं मि समार्ड से पूछा कि शराबखोरी के सम्बन्ध में जो निश्चय होया उसमें तावान पर भी कुछ असर पड़ा था नहीं। उन्होंने उत्तर दिया कि तावान एक अलग बात है और शराबखोरी के सम्बन्ध में जाहे जो निश्चय हो उसमें तावान के सम्बन्ध में कमेटी की राय में कोई परिवर्तन नहीं होना।

इसी प्रकार मि रीड न जो नीलबरों के प्रतिनिधि होकर कमिटी के मेम्बर हुए थे ता. १ नवम्बर को भिजा था—

"I am extremely surprised to read his (Mr Irwin's) assertion that assurances were given that the 26 p.c. *Sharabkhar* reduction would not be applied to *Tawas*. On the contrary I have the dearest recollection that when Mr Irwin came to Bettiah he himself asked me if anything had been decided about *Tawas* showing that he understood that the consultation with the three planters only referred to *Sharabkhar*. Moreover I told him then that the committee had decided to recommend a 25 p.c. refund of *Tawas*. He strongly disapproved but finally said that he would prefer to pay the money to the Raj and not to the *ryot*. I told him that the matter had been finally settled by the committee and I could do nothing further. All this was at Bettiah. When he came to Ranchi the *Tawas* question was never mentioned.

अर्थात्—"मि इबिन की यह बात पढ़कर मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि २६ सैकड़ शराबखोरी बटाने की बात तावान के सम्बन्ध में नहीं की गई थी। मुझ खूब याद है कि जब मि इबिन बठिया बाप से तो स्वयं उन्होंने हमसे पूछा था कि तावान के विषय में क्या निश्चय हुआ जिन से यह बात जाहिर होनी है कि वह समझते थे कि जो पोली नीलबरो के साथ वहाँ होनेवाली थी वह केवल शराबखोरी के सम्बन्ध में ही थी। मैंने उनके उसी समय कह दिया कि कमेटी ने २५ व सैकड़ तावान बापिस कराने की सलाह देने का निश्चय कर लिया है। उन्होंने इनको बहुत मायमन्द किया पर माल में उन्होंने कहा कि वे रैयतों के रुपये देने से बठिया राज्य को ही देना अच्छा समझते हैं। मैंने कहा कि

मि रेनी की अनुमति से लिया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि जिस प्रकार सर एडवर्ड बेकर (Sir Edward Baker) ने सन् १९०९ में मि गुरसे की रिपोर्ट के बाद मीनबरो से गोष्ठी करके कुछ मील का काम बहाया था उसी प्रकार इस बार भी सरकार को उचित था कि यदि कोई परिवर्तन आवश्यक था तो वह सुपचार मीनबरो को बुलाकर समझ-बुझ कर सब बातें तय कर लेती। पर जिस प्रकार सरकार ने बिना जरूरत कमेटी नियुक्त करके और मि बांधी के आन्वेषण को न रोककर कार्रवाई की है उससे यही बात पक्का है कि सरकार मीनबरो के साथ इन्साफ करना नहीं चाहती है और इस कारण मीनबरो का विश्वास सरकार की ओर से उठ गया है। उन्होंने लिखा—

"The Government would have retained the confidence of the planting community had it shown itself genuinely anxious to deal honestly with the whole question on its merits and to allay the unrest caused by its mistaken policy

अर्थात्—'सरकार में मीनबरो का विश्वास उन क्षणों में ख़ूब है जब वह पूरी समस्या को ईमानदारी के साथ हल करने और जो उसकी भ्रान्त नीति के कारण भ्रान्ति हो रही है उसका निवारण करने की सच्ची जिम्मा दिकाराली है।

एक बार सरकार ने रीयता के साथ इन्साफ करना चाहा उसका यह नहीं था।

यहाँ पर यह कह देना उचित है कि जो बातें मि इर्विन न ताबान के सम्मुख में कही थी वे गलत थी और शायद उनके सम्मुख में कुछ भूख हुई थी। सरकार की ओर से इन विषय में पूरी सहकीकत की गई और पिपरा कोठी के मैनेजर मि नीर्मन तिनका हवाला मि इर्विन ने अपने पत्र में दिया था ता २७-१० १७ को यह लिखा—

"To the best of my recollections and it is my firm impression that the question of *Taxes* was never mentioned or referred to in any way at either of the two Committee meetings I have attended but personally I was under no misunderstanding about the committee's idea regarding the refund of 25 p.c. as I was told they intended recommending this refund in a conversation at Bettiah just before the Committee meeting there which Hill Irwin and I attended. It is my impression that both Hill and Irwin were told the same as I was

I wrote to Hill and Irwin when I was in Ranchi in August last I asked Mr Sly if the *Taxes* question would be in any way influenced by what was settled over *Shanabhera* and he informed me that *Taxes* was an entirely different matter and whatever was settled regarding *Shanabhera* would in no way affect their decision about *Taxes*."

अर्थात्—यहाँ तक मुझे स्मरण है और यह मेरी धारणा है कि कमेटी की उन

वो बैठकों में जिनमें मैं उपस्थित था तावान के विषय में कोई बातें नहीं हुई। तावान का नाम तक नहीं किया गया था। पर मुझ यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि कमेटी तावान में २५ रुपये सैकड़ बापिस हिलान की राय देगी। इन विषय में मुझ से बतिया में उपपुत्र बैठक के पहले ही कहा गया था कि कमेटी न एसी सिफारिश करने की राय कर ली है। मरी बारबा है कि मि हिल तुर्की लिया के मेम्बर और मि हिल से भी यही बात कही गई थी। मैं मर अस्पष्ट में राखी न मि हिल और मि हिल के पान इस विषय में लिखा था कि मैंने मि सलाई से पूछा कि सरहबली के सम्बन्ध में जो निश्चय होगा उसमें तावान पर भी कुछ असर पड़ेगा या नहीं। उन्होंने उत्तर दिया कि तावान एक अलग बात है और सरहबली के सम्बन्ध में चाहे जो निश्चय हो उसमें तावान के सम्बन्ध में कमेटी की राय में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

इसी प्रकार मि रीड ने जो नीलबरो के प्रतिनिधि होकर कमेटी के मेम्बर हुए थे ता १ नवम्बर को लिखा था—

"I am extremely surprised to read his (Mr Irwin's) assertion that assurances were given that the 26 p.c. *Sherabeshi* reduction would not be applied to *Tawan*. On the contrary I have the dearest recollection that when Mr Irwin came to Bettiah he himself asked me if anything had been decided about *Tawan* showing that he understood that the consultation with the three planters only referred to *Sherabeshi*. Moreover I told him then that the committee had decided to recommend a 25 p.c. refund of *Tawan*. He strongly disapproved but finally said that he would prefer to pay the money to the Raj and not to the *ryots*. I told him that the matter had been finally settled by the committee and I could do nothing further. All this was at Bettiah. When he came to Ranchi the *Tawan* question was never mentioned.

अर्थात्—मि हिल की यह बात पढ़कर मुझ बहुत आश्चर्य हुआ है कि २६ सैकड़ सरहबली बटान की बात तावान के सम्बन्ध में नहीं की गई थी। मुझे खूब याद है कि जब मि हिल बतिया आया था तब उन्होंने हमसे पूछा था कि तावान के विषय में क्या निश्चय हुआ जिस से यह बात बाहिर हमनी है कि वह समझते थे कि जा पाटो नीलबरो के नाब बही होनेवाली थी वह केवल सरहबली के सम्बन्ध में ही थी। मैंने उनसे उनी समय यह दिया कि कमेटी न २५ सैकड़ तावान बापिस करने की सभाह देन का निश्चय कर लिया है। उन्होंने इसको बहुत नापसन्द किया पर अन्त में उन्होंने कहा कि वे रैपों के रुपये देन में बतिया राख्य का ही दना अच्छा समझते हैं। मैंने कहा कि

मि रेनी की अनुमति से लिया गया था। उन्होंने यह भी कहा कि जिस प्रकार सर एडवर्ड बकर (Sir Edward Baker) ने सन् १९०० में मि थुरले की रिपोर्ट के बाव नीलबरो से मोपटी करके कुछ मील का दाय बड़ाया था उसी प्रकार इस बार भी सरकार का उचित था कि यदि कोई परिचित आवश्यक था तो वह चुपचाप नीलबरो को बुलाकर समझा बुझा कर सब बातें तय कर लेती। पर जिस प्रकार सरकार ने बिना बकरत कमेटी नियुक्त करके और मि बांधी के आन्धोलन का न रोक्कर कारबाई की है उससे यही बात पक्का है कि सरकार नीलबरो के साथ इस्तेफा करना नहीं चाहती है और इस कारण नीलबरो का विश्वास सरकार की ओर से उठ गया है। उन्होंने लिखा—

"The Government would have retained the confidence of the planting community had it shown itself genuinely anxious to deal honestly with the whole question on its merits and to allay the unrest caused by its mistaken policy

बर्बात—“सरकार में नीलबरो का विश्वास उस हालत में रहता है जब वह पूरी समझा का ईमानदारी के साथ हल करने और जो उसकी भ्रष्ट नीति के कारण बर्बात हो रही है उनका निवारण करने की सच्ची किता दिखवाती है।

एक बार सरकार ने रीयों के साथ इस्तेफा करना चाहा उसका यह तरीका।

वही पर वह कह देता उचित है कि जो बातें मि हिलिन न साबान के सम्बन्ध में कही थी वे वस्तु थी और बावद उनका समझन में कुछ गूँझ हुई थी। सरकार की ओर से इस विषय में पूरी सहकीकात की गई और पिपरा कोठी के मैनेजर मि नोर्मन जिनका इलाका मि हिलिन न अपने वन में दिया था ता २७-१०-१७ को यह लिखा—

"To the best of my recollections and it is my firm impression that the question of *Tamra* was never mentioned or referred to in any way at either of the two Committee meetings I have attended but personally I was under no misunderstanding about the committee's idea regarding the refund of 25 p.c. as I was told they intended recommending this refund in a conversation at Bettiah just before the Committee meeting there which Hill, Irwin and I attended. It is my impression that both Hill and Irwin were told the same as I was

I wrote to Hill and Irwin when I was in Ranchi in August last. I asked Mr Sly if the *Tamra* question would be in any way influenced by what was settled over *Sharabhat* and he informed me that *Tamra* was an entirely different matter and whatever was settled regarding *Sharabhat* would in no way affect their decision about *Tamra*."

“बर्बात—बाई तक यह स्पष्ट है और यह मेरी धारणा है कि कमेटी की उन

दो बंठकों में जिनमें से उपनिबन्ध या तावान के विषय में कोई बातें नहीं हुई। तावान का नाम तक नहीं लिया गया था। पर मुझे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि कमेटी तावान से २५ रुपये सैकड़े वापिस दिलाने की राय देगी। इस विषय में मुझ से बतिया में उपर्युक्त बैठक के पहले ही कहा गया था कि कमेटी ने ऐसी सिफारिश करने की राय कर ली है। मेरी चारखा है कि मि हिल मुझी लिया के मैजस्टर और मि इविन से भी यही बात कही गई थी। मैंने तब जगस्त में राखी से मि हिल और मि इविन के पास इस विषय में लिखा था कि मैंने मि सलाई से पूछा कि सरहज्जेरी के सम्बन्ध में जो निश्चय हुआ उससे तावान पर भी कुछ बचुर पड़ेगा या नहीं। उन्होंने उत्तर दिया कि तावान एक समय बात है और सरहज्जेरी के सम्बन्ध में चाहे जो निश्चय हो उससे तावान के सम्बन्ध में कमेटी की राय में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

इसी प्रकार मि रीब ने जो नीलबरों के प्रतिनिधि होकर कमेटी के मेम्बर हुए थे ता १ नवम्बर को लिखा था—

"I am extremely surprised to read his (Mr Irwin's) assertion that assurances were given that the 26 p.c. *Sherehke* reduction would not be applied to *Taxes*. On the contrary I have the dearest recollection that when Mr Irwin came to Bettiah he himself asked me if anything had been decided about *Taxes* showing that he understood that the consultation with the three planters only referred to *Sherehke*. Moreover I told him then that the committee had decided to recommend a 25 p.c. refund of *Taxes*. He strongly disapproved but finally said that he would prefer to pay the money to the Raj and not to the *guzr*. I told him that the matter had been finally settled by the committee and I could do nothing further. All this was at Bettiah. When he came to Ranchi the *Taxes* question was never mentioned.

अर्थात्—मि इविन की यह बात पढ़कर मुझ बहुत आश्चर्य होता है कि २५ सैकड़े सरहज्जेरी बटाने की बात तावान के सम्बन्ध में नहीं की गई थी। मुझे बूझ पार है कि जब मि इविन बेतिया आये तो स्वयं उन्होंने हमसे पूछा था कि तावान के विषय में क्या निश्चय हुआ जिस से यह बात बाहिर होती है कि वह समझते थे कि जो मोट्टी नीलबरों के छान कही हुनेवाली थी वह केवल सरहज्जेरी के सम्बन्ध में ही थी। मैंने उनसे उसी समय कह दिया कि कमेटी ने २५ व सैकड़े तावान वापिस कराने की मसाह देने का निश्चय कर लिया है। उन्होंने इनको बहुत मायमन्द किया पर अन्त में उन्होंने कहा कि वे ईयतों के रुपये देन से बेतिया राज्य को ही देना अच्छा समझते हैं। मैंने कहा कि

कमेटी ने इस बात में अपना अन्तिम निर्णय कर लिया है और मैं अब कुछ अधिक न कर सकूंगा। यह सब बात बतिया में ही हुई थी। अब वह राखी आय तो उनसे ताबान का एक बार भी बिक नहीं दिया गया।

मि रेनी से राय लेकर ताबान बसूस करने की जो बात मि इबिन जममन तथा एक और नीलबर न कही थी उसके विषय में भी सरकार न मि रेनी से पूछा और उन्होंने उत्तर में लिखा कि—

It is not true that *Taxes* was taken by him after consultation with me and on my advice. Had he said that it was taken with my knowledge and without interference from me he would have been correct. He never asked for my advice nor did I advise him."

बर्नार्ड— 'यह बात सच नहीं है कि मुझ से पूछकर तथा मेरी राय से उन्होंने ताबान बसूस किया था। यदि वे यह कहे रहते कि मेरे ज्ञानसे और मेरी ओर से बिना कुछ रोक-टोक के ताबान बसूस किया तो यह बात सच होती पर उन्होंने इस विषय में न मुझ से कोई सलाह पूछी और न मेरे कोई सलाह दी।

उन्होंने यह भी कहा कि जो कुछ नीलबरा में मुझ से इस विषय में लिखा-पढ़ी की थी वह मेरे सरकार में भ्रम ही थी। और सरकार के उत्तर की भी मेरे उनके पास भेज दिया। बलकर की हस्तियत में मे और कुछ नहीं कर सकता था और जानकी लीके से मेरे बूमरी कोई राय न थी।

यही पर यह भी कह देना उचित है कि मि इबिन न ता ७-११ १७ को 'स्टूडेंट्स मीट' में एक चिन्ठी लिखी जिसमें उन्होंने स्वीकार किया कि मि हिल और मि नीर्मन ने गूछन परमन को माफूस हुआ कि ताबान के सम्बन्ध में भ्रम की है पर यह कहना मेरा मत है कि मेरे ताबान देना कभी भी स्वीकार नहीं किया और पाइबर्नी का बटाना मेरे इसी तर्ज पर कबूल किया था कि ताबान बापिस न देना पड़ेगा।

कमीशन की रिपोर्ट में नीलबरा में बितनी जलबली सर्ची थी उसका कुछ पता उक्त पत्रों में मिला होगा। इसी प्रकार कमरी के मन्त्रियों के विरुद्ध बितने ही पत्र और सब अंग्रेजी पत्रों में छाप दिये गये कि गिनी गफ्त बाई अड (५ १ Z) महात्मन अम्पारन में ता ८ ११ १७ को मिलन हुए यह बयकाया कि बर्नमन की इन कार्रवाई के बाद बतिया राज्य का ठरा कोई भी नहीं लगा। बाजिलिब ने मि ईनब मेकेंजी मयम महात्मन न जा किसी समय अम्पारन में नीलबरा रह चुके थे बिना—

'The Government of Bihar have employed the most unheard of methods to uproot respect for Bihar planters in *riots*' minds by

१ ता १८ ११ १७ को 'स्टूडेंट्स मीट' में प्रकाशित।

२ ता. १ ११ १७ को 'स्टूडेंट्स मीट' में प्रकाशित।

their insulting procedure of scattering broadcast pamphlet in the vernacular among an ignorant peasant population most unjustly putting planters in the wrong

"The action will have much more serious results than Sir E. Gort anticipates and he his colleagues and the members of the so-called commission should be held collectively and individually responsible for any blood-shed that may ensue. Does the Bihar Government think for one moment that planters will accept without question the arbitrary finding of the Commission? Will the European Defence Association see this injustice done to a section of their own community? I know not."

बर्कट्—“बिहार सरकार न हिन्दी न छपे बिज्ञापन बँटवाकर मीलबरो की बड़ी मानहानि की है। रैमंडो के दिक् में अब मीलबरो के प्रति कुछ भी साधर नहीं रह जायगा। इस कार्रवाई का महीना बहुत बुरा होगा जिसका सर ई गट नहीं समझते हैं। उनके सहकारियों तथा इस नामनिर्वाही कमीशन के सदस्यों के सर पर उस जूनखराबी का दोष जो इनकी कार्रवाई में हो सकती है मढ़ा जायगा। क्या बिहार सरकार यह समझती है कि मीलबरो कमीशन के मनमानी निश्चय की बिना दूर किये जाल सेंग? क्या यूरोपियन डिफेंस एसोसिएशन अपनी जाति पर इस अभ्यास को सह्य केगी? मे समझना है कि ऐसा करानि नहीं हो सकता है।”

ता १२ ११ १७ को बिहार ज्वैन्टर्स एसोसिएशन के यंत्री मि. ज. एन. बिस्मिल न मीलबरो के बर्कट्स की सम्मति स्टेटमेंट पत्र में छपन को यंत्री। सम्मति यह थी कि हममें सन्देह है कि बिहार सरकार को ऐसा अधिकार है वा नहीं कि वह कानून बनाकर तीन-चत्विा सम्बन्धी वा स्वतन्त्र मीलबरो को प्राप्त है वह छीन ले वा मुबाहिरे पक्ष में बसे वा रह है उनको दोनों फॉर्म एकमत होकर लागू करने ह पर बिना इनकी राय के उन मुबाहिरी पर सरकार न छपे हुए नोटिस का कुछ जमर नहीं हो सकता। तावान के रय बन्तूक हुए तीन बर् में अधिक हो चुके और उनही बन्तूकी के लिए बराकमें में नातिश नहीं की जा सकती है। इसीलिए मीलबरो में उस बापिन दिलाया उनमें रय छीनकर रियनों को बने के कराकर है।

किन्ती महासमय न ता ७ ११ १७ के स्टेटमेंट में 'मीलीमीटर्स' (Solicitous) के नाम न मि मैकेंजी के पत्र पर आलोचना करने हुए यूरोपियन एसोसिएशन को यह राय थी कि वह इन किये में कोई कार्रवाई अवश्य करे क्योंकि ऐसा न करने में जो हानि आज बम्पारन के मीलबरो की है वह कम दूमरी जगह के अंगरेजों की हो सकती है। इसी प्रकार ता. २४ ११ १७ के स्टेटमेंट में बिहार के ज्विनी अंगरेज वा

बहुत सम्झा लेख निकला जिसमें उन्होंने म्हात्मा गांधी तथा बिहार गवर्नमेन्ट पर कटाक्ष करते हुए कमीशन की सिफारिश की और मि इबिन के ताबान बसूल करने के विषय में कही हुई बातों का पोषण किया और नीलबरों की तारीफ की। इसके उत्तर में किसी एक सज्जन ने 'रुट सीकम' (Ruat Caelum) के नाम से ता २१२१७ के 'स्टेड्समैन' में एक पत्र प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने कमेटी पर जो आरोप किये गये वे उनका संक्षेप में मुँह जोड़ जवाब देते हुए लिखा—

"If I have understood the writer of the article correctly his position is that status-quo-ante-Gandhi in Champaran should be restored, because (1) it pays the *ryot* to grow Indigo (2) the Indigo planter is a good, considerate landlord (3) all planters and their relatives of military age are fighting for the Empire and (4) certain planters served Bethabai Raj many years ago. To take these in inverse order most people acquainted with the facts, who are not planters, would think regarding the fourth that the planters in question got an ample *quid pro quo*. The third hardly appears to me opposite and the second would be generally admitted to be true, if proviso is added so long as such conduct does not interfere with his own interest. Some would add the rider that the planter is bound to behave thus in his own interest. The real crux lies in the first. But

after all the matter is set at rest by the action of the planter in taking *Taxes*. Either the taking of *Taxes* was a highly discreditable transaction in which the planter made use of his influence and superior knowledge, to extract a large sum from the *ryot* for a release which was worth nothing, or it does not pay the *ryot*, to grow Indigo at the rate fixed by the Bihar Planters Association. I have no doubt that the latter is the correct answer. As for Sly Committee's recommendation with respect to *Taxes* there must be many who were surprised at the moderation."

वर्तान्—'यदि मेरे उस लेख को ठीक समझा है तो उसका बही भाग्य है कि मि गांधी के बम्पारन जाने के पहले वहाँ की जैसी स्थिति थी वही फिर कर देनी चाहिए, क्योंकि (१) किसानों को नील बोलना मना है (२) नीलबोर अच्छे जमींदार हैं (३) नीलबोर और उनके ऐसे रिश्तेदार जो सड़ने के योग्य हैं आज साम्राज्य के लिए लड़ रहे हैं और (४) अन्य नीलबोरों ने बहुत बर्ब हुआ बलिषा राज्य की बही सेवा की थी। इन सब बातों पर यदि बिचार किया जाय तो गांधी बाग के विषय में जो लोग बम्पारन का ह्याम जानते हैं और जो स्वयं नीलबोर नहीं हैं वे यही कहेंगे कि नीलबोरों को बलिषा राज्य की मदद करने का पूरा बज्जा मिल गया। यही समझ में नीलबोरों का बिचारणीय विषय में कोई

सम्बन्ध नहीं मानूम पड़ा और दूसरी बात में यदि यह और जोड़ दिया जाय कि 'जब तक उनको उससे मुसकान न होता है' तो बहुत लोग इसे स्वीकार कर लेंगे। बहुतेरे तो यह भी जोड़ना चाहेंगे कि 'और मीलबरो का स्वार्थ भी इसी में है।' तब यह गई केवल पहली बात। उसी में असर तब है पर इस विषय में तो मीलबरो ने ताबान लेकर इस बात का भी निर्णय कर लिया। या तो ताबान लेना बहुत ही लिकायत की कार्रवाई की जिसमें मीलबरो न अपने प्रभाव और ज्यादा जानकारी से रीयतो से बहुत रुपये मीलबरो से ऐसा छटकाए देम के लिए, बसूक किये जिसका कुछ भुक्त ही नहीं था मील की जो कीमत बिहार ऑक्टर्स एसोसिएशन ने मुकर्रर कर दी थी उससे रीयतो को मफा नहीं था। सरकारी कमेटी ने जो सिफारिश ताबान के विषय में की है वह बहुतों की समझ में बहुत ही कम है।"

बहुतों का अनुमान है कि यह पत्र किसी उच्च अंगी के प्रतिष्ठित अमरेद का लिखा हुआ था।

इसी प्रकार से जब एक और मीलबरो और उनके पक्षपाती अखबारों में बूम मचा रहे न और दूसरी ओर अम्पारल में छोटे-बड़े कितन ही मुकामे मीलबरो रीयतों के खिलाफ उनको बचाने की नीयत से चला रहे थे कि बिहार सरकार ने ता २० ११ १७ को 'अम्पारल एग्जिच्युटिव बिल' व्यवस्थापिका सभा में पेश किया।

बीमर्बा अध्याय चम्पारन ऐग्रेरियन ऐक्ट

ऊपर कहा जा चुका है कि ता २९ नवम्बर को स्थानीय व्यवस्थापिका सभा में माननीय मि मीड ने चम्पारन ऐग्रेरियन बिल (Champaran Agrarian Bill) पेश किया। उन्होंने जो व्याख्यान इस अवसर पर दिया वह बड़ा मार्केट था। उसमें उन्होंने ५ १ बपों का चम्पारन में नील-सम्बन्धी शगनों का संक्षिप्त इतिहास जिसका विवरण ऊपर के अध्यायो में दिया गया है, बयान किया और सरकारी कमेटी की निष्कारियों पर कार्यवाई की ग्याख्या को बिलकाया। यहाँ पर यह कह देना उचित है कि जब नीलबगीच कम्पटी की रिपोर्ट के विषय में शोर-मुल किया तो माननीय मि जे मीड ने जा उस समय तक नीलबगीच की ओर से व्यवस्थापिका सभा में सदस्य बं इस्लीफ़ दे दिया और उनकी जगह पर मि जे बी जमसन नियुक्त हुए। सरकार ने नीलबगीच के बकील मि पी केनडी को भी एक विषय सम्बन्ध बोर्ड बिनो के लिए बना लिया। इन दोनों महाशयों ने बिल के पेश होने के बिन्दु बहुत कुछ कहा पर उनकी बातों का पूरा जबाब मि मीड ने दिया। अन्त में बिल एक विषय कमेटी में विचारार्थ भज दिया गया। इस कमेटी ने बिल में कुछ ज़रूरत-बहुल करके सरकार ने पेश किया और वह ता २ फरवरी १९८ को सरकारी गजट में प्रकाशित हुआ। अन्त में ता ४ मार्च १९१८ की बैठक में माननीय मि मीड ने विषय कमेटी की रिपोर्ट पेश की। उस दिन कतिपय हिन्दु स्थानीय सदस्यों ने कई मुबार पत्र किये और नीलबगीच की ओर से मा मि जमसन और मा मि केनडी द्वारा भी कई मुबार पेश हुए। पर कोई मार्केट का मुबार सरकार ने स्वीकार नहीं किया। एक बाल जम्मेदा-साथ यह है कि जो बिल बारम्स में पेश किया गया था उसमें एक धारा इस आशय की थी कि यदि सरकारी कर्मचारियों का यह मामूला हो कि कोई अर्थात्तर अवकाश बभूत कर रहा है तो उन्हें ज़िम्मेदार होना कि बिना ज़िम्मे के नासिम के भी वे उस विषय में सहकीवाल करने यदि बाल नाबिन हाब तो उस जमीन धार का नज़ा कर सचन है। विषय कमेटी ने इस धारा का बिल में निराल दिया था। मा मि टैटर ने इस धारा का फिर बिल में शामिल कर देन का प्रस्ताव दिया। सरकार की ओर से सब सरकारी गजटों को अपनी इच्छा के अनुसार सम्मति देन की अनुमति दे दी गई थी। इसका फल यह हुआ कि प्रायः सभी सरकारी और कुछ सरकारी सदस्यों ने मि टैटर के प्रस्ताव के बिन्दु सम्मति दी और वह स्वीकृत नहीं हुआ। जिन कारणों ने इस प्रस्ताव के बिन्दु सम्मति दी उनका कहना यह था कि बराल टैनेमी एक्ट में एक धारा है जिसके अनुसार रैशन के नासिम करने पर ही अवकाश सेनबाबे का नज़ा

हो सकती है और उसमें केवल चम्पारन के लिए कुछ बदलन की आवश्यकता नहीं है। अन्त में इसी बैठक में चम्पारन एग्रेरियन ऐक्ट (Champaran Agrarian Act) स्वीकृत हो गया।

इस ऐक्ट की मुख्य शारतों का आशय है—

(१) यदि मालिक और रैयत के बीच में कोई ऐसा मुझाहिदा हो जिससे अनुसार रैयत मालिक के लिए अपनी ज़ेत के किसी हिस्से में कोई काम फसल उपजान के लिए बाध्य हो ता वह शर्त रह समझी जायगी। पर यदि इस शर्त पर रैयत में अगिष्ट मिया हो और वह बाकी हो तो वह उसे वापस करन को बाध्य होगा।

(२) यदि किसी रैयत की मालमगारी उक्त बन्धन में मुक्त कर दिए जान के कारण बढ़ा दी गई हो ता सैकड़ २० र तुकी मिया कोठी के रैयतों और ६ अन्य कोठियों के रैयतों के हजाफे में में कम कर दी जायगी और सर्वे जमियान का इसी व मुताबिक तरमीन कर दिया जायगा। यदि किसी कोठी के रैयत की जान के बिपय में सर्वे जमियान में यह दर्ज हुआ हो कि वह कोई खास जायदाद मालिक के लिए जेन को बाध्य है तो वह उससे मुक्त कर दिया जायगा। और उसकी मालमगारी ऊपर के हिस्से में बढ़ाकर जमियान में दर्ज कर दी जायगी।

(३) जमियान को तरमीन करन के लिए सरकार की आर में अफसर मकूरर किये जायेंगे और उनका हुक्म मालिकों से समझा जायगा।

(४) यदि कोई रैयत चाहें तो मालिक के साथ ऐसा मुझाहिदा कर सकता है कि वह मालिक को किसी खास जायदाद की नियत रकम लौन कर देता पर इसकी पाबनी उसकी जेत पर नहीं होगी। इस प्रकार के मुझाहिदे तीन वर्ष में अधिक के लिए नहीं इसमें और यदि रैयत सर्वे के अनुसार उस चीज को नहीं पहुँचावे तो वह हरजान का बेनवार होगा केवल उसे नहीं जेन के लिए बेनवार नहीं होगा।

इस ऐक्ट का सारांश यह है कि तीन कठिया प्रधा उठा दी गई। सरहबसी में से सैकड़ तुकी मिया और २६ सैकड़ अन्य कठियों के रैयतों के लिए कम कर दिया गया। ज़ूफकी नीन करने की हजाफत रैयतों को दी गई और उनकी जेतों का नीन के बन्धन में मुक्त कर दिया गया। ज़ाये इस बिपय में सड़ाई कचहरिया में न हो इसका प्रबन्ध कर दिया गया।

जौन कमेटी में यह भी शिफारिश की थी कि कोठीवालों में जो तावान बमूद किया था उसमें से एक चौथाई रैयतों को वापिस कर दिया जाय। सरकार ने इसको अपने मन्तव्य में स्वीकार कर लिया था। इस मन्तव्य के अनुसार १८ कोठियों के बमूद किये हुए तावान में से १६ ३ १॥-॥।।। बेतिया राज्य में वापिस करा दिया गया। यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि जौगाँव जमिया राज्य के नहीं थे उनमें से जो तावान बमूद हुआ

वा वह वापस नहीं हो सका। इसी प्रकार एक कोठी के मालिक ने अपनी कोठी को ठाढान बगूल करने के बाद बूझरे के हाथ बेच डाला था उस कोठी के नवागत मालिक से भी ठाढान का वापस कराना उचित नहीं समझा गया।

अप्यारन एवरियन ऐक्ट के पास हो जाने के पश्चात् सरकार की इन कार्रवाइयों पर, जिनमें रैदगो के बहुत दिनों तक कष्ट सहने के बाद इनके साथ कुछ न्याय करने की उम्मादा बिललाई गई थी ऐम्नो-इन्डिडन के मुख्य पक्ष 'पायोनीर' ने समालोचना करते हुए और सरकार की कमजोरी बतलाते हुए लिखा था—

"We regret to find in those steps the worst of the faults that can be attributed to bureaucracy. Infirmary of purpose is the key note throughout and it manifests itself in the usual symptoms, a purposeless insistence for as long as possible of secretariat secrecy and a refusal of requests for discussion when constitutionally put forward, followed by a prompt acceptance of the same request when the party making them shows a disposition and ability to make things unpleasant for the secretariat, professed reliance on the opinion of local officers so long as that profession serves as an excuse for secrecy and delay followed by abandonment of those opinions when they are found to be inconvenient, a too obvious desire to evade for as long as possible grasping the nettle of a controversial subject with the inevitable risk of injustice resulting according to the power of one side or the other to put pressure on Government." (*Pioneer March 13 1918*)

अर्थात्—“हमें खेद है कि जिन प्रकार से सरकार ने कार्रवाई की है उसमें जो सबसे बड़ा दोष मौकुरसाही पर समायो जाता है वह मौमूह है। हममें मतलब की कमजोरी शुरू से अन्त तक मरी है और उनके जो मामूली लक्षण हैं वे बाहिर हो रहे हैं। अर्थात् जब तक हो सके इफ्तर की बातों को गुप्त रखने में बेकार जात देना और उन पर बिचार करने के लिए जब बाकायदा अनुरोध किया जाय तब उसको अस्वीकार करना पर उनके बाद ही तुरन्त उनको मान लेना जबकि अनुरोध करने वाला बख्तर के लिए बातों को अग्रिम बना देने के लिए तैयार हो जाय। बाहिरा तौर न स्थानीय अफसरों की राय पर धरोमा करना जब तक कि बीमा करने में बाग छिपाने और बिलम्ब करना — *आ दिवस मने* पर बाद में उन रायों को छोड़ देना जब कि वे अनुविधानिक हैं तब तक किसी बिबादग्रस्त बिषय की अगलियान न पूर भाँ मद्यपि हमने एक या डूमरे फरीफ की नरकार पर बखान अग्राम होने का अकस्मिकाही इत कयो न हा। (५।

ऐम्नो इन्डिडन पक्षों में एम्मी टीशन-टिप्पणी ११३

पर सब समझदार जानते हैं कि रैयतों के झुठों क दुक्त दूर करने की बेज्जा सरकार ने पहली बार यही की थी और वह भी महाम्मा गांधी जीने बिस्वबिख्यात मुबारक के पूरे जोर लगान पर । मीठबरो के स्वरचित अधिकारों और उनके पुठ-पोपक एम्को-इन्डियन पत्रों की तुनुफमिबाजी पर बाहे हमने जो कुछ बरका लगा हा पर सामारण प्रजा के हक में हमका फल बहुत अच्छा हुआ और जमाने के बाद अम्पारल की पीड़ित प्रजा ने महान् कष्टों का बोझ पहले-सहक हल्का हुआ ।

ता वह वापस नहीं हो सका। इसी प्रकार एक कोठी के मासिक ने अपनी कोठी को ताबात बन्द करने के बाद दूसरे के हाथ बेच डाला था उस कोठी के नवायत मासिक ने भी ताबात का वापस कराना उचित नहीं समझा गया।

बम्बारन एयरियन ऐक्ट के पास हो जाने के पश्चात् सरकार की इन कार्रवाईयों पर, जिनमें रैयतों के बहुत दिनों तक कष्ट सहने के बाद इनके साथ कुछ न्याय करने की उम्मीद दिखाई गई थी ऐम्को-इन्डियन के मुख्य पत्र पायोलौयर ने सुमाओचना करते हुए और सरकार की कमजोरी बतलाते हुए लिखा था—

"We regret to find in those steps the worst of the faults that can be attributed to bureaucracy. Infirmity of purpose is the key note throughout and it manifests itself in the usual symptoms, a purposeless insistence for as long as possible of secretariat secrecy and a refusal of requests for discussion when constitutionally put forward, followed by a prompt acceptance of the same request when the party making them shows a disposition and ability to make things unpleasant for the secretariat, professed reliance on the opinion of local officers so long as that profession serves as an excuse for secrecy and delay followed by abandonment of those opinions when they are found to be inconvenient, a too obvious desire to evade for as long as possible grasping the nettle of a controversial subject with the inevitable risk of injustice resulting according to the power of one side or the other to put pressure on Government." (*Pioneer March 13, 1918*)

अर्थात्—“हमें खद है कि जिस प्रकार से सरकार ने कार्रवाई की है उसमें जो सबसे बड़ा दोष नौकरशाही पर लगाया जाता है वह मौजूद है। इसमें मतलब की कमजोरी यह है अन्त तक धरी है और उसके जो मामूली लक्षण हैं वे बाहिर हो रहे हैं। अर्थात् जब तक हो सके बख्तर की बातों को मुक्त रखने में बेकार धोर देना और उन पर विचार करने के लिए जब बाकायदा अनुरोध किया जाय तब उनको अस्वीकार करना पर उनके बाद ही मुरन्त उनको मान लेना जबकि अनुरोध करने वाला बख्तर के लिए बातों को अधिक बना देने के लिए तैयार हो जाय। बाहिरा तौर से स्थानीय अफसरों की राय पर भरोसा करना जब तक कि ऐसा करने में बाध छिपान और बिलम्ब करने का बहाना मिल सके पर बाद में उन रायों को छोड़ देना जब कि वे अनुविधानिक हो जायें। जब तक हा लके तब तक किसी विवादबस्त विषय की अनलिप्तता में दूर मागन की अत्यन्त स्पष्ट इच्छा अथवा हमने एक मा दूसरे करीक की सरकार पर बनाव डालन की शक्ति के अनुसार अयाव होने का अवश्यम्भावी दर क्यों न हा। (पायोलौयर, १३ मार्च १९१८)

एम्को-इन्डियन पत्रों में एमी टीका-टिप्पणी निकालना तो सर्वथा स्वाभाविक ही था

पर सब समझदार जानते हैं कि रैयनों के मुद्दों के कुछ दूर करण की जगह सरकार ने पहली बार यही की थी और वह भी महान्मा गांधी जैन विरवविख्यात सुधारक के पूरे ओर समान पर। नीम्बरी के स्वरचित अधिकारों और उनके पृष्ठ-योग्य एम्प-गिम्पन पत्रों की तुलनामिमाजी पर जाहे इसमें जो कुछ बकता लगा हो पर सामान्य प्रजा के हक में इसका फल बहुत अच्छा हुआ और जमान के बाद कम्पारन की पीछिन प्रजा के महान् कष्टों का बाध पहुँचाया हुआ हुआ हुआ ।

इन्हींसेवी अध्याय स्वयंसेवकों की सेवा

महात्मा गांधी का विचार है कि चम्पारन की प्रजा के दुःखों के कारणों में एक प्रधान कारण उनकी अविद्या है। आपका क्या कर्तव्य है कि जब तक उनकी सामाजिक उन्नति न होनी उनके उद्धार किसी बाह्यी शक्ति द्वारा होना अनभव है। यह बात भारतवर्ष भर के लिए लागू है पर चम्पारन में इसका एक प्रत्यक्ष देखने में आता है। वहाँ की प्रजा एक-बारणी काचार है। उसका हृदय अत्यन्त दुर्बल और उसमें शिक्षा का पूर्ण अभाव है। इन्हीं विचारों से आपने निश्चय कर लिया था कि और दुःखों से यदि उनका उद्धार हो भी जाये तो वे इस भूमि को काबल रख नहीं सकेंगे और दूसरे प्रकार के दुःखों के बाधन में फिर भी जकड़ जायेंगे। ऊपर कहा जा चुका है कि महात्मा जी के आग्रह से चम्पारन की प्रजा में एक विविध प्रकार की स्वतन्त्रता और निर्भीकता बीजित लगी थी पर यह स्थायी थी या नहीं यह नहीं कहा जा सकता है। उनके खून-महून में भी बहुत परिवर्तन की आवश्यकता है। गाँवों में गरीबी—रास्तों में मरगी—जहाँ देखिए वहाँ गरीबी। लोगों में इतनी निस्त्वय नहीं कि वे आपस में मिलकर गाँव के किसी छोटे से रास्ते को भी मरम्मत कर दें। किसी प्रकार की बीमारी फैलने पर सभी निस्मृद्ध और निराश्रय होकर काम के शिकार हो जाते हैं—बचा का कोई प्रयत्न नहीं। जहाँ सड़ाई का ही शिकार नहीं वहाँ बचा-दुलाव की फौज पुछे।

इसीलिए महात्मा जी का यह विचार था कि वहाँ के लोगों में शिक्षा प्रचार का भी प्रयत्न होना उनका ही आवश्यक वांछित काम था। कमेटी के बारम्बार क पक्षे ही आपन कुछ दिनों के पास इस विषय में निश्चय था कि कमेटी का काम समाप्त हो जाने के बाद उस शिक्षा के कार्य के लिए किस प्रकार के स्वयंसेवकों की आवश्यकता होगी वह आपन एक पक्ष में जान पड़ता है कि आपन अपने एक मित्र के पास भेजा था—

"Their (volunteers) work will be the most important and lasting and therefore it will be the final essential stage of the mission. They (volunteers) have to be grown-up, reliable, hard working men who would not mind taking the spade and repairing and making village roads and cleaning village cesspools and who will in their dealings with their landlords, guide the *ryots* aright. Six months of such training cannot fail to do incalculable good to the *ryots* the workers and the country at large."

बर्बाद—“इन स्वयंसेवकों का काम बहुत महत्वपूर्ण और स्वाधी होगा और इसी लिए यही हमारे यश की अत्यन्त आवश्यक और अन्तिम पूर्णावृत्ति होगी। हम ऐसे स्वयंसेवक चाहिएँ जो अपना निरवसरणीय और परिश्रमी हो जिनका इसमें भी कोई उद्यम न हो कि कुशाग्र लेकर गाँवों में नया रास्ते बनायें अपना पुराना रास्ते की मरम्मत कर—गाँव की मोरियों का साफ़ करे और रैयत और जमींदार के आपस के व्यवहार में रैयत को ठीक-ठीक राह बतावें। इस प्रकार का काम ६ महीने तक चलने से इसमें संदेह नहीं कि इसमें रैयतों की ही नहीं बरन् स्वयंसेवकों और देश की भी मलाई होगी।

जब गाँव बमेटी की रिपोर्ट हो चुकी तो महात्मा जी ने इस ओर ध्यान दिया और ता ८ ११ २ को आप बम्बई प्रान्त से कुछ स्वयंसेवकों को साथ लेकर बम्बय में फिर पधारे। आपकी इच्छा थी कि इस शिक्षा के कार्य में नौकर सहायता करे और आप सब काठियों के देहाता में एक या अधिक पाठशालाएँ खोलें पर यह इच्छा पूरी नहीं हुई। तब आपने निश्चय किया कि यदि नौकर अपने देहातों में पाठशाला के लिए स्थान नहीं देय तो दूसरी बपटो में ही पाठशालाएँ खोली जायें। मोतीदाजी ने प्रायः २ मील दूर पर पूर्व दिशा में एक गाँव बड़हरवा जलनमें है जहाँ बेनिया राज्य के मीर कर्म में है और वहाँ किसी कोठी का अधिकार नहीं है। पहले इसी गाँव में पाठशाला खोलने का निश्चय हुआ। वहाँ के एक सङ्घर्ष देश-हिंसापी सज्जन बाबू सिबगुलाम जाल न अपने सँसार मकान को इस कार्य के लिए दे देना और अन्य प्रकार की सहायता देना स्वीकार किया। वहाँ ता ११ ११ १७ को बम्बय में महात्मा जी ने पहली पाठशाला की स्थापना की। उस पाठशाला में बम्बई के श्रीमन्त बन्त गोखले उनकी विधुपी बर्मपली श्रीमती अवन्तिका बाई मोखले महात्मा जी ने सुयोग्य कनिष्ठ पुत्र श्रीमन्त देवदास गाँवो रहन कम। कुछ दिनों के बाद साबरमती सत्याग्रह आरम्भ से छोलेनाक तथा सुरेन्द्रजी को स्वयंसेवक और जाये और वहाँ रहकर काम करने लगा। श्रीमन्त बन्त मोखले बम्बई के एक प्रसिद्ध बिलायत में शिक्षा पाये हुए इंजीनियर हैं और आपकी स्त्री भी बिलायत से प्रेम कर आई है और बम्बय आन के पूर्व बम्बई प्रान्त में शिक्षा के काम में ही अपना समय बिताती थी और आज भी इसी काम में लगी है।

ता २०-११ १७ को भित्तहरवा गाँव में भी एक पाठशाला खोली गई। यह गाँव मेंपाल की तराई के पास बेनिया से प्रायः ४० मील दूर पर पश्चिमोत्तर दिशा में है। यहाँ से बोड़ी ही दूर पर बलवा कोठी है जिसके मैनजर मि ए सी ऐमन है। उस गाँव में एक छाटा-सा मन्दिर है जिसमें एक साध रहने है और बोड़ी-सी जमीन उस मन्दिर का लालेराज मिली है। उमी जमीन में से बोड़ी-सी जमीन साध बाबा न पाठशाला के लिए दे दो और वही पर फूम के सौंपड़े बनाकर पाठशाला खोल दी गई। इस पाठशाला में बम्बई प्रान्त के बेलपाई जिसे के वहीँ श्रीमन्त महाशिव लक्ष्मण सामन भी ए एक-एक थी और मुन्न रात के उत्साही नवयुवक श्रीमन्त बासहृण योमेश्वर पुरोहित तथा महात्मा जी को बम

पत्नी श्रीमती कस्तूरीबाई गांधी तथा डा. बेन रहने लगे।

इसी प्रकार मधुबन के सुप्रसिद्ध सेठ घनश्याम दास जी की सहायता से आपके एक मकान में ता. १७-११८ को महात्मा जी की अध्यक्षता में सभा कर एक तीसरी पाठशाला खोली गई। इस पाठशाला में मधुबन के रहने वाले और साबरमती सरसाग्रह आश्रम के एक जम्पापक श्रीमंत नरहरि द्वारकादास पारख भी ए. एस.-एल. भी और उनकी स्त्री श्रीमती मणिबाई पारख तथा महात्मा जी के मंत्री श्रीमंत महादेव हरिभाई देसाई भी ए. एस.-एल. भी तथा उनकी बर्मपत्नी श्रीमती पुर्णाबाई देसाई और पूना के महिला आश्रम (Women's University) के रजिस्ट्रार श्रीमंत बिबकर महाशय की बहन श्रीमती जानकीबाई रहने लगी। कुछ दिनों तक बुधिया के श्रीमंत बिजु सीताराम रमदिके जर्ज जम्पा जी और प्रो. कुपलानी ने भी बड़ी रहकर काम किया। प्रो. कुपलानी को जम्पारन में रहते समय एक बार जेज भी जाना पड़ा जिसको उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

मह. हमारे लिए बड़ी कज्जा और कुछ की बात है कि जब भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों के ऐसे सुधियत और प्रतिष्ठित सज्जन हम काम के लिए आये। हमारे प्रान्त से आरम्भ में कोई भी ऐसा नहीं मिला जो इस काम को उठायें। इस कलक को हटाने का सौभाग्य और बस बाबू धरसीधर एम. ए. भी एस. महाशय को ही प्राप्त हुआ। महात्मा जी के साथ सबसे पहले जम्पारन में पधारने का भी इन्हीं को गौरव प्राप्त है। वह मपलीक मधुबन पाठशाला में छ. महीनों तक शिक्षा का काम करते रहे।

इन सज्जनों के अतिरिक्त अन्य स्वयंसेवक भी आये जिनमें सरसाग्रह आश्रम के श्रीमंत बलराम भीम जी श्यामी और काठियावाड़ के श्रीमंत प्रानलाल प्रभुलाल मोपी तथा धारन जिले के श्रीमंत रामरस ब्रह्मचारी और बाबू श्याम देव सहाय भी इन्हीं पाठशालाओं में जहाँ-तहाँ रहने लगे। इनके अलावे कई वैयक्तिक शिक्षक भी आवश्यकता पड़ने पर रहे वसे।

इन पाठशालाओं का उद्देश्य और उनकी पाठन-दीर्घी को महात्मा जी ने एक सरकारी बर्मचारी के पास इन शब्दों में बतलाया था—

In the schools I am opening, children under the age of 12 only are admitted. The idea is to get hold of as many children as possible and to give them an all round education, i.e., a good knowledge of Hindi or Urdu and, through that medium, of Arithmetic and rudiments of History and Geography, a knowledge of simple scientific principles and some industrial training. No cut and dried syllabus has yet been prepared because I am going on an unbeaten track. I look upon our present system with horror and distrust. Instead of developing the moral and the mental faculties of the little children it dwarfs them. In my experiment whilst I shall draw upon what is good in it,

I shall endeavour to avoid the defects of the present system. The chief thing aimed at is contact of children with men and women of culture and unimpeachable moral character. That to me is education. Literary training is to be used merely as a means to that end. The industrial training is to be designed for the boys and the girls who may come to us for an additional means of livelihood. It is not intended that on completing their education they should leave their hereditary occupation but make use of the knowledge gained in the school to refine agriculture and agricultural life. Our teachers will also touch the lives of grown-up people and if at all possible penetrate the Purbah. Instruction will be given to grown-up people in hygiene and about the advantages of joint action, for the promotion of communal welfare, such as, the making of village roads proper the sinking of wells, etc. And as no school will be manned by teachers who are not men or women of good training, we propose to give free medical aid as far as is possible."

बर्बन्त—“जिन स्कूलों को मैं ज्ञान रहा हूँ उनमें १२ वर्ष से कम उम्र के ही बच्चे मिले जायेंगे। हमारा क्या है कि जिनमें बड़े बड़े मिक सके उन्हें सब बातों की शिक्षा दी जाय अर्थात् हिन्दी या उर्दू का पूरा ज्ञान और उसी के द्वारा हिमाय इतिहास और भूगोल की मोटी-मोटी बातें विज्ञान के मूल सिद्धान्तों का ज्ञान और बोझी-नी शिक्षाएँ। इसके लिए कोई कटा-कटा पाठ्यक्रम निश्चय नहीं किया गया है। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि बच्चे पढ़ें। आजकल की परिपाटी को मैं पसन्द नहीं करता। बच्चों की मानसिक सक्ति बढ़ाने तथा उनके चरित्र सुधारने के लिये यह परिपाटी उन्हें बर्बादी है। उस परिपाटी में जो सुख है उन्हें मैं तो हँसा और उनके दुर्गुणों से बचने का प्रयत्न करूँगा। हमारा मुख्य उद्देश्य यह है कि बच्चे सुविधित और चरित्रवान् पुरुषों और स्त्रियों के सत्त्व में रहें। मैं इसी को सिद्धा करता हूँ। भिक्षु-पढ़ना भी इसी उद्देश्य की निधि के लिए सिद्धाया जायगा। शिक्षा करी उन्हें कर्मों और मजदूरों को सिखाई जायगी जो अपने जीवन-निर्वाह के एक और भी उपाय के लिए हमारे यहाँ जायेंगे। मगर मरक्क यह नहीं है कि वे इन प्रकार की शिक्षा पाकर अपना अलबानी पैसा अर्थात् गृहस्थीक काम को छोड़ बर्बन्त मरी डकड़ है कि मैं अपनी विद्या को छुपि और कृपकों के जीवन की उत्पत्ति में लगाऊँ। हमारे दिलों का प्रभाव मयामों पर भी पड़ा और यदि हो सका तो वे सब कर्मों पर भी अपने प्रभाव को पहुँचायेंगे। बच्चों को स्वास्थ्य-रक्षा का ज्ञान दिया जायगा और आपस में मिलकर काम करने में क्या साम है यह भी बताया जायगा—जैसे गाँव में मजदूरों को सम्मान करना कुमाँ बा चोना इत्यादि। यहाँ तक हो गयेगा लोगों की सुख तथा इलाज भी की जायगी क्योंकि हमारे लक्ष्य शिक्षा यह कुछ ही या सभी सुविधित रहेंगे।

इन्हीं मन्त्रियों के अनुसार बहुरत्ना पाठशाला में गीतमं महासच के प्रबन्ध में प्रायः १४० बच्चे शिक्षा पाने लग्य और श्रीमती अमर्तिकाबाई गोखले ४० लड़कियों और स्त्रियों को शिक्षा देने लगी। इस पाठशाला में लड़कों को कपड़ा बुनना भी सिखाया जाता था और कुजों तथा मड़कों को साफ रखने के लिए पाँच के छोटी को शिक्षा दी जाती थी। श्रीमन् गोखले तथा श्रीमती अमर्तिकाबाई स्वयं मैने को साफ करती थी जिसका प्रभाव वहाँ के रहनेवालों पर अधिक पड़ने लगा। बच्चों को किस प्रकार साफ-सुथरा रहना चाहिए इसकी भी शिक्षा स्त्रियों को दी जाती थी। यह पाठशाला इस समय तक कार्यरत है।

मिठहरवा पाठशाला एक ऐसी अवलु स्थापित है वहाँ शिक्षा का पूरा अभाव है। वहाँ की आबहवा भी अच्छी नहीं है। इन कारण वहाँ लड़कों की संख्या ८० से अधिक नहीं बढ़ी पर वहाँ डाक्टर बेब ने तथा डॉक्टर तथा सफाई की ओर लोगों का ध्यान आकषिप्त कर उन्हें बड़ी सहायता की। पाठशाला स्थापित होने के कुछ ही दिनों के बाद वहाँ के लोगों में एक दिन आधी रात को आग लग गई और वे बलत्कर भाग ही गये। उस समय वहाँ पर डाक्टर बेब श्रीमन् गोखले श्री श्रीमन् अम्बा जी तथा श्रीमती गांधी रहती थीं। पाठशाला बस्ती से कुछ दूरी दूर पर खान के कारण समय पर भोजन न पहुँच सकी। डाक्टर बेब का विश्वास था कि आप किसी की लवायी हुई थी। पर इन विषय में अनुमान में अधिक समय नहीं नष्ट करके डाक्टर बेब तथा गोखले जी और अम्बा जी ने उन्हीं स्थान पर एक पक्का मकान तैयार कर लेने का निश्चय कर लिया और बात की बात में परिश्रम करके अपने मरों पर ईंटें डालकर एक पक्का मकान तैयार कर दिया जो इस समय तक कार्यरत है।

पहली मइली के बसे जाने के बाद महापण्डित जी स्वयंसेवक जिनके नाम श्रीमन् नारायण तम्माजी काटवाड जिनको पुण्डलीक जी भी कहते हैं तथा श्रीमन् एकनाथ बामु बेब सीते हैं और श्री बाय और मिठहरवा पाठशाला में रहकर बड़ी निर्मलता से काम किया। पर पुण्डलीक जी बिहार सरकार की ओर से बहुत सने और बोर्ड ही दिनों में भारत रत्ना बानुम के अनुसार प्रालेन में बहिष्कार की आज्ञा पाकर वहाँ से चले गये। पुण्डलीक जी के बसे जाने के बाद मिठहरवा पाठशाला में काम करने के लिए एक दूसरे महापण्डित प्रभुपण्डित जिनका नाम श्रीमन् गंकरदब है आय और वहाँ रहकर कई महीना तक काम कर रहे।

मधुबन पाठशाला में श्री पहली मइली द्वारा बहुत कुछ काम हुआ और १० से अधिक लड़के शिक्षा पाने रहे। वहाँ भी लड़कियों के पढ़ाने के लिए एक पाठशाला खानी गई जिसमें प्रायः ६० लड़कियाँ और श्रीमती आनर्नीबाई की अध्यक्षता में शिक्षा पाने लगी। पहली मइली के बसे जाने के बाद श्रीमन् एकनाथ बामुदब सीते तथा सागुन जिने के श्रीमन् इनाम बेब नारायण जी कर्मा महीना तक वहाँ का काम करने रहे। इस पाठशाला के कार्य का प्रायः कुछ भार लठ घनस्याम बाय ने भी लिया। मर के नाम लिखना गड़वा है कि यह पाठशाला अब बन्द हो गई है।

उपपुस्तक प्रथा के अनुसार इन पाठशाळाओं में डिग्री तथा उर्दू द्वारा शिक्षा दी जाती थी। महात्मा जी स्वयं समय-समय पर इन पाठशाळाओं को देखने के लिए जाया करते थे और बिन बातों की छूट पाते थे उन्हें सुधारने की सलाह देने थे। डाक्टर बच भी इन पाठशाळाओं का समय-समय पर निरीक्षण किया करते थे तथा सफाई पर ब्याख्या देते और मरीजों को दवा बाँटते थे। यद्यपि पहली मंडली के स्वयंसेवक केवल छ महीने तक इन पाठशाळाओं में रहे तो भी उनका प्रभाव केवल पाठशाळा के छात्रों ही पर नहीं बरन् जैसी महात्मा जी ने आशा की थी वहाँ के आसपास के रहने वालों पर भी जब पड़ा यहाँ तक कि इन गाँवों की पर्य में रहने वाली स्त्रियाँ भी इस काम से बचिन न रही। यदि यह काम इस प्रकार के कुछ दिनों तक और जारी रखा तो केवल अम्पारन ही की नहीं बरन बिहार के अन्यत्र जिलों की भी हालत सुधर जानी।

जो कुछ ऊपर कहा गया है उससे पाठक यह न समझे कि महात्मा गांधी न शिक्षा का काम बीच कमेटी की रिपोर्ट के बाद ही आरम्भ किया। शिक्षा ग्रहण करनेवालों के लिए तो काम उसी दिन आरम्भ हो गया जिन दिन कि आपने बिहार में प्रवेश किया। जिन लोगों को आपके साथ अम्पारन में रहने का मौकाम प्राप्त हुआ था उनका आपन एक नई दुनियाँ दिलना थी। उनमें एक लवजीवन का संचार कर दिया। जब हम लाना को आपके साथ स्वराज्य संग्रहीत जान होती थी तब आप जबरन यही कहा करने थे कि मैं स्वराज्य का ही काम कर रहा हूँ। हम लोग इसके अर्थ उस समय गीक नहीं समझ सकन थे पर कार्य समाप्त होने के बाद आज यह उन्हें थिक से कहा जा सकता है कि सचम कहा वह स्वराज्य का ही काम था। जब आप मुजफ्फरपुर में पहुँचकर पाम के एक गाँव में गये थे और वहाँ के मोनों और उनके छोटे बच्चों की हालत देखी थी तब उन्होंने कहा था कि जब इनकी दशा सुधरेगी तभी हमको स्वराज्य हो सकता है। उन्हीं मनीष किमानों की दशा सुधारन में आप अम्पारन में गये हुए थे। साथ ही आपका विचार था कि इस महत्वपूर्ण काम के लिए बहुत स्वयंसेवकों की आवश्यकता है इसलिए जिनने ऐसे काम में आ जायें उनका ही अच्छा होना पर हम साथ के सभी अधिकारी नहीं हो सकन थे। हम प्रकार की महाद्विती के लिए साथ ग्रहण करना थय छोड़ना और मरीजी अधिकार करना आवश्यक था। इस लिए महात्मा जी न अपने सहकारियों का ध्यान हम और आकर्षित किया। जब हम सोच पहले-सहस्र अम्पारन पहुँचे तो हम में जनकों के साथ मौकुर थे रमान बनान के लिए एक रमोइया था। पाँके ही दिनों में महात्मा जी के इच्छानुसार मौकुरों को मरग जन कर दी गई और कुछ दिनों के बाद मिबाज एक के और सब हटा दिये गये। कम इसका यह हुआ कि जिन लोगों में अपने जीवन में एक लोटा जल कुर्र में नहीं मिबाया था अबका जिन्होंने नहाकर एक गमछा भी नहीं बाया था उन्हीं लोगों ने महात्मा जी के गन्धम में बाड़े दिना में ही एक दूसरे को नहाया देने बघड़ा थो लेने तथा जूते बर्तनों को धाँक करने का मौकाम प्राप्त किया। हम जान थे सब काम स्वयं कर लेने थे। बरों में शाहू देना और साफ करना अपने

धर्तनी का सम्मान स्थापन या बाजार से स्वयं फठरियों को लाना ये सब काम हम लोग स्वयं कर लिया करते थे।

रसोदय के हटा दिय जाने पर महारमा जी की धर्मपत्नी जिनको हम सभी माता जी कहा करते थे सबके लिए रसोई बनाती और बहुत आनन्द और प्रेम के साथ हम सबों को खिलाती थी। यह महारमा जी के आगमन का ही फल हुआ कि मधु रेस के तीसरे दर्जे में चम्पन में हम अपनी मानहानि नहीं समझते। आपका साथ ही साथ स्वभाव स्वदेशी मित्रात और आरम्भिक का प्रभाव केवल आपके सहायकों पर ही नहीं पड़ा बल्कि बिहार के अग्रान्य व्यक्तियों पर भी जब पड़ा। शिक्षण अपनी का से कौटने पर यह पड़ना ही महान् कार्य का जगमें महारमा जी न हाथ लगाया और ईश्वर की दया में हममें सफलता प्राप्त करके भटकते हुए भारतीयों का एक नया रास्ता दिखाना दिया जिस पर चलकर वे अपनी सभी अनीष्ट कामनाओं को प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रकार अम्बारन के सगडे की समाप्ति हुई। महारमा गांधी के अम्बारन-आग और उनके कार्य में अम्बारन की वास्तव में कितना लाभ पहुँचा इसकी समता का पूरा-पूरा अनुमान करना बहुत कठिन है। अभी वह समय नहीं आया है जब कि उनके कार्य के फलों का पूरा इतिहास लिखा जा सके। जिस वृक्ष को उन्होंने अम्बारन में अम्बारन ही क्या भारत वर्ष में लगाया है वह अभी महामहान् मान है। पुष्प और फल में विकसित है। पर यदि उसके रूप में आपसी थी और मधुरता की कुछ मग में सूचना मिल सके तो वह मुक्त कण्ड में कहना पड़ना कि अनति दूर भविष्य में नये आरम्भ नये मोक्ष नये उत्साह के एक अमृतपूर्ण नवीन युग का प्रादुर्भाव होने वाला है। भारतीय स्वराज्य का वास्तविक बीज अपन अम्बारन में ही हुआ है और अस्मितामी सरकारी अफसरों के विरुद्ध विद्या-मुक्ति धन-सम्पन्न नीतिवरों के विरुद्ध सार्वभौमिक पीड़ित नीति निःसहाय प्रजापति की पड़नी विजय सदियों से अस्मितामी की स्वराज्य युद्ध में सफलता प्राप्ति की अस्मिता सूचना है। ईश्वर करे वह दिन दीप्त होना का आये।

परिशिष्ट

(१) नील का सट्टा

मैं बोधी लोहार, बंटा परमन लोहार जात लोहार सा जायापाकड़ वा काशनकार
मीने मजकूर तथा हरनाटोर, परगम मसौआ इलाके बाने योबिन्दयज बा मज खिस्टार
मो मोतीहारी जिन्हा चम्पारन के हूँ ।

जागे हम सुदरवाय के बो रणगत में अपन मो ॥१॥ मज्ज बाखु बाना क भाषा
उठवा मो ॥२॥। सवा छव बाना जरब लाही होना है जर तयाबी बान्ने करन मचायी ।।
पाँच कट्टा एराबी नील इन्तदाण सन् १३०२ म मन् १३२१ पयसी मिनजमके कास्त
ठीके अपने मूताबिक हिलाई मिस्टर हिनरी विसीयम बीजफ हिक माटेब सतजर जानिब
हिनरी हेम कम्पनी मासिक बसने नील लुकी मिवा जिन्हा चम्पारन माग्फन मिस्टर रोबर्ट
विडनी हिन्ही साहेब कोठी मज्जुआ इलाके कमन मजकूर हमर दरारण रीम लकर कबज
बो तसद्वक में अपने रर लय ।

नम्बर १ —मचाबी १ पाँच बन्ठा एराबी बिम्ब बीजम मिनजमके कास्त
ठीके अपने बान्ने बाबत नील इन्तदाण सन् १३ ४ म सन १३ १ पयसी ब-मग नी हाब
तरदुब बो बाबाब कटर बाके करके तमनी मोत ब उछटली बगरइ हनब पसन्द
अहात्मियान कोठी वक्त पर तैबार कर बिया कर बो बाब मैदार हो जाने अन नील
अहात्मियान कोठी पैमाइश कर किबा करे ।

नम्बर २ —जित वक्त कोठी अपना बीमा नील बा टाही मकर जात नील हमारा
बाबग करे अगर उसमें हमारे तरफ मे कोई उद्य किया बाब ता उन वक्त अक्तिमार कोठी
का होगा के हमारे ऊपर नामिय हुरने का करे, अगर बाबम बीजम एराबी नील मजकूर
बीजमार हा बाब ता अक्तिमार अहात्मियान कोठी का होगा के ना पैयाम बाबग जब-जब
जहरत होवे एराबी बीजमार मजकूर को अपना बीमा बो टाही लेकर बाबग करे बो जब
बाबग होए, हम अपने सेठ पर हाजिर रहकर जो अहात्मियान कोठी कइये नामीक करेंगे ।

नम्बर ३ —वक्त पैयाम महार्द मूताबिक हुकुम्मत अहात्मियान कोठी बरस्तान
नील मोरखन को लूनी को काटकर जब पाही कोठी से जावे जाब दिया करेय ।

नम्बर ४ —बाबनी सेठ नील मजकूर बराख फी बिगहा जाठ पयपा बमाहु
कातिक लाह बमाहु बजहम मालबनाम रमीय बेकर नफर जाह बजरिण मोबरइ माल-
मुबारी लगान अपने लिया करें ।

नम्बर ५ —हिमाब सेठ नील मजकूर बाब मोरतब यहार्द बसने होत माल
बहिमाब फी बिगहा मोबलिय १६॥। लाह मोरइ पयपा बो बपने होने बीजमार फी बिगहा

मोबिलिग ८।) सवा साठ रुपया बमीबिब पैमाइस वही कोठी के बाह मिनहाई राहनी के बमाह कार्तिक साह बमाह अग्रहन फारबती देकर नकब साह बजरिए मोबरह माकगुजारी सपान अपने लिया करें ।

सम्बर ६ —अगर कोठी में सपान साह बजरिए मजूर बोमैरह वास्ते आबाद मोनासिबाने लेत नील के सपान भिसे बहु अपने हिमाब म मुकरा दगे । अगर राहनी बो सच मरम्मति नील हिमाब नील मे हमारे सपान न होए, तो जिस कम्बर फाबिब जिम्मे हमारे मुताबिक हिसाब के पाबना कोठी भिकसे बहु रुपया नकब अपने जान बा माक से अहाय करें ।

सम्बर ७ —अपान माकगुजारी एराबी कास्त नील मजकूर उमाम्मक हमारे हैं बो रहेगा ।

सम्बर ८ —बमाह पैत बा बेमान जो लेत वालने आबादी नील साक आइये के मिनकुमक कास्त ठीका हमारे पसन्द करके पमाइस कर दे उसको मुताबिक घरायत वाला सम्बर १ के तैयार कर बग जो जिस माक अहामियान कोठी लत नील नया पसन्द करके पैमाइस नहीं करें उन माक लेत नील माबिक को आबाद कर दए जो उन लेत नील में हुमरा कोई आपदा सिबाय नील के बाधन नहीं करेवे बा सिबाय लन मजकर के हुमरा पैत आबाद बा तैयार नहीं करेवे ।

सम्बर ९ —पैत बैमाघ में जो लेत अहामियान कोणी पसन्द करवे बहनी कर हेंस अपर बहु लन बाधन करमात काबिल बाबग नील न होए तो हुमरा लत पबइ में उसके बा अहामियान कोणी बमाह कार्तिक मिनकुमक लेत ठीके मिन मोकिरके पसन्द कर उसका वालने बाबग नील के तैयार कर दिया करवे ।

सम्बर १० —गामील म घरायत मीनबरेबाकाके हम या बारिमान कायम मानादियान हमारे किनी माक अम्बर मजाब मजकूरेबाकाके इनहराफी कर ता हरब बा मोक्षानी उसका फी बिपश माबलिय ४९।।) मानावे ता मुहन मैवाव माइब मीमूफ का जान बा माक से अहाय करें बमुरन नहीं अहाय जर हरब मजकर साहब मनजर बलन को अन्वियार होबा के बल इनहराफी घरायत मजकूरेबाका जर हरजे मजकूर ब हरबा मानिय अन्वियार आपदा में हमारे बोमुख कर बा जिस कम्बर रुपया लगाबी हम लिया है आभीर माक मैवाव हिमाब नील म मन् १३०१ माक के माबरत मजकूर कर हें अपर हिमाब हाजा में बाधन केने बाहनी जो हाल सच रुपया लगाबी मजकर सपान न पावे ता मजकूर अपन पान से अहाय कर हेंस । हमम जिमी सब हम को या बारिमान कायम मोका मियान को हुमा ताबोके म घरायत मजकूरेबाका क कुछ उय नही है बा न हाया । हम बाधन मट्ट भयारी बीम गाभा मिन दिया ब बल पर काम आवे ।

(२) गाड़ी का मट्टा

मे बाकमाबिन्द साहबना

जान बम्बार पैता मुहरपी या हाका बा वास्त

कार मीन जानेबादतमर तथा मोनहर परमन सेमरीन इसके लवरीमिस्तार बाका मो
जिबीमन मोठीहापी जिला चम्पारन के हैं ।

नू दिन मोकिर को चलाना पाड़ी व कोठी सेमहर तथा मोनहर परमन सेमरीन
इसके जाने डाके जिला चम्पारन को मजूर हैं इसलिये मोबलिय १५॥८) वर तकावी
पेसापी के निरुद्ध उच्छक मोबलिय १॥११) हठाई बज डूकूर पि के एव स्थिर मोबलिय
मासिक को मासवारमाय मासिक नि आर बिलियम फीसड साहूब से सेवर बलुन
रजाय को रगवत अपन सट्टेहाजा बज इकतदाण सन् १३०४ लगाएत सन् १३११ फमसी
मैबादी बाहू साता भिन्नकर इकतार हसब जैक करन हैं को भिन्न देने हैं ।

नं० १—हम या बारिमान साहू कायम मोकामियान मिनमोकिर बज इकतदाण
तहरीर सदृश याने सन् १३०४ फमसी लयायन सन् १३३५ फमसी ऐयाम बाबग नीक
से लगवत बाखिर बाबग नीक मजकूर को बकन महांई नीक इकतदाण नक मोरहन लगवत
कालम होने लुटी नीक के एक मजीम पाड़ी को दो राम ईक मजकूर मासबमास ठेकार
को मीबूद रखकर हमबहुम बा हमबसाह अहामियान कोठी के मनाबिक इस्तूर काठी
काम अनजाम किया करेंगे ।

नं० २—ऐयाम महांई में जायदाद नीक अन मसामियान को मीशन बेहान का
बादकर होब में बोसाई कच हने और मीठ होब से उठकर पाड़ी पर लाकर वहाँ
हुकम अहामियान दये बहू मजाकर मिरा हय और मजदूरी लवाई को पट्टेबाई नाम बीमार्
बरकान नीक कापी मैकडे मनपोखता मुखमिया २) व को मीठ फी मैकडे मनपोखता
मबाजी ॥१॥ आभा को फी बिबा टारी मबाजी तीन आना ॥२॥ बा माफकरकात काम फी
राज मबाजी पाँच आना ॥३॥ कोठी से पावगे ।

नं० ३—अगर अम्बर मैबाह हम माट्टे के किमी बजह से किराया मामूली बन्दे-
बन्दी पाड़ा के मौनहमें साट्टे हाजा में अधिक हो जाये याने हुनर मोयो का किराया ज्यादा
मिले औरक बजरिमे साट्टेपाड़ी कोठी हाजा में बसावे बा इस्तूर मरीजे हम बकन का
छडीक हो जाम दो मन मोकिरन को बारिमान को कायम मोकामियान मिनमोकिर
मजदूरी बमीबिब नया इस्तूर के पावगे ।

नं० ४—मिनमाकिर या बारिमान साहू कायम मोकामियान मिनमोकिर
अम्बर मैबाह मयाम साट्टी अगर कमी कागे के काम में गारी को ईक हाजिर न
लावे तो अधिकार अहामियान कोठी मजकूर को हाया कि किराया की पाड़ी मुबरीर
करके अन्याय काम करावे और जो इचगरी किराया मजकूरबाका से अधिक लव पड़ेगा
हुपुना किराया हमब मौनहमें मजबूर २ और मम्बर ३ तक हम को बारिमान को कायम
मोकामियान मिनमोकिर को देना होमा ।

नं० ५—मोबलिय १५॥८) जाने वर तकावी मजकूरबाका बतीर वर बमानत
बिसा मुरी ता मैबाह साटा हाजा कायम खोबा और बा राज इनकजाम मैवार यह वर

जमानत नकद हम या बारिसान साहकायम मोकामियान मिनमोकिर अदाय करेंगे वर अदाय नहीं करें तो ता अदाय जर जमानत साटे हज्जा में बामिय सरामत बहाल हो बरकरार रहेगा ।

नं० ६ — अगर मिनमोकिर साह बारिसान को कायम मोकामियान मिनमोकिर अन्दर मैयाह साटे हज्जा के हुसब सरायत छदर गाड़ी बेल हाबिर न छावे और कोठी को दूसरी गाड़ी किराये की नहीं मिळे तो मिनमोकिर को बारिसान को कायम मोकामियान मिनमोकिर ताबात बहिषाब एक रुपया एबोमिय बाबत दूर रोब गैरहाबिरी के जिसका पठा किताब हाबिरी से कोठी के मिळेवा कोठी को देगे वो मिनमोकिर को बारिसान को कायम मोकामियान मिनमोकिर हुसब छदरपत मौनबजें छाटा हज्जा पाड़ी कोठी तेलदूर में बकाबगे और गाहे कोई उय तबदीम बा तागीर मालिक या मनेजर कोठी या बहुम्बियान कोठी का नहीं करेगे ।

नं० ७ — मिनमोकिर या बारिसान साह कायम मोकामियान मिनमोकिर गाड़ी को बेल हुमेसा दुरस्त रखय वो कभी फरोस्त नहीं करेंगे । अगर किसी बजह से गाड़ी या बेल काबिल काम के नहीं रहे तो फौरन दूसरी गाड़ी को बेल तैयार हो मौजूब करेगे और बावे रहे कि मिनमोकिर या बारिसान साह कायम मोकामियान मिनमोकिर ता मैयाह साले हज्जा या बाद इनकजाय मैयाह ता अदाय जर जमानत कोई दूसरी बजह साटे पाड़ी का नहीं लिखेंगे । इस बामत यह जन्द कलमें बतरीक छाने पाड़ी मैयाही बाछ साका के मिल दिया के बजत पर काम आवे । ता २९ मार्च सन् १८९७ ईस्वी ।

(३) घरहूबेशी का इकरारनामा

मे	बम्ब	जात	सा मौबे	कास्तकार
मीन	तपा	परगणे	बाना	बिन्ना

अम्पारन के हूँ । चूके में मीन बास्ते मासिकान कमर्न तुकी लिया बरखर करता आया हूँ इसलिए अपना कास्त पान करक कम घरहू पर जोत हो आबाव करता आया हूँ । चूके में मासिकान कमर्न मजदूर से यह इस्तरोबा वेग किया कि मुझको मीन करम से माफ हो बरखत फरमाया जाय बा चके मासिकान कमर्न मजदूर इस बात पर इस्तरोबा मेरा बचूस किया है कि बाबज मासिकान रुपया साफाना या बरख छी बियहा रुपया हाता है माम्मुबारी मासिक निम्बत कास्त अपने हम मो रुपया साफाना या बज बरख छी बिगहा रुपया होना है माम्मुबारी मासिकान मजदूर को दिया करेंगे इसकि में बचुा रजाव बा रजाव हो गेल जात मजात बरख को इसम अपन में एकरा करता हूँ कि बाबज हासिल करदारी बरखत निम्बत बरन मीन तीनफर छी बिगहा अन्दर कास्त अपन अब मा रुपया माम्मुबारी को बरख छी बिगहा मा रुपया हाता है इसबाण मन् माम हम माम्मुबारी अपन मौजूबे

कास्त का बेका उग्र मालिकान मजदूर को अशाय किया करेंगे । मैं इसका भी एकरार मोठविर करता हूँ कि वपर बाइन्दे मे किसी किसिम का उग्र निस्वत अशाय जारी मास-गुमारी कबूल हो मंजूर कर व कबूल मे करूँ या कोई अदास्त या हाकिम मजाज तजबीज करके मस को मो

रपया जर इजाफा देने की पाबन्धी नहीं है तो उस हामत में फिर नील तीन-बटा की बिगहा मिनजुमते कास्त अपन बिसे मालिकान कसर्म तुकी किया ने मुझ बरामत का माफी हमब एकरारनाम हुआ के बेते हूँ मैं फिर बास्ते करन नील पाबन्ध होंगे जिसके मे वो मेरे बारिमान काएम मोकामियान पाबन्ध है वा पाबन्ध हस्य । इस बास्ते एकरारनामे हुआ छिल दिया व बतल पर काम आवे ।

ता माह मन्

(४) माफी की बिट्ठा

JALLAHA INDIGO CONCERN

Ryst of village has been and assigns are let off their whole indigo lagan on the lands held under the Jamabandis mentioned below from the year in perpetuity. I further declare both on my own behalf and as attorney for all the other proprietors of this Concern that neither we nor our heirs nor assigns shall ever make any demand for the indigo lagan of these lands nor for any part of it, nor for any kind of compensation for the non-cultivation of indigo in these lands.

No.	Name according to Jamabandi	B.	K.	D.

जसहा नील बसन

रामप्रसाद अहार काभनकार व मौजा राजपुर ।

उमके बारिम कायम-मोकामियान लगान नील उमके जमाबन्दी के जमीन क माफ किया गया । १३२२ साल मे हुयेला बे किल और मे कबूल करता हूँ ब-हूमियत खुद मामिक और ब-हूमियत मुस्तार बाकी मालिकान जसहा काठी के तरफ मे के हम साग या हम लाना का बारिम या कायम-मोकामियान कोई लगान नील के जमीन का या बिगी दुबड़ा जमीन का लम्ब नहीं करेंगे और बिगी किसिम की हरबा बास्ते नहीं लगान नील क लम्ब गही करन ।

नम्बर	नाम आसामी माताधिक समावन्ती	दिनांक
८	सिद्धराव अहीर	५/१५४
५६	रामप्रसाद अहीर	११/११

(५) बम्बई प्रान्त के स्वयंसेवकों की नामावली

- | | | |
|------|--|---------------------------|
| (१) | डाक्टर हरि श्रीकृष्णदेव एल एम एम | बुलिया |
| (२) | श्रीधर बहन गोपाल गाकले | बम्बई |
| (३) | महादेव हरि भाई देसाई | मल्हाप्रहू आश्रम अहमदाबाद |
| (४) | नरहरि डारकाशाम पाटील | |
| (५) | बबलाल सोम जी रुपानी | |
| (६) | जालाल जैन | |
| (७) | देवदाम गांधी | |
| (८) | भूदेव जी | |
| (९) | बालकृष्ण मानसकर पुगहित | |
| (१०) | मयादिब लक्ष्मण सोमन जी ए एम्-एम्-बी | बलयाब |
| (११) | नारायण लम्माजी काटगाड़े उर्फ पुष्पकीक जी | बलयाब |
| (१२) | विष्णु मीनाराम शशिदे उर्फ अण्णा जी | बलिया |
| (१३) | एकनाथ आमुदेव शीरे | बुलिया |
| (१४) | प्राचलाल प्रभुराम सोनी | बलिया भावनगर |
| (१५) | श्री संकरदेव सो ए | पूना |

स्वयंसेविकाएँ

- | | | |
|-----|-----------------------|--------------------------------------|
| (१) | श्रीमती कस्तूरीबाई | महात्मा जी की भगवन्ती |
| (२) | श्रीमती यशस्विकाबाई | श्रीधर बहन गोमले की भगवन्ती |
| (३) | श्रीमती दुर्गाबाई | श्रीधर महादेव देसाई की भगवन्ती |
| (४) | श्रीमती मणिबाई | श्रीधर नरहरि जी की भगवन्ती |
| (५) | श्रीमती आनन्दीबाई | महिला आश्रम पूना |
| (६) | श्रीमती शीलापाणि साहू | महोदय डाफ इण्डिया मामादनी के सम्बर |
| | | श्रीधर लक्ष्मीनारायण साहू की भगवन्ती |

